अगस्त – नवंबर 2025

इन्टैक विरासत

भारतीय सांस्कृतिक निधि
की समाचार-पत्रिका

चित्र: ध्रुव साह, प्राकृतिक विरासत प्रभाग

भारतीय
सांस्कृतिक
इन्टैक निधि

संरक्षण के लिए समर्पित

प्रिय सदस्यो,

हम सही रिकॉर्ड बनाए रखने की पहल के तहत अपने डाटाबेस को अपडेट कर रहे हैं, ताकि आपको समाचार-पत्रिका आपकी पसंद के फ़ॉर्मेट में मिले।

कृपया नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करके गूगल फ़ॉर्म में अपनी जानकारी अपडेट करें।

नीचे दिए गए **क्यूआर कोड को स्कैन करें** और उसमें दिए गए गूगल फ़ॉर्म को भरें।

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है, और हम आपकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहे हैं।

अध्याय प्रभाग, इन्टैक

भारतीय सांस्कृतिक निधि
इन्टैक

इन्टैक का प्रतीक चिह्न शाहबाद, उत्तर प्रदेश से प्राप्त एक मानवरूपी कांस्य की मूर्ति से प्रेरित है, जो गंगा घाटी के एक रहस्यमयी कांस्य के भंडार से प्राप्त हुआ था और यह इन्टैक का कथित ब्रांड प्रतिरूप बन गया है। इसका बेहद सादा और जीवंत डिज़ाइन आदि मानव की रचनात्मक प्रतिभा को दर्शाता है। (लगभग 1800-1700 ईसा पूर्व)

इन्टैक का मिशन विरासत की रक्षा और संरक्षण करना है, जो इस विश्वास पर आधारित है कि विरासत के साथ सामंजस्य में रहने से जीवन बेहतर होता है। यह मिशन भारत के संविधान में उल्लिखित प्रत्येक भारतीय नागरिक के कर्तव्य के अनुरूप है।

अध्यक्ष • **श्री अशोक सिंह ठाकुर**
उपाध्यक्ष • **प्रो. सुखदेव सिंह**
सदस्य सचिव • **श्री रविन्द्र सिंह (आईएएस सेवानिवृत्त)**

आभार:
श्री टी.एस. रंधावा (आईएएस सेवानिवृत्त) • सलाहकार, इन्टैक ज्ञान केंद्र
श्री एस. प्रकाश • निदेशक, प्रशासन प्रभाग
श्री अरुण वाजपेयी • निदेशक, वित्त प्रभाग
सुश्री ए. विजया • प्रधान निदेशक, वास्तुकला विरासत प्रभाग
श्री मनु भटनागर • प्रधान निदेशक, प्राकृतिक विरासत प्रभाग
श्री नीलाभ सिन्हा • प्रधान निदेशक, कला सामग्री और वस्तुगत विरासत प्रभाग तथा इन्टैक संरक्षण संस्थान
सुश्री पूर्णिमा दत्त • प्रधान निदेशक, विरासत शिक्षा और संचार सेवा
सुश्री निरूपमा वाई. मॉडवेल • प्रधान निदेशक, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत प्रभाग
ग्रुप कैप्टन अरविंद शुक्ला (सेवानिवृत्त) • निदेशक, अध्याय प्रभाग
सुश्री वंदना बिंदू मनचंदा • प्रमुख, विरासत शिल्प और समुदाय प्रभाग
सुश्री मनीषा सिंह • निदेशक, सांस्कृतिक मामले प्रभाग
सुश्री रेखा खोसला • परामर्शदाता, विरासत पर्यटन और प्रकाशन प्रभाग

श्रेय:
संपादक • रेखा खोसला
सहायक संपादक • कीर्ति कृष्णन
परियोजना समन्वयक • देविंदर माल्ही

पंजीकरण सं. अंग्रेजी: DEL Eng/2004/14304, हिंदी: DEL Hin/2004/14144

भारतीय सांस्कृतिक निधि
इन्टैक

अध्यक्ष की कलम से

श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक

जैसे-जैसे साल समाप्त होने को है, मैं बीते महीनों को स्मरण करता हूँ — वे महीने जब मैंने हमारे जमीनी स्तर के अध्यायों से व्यापक रूप से जुड़कर यह देखा कि वे कितनी लगन और उत्साह से इन्टैक के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करते हैं। इन प्रयासों को मुख्यालय का पूरा सहयोग मिलता रहा, जिससे पूरे देश में विरासत जागरूकता की लौ कार्यशालाओं, सेमिनारों और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से प्रज्वलित रही।

इस दौरान मुझे कई महत्वपूर्ण इन्टैक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। मैंने वाराणसी में भारत में सिक्कों के इतिहास पर एक व्याख्यान दिया, जिसमें बताया कि सिक्के केवल व्यापार के साधन ही नहीं, बल्कि वे राजनीतिक सत्ता, अर्थव्यवस्था, कला, भाषा और धार्मिक प्रतीकों के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं। मैं इन्टैक ग्रेटर मुंबई अध्याय द्वारा आयोजित 'कॉन्टिनुअम' के लॉन्च में भी शामिल हुआ। यह कार्यक्रम जीवंतता से भरा था, जिसमें इन्टैक की विविध गतिविधियों की झलकियाँ, सौ साल पुराने आर्ट डेको विरासत पर अनूठी प्रस्तुति, और शिल्प पुनरुद्धार की प्रेरक कहानियाँ शामिल थीं।

मैंने वाराणसी में आयोजित तीन दिवसीय देवनागरी सुलेख कार्यशाला की शानदार प्रतिक्रिया भी देखी, जिसने दर्शाया कि हमारी लिपियाँ केवल लेखन का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गहराई और कलात्मक सौंदर्य की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त, मैंने इन्टैक व्याख्यान श्रृंखला में भाग लेकर 1857 के विद्रोह के समय दिल्ली की गाथा और भारतीय पुरातत्व की रोमांचक कहानियों को भी आत्मसात किया।

> मैंने हमारे जमीनी स्तर के अध्यायों से व्यापक रूप से जुड़कर यह देखा कि वे कितनी लगन और उत्साह से इन्टैक के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करते हैं।

ऐतिहासिक पेशवा हवेली की मेरी यात्रा ने मुझे इस महत्वपूर्ण विरासत स्थल के संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों और उसकी संभावनाओं को नज़दीक से समझने का अवसर दिया। मैंने इमामबाड़ा के द्वारों और लखनऊ स्थित इन्टैक संरक्षण संस्थान (आईसीआई) का भी दौरा किया, जहाँ राज्य से बाहर परियोजनाओं के क्रियान्वयन, ग्राहक प्रबंधन, वित्तीय योजना और

इन्टैक ग्रेटर मुंबई अध्याय द्वारा विरासत और शिल्प पुनर्जीवन का उत्सव: मुख्य अतिथि श्री अमिताभ सिंह, पोस्ट मास्टर जनरल, मुंबई, और अध्यक्ष कॉन्टिनुअम के उद्घाटन पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

भारतीय लिपि कला उत्सव: वाराणसी में देवनागरी सुलेख कार्यशाला में अध्यक्ष की गरिमामयी उपस्थिति

लखनऊ स्थित इन्टैक संरक्षण संस्थान (आईसीआई) का अध्यक्ष का दौरा: तकनीकी टीम के साथ महत्वपूर्ण विरासत परियोजनाओं और पहलों पर चर्चा

वाराणसी की ऐतिहासिक पेशवा हवेली में संरक्षण कार्यों और विरासत संरक्षण की प्रगति का निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष

अध्याय दौरों के समन्वय जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक चर्चा हुई। मैंने भारत की बावड़ियों पर आयोजित व्याख्यान श्रृंखला में भी भाग लिया, जिसमें बताया गया कि ये बावड़ियाँ केवल उस युग की अद्भुत जल-संचयन प्रणाली ही नहीं थीं, बल्कि वास्तुकला की अनुपम कलाकृतियाँ भी थीं।

क्षमता निर्माण हमेशा से इन्टैक के मिशन का एक अभिन्न अंग रहा है। 17वीं कार्यशाला में भाग लेना मेरे लिए प्रेरणादायी अनुभव रहा, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिभागियों से सार्थक संवाद हुआ। उनकी प्रतिबद्धता और उत्साह ने यह दर्शाया कि वे विरासत संरक्षण को सुदृढ़ बनाने के लिए पूरी निष्ठा से कार्यरत हैं।

मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि विदिशा, झुंझुनू, विजयवाड़ा और रंगा रेड्डी अध्यायों की स्थापना ने इन्टैक के विस्तार को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। वहीं इन्टैक भोपाल अध्याय ने भी मध्य प्रदेश के सिक्कों पर अपने पहले सेमिनार का आयोजन किया और स्मारक सिक्कों का विशेष विमोचन किया — यह उनके लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही।

इन्टैक विरासत सप्ताह के तहत 'गज लोक' विषय पर व्याख्यान और प्रदर्शनी आयोजित की गईं। इन कार्यक्रमों में विद्वानों ने मनुष्यों और हाथियों के भारतीय उपमहाद्वीप में चार हजार साल पुराने संबंध को विस्तार से समझाया। इस संबंध में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय पहलुओं को जोड़ते हुए भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के साझा सह-अस्तित्व की परंपरा को उजागर किया गया। इन्टैक विरासत सप्ताह के तहत 'गज लोक' विषय पर कई व्याख्यान और प्रदर्शनी आयोजित की गईं, जिन्हें प्रतिष्ठित विद्वानों ने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में भारत के उपमहाद्वीप में मनुष्यों और हाथियों के चार हजार साल पुराने संबंध को उजागर किया गया। इसमें सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय पहलुओं को जोड़ते हुए यह बताया गया कि भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया किस प्रकार सह-अस्तित्व की साझा परंपरा से जुड़े हैं। 'गज लोक' प्रदर्शनी और राउंडटेबल में शिक्षाविदों, सांस्कृतिक विशेषज्ञों, संरक्षणकर्ताओं और धरोहर से जुड़े पेशेवरों ने भाग लिया, जिससे विभिन्न दृष्टिकोणों का समृद्ध आदान-प्रदान हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संस्कृति मंत्रालय के सचिव, श्री विवेक अग्रवाल, आईएएस की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा और महत्ता को और बढ़ा दिया।

मैं सभी अध्यायों, संयोजकों, सदस्यों और स्वयंसेवकों को उनकी सतत एवं निष्ठापूर्ण सेवा के लिए लिए हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। हम सब मिलकर अपने देश की अमूल्य सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने का कार्य निरंतर आगे बढ़ाते रहेंगे।

17वीं इन्टैक क्षमता निर्माण कार्यशाला: प्रतिभागियों के साथ संवाद करते हुए अध्यक्ष महोदय

भोपाल अध्याय द्वारा आयोजित 'मध्य प्रदेश के सिक्के' नामक सेमिनार में अध्यक्ष की उपस्थिति

अध्यक्ष द्वारा विजयवाड़ा अध्याय का उद्घाटन

अध्यक्ष द्वारा रंगा रेड्डी अध्याय का उद्घाटन

मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि **विदिशा, झुंझुनू, विजयवाड़ा** और **रंगा रेड्डी अध्यायों** की स्थापना ने इन्टैक के विस्तार को नई ऊँचाइयाँ दी हैं।

विषय-सूची

विशेष लेख

- जल संरचना: भारत की बावड़ियों की बनावट और इतिहास >5
- ब्रह्मपुत्र के द्वीप: संस्कृति और प्राकृतिक परिवेश की जीवंत धरोहर >9

संरक्षण: निर्मित, भौतिक और प्राकृतिक विरासत

- वास्तुकला विरासत (एएच) >15
- इन्टैक सूचीकरण प्रकोष्ठ >21
- कला सामग्री और वस्तुगत विरासत (एएंडएमएच) >22
- प्राकृतिक विरासत (एनएच) >32

सामुदायिक ज्ञान

- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) >37
- विरासत शिल्प और समुदाय (एचसीसीडी) >44

शिक्षा, प्रशिक्षण और विस्तार

- विरासत शिक्षा और संचार सेवाएं (एचईसीएस) >49
- सांस्कृतिक मामले (सीए) >62
- विरासत पर्यटन (एचटी) >66
- प्रकाशन >68
- इन्टैक ज्ञान केंद्र (आईकेसी) >69

केंद्रीय कार्यालय

- केंद्रीय कार्यालय से विशेष >70

जमीनी स्तर पर

- अध्याय प्रभाग >72

विरासत सूचना

- राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (एनडीएलआई) >119
- राष्ट्रीय डिजिटाइज़ेशन संग्रहालय प्रकोष्ठ >119
- पुरानी यादें और राष्ट्रीय पुस्तकालय >120

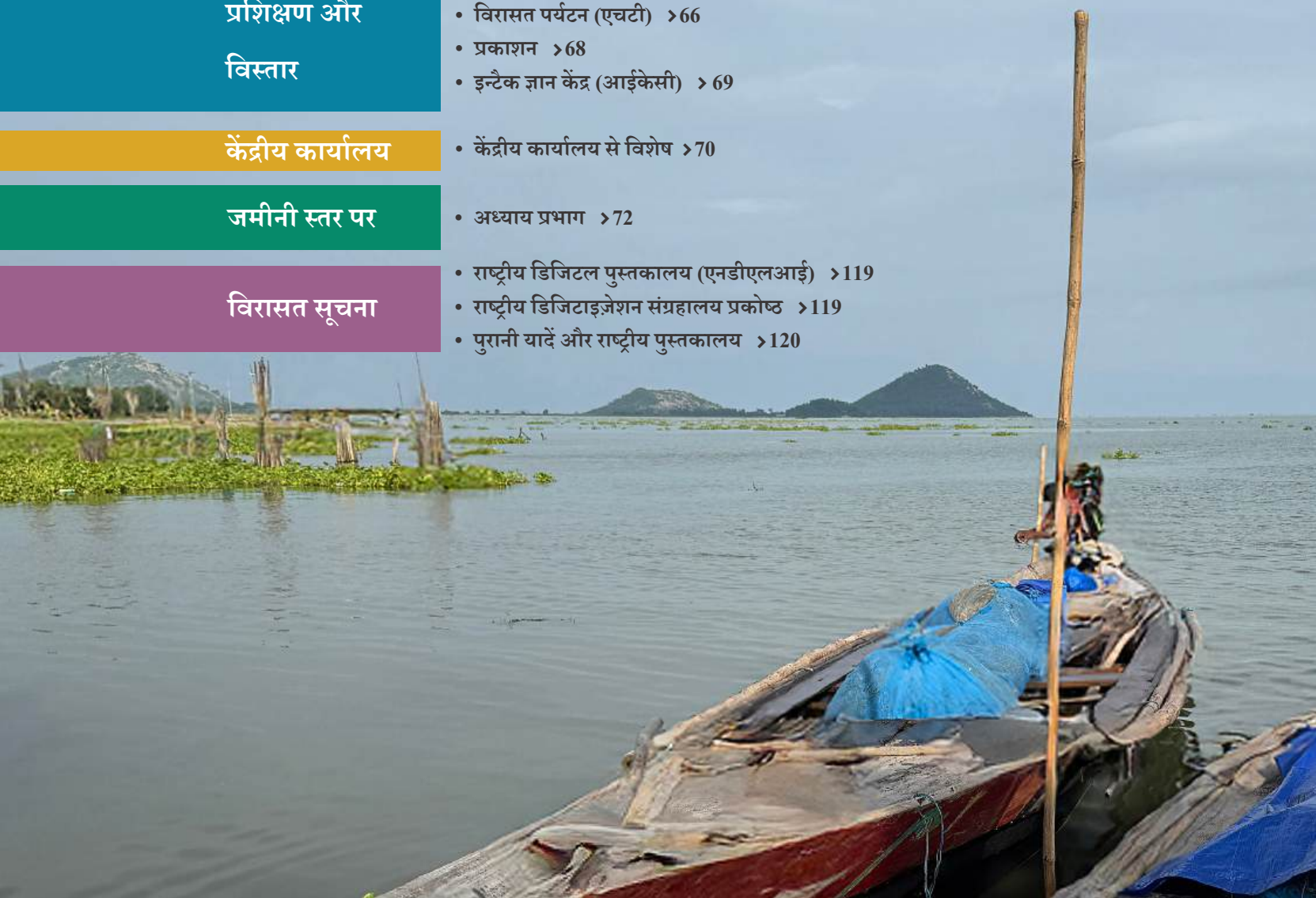

विशेष लेख

जल संरचना: भारत की बावड़ियों की बनावट और इतिहास

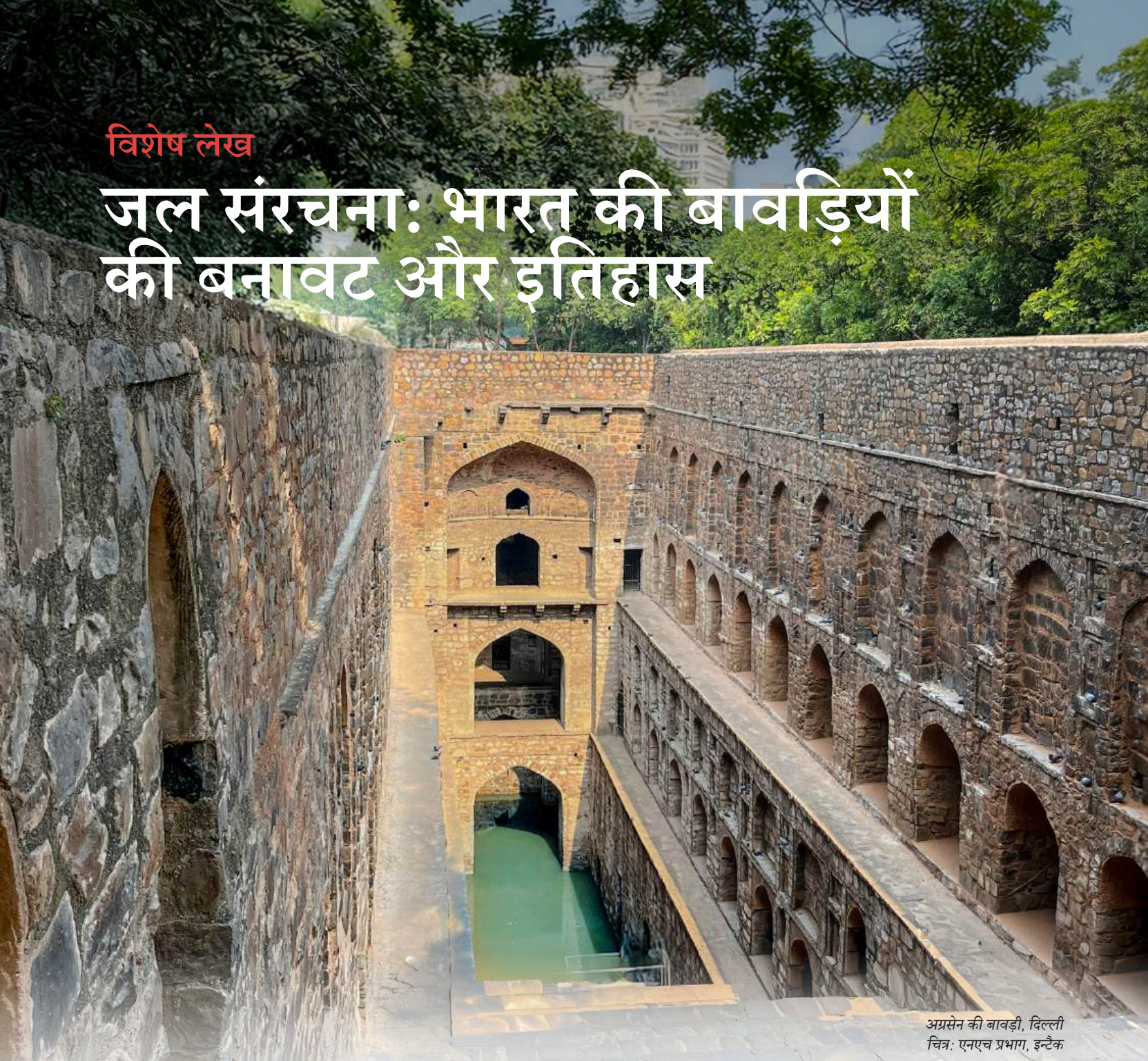

अग्रसेन की बावड़ी, दिल्ली
चित्र: एनएच प्रभाग, इन्टैक

लेखिका
मनीषा सिंह
निदेशक, सांस्कृतिक मामले, इन्टैक

भारत में स्थापत्य कला के तहत जल-संरचना की अवधारणा आरंभ से ही एक अभिन्न हिस्सा रही है। जल-स्थापत्य का सांस्कृतिक महत्व देश के विविध क्षेत्रों में निर्मित अद्वितीय रूपों — कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब, जलाशय, मंदिर-तालाब, झीलें, शिलाचित्र-निर्मित जलकुंड और नदी-घाट — में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इन संरचनाओं में क्षेत्रीय परम्पराओं और प्रामाणिक वास्तु-आदर्शों का समन्वय दिखाई देता है, जो जल-तकनीकी कौशल, स्थायित्व, व्यापार-वाणिज्य, सामाजिक व्यवहार तथा पूजा-अर्चना के पवित्र स्थलों के रूप में उनकी पहचान को सुदृढ़ करता है। विशेष रूप से, बावड़ियों को प्रायः "*भूमिगत मंदिर*" माना जाता था, जहाँ जल केवल जीवन का स्रोत नहीं, बल्कि श्रद्धा और सौंदर्य का शाश्वत प्रतीक माना जाता था।

बावड़ियाँ, जो भूमिगत जल-संरचनाएँ थीं, दूसरी शताब्दी ईस्वी से लेकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक भारतीय समाज का अभिन्न अंग बनी रहीं। किंतु नहरों और पाइपों द्वारा जल-आपूर्ति प्रणालियों के विकसित होने पर ये अद्भुत बावड़ियाँ धीरे-धीरे उपेक्षित होती गईं और अंततः भुला दी गईं।

यह लेख भारत की बावड़ियों पर आयोजित व्याख्यान-श्रृंखला पर आधारित है, जिसका आयोजन इन्टैक, नई दिल्ली में किया गया था

यह नवीन दृष्टिकोण पारंपरिक जल प्रणालियों को आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालने, ऐतिहासिक बावड़ियों को पुनर्जीवित करने, नई बावड़ियों के निर्माण को प्रोत्साहित करने, समकालीन तकनीकों का विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करने, और समूची जल-स्थापत्य परंपरा को एक सतत जल-नेटवर्क में समाहित करने पर केंद्रित है।

(बाएँ): रानी की वाव, जो पाटन, उत्तरी गुजरात में स्थित सर्वाधिक प्रसिद्ध बावड़ी है, महारानी उदयमती द्वारा उनके पति भीमदेव प्रथम (लगभग 1022–1064 ईस्वी) की स्मृति में निर्मित करवाई गई थी। परंतु सरस्वती नदी में अत्यंत भीषण बाढ़ आने के कारण यह लगभग 1300 ईस्वी के आसपास भूमि में समा गई थी, जो पाटन में इस्लामी शासन स्थापित होने से पूर्व की घटना है।

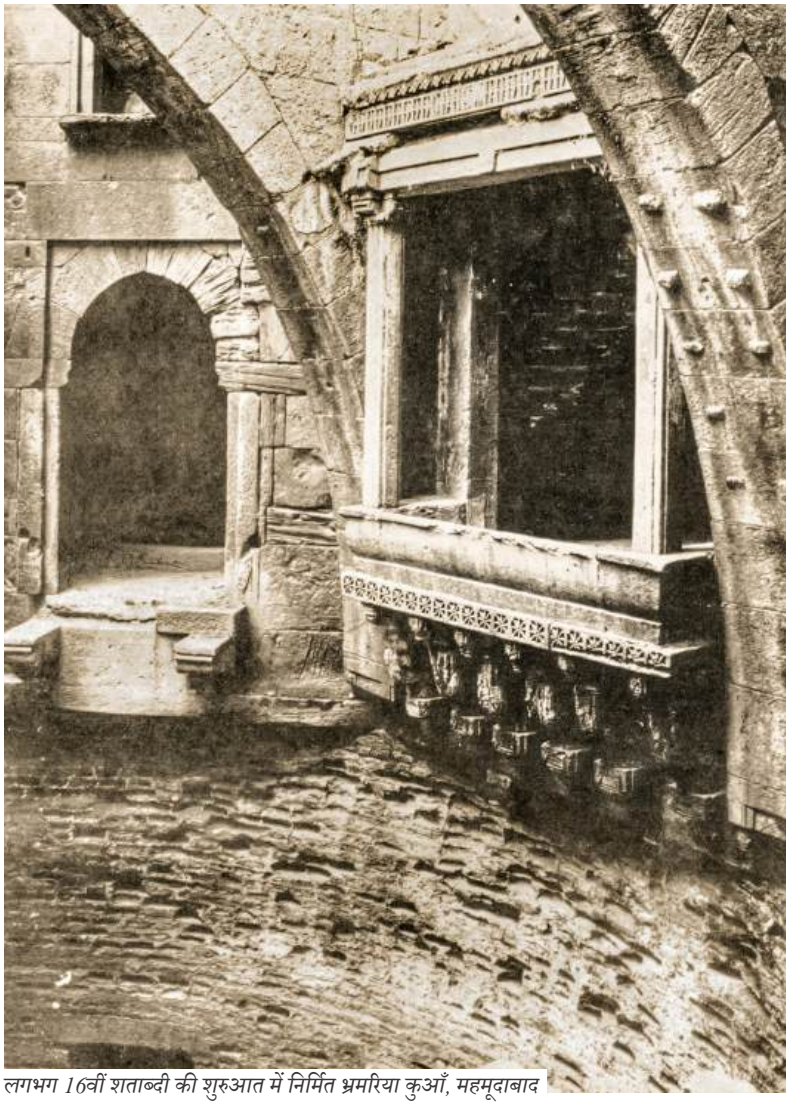

लगभग 16वीं शताब्दी की शुरुआत में निर्मित भ्रमरिया कुआँ, महमूदाबाद

1354 में फ़िरोज़ शाह तुगलक़ (शासनकाल1351–88 ईस्वी) द्वारा दिल्ली सल्तनत की नई राजधानी में बनाए गए क़िले में स्थित कुआँ

(ऊपर और नीचे): विकिया बावड़ी, घूमली, सौराष्ट्र, गुजरात

एक नया दृष्टिकोण — पुरानी परम्पराओं को आज के समय से जोड़ना, भूली-बिसरी बावड़ियों को पुनर्जीवित करना, नई बावड़ियों के निर्माण को प्रोत्साहित करना, आधुनिक तरीकों को व्यवहारिक बनाना और संपूर्ण जल-स्थापत्य तंत्र को एक स्थायी जल नेटवर्क में समाहित करना है। हालाँकि, एक सदी से अधिक समय तक उपेक्षा के बाद, जब गहराते जल-संकट के साथ पारिस्थितिक और स्थिरता संबंधी चिंताएँ बढ़ीं, तो प्राचीन जल-संरक्षण ज्ञान की ओर पुनः ध्यान देने की आवश्यकता महसूस हुई। यह नवीन दृष्टिकोण पारंपरिक जल प्रणालियों को आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालने, ऐतिहासिक बावड़ियों को पुनर्जीवित करने, नई बावड़ियों के निर्माण को प्रोत्साहित करने, समकालीन तकनीकों का विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करने, और समूची जल-स्थापत्य परंपरा को एक सतत जल-नेटवर्क में समाहित करने पर केंद्रित है।

आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (एकेटीसी) ने भारत में दो प्रमुख शहरी संरक्षण परियोजनाओं — दिल्ली के हुमायूँ का मकबरा – निज़ामुद्दीन क्षेत्र तथा गोलकुंडा के क़ुतुब शाही मकबरों — में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन दोनों परियोजनाओं के तहत ट्रस्ट ने नौ ऐतिहासिक बावलियों का संरक्षण कार्य किया है, जिसमें प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत, दोनों का समन्वित संरक्षण शामिल है। कभी उपेक्षित और जीर्ण-शीर्ण हो चुकी इन बावड़ियों को अत्यंत सावधानी के साथ बहाल किया गया है, और कुछ को आवश्यकतानुसार पुनर्निर्मित भी किया गया है। आज ये सभी संरचनाएँ सक्रिय जल-संग्रहण प्रणालियों के रूप में कार्य कर रही हैं, जो प्रत्येक मानसून में सामूहिक रूप से 4 करोड़ लीटर से अधिक वर्षा जल संचित करती हैं। इन बावलियों का संरक्षण इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे पुरानी विरासत, इतिहास, पर्यावरण और शहरों की जल-सुरक्षा को बड़े शहरों में प्रभावी रूप से जोड़ा जा सकता है।

पारंपरिक जल-स्थापत्य को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का एक सफल उदाहरण है जोधपुर के उमेद हेरिटेज हाउसिंग टाउनशिप में निर्मित *बिरखा बावड़ी* — जो थार मरुस्थल की सीमा पर स्थित जल-संकटग्रस्त शहर जोधपुर के लिए एक अनूठी पहल है। जोधपुर के वास्तुकार ए. मृदुल द्वारा डिज़ाइन की गई यह नई भूमिगत संरचना पारंपरिक बावड़ी के रूप में तैयार की गई है और 1.75 करोड़ लीटर से अधिक वर्षा जल संग्रहीत करने में सक्षम है। इस संरचना को स्थानीय बलुआ-पत्थर और कारीगरों की मदद से बनाया

बावड़ियाँ पहले लोगों के मिलने-जुलने का केंद्र हुआ करती थीं, जहाँ लोग पानी लेने के लिए इक्ट्ठा हुआ करते थे। ये हमें दिखाती हैं कि पुराने समय की इंजीनियरिंग किस तरह प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर काम करती थी।

गया है। इसमें नवीकरणीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया गया है और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग न्यूनतम रखा गया है। बिरखा बावड़ी सतत डिज़ाइन और पर्यावरण की सुरक्षा का अच्छा उदाहरण है।

महाराष्ट्र की बावड़ियों का मानचित्र और दस्तावेज़ बनाने के लिए रोहन काले ने एक स्वतंत्र निजी पहल आरंभ की है। यह पूरी तरह उनकी व्यक्तिगत कोशिश है। उनके प्रयासों में बावड़ियों की वास्तुकला और फोटोग्राफ़ी के माध्यम से दस्तावेज़ तैयार करना, सफाई अभियान चलाना, संरक्षण के उपाय लागू करना और पर्यटन को प्रोत्साहित करना शामिल है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र की बावड़ियों को पुनर्जीवित करना और जल संरक्षण के महत्व को उजागर करना है। अब तक उन्होंने महाराष्ट्र की हज़ारों बावड़ियों का दस्तावेज़ बनाया है।

रानी की वाव, जो गुजरात के पाटन शहर में स्थित है, को 22 जून 2014 को आधिकारिक रूप से यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। यह बावड़ी 11वीं शताब्दी के राजा भीमदेव प्रथम की स्मृति में बनवाई गई थी।

भारत में बावड़ियाँ आज भी बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे हमें पुराने समय में अपनाई गई स्थायी जल-प्रबंधन प्रणाली की याद दिलाती हैं। बावड़ियाँ पहले लोगों के मिलने-जुलने का केंद्र हुआ करती थीं, जहाँ लोग पानी लेने के लिए इक्ट्ठा हुआ करते थे। ये हमें दिखाती हैं कि पुराने समय की इंजीनियरिंग किस तरह प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर काम करती थी। आज जब हम जल-संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तब बावड़ियाँ हमें अपनी परंपराओं की याद दिलाती हैं। वे बताती हैं कि हमें अपनी विरासत को सँभालना चाहिए और पुरानी जलवायु प्रणाली का सम्मान करना चाहिए।

चंद्रशेखरपुरम् आंध्र प्रदेश में बावड़ी

इस लेख के चित्र जुड्डा जैन-नोयबाउर की प्रस्तुति से लिए गए हैं

विशेष लेख

ब्रह्मपुत्र के द्वीप: संस्कृति और प्राकृतिक परिवेश की जीवंत धरोहर

लेखक और चित्र
अभिषेक कुमार
सहायक निदेशक,
प्राकृतिक विरासत प्रभाग, इन्टैक

ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित उमानंदा द्वीप – एक सांस्कृतिक विरासत स्थल

परिचय

ब्रह्मपुत्र एशिया की उन महान नदियों में से है, जो अपनी प्रचंड गति और अवसाद से भरी धारा के लिए प्रसिद्ध है। यह नदी एक गर्म इलाके और घाटी से होकर बहती है, जहाँ *चर* और *चापोरी* कहलाने वाले असंख्य नदी-द्वीपों का जाल बुनता रहता है। इसकी धारा कई हिस्सों में बँटी रहती है जो पानी के बहाव और मिट्टी के जमाव के अनुसार बार-बार बदलती रहती है। इसी वजह से ये द्वीप लगातार बनते, टूटते और फिर नए रूप में दिखाई देते हैं। इन बदलावों से यहाँ उपजाऊ बाढ़ के मैदान और अलग-अलग तरह के प्राकृतिक आवास बनते हैं, जो एक नाजुक किन्तु जीवनदायी पर्यावरण प्रणाली को पनपने में मदद करते हैं।

इन द्वीपों के पर्यावरणीय और सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व को समझते हुए, ब्रह्मपुत्र बोर्ड (जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार) ने इन्टैक को ब्रह्मपुत्र नदी के लिए एक विस्तृत नदी द्वीप नीति तैयार करने का कार्य सौंपा है।

ब्रह्मपुत्र के नदी द्वीपों पर चरते हाथियों का झुंड — बदलती धारा से निर्मित ये द्वीप विविध वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करते हैं

विस्तृत मैदानी सर्वेक्षण, स्थानीय लोगों से संवाद, और जीआईएस आधारित मानचित्रण के माध्यम से इन्टैक इस परियोजना के तहत नदी-द्वीपों की पर्यावरणीय विशेषताओं तथा सांस्कृतिक महत्व का एक दस्तावेज़ तैयार करेगी। इसके अलावा, बाढ़ और कटाव से होने वाले नुकसान का पता लगाया जाएगा और इनके दीर्घकालीन संरक्षण के लिए उपाय सुझाए जाएँगे।

कार्य क्षेत्र और उद्देश्य

यह परियोजना भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के संपूर्ण प्रवाह को समेटे हुए है — अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियांग ज़िले से लेकर उस बिंदु तक जहाँ यह नदी बांग्लादेश में प्रवेश करती है। इसका उद्देश्य एक ऐसा वैज्ञानिक और नीतिगत ढांचा तैयार करना है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा और सतत आजीविका आजीविका – इन तीनों को एक-साथ शामिल किया जा सके।

विस्तृत मैदानी सर्वेक्षण, स्थानीय लोगों से संवाद, और जीआईएस आधारित मानचित्रण के माध्यम से इन्टैक इस परियोजना के तहत नदी-द्वीपों की पर्यावरणीय विशेषताओं तथा सांस्कृतिक महत्व का एक दस्तावेज़ तैयार करेगी। इसके अलावा, बाढ़ और कटाव से होने वाले नुकसान का पता लगाया जाएगा और इनके दीर्घकालीन संरक्षण के लिए उपाय सुझाए जाएँगे।

नदी द्वीपों का महत्व

ब्रह्मपुत्र नदी की कई धाराएँ मिलकर दुनिया की सबसे गतिशील द्वीप प्रणालियों में से एक का निर्माण करती हैं। नदी की मिट्टी बार-बार जमती और बदलती रहती है, जिससे उपजाऊ किन्तु नाज़ुक बाढ़ क्षेत्र द्वीपों को जन्म देते हैं। हर साल आने वाली बाढ़ और कटाव इन द्वीपों का आकार बदल देते हैं। इससे लोग विस्थापित भी होते हैं, लेकिन नई मिट्टी बनने से खेती, मछली पालन और आर्द्रभूमि की जैव विविधता को पोषण मिलता है।

द्वीप पर तेजी से उभरती बस्तियाँ उसके नाज़ुक पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है

यह द्वीप आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, माजुली दुनिया भर में असम की नव-वैष्णव परंपरा और सतत जीवन का प्रतीक माना जाता है। कई कम प्रसिद्ध द्वीपों में प्राचीन मंदिर, सत्र और पारंपरिक बस्तियाँ आज भी मौजूद हैं, जो इस नदी की घाटी के लोगों से गहरे जुड़ाव को दर्शाती हैं।

लेकिन हाल के वर्षों में कुछ चिंताजनक बदलाव देखने को मिले हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे शहरों के विस्तार के कारण लोग अब द्वीपों पर बसने लगे हैं, जिससे उनकी नाज़ुक प्रकृति और पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। धुबरी और आसपास के निचले इलाकों में कई द्वीप तेज़ी से शहरी रूप ले रहे हैं — जहाँ पहले अस्थायी बसावट होती थी, वहां अब स्थायी बस्तियाँ और ढाँचे बन रहे हैं। यह बदलाव धीरे-धीरे ऊपरी हिस्सों तक भी पहुँच रहा है। इसलिए सतत विकास के लिए एक स्पष्ट नीतिगत ढाँचा तैयार करना अब बेहद जरूरी हो गया है।

इसके अलावा, पानी के किनारे तक खेती बेरोकटोक की जा रही है, जिससे द्वीपों में तेज़ कटाव हो रहा है। रासायनिक खादों के इस्तेमाल से नदी का पानी धीरे-धीरे प्रदूषित हो रहा है। इससे भविष्य में जल-जीवों की विविधता पर खतरा पैदा हो सकता है। इसीलिए प्रस्तावित नीति में खेती से जुड़े ऐसे नियम शामिल किए जा रहे हैं, जो पर्यावरण-अनुकूल और परिस्थितियों के अनुकूल होने वाली खेती को बढ़ावा देंगे, ताकि इन नाज़ुक द्वीपों का प्राकृतिक संतुलन का ध्यान रखा जा सके।

प्रस्तावित नीति में खेती से जुड़े ऐसे नियम शामिल किए जा रहे हैं, जो पर्यावरण-अनुकूल और परिस्थितियों के अनुकूल होने वाली खेती को बढ़ावा देंगे, ताकि इन नाज़ुक द्वीपों के प्राकृतिक संतुलन का ध्यान रखा जा सके।

इसी तरह भूमि स्वामित्व और प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र का मुद्दा भी बहुत अहम है। नदी के बीच के कई द्वीप लगातार अपना आकार और स्थान बदलते रहते हैं, इसलिए वे ज़िलों या राजस्व सीमाओं में स्पष्ट रूप से दर्ज नहीं होते। इस अस्पष्टता के कारण अक्सर स्वामित्व को लेकर विवाद, कमजोर प्रशासन और द्वीपवासियों के लिए भूमि अधिकारों की कमी देखने को मिलती है। नई नीति का उद्देश्य इन संस्थागत कमियों को दूर करना है, ताकि एक स्पष्ट प्रशासनिक और कानूनी ढाँचा बनाया जा सके और इन बदलते हुए द्वीपों का प्रभावी और न्यायसंगत प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके।

नीति का उद्देश्य

प्रस्तावित नदी-द्वीप नीति का उद्देश्य इन द्वीपों की नाज़ुक प्रकृति को बचाना और इंसानी बस्तियों व पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना है। यह नीति कई तरीकों से इन बदलते हुए प्राकृतिक क्षेत्रों के पर्यावरण को बनाए रखने की कोशिश करती है, जैसे:

- जैव–विविधता का संरक्षण और प्राकृतिक आवासों की पुनर्स्थापना
- जलभराव और कटाव जैसी स्थितियों से निपटने के लिए ज़मीन का सही उपयोग करके पर्यावरणीय क्षमता बढ़ाना
- बिना रोक-टोक खेती और विकास गतिविधियों को नियंत्रित करना, ताकि प्राकृतिक आवास को नुकसान न पहुँचे
- संसाधनों का विवेकपूर्ण और स्थायी उपयोग सुनिश्चित करना और भूमि व जल से जुड़े नियम स्पष्ट करना
- विभिन्न विभागों और एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल बनाकर समग्र पारिस्थितिक प्रबंधन को मजबूत बनाना, ताकि प्रबंधन मज़बूत हो।

यह नीति वैज्ञानिक शोध, परंपरागत ज्ञान और लोगों की भागीदारी पर आधारित है। इसका उद्देश्य एक मज़बूत पर्यावरण और प्रशासनिक व्यवस्था बनाना है ताकि इन द्वीपों की प्रकृति लंबे समय तक सुरक्षित और टिकाऊ रह सके।

द्वीप पर बड़े पैमाने पर खेती करने से इसका प्राकृतिक पर्यावरण प्रभावित होता है

निष्कर्ष

ब्रह्मपुत्र नदी के लिए बनाई जा रही नदी-द्वीप नीति विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच सही संतुलन बनाने की एक महत्वपूर्ण पहल है। ये द्वीप, जो नदी के बदलते प्रवाह से बनते और बदलते रहते हैं, समृद्ध जैव–विविधता और पारंपरिक आजीविकाओं का आधार हैं। लेकिन बढ़ते शहरीकरण, अनियमित खेती और विकास कार्यों का दबाव इनके नाज़ुक संतुलन को ख़तरे में डाल रहा है।

यह नीति इन द्वीपों को पर्यावरण के लिहाज़ से संवेदनशील क्षेत्र घोषित करने की बात करती है, ताकि वे बाढ़ से बचाने वाले प्राकृतिक कवच की तरह काम कर सकें और वहाँ की वनस्पति-जीवों की विविधता बनी रहे। वैज्ञानिक जानकारी, स्थानीय लोगों के पारंपरिक ज्ञान और मज़बूत प्रशासन को एक साथ जोड़कर, यह नीति इन द्वीपों के पर्यावरण और संस्कृति दोनों को सुरक्षित रखना चाहती है।

इस पहल के माध्यम से इन्टैक और ब्रह्मपुत्र बोर्ड एक ऐसा उदाहरण स्थापित करना चाहते हैं जहाँ विकास प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर आगे बढ़े, ताकि ये अनोखे नदी-द्वीप आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ, सुरक्षित और लंबे समय तक बने रह सकें।

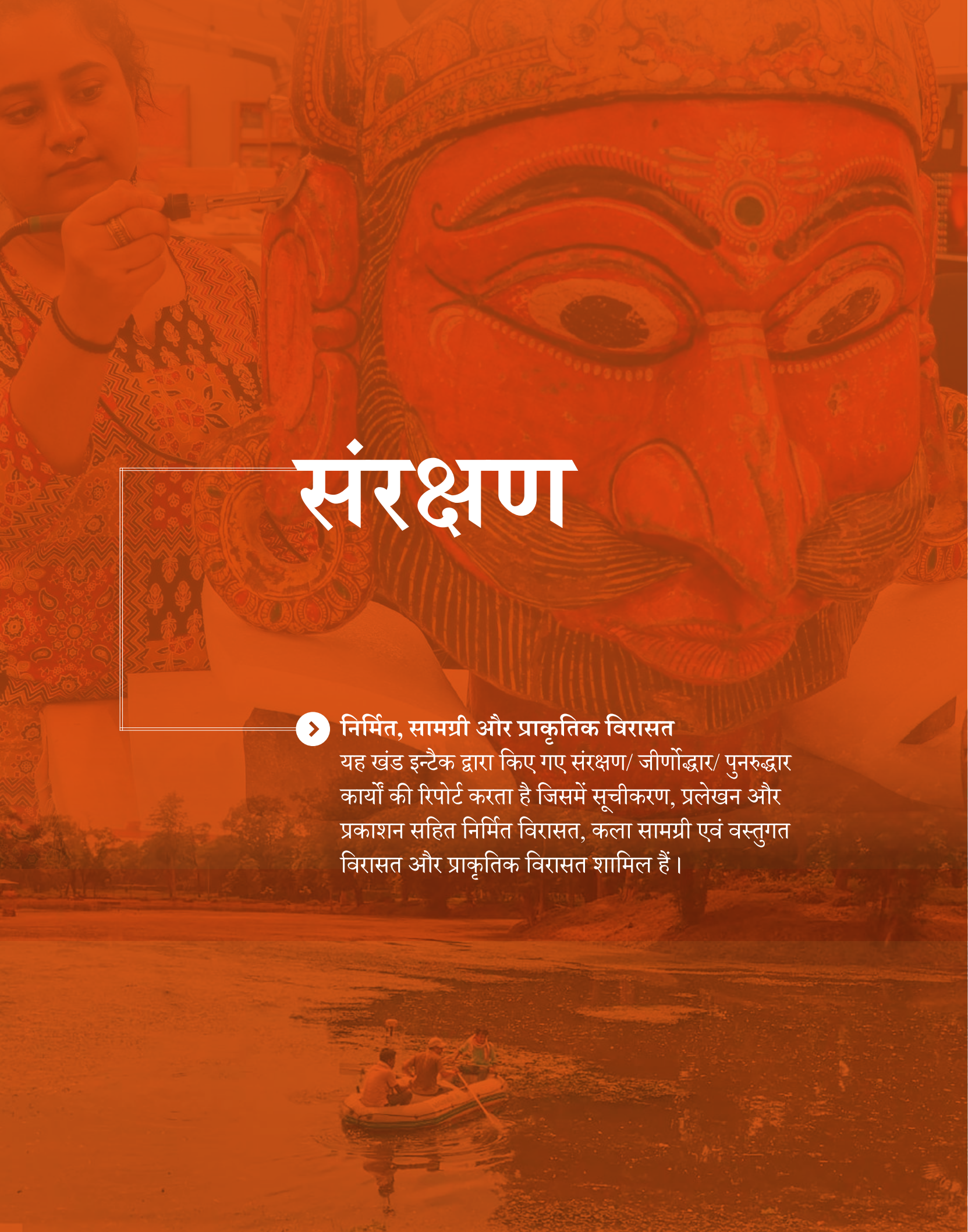

संरक्षण

निर्मित, सामग्री और प्राकृतिक विरासत

यह खंड इन्टैक द्वारा किए गए संरक्षण/ जीर्णोद्धार/ पुनरुद्धार कार्यों की रिपोर्ट करता है जिसमें सूचीकरण, प्रलेखन और प्रकाशन सहित निर्मित विरासत, कला सामग्री एवं वस्तुगत विरासत और प्राकृतिक विरासत शामिल हैं।

वास्तुकला विरासत प्रभाग

मुंबई में जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ) भवन, डाक विभाग का संरक्षण

जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ), मुंबई के संरक्षण का तीसरा चरण पूरा हो गया है। यह चरण इस ऐतिहासिक ग्रेड-I विरासत भवन के संरक्षण में एक और बड़ा कदम है। अब आखिरी चरण में मुख्य भवन के बड़े गुंबद के नीचे बने गोलाकार भवन, उसके उत्तर में मौजूद मेघदूत भवन, अन्य पुराने सहायक ढाँचों और आसपास के परिसर को ठीक करने और सुधारने का काम किया जाएगा। इस अंतिम चरण का काम जल्द शुरू होने की उम्मीद है।

(बाएँ से दाएँ) कमलनयन बजाज आर्ट गैलरी, मुंबई में श्री शैलेश गोरे, साइट इंजीनियर; श्री अमिताभ सिंह, मुख्य डाकपाल, महाराष्ट्र सर्कल; श्री अशोक सिंह ठाकुर, इन्टैक अध्यक्ष; सुश्री कात्यायनी अग्रवाल, सदस्य, इन्टैक शासी परिषद्

पुनरुद्धार के बाद सीपीएमजी चैंबर

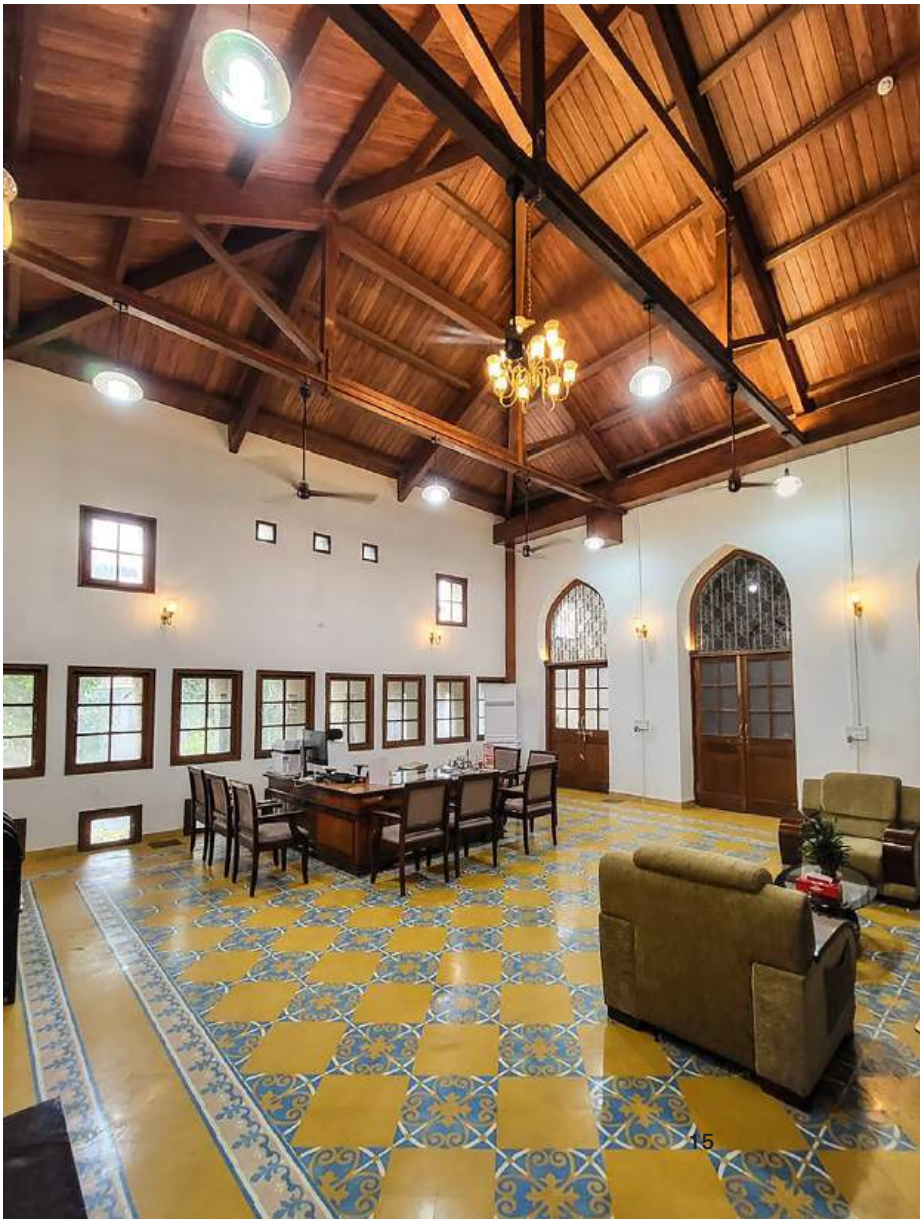

इन्टैक मुंबई अध्याय ने 5 अगस्त को कमलनयन बजाज आर्ट गैलरी, मुंबई में "*कोंटिन्युम: इन्टैक्स कमिटमेंट टू द फ्यूचर ऑफ द पॉस्ट*" नामक एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र सर्कल के मुख्य डाकपाल श्री अमिताभ सिंह थे, और सम्मानित अतिथि इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर थे। यह प्रदर्शनी संरक्षण के चल रहे प्रयासों को दर्शाती है और भारत की वास्तुकला विरासत को बचाने के लिए इन्टैक की निरंतर प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

गोल डाक खाना (नई दिल्ली जीपीओ)

पहले जिस चौराहे को अलेक्ज़ेंड्रा प्लेस कहा जाता था, वहीं गोल डाक खाना स्थित है। यह क्षेत्र एडविन लुटियन्स की नई दिल्ली की मूल योजना का हिस्सा था। जब राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाई गई, तो इस इलाके में दफ्तरों और लोगों के लिए डाक सुविधा की ज़रूरत थी। इसलिए 1931 में पीडब्ल्यूडी के मुख्य वास्तुकार रॉबर्ट टॉर रसेल ने इस पोस्ट ऑफिस को गोल चौराहे के अनुसार गोल आकार में

गोल डाक खाना, निदेशक का आवासीय ब्लॉक

गोल डाक खान के ब्लॉक 10 की छत की मरम्मत और वॉटरप्रूफिंग

ब्लॉक 10 के स्लैब का संरचनात्मक परीक्षण

डिज़ाइन किया। उस समय इसे वाइसरॉय कैंप पोस्ट ऑफिस कहा जाता था, और चूंकि वहाँ टेलीफ़ोन उपलब्ध थे, इसलिए पोस्ट ऑफिस जाना एक तरह की सामाजिक गतिविधि भी था — लोग वहीं मिलने का समय तय करते थे।

लगभग 9000 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला यह भवन बाहर से एक गोल इमारत जैसा दिखता है, लेकिन अंदर इसमें 12 अलग-अलग ब्लॉक हैं, जिनमें एक केंद्रीय ब्लॉक भी शामिल है। दक्षिण दिशा से मुख्य प्रवेश जनता के लिए है, जबकि उत्तर दिशा में कर्मचारियों के रहने के क्वार्टर हैं। पूर्वोत्तर दिशा से एक संकरी सड़क, एक गोल मेहराब से होकर अंदर जाती है, जहाँ से डाक-गाड़ियाँ आती-जाती थीं।

भवन का ढांचा मज़बूत है, लेकिन इसमें छोटी-मोटी समस्याएँ हैं। समय के साथ बढ़ती जरूरतों के कारण इसमें कई बदलाव और अतिरिक्त निर्माण किए गए। 29 नवंबर 2022 को डाक विभाग (दिल्ली सर्कल) ने इन्टैक के साथ एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। पहली बार इस भवन का विस्तृत दस्तावेज बनाया गया और स्थिति का आकलन किया गया है। इन्टैक की योजना में भवन को उसका मूल स्वरूप प्रदान करना, अंदरूनी जगहों का बेहतर उपयोग करना, खोए हुए वास्तु तत्वों को बहाल करना और सभी सेवाओं को नया करना शामिल है, ताकि यह विरासत भवन लंबे समय तक सुरक्षित रह सके। वर्तमान में दो ब्लॉकों में काम चल रहा है, जबकि बाकी हिस्सों में पोस्ट ऑफिस की गतिविधियाँ जारी हैं।

इलाहाबाद हाई कोर्ट, प्रयागराज

इलाहाबाद हाई कोर्ट 1914-1916 के बीच बना था। इसे वास्तुकार फ्रैंक लिशमैन ने डिज़ाइन किया था। यह 28 एकड़ ज़मीन पर फैला है और इसका मुख्य हिस्सा लगभग 10,000 वर्गमीटर का है। समय के साथ इसमें कई बदलाव और अतिरिक्त निर्माण किए गए। जून 2017 में हाई कोर्ट ने इन्टैक से भवन के संरक्षण के लिए संपर्क किया और एक समझौता किया। 2018 में भवन की मरम्मत के लिए एक विस्तृत रिपोर्ट बनाई गई, जिसे 2020 में हाई कोर्ट बिल्डिंग कमेटी और पीडब्ल्यूडी ने मंज़ूरी दी। अगस्त 2024 में राज्य सरकार से वित्तीय मंज़ूरी मिली। इसके बाद, भवन की स्थिति का फिर से आकलन किया गया और यूपीपीडब्ल्यूडी ने मरम्मत का टेंडर जारी किया। हाई कोर्ट के कामकाज में कोई बाधा न आए, इसलिए मरम्मत का काम 7 हिस्सों में किया जाएगा। हर बार एक हिस्से को मरम्मत के लिए दिया जाएगा और बाकी भवन में काम चलता रहेगा। अभी यह परियोजना योजना बनाने और तैयारी के चरण में है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट, प्रयागराज

सेनेट हॉल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सेनेट हॉल के पुनरुद्धार के लिए एक समझौता-ज्ञापन पर 22 अगस्त 2024 को हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता-ज्ञापन इन्टैक द्वारा मार्च 2022 में जमा की गई प्रारंभिक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) के आधार पर किया गया। सेनेट हॉल का भवन इलाहाबाद विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो देश के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है। भारतीय राजनीति में इसकी अहम भूमिका के साथ-साथ यह इमारत वास्तुकला की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय की इमारतों का डिज़ाइन और निर्माण भारतीय-मुस्लिम वास्तुकला शैली पर आधारित था। इसकी बाहरी दीवारों पर गुंबद, छज्जे और स्तंभ जैसे तत्व दिखाई देते हैं, जबकि अंदर की जगहों की योजना पर यूरोपीय डिज़ाइन का प्रभाव है।

घंटाघर,
सेनेट हॉल, प्रयागराज

सेनेट हॉल, प्रयागराज

सेनेट हॉल और इसके पास की इमारतें कर्नल सर स्विन्टन जैकब ने डिजाइन की थीं। इसका शिलान्यास 17 जनवरी 1910 को लेफ़्टिनेंट गवर्नर सर जॉन प्रेस्कॉट ह्यूएट ने किया था। इस भवन में एक ऊँचा घंटाघर है, जिसमें 1912 में लगाई गई एक मूल यांत्रिक घड़ी भी है, जिसे जे.जी. बेक्टलर सन एंड कंपनी, इलाहाबाद ने बनाया था।

समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर के बाद संशोधित अनुमान सीपीडब्ल्यूडी को समीक्षा के लिए भेज दिए गए हैं। इस परियोजना के लिए सीपीडब्ल्यूडी द्वारा जल्द ही टेंडर आमंत्रित किया जाएगा।

दक्षिण रेलवे मुख्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु के न्यू जनरल ऑफिस (एनजीओ) भवन का संरक्षण

100 साल पुराने एनजीओ भवन, जो दक्षिण रेलवे का मुख्यालय है, के संरक्षण के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जा रही है। यह भारतीय-मुस्लिम वास्तुकला शैली का भवन अपने निर्माण काल का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें दीवारें चूने की चिनाई से बनाई गई थीं और छत सीमेंट कंक्रीट से निर्मित की गई थी। भवन के बीचोंबीच एक बड़ा गुंबद है और दोनों ओर के हिस्सों में कमरे बने हैं। पूर्व और

भवन के कोने वाला गुंबद

भवन के ऊपर बने टावर

पश्चिम दिशा की दीवारों पर आठ कोने वाले टावर हैं, जिनके ऊपर छोटे गुंबद बने हैं। प्रारंभिक निरीक्षण रिपोर्ट मई 2025 में प्रस्तुत की गई थी। इसके बाद एएच टीम अक्तूबर 2025 में फिर से साइट पर गई, ताकि विस्तृत दस्तावेज बनाकर मूल्यांकन किया जा सके और डीपीआर तैयार की जा सके।

किलकारी बिहार बाल भवन, मुज़फ़्फ़रपुर

मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार का किलकारी भवन बच्चों को पाठ्यक्रम से जुड़ी अलग-अलग गतिविधियों का प्रशिक्षण भी देता है। यह ज़िला स्कूल के पास, लगभग 100 साल पुराने भवन से चल रहा है। परिसर में तीन और पुरानी इमारतें हैं, जो भी करीब 100 साल पुरानी हैं और अब जर्जर हालत में हैं। बिहार बाल भवन (शिक्षा विभाग, बिहार सरकार) ने इन तीन पुरानी इमारतों की मरम्मत के लिए इन्टैक से मदद मांगी और जिसके लिए एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। पहले चरण में गार्ड रूम की मरम्मत की गई, जो अब पूरी हो चुकी है। अगले चरण में रसोई ब्लॉक की मरम्मत होगी, जिसकी शुरुआत जल्द ही होने वाली है।

उज्जयंत पैलेस संग्रहालय, अगरतला, त्रिपुरा

पर्यटन निदेशालय, त्रिपुरा सरकार ने उज्जयंत पैलेस संग्रहालय के उन्नयन और डिजिटलीकरण के लिए इन्टैक से सहायता मांगी है। उज्जयंत पैलेस, जिसे 1901 में महाराजा राधा किशोर माणिक्य ने बनवाया था, त्रिपुरा की एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारत है। वर्तमान में यहाँ त्रिपुरा राज्य संग्रहालय स्थित है,

पुनरुद्धार से पहले – पूर्वी हिस्सा

पुनरुद्धार के दौरान

पुनरुद्धार के बाद

पुनरुद्धार से पहले – उत्तरी हिस्सा

पुनरुद्धार के दौरान

पुनरुद्धार के बाद

उज्जयन्ता महल के सामने का हिस्सा

महल के गुंबद का निरीक्षण करती एएच टीम

दरबार हॉल

जहाँ राज्य की सांस्कृतिक, पुरातात्विक और जनजातीय विरासत प्रदर्शित की जाती है। इन्टैक टीम ने 25 से 27 अगस्त 2025 के बीच संग्रहालय का प्रारंभिक सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में गैलरी की व्यवस्था, ढाँचा, संग्रह की प्रस्तुति, प्रकाश व्यवस्था, आगंतुकों की आवाजाही और डिजिटल सुविधाओं जैसी ज़रूरतों का आकलन किया गया। सर्वेक्षण के बाद पर्यटन निदेशालय को समझौता-ज्ञापन का एक मसौदा भेज दिया गया है। इसके जल्द ही हस्ताक्षर होने की उम्मीद है, जिसके बाद विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

सेंट मैरी चर्च, अजमेर, राजस्थान

सेंट मैरी चर्च, अजमेर की कोर कमेटी और इन्टैक के बीच 1 अगस्त 2025 को एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसके तहत चर्च का पुनरुद्धार किया जाएगा, जिसकी शुरुआत चैपल वाले हिस्से से की गई। अप्रैल 2024 में चर्च में आग लगने से इसकी छत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। मई 2024 में इन्टैक टीम द्वारा किए गए शुरुआती सर्वेक्षण के आधार पर काम चरणबद्ध ढंग से करने की योजना बनाई गई।

चैपल की छत का मरम्मत कार्य 2 अक्तूबर 2025 को शुरू हुआ और अभी चल रहा है। जाँच में पता चला कि ज़्यादातर लकड़ी के हिस्से, खासकर ट्रस, खराब हो गए थे और उनमें दीमक लगी हुई थी। जो हिस्से अच्छी हालत में मिले, उन्हें वहीं पर ठीक कर दिया गया। जो हिस्से खराब थे, उन्हें बेहतरीन किस्म की पकी हुई लकड़ी – मलेशियन साल – से बदल दिया गया।

लकड़ी के हिस्सों/ट्रस को लगाना चुनौतीपूर्ण था, जिसे बूम लिफ्ट और चेन पुली की मदद से पूरा किया गया। लकड़ी की छत बनने के बाद, उस पर मूल डिज़ाइन के अनुसार पत्थर की स्लेट टाइलें लगाई जाएँगी।

पीडी और एएच ने 12 नवंबर 2025 को चर्च का दौरा किया और चल रहे काम का निरीक्षण किया

लकड़ी के मेहराबदार ढाँचे की फिटिंग

आग लगने के बाद चर्च का ड्रोन दृश्य

छत बनाने के लिए लकड़ी की पट्टियाँ तैयार करते हुए

ड्राफ्ट हेरिटेज बाय-लॉज़

इन्टैक का एएच प्रभाग पूरे देश में संरक्षित स्मारकों के लिए ड्राफ्ट हेरिटेज बाय-लॉज़ (एचबीएल) बना रहा है। अब तक 21 संरक्षित स्मारकों के ड्राफ्ट एचबीएल राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (एनएमए) को भेजे जा चुके हैं। इनमें से 16 को अंतिम रूप दिया जा चुका है और 6 संसद में प्रस्तुत किए गए हैं। अभी केरल के तीन स्मारकों और छत्तीसगढ़ के एक स्मारक के लिए ड्राफ्ट एचबीएल तैयार किए जा रहे हैं।

इन्टैक टीम ने 14-16 अक्तूबर 2025 तक ड्राफ्ट हेरिटेज बाय-लॉज़ तैयार करने के लिए केरल का दौरा किया

यमुना सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण

यमुना नदी के किनारे हो रहे दस्तावेज़ीकरण कार्य के तहत सर्वेक्षण अब दिल्ली और उत्तर प्रदेश के छह ज़िलों — सहारनपुर, शामली, बागपत, गाज़ियाबाद, अलीगढ़ और गौतम बुद्ध नगर — तक पहुँच चुका है।

दिल्ली में, यमुना के 5 कि.मी. अध्ययन क्षेत्र में कुल 1,526 विरासत स्थल पाए गए हैं। शाहजहानाबाद की सूची में दर्ज कई विरासत इमारतें अब टूट चुकी हैं या टूटने के कगार पर हैं। इसके अलावा, कई आर्ट डेको शैली की इमारतों को भी इस सूची में शामिल किया गया है।

उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद, गौतम बुद्ध नगर और अलीगढ़ ज़िलों में कम विरासत स्थल मिले क्योंकि इनके पुराने ऐतिहासिक क्षेत्र यमुना से दूर हैं। अध्ययन क्षेत्र में केवल 10 निर्मित विरासत स्थल ही पाए गए। ऐसे कुछ प्रमुख उदाहरणों में ग़ाज़ियाबाद की मुगलकालीन तीन छतरी, नोएडा गोल्फ कोर्स में 1803 ई. के ब्रिटिश–मराठा युद्ध की याद में बना विजय स्तंभ, और गौतम बुद्ध नगर के बिसरख गाँव का रावण मंदिर, जहाँ रावण को एक विद्वान के रूप में पूजा जाता है, शामिल हैं।

सहारनपुर, शामली और बागपत में कुल मिलकर 65 विरासत संरचनाएँ पाई गईं। सहारनपुर ज़िले में कई बड़े मुगलकालीन ढाँचे हैं। उदाहरण के लिए — लखनौती गाँव, जहाँ अमीर मार्दा 1555 ईस्वी में हुमायूँ के सत्ता में लौटने के बाद बसे, और उनके पुत्र मिर्ज़ा हमज़ा अली ने यहाँ लखनौती किला बनाया। गाँव में हिंगो बेगम इमामबाड़ा, शिया जामा मस्जिद

तुमन, छत्तीसगढ़ में प्राचीन मंदिर के अवशेष

और कई अज्ञात क़ब्रें भी हैं। इसके अलावा, एएसआई संरक्षित बादशाही महल और मस्जिद (बादशाही बाग परिसर) भी यहाँ के इतिहास को समृद्ध बनाते हैं, जो कभी राजकीय विश्रामगृह और शिकारगाह थे। शामली में कैराना का नवाब तालाब, जिसे जहाँगीर के मंत्री नवाब मुकर्रब ख़ान ने बनवाया था, नौलखा बाग के भीतर स्थित है, जहाँ पहले नौ लाख फलदार पेड़ थे। तुज़क-ए-जहाँगीरी में इसका वर्णन मिलता है। इस तालाब में यमुना नदी से पानी आता था। बागपत, जिसे पहले व्याघ्रप्रस्थ कहा जाता था और 1997 ईस्वी में अलग ज़िला बना, यहाँ काठा गाँव की शिकवा हवेली (दिल्ली सल्तनत काल की) मौजूद है, जो क़ाज़ियों के निवास और अदालत के रूप में इस्तेमाल होती थी। शहर में एक और हवेली है — नवाब कोकब हमीद की हवेली, जिसे लगभग 200 वर्ष पहले ईरानी कारीगरों ने बनाया था। यह बाद में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बनी और ब्रिटिश अधिकारियों तथा जिम कॉर्बेट जैसे शिकारी भी यहाँ आते थे।

अज्ञात मकबरा, लखनौती गाँव, सहारनपुर

अज्ञात मकबरा, कैराना गाँव, शामली

मकनपुर छतरी, गाज़ियाबाद

कोटा हाउस, दिल्ली

धुन धाई गाँव, तरन तारन, पंजाब का विरासत कुआँ

धुन धाई वाला गाँव में नाइक लाल सिंह की स्मृति के पास एक छोटा-सा लाखोरी ईंटों का पुराना कुआँ है, जो अपने में इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय समेटे हुए है। नाइक लाल सिंह, जो इसी गाँव में पैदा हुए थे, 12 सितंबर 1897 को हुए प्रसिद्ध सरागढ़ी युद्ध में सेकंड-इन-कमांड थे। इस युद्ध में हवलदार ईशर सिंह के नेतृत्व में 36वीं सिख रेजिमेंट (अब 4 सिख) के 21 वीर जवानों ने 10,000 से अधिक अफ़ग़ान कबीलाइयों से अंतिम सांस तक लड़ते हुए असाधारण वीरता दिखाई। सभी 21 सैनिकों को उनकी बहादुरी के लिए इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट दिया गया।

समय के साथ नाइक लाल सिंह से जुड़ा यह कुआँ उपेक्षा के कारण जीर्ण-शीर्ण हालत में पहुँच गया। इसके संरक्षण की पहल इन्टैक तरनतारन अध्याय और इन्टैक पंजाब राज्य अध्याय ने की। वास्तुकला विरासत प्रभाग ने अपने उत्साही परियोजना कार्यक्रम के तहत जुलाई–अगस्त 2025 में इसके संरक्षण का काम किया, जिसमें मूल लाखोरी ईंटों को पक्का करना, साफ-सफाई और जंगली वनस्पति हटाना शामिल था।

कुएँ के संरक्षण के दौरान

जीर्णोद्धार किए गए कुएँ का उद्घाटन 15 सितंबर 2025 को किया गया। अब यह कुआँ एक बार फिर से नाइक लाल सिंह और सरागढ़ी के वीर सैनिकों की शौर्य गाथा की याद दिलाता है। इस अवसर पर 7 इंडियन इन्फेंट्री डिवीज़न के जीओसी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, साथ ही इन्टैक पंजाब अध्याय के राज्य संयोजक भी मौजूद थे।

कुएँ के संरक्षण के दौरान

उद्घाटन पट्टिका

उद्घाटन दिवस

इन्टैक सूचीकरण प्रकोष्ठ

पूर्ण सूचीकरण

जुंगकोर (स्टोड), लद्दाख का सूचीकरण

लद्दाख श्रृंखला की छठी और अंतिम पुस्तक 'हिस्टोरिकल साइट्स ऑफ सेंट्रल लद्दाख (जुंगकोर)' है। जुंगकोर लद्दाख का मध्य हिस्सा है, जो उत्तर-पश्चिम में शम, उत्तर में नुब्रा, पूर्व में चांगथांग और दक्षिण में ज़ांस्कर के बीच स्थित है। लद्दाख का सबसे छोटा क्षेत्र होने के बावजूद, जुंगकोर में किलों और दुर्गों की संख्या सबसे ज़्यादा है। किलेबंदियों के अलावा, डॉ. क्वेंटिन डेवर्स द्वारा किए गए प्रारंभिक सर्वेक्षण में कई शिलाचित्र, छोटेन (चोर्टेन), बौद्ध नक्काशियाँ, मंदिर, मठ और चित्रित गुफाएँ भी पहचानी और सूचीबद्ध की गई हैं। इस पुस्तक में कुल 555 स्थलों/स्मारकों की पहचान की गई है, जिनमें से 313 पहले उपलब्ध साहित्य में दर्ज नहीं थे। इस सूची की अभी समीक्षा की जा रही है और यह जल्द ही प्रकाशित की जाएगी।

चल रहा सूचीकरण

वर्तमान में जिन क्षेत्रों का सूचीकरण किया जा रहा है, उनमें भरूच (गुजरात), फ़ैज़ाबाद (उत्तर प्रदेश), बुरहानपुर (मध्य प्रदेश), कंड़ी सबडिविजन, जबलपुर शहर (मध्य प्रदेश), राजपीपला (गुजरात), दक्षिण दिनाजपुर (पश्चिम बंगाल) और त्रिशूर (केरल) शामिल हैं।

प्रसार गतिविधियाँ

इन्टैक विरासत डेटाबेस

"इन्टैक विरासत डेटाबेस" पहल के तहत हाल की कई विरासत सूचियों को सफलतापूर्वक एक ऑनलाइन, नक्शे वाले प्लेटफ़ॉर्म से जोड़ा दिया गया है। अब तक 9,250 से अधिक विरासत स्थलों की जानकारी — जो विस्तृत सर्वेक्षणों से प्राप्त हुई है — डेटाबेस पर अपलोड की जा चुकी है। यह डेटाबेस आम जनता के लिए इन्टैक की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सहायक स्रोत डेटाबेस

एक अन्य डेटाबेस तैयार किया जा रहा है, जिसमें पूरे देश के विरासत स्थलों की जानकारी विभिन्न सहायक स्रोतों से एकत्र की जा रही है। एएसआई और राज्य

माथो गोंपा, माथो, लेह

पुणे, नागपुर, नासिक, सोलापुर और अमरावती अध्याय के साथ आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र की एक झलक

संरक्षित स्मारकों की जानकारी अपलोड की जा रही है और अब तक 1,925 से अधिक प्रविष्टियाँ जोड़ी जा चुकी हैं। विभिन्न राज्यों के विशेषज्ञों और संगठनों को सहयोग के लिए जोड़ा जा रहा है। 21 अगस्त 2025 को पुणे, नागपुर, नासिक, सोलापुर और अमरावती अध्यायों के सदस्यों के लिए एक ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया, ताकि वे इस डेटाबेस में योगदान दे सकें। सभी इन्टैक अध्यायों से इस पहल में सक्रिय भागीदारी का अनुरोध किया गया है।

डीआईटी विश्वविद्यालय, देहरादून में क्षमता निर्माण कार्यशाला

देहरादून के डीआईटी विश्वविद्यालय के चुने हुए आर्किटेक्चर छात्रों के लिए एक ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य उन्हें देहरादून विरासत सूचीकरण का कार्य करने के लिए आवश्यक कौशल देना था। सत्र में आर्कजीआईएस सर्वे 123 ऐप का उपयोग करके क्षेत्रीय सर्वेक्षण करने पर जोर दिया गया। यह सूचीकरण कार्य जल्द ही शुरू होने की उम्मीद है। सत्र में देहरादून, कोटद्वार और मसूरी अध्यायों के सदस्य भी शामिल हुए।

नए इन्टैक सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला

सूचीकरण प्रकोष्ठ की टीम ने 7 और 8 अक्तूबर 2025 को नए इन्टैक सदस्यों के लिए आयोजित क्षमता निर्माण कार्यशाला में भाग लिया। इसमें प्रतिभागियों को "सर्वे123" मोबाइल ऐप का उपयोग करके विरासत संपत्तियों की तत्काल सूची बनाना सिखाया गया। प्रतिभागियों को दो समूहों में बाँटकर लोधी गार्डन का क्षेत्रीय दौरा कराया गया, जहाँ उन्होंने ऐप का उपयोग करके अभ्यास किया। इस क्षेत्रीय दौरे में श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष इन्टैक भी उपस्थित रहे।

देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून के छात्रों के लिए क्षेत्रीय दौरा

लगभग 40 आर्किटेक्चर छात्र 24 सितंबर 2025 को इन्टैक आए और उन्हें लोधी गार्डन का क्षेत्रीय दौरा कराया गया। इस दौरान छात्रों को लोधी कालीन स्मारकों की वास्तुशिल्पीय विशेषताओं की जानकारी दी गई।

लोधी गार्डन में तत्काल सूची बनाने के क्षेत्रीय दौरे पर इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और प्रतिभागी

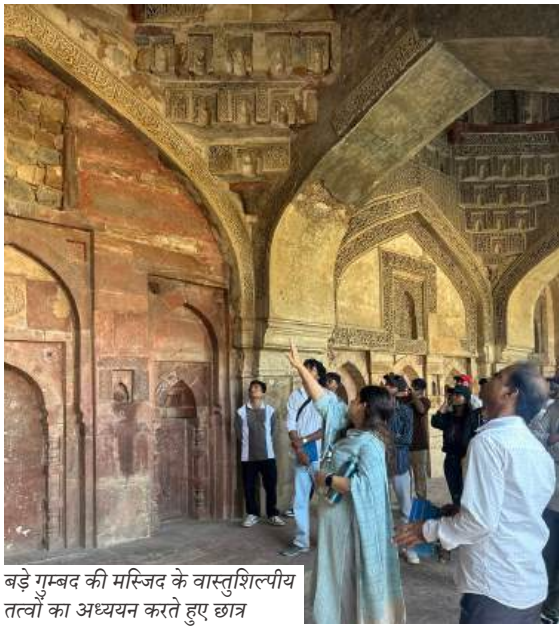

बड़े गुम्बद की मस्जिद के वास्तुशिल्पीय तत्वों का अध्ययन करते हुए छात्र

कला सामग्री और वस्तुगत विरासत प्रभाग/ इन्टैक संरक्षण संस्थान

भित्ति चित्रों की निर्देशिका (डब्ल्यूपीडी) कार्यक्रम

सिहोर दरबारगढ़, भावनगर जिला, गुजरात: सिहोर दरबारगढ़ का निर्माण 17वीं सदी में हुआ था, जब सिहोर के रावल विसोजी सरतनजी के संरक्षण में यह भवन बनवाया गया। दरबारगढ़ गुजरात के शासकों के किले जैसी पारंपरिक शैली को दर्शाता है। सिहोर का दरबारगढ़ दो मंज़िला है और इसमें एक ऊँचा प्रवेश द्वार है, जिस तक सीढ़ियों के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। इस मेहराबदार प्रवेश द्वार में एक छोटा अंदरूनी गलियारा और दो बुर्ज हैं — एक दक्षिण में और दूसरा उत्तर में। दक्षिणी बुर्ज द्वार की छत तक जाता है, जहाँ एक छोटा कक्ष है, जिसकी छत पिरामिड जैसी है। भवन की बाहरी दीवारों में सुंदर लकड़ी के स्तंभ और बारीक नक्काशी वाले ब्रैकेट बने हैं। बालकनी की रेलिंग को मेहराबदार, नक्काशीदार पैनलों से सजाया गया है।

प्रदीप ज़ावेरी के अनुसार, इन कमरों की भित्ति चित्रकला ठाकोर वखतसिंहजी (1772-1818) द्वारा 1793 में अपनी विजयों को यादगार बनाने के लिए बनवाई गई थीं। चित्रकाला में वखतसिंहजी का चितल राज्य के साथ हुए युद्ध का दृश्य दिखाया गया है। इसके लिए कच्छ से पारंपरिक कामांगर चित्रकारों को बुलाया गया था और युद्ध समाप्त होने के बाद ये चित्र बनाए गए। चित्रों में वखतसिंहजी, उनके सेनापति और सैनिक दिखाए गए हैं।

वर्तमान में यह संरचना भावनगर की शाही परिवार के स्वामित्व में है। हालांकि, इसमें कई तरह की खराबियों के निशान दिखाई देते हैं, जैसे प्लास्टर का झड़ना, दीवारों पर घास-फूस का उगना और फफूंदी लगना, जो इसके क्षरण का कारण बन रहे हैं।

सिहोर दरबारगढ़ की पहली और दूसरी मंजिल

ठाकोर वखतसिंहजी अपनी घोड़ी 'सिहुन' पर सवार होकर विजय जुलूस में भाग लेते हुए

कूच करती सेना

चूना अनुसंधान एवं परीक्षण केंद्र (एलआरटीसी)

लखनऊ में चूना अनुसंधान एवं परीक्षण केंद्र (एलआरटीसी) द्वारा एक तीन दिवसीय परिचयात्मक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऐतिहासिक भवनों की स्थिति का मूल्यांकन करना और संरक्षण के लिए पारंपरिक निर्माण सामग्री की पहचान करना था। यह कार्यक्रम उ.प्र. राज्य पुरातत्व विभाग, लखनऊ के सहयोग से आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम 24 से 26 सितंबर 2025 तक आयोजित किया गया। इसमें 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें उ.प्र. राज्य पुरातत्व विभाग, लखनऊ के कर्मचारी और लखनऊ विश्वविद्यालय तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पुरातत्व, मानवशास्त्र और संरक्षण विभाग के छात्र शामिल थे। इस परिचयात्मक कार्यक्रम का उद्देश्य संरक्षण विशेषज्ञों और विरासत में रुचि रखने वाले लोगों को यह सिखाना था कि ऐतिहासिक भवनों की स्थिति का मूल्यांकन कैसे किया जाए और पारंपरिक निर्माण सामग्री, विशेषकर चूने वाले गारे का अध्ययन कैसे किया जाए। इसमें उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव दोनों दिए गए।

आईसीआई लखनऊ के निदेशक और चूना परीक्षण एवं अनुसंधान केंद्र के कर्मचारी प्रतिभागियों को व्याख्यान और प्रदर्शन देते हुए

डॉ. आफताब हुसैन, अधीक्षक पुरातत्वविद्, एएसआई, उ.प्र. सर्कल, प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए

इस कार्यशाला में 100 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया

डिनो लाइट द्वारा वस्तुओं का निरीक्षण करते प्रतिभागी

कौशल विकास/ क्षमता निर्माण कार्यक्रम – प्रशिक्षण/ कार्यशालाएँ

भारतीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अध्ययन संघ (आईएएससी) के वार्षिक सम्मेलन में निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए:

- श्री नीलाभ सिन्हा, प्रधान निदेशक, एएंडएमएच प्रभाग, और श्री नितिन कुमार, निदेशक, आईसीआई बैंगलोर ने *"अंतर को पाटना: उत्तर-पूर्व भारत में कला संरक्षण अवसंरचना और शिक्षा में चुनौतियाँ और अवसर"* विषय पर एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। यह शोध-पत्र पूर्वोत्तर भारत में कला संरक्षण से जुड़ी ढांचागत सुविधाओं और शिक्षा के क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों और अवसरों पर केंद्रित था।
- मो. ग़ालिब, वरिष्ठ संरक्षक, दिल्ली ने *"कम लागत में कलाकृतियों का संरक्षण और एक संग्रहालय का विकास*: रामकृष्ण कुटीर, अल्मोड़ा में तूरियनंद महाराज जी की वस्तुओं के विकास और प्रदर्शनी पर एक केस-स्टडी" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।
- सुश्री वेज़ोतोलु वेडियो, सहायक संरक्षक, आईसीआई दिल्ली ने *"थंगका चित्रकला का संरक्षण और सामग्री विश्लेषण: एक व्यापक उपचार दृष्टिकोण"* विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

'चित्रकला को लंबे समय तक सुरक्षित रखने और समय के साथ होने वाले बदलावों की यात्रा' विषय पर एक सम्मेलन, रिज़्क्सम्यूजियम, **एम्स्टर्डम में 24 अक्तूबर 2025** को आयोजित किया गया। इसमें हमारा वैज्ञानिक शोध पत्र **"मूल रंगों को उजागर करना: भारतीय लघुचित्र चित्रकला में लेड पिगमेंट के क्षरण का बहु-विश्लेषणात्मक अध्ययन"** प्रस्तुत किया गया।

पत्थर की वस्तुओं और ऐतिहासिक इमारतों की सफाई पर 3 दिवसीय कार्यशाला: इन्टैक संरक्षण संस्थान (आईसीआई), नई दिल्ली और भोपाल अध्याय ने भोपाल (मध्य प्रदेश) में पुरातत्व, अभिलेखागार और संग्रहालय विभाग के सहयोग से 5 से 7 अगस्त 2025 तक भोपाल राज्य संग्रहालय में पत्थर की वस्तुओं और ऐतिहासिक इमारतों की सफाई पर एक कार्यशाला आयोजित की।

इन्टैक संरक्षण संस्थान (आईसीआई),नई दिल्ली के विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया, जिनमें भोपाल के पुरातत्व, अभिलेखागार और संग्रहालय विभाग के अधिकारी और भोपाल के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों जैसे स्कूल ऑफ़ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर और मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के छात्र शामिल थे।

यह तीन-दिवसीय कार्यशाला एक दिन के सैद्धांतिक सत्रों (पीपीटी प्रस्तुतियों सहित) और दो दिवसीय व्यावहारिक कार्य पर आधारित थी, जिसमें डिनो लाइट का उपयोग, परीक्षण, प्रलेखन और सफाई शामिल थे।

विरासत भवन संरक्षण के संदर्भ में चूना और चूने वाले गारे के विश्लेषण पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। चूना अनुसंधान एवं परीक्षण केंद्र, आईसीआई, लखनऊ ने यह कार्यशाला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, लखनऊ के कर्मचारियों के लिए आयोजित की। यह दो दिवसीय कार्यशाला दो भागों में विभाजित थी:

एएसआई, लखनऊ में सैद्धांतिक सत्र

सैद्धांतिक सत्र, जो 23.06.2025 को एएसआई, लखनऊ में आयोजित किया गया, और व्यावहारिक सत्र, जो 27.06.2025 को आईसीआई केंद्र में आयोजित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य चूने वाले गारे के बारे में व्यापक जानकारी देना था जैसे इसके ऐतिहासिक महत्व, विश्लेषण की विधियाँ और संरक्षण कार्यों में इसकी भूमिका। इस कार्यशाला में लखनऊ स्थित पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अधीक्षक पुरातत्वविद् और उनके स्टाफ ने भाग लिया। कुल प्रतिभागियों की संख्या 30 थी।

कार्यक्रम में सैद्धांतिक सत्रों के साथ व्यावहारिक प्रदर्शन भी हुए, ताकि विरासत संरक्षण में ज्ञान और कौशल की कमी को दूर किया जा सके। कार्यशाला ने प्रतिभागियों की चूने वाले गारे और भवन संरक्षण की भूमिका की समझ को बढ़ाया। इसमें ऐतिहासिक गारे का विश्लेषण करने और मरम्मत के लिए सही सामग्री चुनने के व्यावहारिक तरीके बताए गए। प्रतिभागियों ने विशेष रूप से व्यावहारिक प्रदर्शन को सराहा, जिसने उन्हें विश्लेषण तकनीकों का उपयोग करने में आत्मविश्वास दिया।

बानियन अपर शिलांग में 15 दिवसीय कार्यशाला

इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने इन्टैक मेघालय अध्याय और मेघालय एज लिमिटेड के सहयोग से 1 से 16 जुलाई 2025 तक बानियन अपर शिलांग, मेघालय में **अभिलेखीय वस्तुओं के निवारक/उपचारात्मक संरक्षण पर एक 15 दिवसीय कार्यशाला** आयोजित की। इस कार्यशाला में लेडी कीन कॉलेज, शिलांग के इतिहास और बंगाली विभाग के 27 छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य अभिलेखीय संग्रहों में नुकसान और क्षरण को कम करने के बारे में जानकारी प्रदान करना था।

गोरखपुर विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला

इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने इन्टैक अयोध्या अध्याय के सहयोग से 17 अगस्त 2025 को जेबीबीएस मुख्यालय, अयोध्या में **अभिलेखीय और पुस्तकालय सामग्री के उपचारात्मक संरक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला** आयोजित की। इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के लाइब्रेरियन और राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय के छात्रों सहित 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य अभिलेखीय संग्रहों की देखभाल, सही तरीके से प्रदर्शित करने और सुरक्षित रूप से संग्रहित करने जैसे उपचारात्मक संरक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देना था।

इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने इन्टैक गोरखपुर अध्याय के सहयोग से 20 सितंबर 2025 को होम साइंस विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में **अभिलेखीय और पुस्तकालय सामग्री के उपचारात्मक संरक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला** आयोजित की। इस कार्यशाला में जिले के पुस्तकालयों, नगर निगम, गीता वाटिका और दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर के छात्रों और लाइब्रेरियन सहित 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य अभिलेखीय संग्रहों की देखभाल, सही तरीके से प्रदर्शन और सुरक्षित संग्रहण जैसे उपचारात्मक संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था।

जेबीबीएस मुख्यालय, अयोध्या में एक दिवसीय कार्यशाला

कैनवास चित्रों के उपचारात्मक संरक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला 14 अक्तूबर 2025 को हल्दर हॉल, कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ में आयोजित की गई। यह कार्यशाला इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने लखनऊ विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स के सहयोग से आयोजित की। इस कार्यशाला में लखनऊ विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय के शिक्षक और छात्र सहित 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य संग्रहों के संरक्षण और देखभाल के बुनियादी पहलुओं को समझना था।

अभिलेखीय और पुस्तकालय सामग्री के उपचारात्मक संरक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला 28 अक्तूबर 2025 को लिटिल फ्लॉवर हाउस, नागवा, वाराणसी में आयोजित की गई। यह कार्यशाला इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने इन्टैक वाराणसी अध्याय के सहयोग से आयोजित की। इस कार्यशाला में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संग्रहालय विज्ञान, एआईएच और पुरातत्व विभाग, रबींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता के संग्रहालय विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के इतिहास विभाग और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र. के संग्रहालय विभाग के छात्र शामिल हुए।

कार्यशाला का उद्देश्य अभिलेखीय संग्रहों की देखभाल, सही तरीके से प्रदर्शन और सुरक्षित संग्रहण जैसे उपचारात्मक संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देना था।

लिटिल फ्लॉवर हाउस, नागवा, वाराणसी में एक दिवसीय कार्यशाला

इंटर्न द्वारा किया गया चित्रकला और कागज संरक्षण का कार्य

विभिन्न सामग्री की उपचारात्मक देखभाल का अध्ययन: 3-सप्ताह की इंटर्नशिप

चित्रों में हिंगिंग और माउंटिंग का प्रदर्शन

इंटर्नशिप कार्यक्रम

कलाकृतियों के संरक्षण पर इंटर्नशिप: अप्रैल से 30 सितंबर 2025 तक छह महीने की इंटर्नशिप प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्त्व में स्नातकोत्तर सुश्री रुचि यादव को प्रदान की गई।

इस इंटर्नशिप का विषय कलाकृतियों का संरक्षण था। इंटर्नशिप के दौरान उन्होंने विभिन्न सामग्री की उपचारात्मक देखभाल की आवश्यकता और महत्व का अध्ययन किया। साथ ही, चूना और चूने वाले गारे के विश्लेषण का सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल भी प्राप्त किया। उन्होंने दस्तावेज़ीकरण, फोटोग्राफी, स्कैनिंग कार्य तथा कागज और चित्र का संरक्षण करने का प्रशिक्षण भी लिया।

इंटर्नशिप: 9 से 28 जून 2025 तक तीन सप्ताह की इंटर्नशिप कक्षा 12 की छात्रा सुश्री अमीषी सिंगल को प्रदान की गई। इस इंटर्नशिप का विषय *कलाकृतियों का संरक्षण और चूना-गारे के मूल सिद्धांत* थे। इंटर्नशिप के दौरान उन्होंने विभिन्न सामग्री की उपचारात्मक देखभाल की आवश्यकता और महत्व का अध्ययन किया। उन्होंने चूना और चूने वाले गारे के विश्लेषण का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त किया।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

इन्टैक संरक्षण संस्थान, कोलकाता केंद्र के वरिष्ठ संरक्षक श्री सुभाष बराल ने 4 जुलाई 2025 को बिंग्शा शताब्दी बुकस्टोर में *कलाकृतियों और पठन सामग्री के पुनरुद्धार* पर व्याख्यान दिया। उन्होंने पुस्तकों, चित्रों, वस्त्र, कागज, टेराकोटा, सिरेमिक, धातु, लकड़ी आदि विभिन्न वस्तुओं पर उपयोग की जाने वाली बुनियादी संरक्षण तकनीकों और प्रक्रियाओं को आसान भाषा में समझाया।

19 अगस्त 2025 को ला मार्टिनियर फॉर बॉयज़ में **कला संरक्षण और करियर के अवसर पर एक संगोष्ठी** आयोजित की गई।

सार्वजनिक पुस्तकालयों का परिरक्षण और संरक्षण (29-08-2025): 29 अगस्त 2025 को कोलकाता के साल्ट लेक, सेक्टर 1, ब्लॉक-डीडी-34 स्थित आरआरआरएलएफ में सार्वजनिक पुस्तकालय कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए 40 पुस्तकालय पेशेवरों ने भाग लिया। दो दिनों तक इन्टैक संरक्षण संस्थान, कोलकाता के विशेषज्ञों ने संरक्षण और मरम्मत की मूल अवधारणाओं, सामग्री प्रौद्योगिकी, नुकसान पहुँचाने वाले कारकों और उनका नियंत्रण, पीएच स्ट्रिप और पीएच मीटर से अम्लता मापने की विधि, फटे पन्नों की छोटी मोटी मरम्मत आदि विषयों पर व्याख्यान तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए।

आईसीआई केंद्रों द्वारा संरक्षण कार्य

आईसीआई दिल्ली

लकड़ी की मूर्तिकला का संरक्षण: कपड़े पर टेम्परा चित्र बनाकर उसे लकड़ी की सतह पर चिपकाने की परंपरा भारतीय पारंपरिक कलाओं की तुलना में एक अनोखा और कम जाना पहचाना कला रूप है।

लकड़ी की मूर्तियों का इतिहास ओडिशा के रथ निर्माण की सदियों पुरानी परंपरा से जुड़ा है, विशेषकर पुरी की प्रसिद्ध रथ यात्रा से। यह परंपरा हिंदू ग्रंथों से प्रेरित है और पीढ़ियों से कारीगर इसे निभाते आ रहे हैं। यह भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की उपासना का महत्वपूर्ण हिस्सा भी है।

संरक्षण पूर्व लकड़ी की मूर्ति

क्षतिग्रस्त हिस्सों में पैबंद लगाकर मरम्मत करते हुए

ओडिशा की लकड़ी नक्काशी की परंपरा बहुत समृद्ध है, जिसमें शास्त्रीय शैली और लोक कला के रूपांकनों का सुंदर मेल देखने को मिलता है। नक्काशी करने की प्रक्रिया में छेनी और चाकू से की जाने वाली बारीक कारीगरी से लेकर आधुनिक तकनीकों जैसे पेंटिंग और लाख का काम शामिल होता है। सतह से उभरी हुई आकृतियों वाली *रिलीफ नक्काशी* भी यहाँ की आम तकनीक है।

यह वस्तु ओडिशा की मूर्तियों की पारंपरिक शैली को दर्शाने वाली एक लकड़ी की मूर्ति है। इसे कपड़े पर टेम्परा पेंटिंग करके लकड़ी की सतह पर चिपकाया गया है। मूर्ति पर फफूंद के निशान दिखाई दे रहे थे। उस पर घिसाव और खरोंच लगने के निशान थे। रंग की परत कई जगहों से उखड़ रही थी और कुछ हिस्सों में रंग पूरी तरह से गायब था। नमी के कारण कुछ जगह पर पेंट किया हुआ कपड़ा सतह से उठ गया था और कई हिस्सों में कपड़े की परत पूरी तरह गायब थी। बहुत ज़्यादा गंदगी और जमा होने से वस्तु का रंग काला सा दिखाई देने लगा था।

सबसे पहले वस्तु से फफूंद हटाई गई। सफाई के दौरान पहले की गई प्लस्तर की मरम्मत हटाई गई। मूर्ति के चूरा बनने को रोकने के लिए उसे अच्छी तरह मजबूत किया गया। जो हिस्से अलग हो गए थे, उन्हें सही स्थिति में लाकर दोबारा जोड़ा गया। जहाँ-कहीं सामग्री गायब थी, वहाँ उपयुक्त सामग्री से भराई की गई और उसके रंग को आसपास की सतह से मिलाया गया। मूर्ति को सीधा खड़ा रखने के लिए एक आधार और सहारा भी तैयार किया गया।

कागज़ की वस्तुओं का संरक्षण: अखबार को सुरक्षित रखना इसलिए मुश्किल होता है क्योंकि जिस कागज़ पर अखबार छपते हैं वह बहुत साधारण, सस्ता और अस्थायी उपयोग के लिए बनाया जाता है। आमतौर पर अखबारी कागज़ बिना साफ किए लकड़ी के गूदे से बनता है, जिसमें कई तरह की अशुद्धियाँ रहती हैं। जब यह कागज़ धूप, नमी में बदलाव और हवा में मौजूद प्रदूषकों के संपर्क में आता है, तो इसका रंग बदलने लगता है और इसमें रासायनिक बदलाव बढ़ जाते हैं। इससे कागज़ ज्यादा अम्लीय हो जाता है। यह अम्लीयता सेलूलोज़ जैसे रेशों को कमजोर कर देती है और कागज़ तेजी से खराब होने लगता है। यही कारण है कि अखबारी कागज़ बहुत नाज़ुक हो जाता है और जल्दी टूटने लगता है।

हमें त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली से संरक्षण के लिए भवन के फ्लोर प्लान और महत्वपूर्ण घटनाओं की अखबारी कतरनें प्राप्त हुई हैं। फ्लोर प्लान किसी भवन की संरचना को स्पष्ट रूप से दिखाने में बहुत उपयोगी होते हैं। ये आर्किटेक्ट, निर्माणकर्ताओं और ग्राहकों के बीच बेहतर समझ और संवाद में मदद करते हैं। ये निर्माण कार्य को दिशा देने, जगह के सही उपयोग, सुगम आवागमन और कार्यक्षमता बढ़ाने में भी सहायक होते हैं। इसके साथ ही, ये महंगी पडने वाली गलतियों से बचाते हैं, डिज़ाइन को ज़रूरतों के अनुसार सुनिश्चित करते हैं और भवन की सुविधा व मूल्य बढ़ाते हैं।

वस्तु के पीछे चिपकाया गया कपड़ा कई जगहों से उखड़ रहा था। सतह पर धूल और गंदगी जमा हो गई थी और जगह-जगह उभार और लहरनुमा सिलवटें दिख रही थीं। मोड़ों के कारण कागज़ पर सिलवटें पड़ गई थीं और किनारों पर फटने के निशान भी दिखाई दे रहे थे।

तेल चित्रकला का संरक्षण: भारतीय चित्रों में प्राकृतिक दृश्य और परिदृश्य (लैंडस्केप) बहुत लोकप्रिय रहे हैं और यह सबसे आम विषयों में से एक है। शुरुआती समय में कलाकार लघु चित्रों में सुंदर हरे-भरे प्राकृतिक दृश्य पृष्ठभूमि के रूप में दिखाते थे। बाद के समय में इन दृश्यों को पृष्ठभूमि से निकालकर मुख्य विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। यूरोपीय कला के प्रभाव से भारतीय कलाकारों ने वास्तविकता और प्राकृतिक शैली की तकनीकें अपनाईं, जिससे परिदृश्य चित्रण को नई पहचान मिली। इन चित्रों में अब प्रकाश और छाया का वास्तविक चित्रण, बारीक विवरण और सुंदर रंगों का उपयोग देखने को मिलता है। भारत की प्राकृतिक सुंदरता को कलाकारों ने अपने कैनवास और ब्रश के माध्यम से जीवंत रूप में पेश किया।

संरक्षण के बाद

वस्तु के पीछे अस्तर लगाते हुए

संरक्षण के बाद वस्तु का सामने से दृश्य

तेल चित्रकला की विलायक से सफाई

पैबंद लगाते हुए

परिधान की विलायक से सफाई

आईसीआई दिल्ली को यह तैल चित्र प्राप्त हुआ, जो कैनवास पर बना था और बोर्ड पर चिपकाया गया था। यह चित्रकला खराब हालत में थी, क्योंकि पीछे लगा बोर्ड कैनवास को अम्लीय और बहुत नाज़ुक बन चुका था।

संरक्षण कार्य की शुरुआत चित्रकला के पीछे लगे पुराने बोर्ड को हटाने से हुई। बोर्ड को सुरक्षित रूप से हटाने और नाज़ुक रंग-परत की रक्षा के लिए चित्रकला पर जापानी टिश्यू की पतली परत लगाकर फेसिंग की गई। बोर्ड हटाने के बाद चित्रकला बहुत नाज़ुक हालत में मिली। इसके बाद फेसिंग हटाई गई, अलग हुए हिस्सों को सही जगह पर जोड़ा गया और फटे हिस्सों की मरम्मत की गई। यांत्रिक और सॉल्वेंट सफाई से दाग-धब्बे कम किए गए। समान प्रकार के कैनवास के टुकड़ों से पैबंद लगाकर मरम्मत की गई और जहाँ सामग्री गायब थी वहाँ भराई की गई। अंत में रंगों को दोबारा मिलाया गया, सुरक्षात्मक परत लगाई गई और चित्रकला को नए स्ट्रेचर/बोर्ड पर चढ़ाया पर चढ़ाकर सुरक्षित किया गया।

परिधान का संरक्षण: चोग़ा एक ढीला और लंबा परिधान होता है, जो पूरे शरीर को ढकता है। इसके बाजू लंबे होते हैं और हाथ बाहर निकालने के लिए खुला हिस्सा होता है। माना जाता है कि इसकी शुरुआत मध्य एशिया में हुई और मुगल काल में यह भारत में बहुत लोकप्रिय हुआ। इसे खास मौकों या समारोहों में सामान्य कपड़ों के ऊपर पहना जाता है। चोग़ा आमतौर पर रेशम और ऊन जैसे उम्दा कपड़ों से बना होता है और उस पर सुंदर कढ़ाई और सजावटी काम किया जाता है।

संरक्षण के लिए प्राप्त चोग़ा के कॉलर के नीचे के मुड़े हुए अगले हिस्से, बाँहों के किनारों और नीचे के हेम पर चाँदी चढ़े सोने की ज़री लगी हुई थी। बाहर का कपड़ा महीन ऊन का था और अंदर की लाइनिंग रेशम की थी। चोग़े पर धूल और गंदगी जमी हुई थी। आगे और पीछे दोनों तरफ गहरे दाग़ दिखाई दे रहे थे। अंदर की लाइनिंग पीली पड़ गई थी और कपड़े में जगह–जगह सामग्री कम होने के कारण छोटे–छोटे छेद बन गए थे। पूरे चोग़े में कई जगह धागे ढीले थे और ज़री भी टूट-फूट गई थी। गर्दन के पास लाइनिंग मुख्य कपड़े से अलग हो गई थी और वह भी फटने लगी थी। अंदर की लाइनिंग पर पहले किए गए संरक्षण के निशान, जैसे हाथ से लगाए गए टाँके, भी दिख रहे थे।

संरक्षण की प्रक्रिया सबसे पहले सतह पर जमी धूल और गंदगी हटाने से शुरू हुई। इसके बाद कपड़े का रंग उड़ता है या नहीं, इसका परीक्षण किया गया। परीक्षण ठीक आने पर चोग़े को डी-आयोनाइज्ड पानी और हल्के सर्फ़ेक्टेंट के साथ पानी में डुबोकर धोया गया। इससे कपड़े की अम्लता कम हुई और सफाई भी हो गई। जहाँ-जहाँ कपड़े में छेद थे, वहाँ पैबंद लगाकर मरम्मत की गई। बाहर के हिस्से के लिए मिलते-जुलते लाल ऊन और अंदर की लाइनिंग के लिए मिलते-जुलते प्राकृतिक रंग के रेशम का इस्तेमाल किया गया। ढीले धागों और टूटी ज़री को सावधानी से उनकी जगह पर ठीक से लगाया गया ताकि आगे और नुकसान न हो। गर्दन के पास जो लाइनिंग मुख्य कपड़े से अलग हो गई थी, उसे फिर से जोड़ा गया। पहले लगाए गए पुराने टाँके हटाए गए और मौजूदा संरक्षण मानकों के अनुसार फिर से मरम्मत की गई।

संरक्षण के बाद चोग़ा

1930–1950 के बनारस इंप्रूवमेंट ट्रस्ट का मानचित्र – संरक्षण से पहले और बाद में

आईसीआई लखनऊ

अभिलेखीय रिकॉर्ड और मानचित्रों का संरक्षण: आईसीआई, लखनऊ केंद्र ने बनारस विकास प्राधिकरण (वीडीए) में अभिलेखीय रिकॉर्ड, मानचित्र, कीट प्रबंधन और प्रशिक्षण कार्यक्रम पर एक नई परियोजना शुरू की है। साइट पर अस्थायी प्रयोगशाला स्थापित करने के बाद, टीम ने 23 सितंबर 2025 से कार्य शुरू किया। वीडीए का संग्रह तीन स्थानों - भूतल पर अभिलेख अनुभाग, दूसरी मंजिल और तीसरी मंजिल में कमरा नं. 47 में रखा गया है। मानचित्रों को कमरा नं. 37 में मानचित्र अनुभाग में रखा गया है। अब तक 26 मानचित्रों और 20 रिकॉर्ड फाइलों, जिनमें कुल 853 पन्ने हैं, का संरक्षण किया जा चुका है। मानचित्र और रिकॉर्ड दोनों पर धूल, गंदगी, दाग़-धब्बे, कटने-फटने के निशान, कुछ हिस्सों के गुम होने, मोड़ के निशान, नाज़ुकपन, रंग बदलना, कीटों का हमला और कई सिलवटें थीं। इन सभी रिकॉर्डों और मानचित्रों का वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण किया गया और संबंधित प्राधिकरण को सौंपा गया।

राजा अयोध्या के मूल्यवान संग्रह का संरक्षण: केंद्र को उत्तर प्रदेश के राजा अयोध्या, श्री बिमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्रा के निजी संग्रह से मूल्यवान वस्तुएँ संरक्षण के लिए प्राप्त हुईं। संरक्षण के लिए

संरक्षण से पहले सेना कर्मियों की वर्दी और अन्य सामान

संरक्षण के बाद, प्रदर्शन के लिए शोकेस में रखे गए पुतले को पहनाई गई वर्दी और अन्य सामग्री

पुस्तक - संरक्षण से पहले और बाद में

भरी हुई तेंदुए की खाल - संरक्षण से पहले और बाद में

मिली वस्तुएँ मृत पशुओं के सजीव रूप और भगवान कृष्ण का चित्र थीं। ये वस्तुएँ खराब हालत में थीं। सभी वस्तुओं को वैज्ञानिक तरीके से बहाल किया गया और संबंधित प्राधिकरण को लौटाया गया।

11 गोरखा राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर, लखनऊ के वस्त्र, चित्र और तस्वीरों का संरक्षण: कैप्टन मनोज पांडे और लेफ्टिनेंट पी.एन. दत्त की पूर्ण पोशाक सहित अन्य वस्तुएँ जैसे तैल चित्र, प्रमाणपत्र, तस्वीरें, जूते, हॉकी स्टिक, बैज, डायरी और माउथ ऑर्गन संरक्षण के लिए 11 गोरखा राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर, लखनऊ से प्राप्त हुईं। सभी वस्तुओं को रेजिमेंट में शोकेस में रखा गया था। इन्हें प्रयोगशाला में लाकर वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण किया गया। दो पुलते — एक कैप्टन मनोज पांडे और दूसरा लेफ्टिनेंट पी.एन. दत्त का — बनाए गए और उन्हें पूरी रेजिमेंटल वर्दी पहनाई गई। सभी बहाली की गई वस्तुएँ और पुतले वापस रेजिमेंट में सुरक्षित रूप से प्रदर्शित कर दिए गए हैं।

साबरमती आश्रम, अहमदाबाद के अभिलेखों का संरक्षण: यह एक सतत परियोजना है। पुस्तकालय/लाइब्रेरी/अभिलेखागार की किताबें और अन्य कागजी दस्तावेज संरक्षण के लिए प्राप्त हुए। सभी वस्तुओं का ग्राफिक और फोटोग्राफिक रूप से दस्तावेज़ बनाया गया। संरक्षण में चरणबद्ध तरीके अपनाए गए, जिसमें कीटाणुनाशक, नरम सूखे ब्रश से सफाई, न्यूट्रलाइजेशन, रीसाइजिंग, दाग़-धब्बे हटाना, टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत, पूरी लाइनिंग लगाना, नए हिस्से तैयार करना, सिलाई और जिल्द चढ़ाना शामिल था।

होम्स कलिनन लाइब्रेरी, नगर निगम, गोरखपुर की दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण: गोरखपुर की होम्स कलिनन म्युनिसिपल लाइब्रेरी के संग्रह से दूसरी खेप में 30 पुस्तकें संरक्षण के लिए प्राप्त हुईं।

लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) - बहाल किए गए मानचित्रों का भंडारण: 205 मानचित्रों की मरम्मत करने के बाद, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उचित भंडारण प्रणाली अपनाई गई। कुछ मानचित्र कैबिनेट में रखे गए और कुछ होल्डर में, साथ में सिलिका जैल रखा गया। इन तरीकों से मानचित्रों को सीधे पड़ने वाले सूर्य के प्रकाश, नमी, कीटों के हमले और नुकसान से बचाया जा सकेगा।

चित्र का संरक्षण: एक निजी संग्रहकर्ता से **महाभारत महाकाव्य** शीर्षक वाला चित्र संरक्षण के लिए प्राप्त हुआ। चित्र का आकार 92x61.4 सें.मी. था और यह लकड़ी की पट्टी पर जड़ाई का काम करके बनाया गया था। चित्र पर धूल मिट्टी जमी हुई थी। लकड़ी के आधार और जड़ाई के बीच थोड़ा अंतराल था। कई जगह बड़ी और छोटी दरारें थीं। लकड़ी में हल्का टेढ़ापन भी दिखाई दे रहा था। जड़ाई के कुछ हिस्से निकल गए थे। कुछ जगह खरोंच और दाग़-धब्बे लगे थे, और कुछ अन्य छोटी-मोटी समस्याएँ भी मौजूद थीं।

सबसे पहले चित्र की सूखी सफाई की गई। फिर लकड़ी का पैनल फ्रेम से अलग किया गया। इसके बाद इसकी विलायक से सफाई की गई। चित्र के आधार को सीधा किया गया और उसे मजबूत बनाया गया।

संरक्षण के बाद चित्रकला

दाग़-धब्बे हटाए गए, टूटे या गायब हिस्सों को भरा गया, और दरारों को जोड़ा गया। भरे हुए हिस्सों को बाकी सतह से मिलाया गया। फ्रेम की मरम्मत की गई, रिटचिंग की गई, और अंत में चित्र पर सुरक्षात्मक कोटिंग लगाई गई।

तंजौर चित्रकला का संरक्षण: दो मिश्रित माध्यम की चित्रकलाएं — एक बालाजी लक्ष्मी और दूसरी कुबेर लक्ष्मी — संरक्षण के लिए प्राप्त हुईं। इनमें सतह पर धूल मिट्टी जमी थी, पत्थर/काँच का काम काला पड़ गया था, गोल्ड फ़ॉइल खराब हो गई थी और पीछे की तरफ कीड़ों ने काफी नुकसान किया था। संरक्षण के दौरान एनॉक्सिक विधि से फ्यूमीगेशन किया गया। चित्रों को फ्रेम से निकालकर सूखी सफाई की गई। पत्थर और काँच के हिस्सों को साफ किया गया, जहाँ रंग गायब थे वहाँ रंग ठीक किए गए, सुरक्षात्मक कोटिंग लगाई गई और अंत में दोनों चित्रों को फिर से फ्रेम किया गया।

राजा बलरामपुर के कागज के दस्तावेजों का संरक्षण: राजा बलरामपुर की ओर से संरक्षण के लिए वस्त्र, खुले पन्नों वाले दस्तावेज, मुद्रित सामग्री और पांडुलिपियाँ प्राप्त हुईं। इनमें धूल मिट्टी जमी थी, कागज़ भुरभुरा और बदरंग हो गया था, और कुछ अन्य समस्याएँ भी थीं। संरक्षण के दौरान फ्यूमीगेशन किया गया, मुलायम ब्रश से सूखी सफाई की गई, लिखित और फोटो दस्तावेज़ तैयार किए गए, पुरानी जिल्द और सिलाई हटाई गई, और दाग़-धब्बों की सफाई की गई। सभी दस्तावेज़ों का सही तरीके से उपचार कर उन्हें फिर से ठीक किया गया।

संरक्षण से पहले और बाद में

संरक्षण से पहले कलाकृति (सामने वाला भाग)

तिरछी रोशनी में दिखाई देतीं उखड़ते रंगों की परतें

उखड़ती हुई रंग परत को मजबूती देते हुए

गुम हिस्सों को रंगों से भरते हुए

मूल फ्रेम में दोबारा फ्रेम करने के बाद

आईसीआई बेंगलुरु

तंजावुर पारंपरिक चित्रकला का संरक्षण: केंद्र में हमें राधा कृष्ण की एक तंजावुर चित्रकला पर काम करने का मौका मिला, जो काफी खराब हालत में थी। चित्र पर सूखी दरारें थीं और कई जगह रंग की परत आधार से उखड़ रही थी। कुछ हिस्सों में रंग और गॉश की परत पूरी तरह हट चुकी थी, जिससे नीचे का कपड़ा दिखाई दे रहा था। इसके अलावा, कलाकृति पर धूल भी जमी हुई थी। पीछे की तरफ लकड़ी के आधार में दरारें थीं और फ्रेम सिर्फ सेलो टेप से ढीले-ढाले तौर पर जोड़ा गया था।

संरक्षण की शुरुआत उखड़ रही रंग परत को एक खास चिपकने वाले पदार्थ से मजबूत करने से हुई। जब रंग की परत ठीक से स्थिर हो गई, तो चित्र की सूखी और विलायक से सफाई की गई। जिन हिस्सों में नुकसान था, वहाँ दोबारा पुट्टी लगाई गई और रिटचिंग करके चित्रकला को ठीक किया गया।

आईसीआई कोलकाता

तेल चित्रों की बहाली: सेरामपूर से दो बहुत पुराने तैल चित्र (पोर्ट्रेट) बहाली के लिए प्राप्त हुए। इनके आकार क्रमशः 20" x 24" और 36" x 31" थे। बड़े चित्र का फ्रेम सुनहरे रंग का था, जबकि छोटे फ्रेम का रंग भूरा, काला और हल्का सफेद था।

सामान्य स्थिति: ये चित्रकलाएं पहले भी बहाल की गई थीं, लेकिन अब बहुत खराब और नाज़ुक हालत में थीं। इनमें रंग उखड़ रहा था, दरारें थीं, आधार कमजोर हो गया था, कई जगह रंग गायब था, चित्रकला का पैनल टेढ़ा हो गया था और उस पर दाग़-धब्बे, धूल और मिट्टी जमी थी। पहली चित्रकला में बड़े फटे हुए

बहाली से पहले

बहाली के बाद

चित्रकला के गुम रंगों को दोबारा भरते हुए

बहाली से पहले

आधी सफाई के दौरान

सफाई के दौरान

चित्र का टूटा हुआ फ्रेम

सफाई के दौरान

हिस्से थे जिन्हें ज़्यादा मरम्मत की जरूरत थी। दोनों चित्रकलाओं में रंग का उखड़ना साफ दिखाई दे रहा था। संरक्षण उपचार: सबसे पहले चित्रकलाओं को खोलकर कीड़ों से बचाने के लिए फ्यूमीगेशन किया गया। उखड़ती हुई रंग की परत को सही चिपकाने वाली सामग्री से मजबूती दी गई। फिर सतह की सफाई की गई। जहाँ रंग या हिस्से गायब थे, उन्हें भरकर ठीक किया गया और चित्रकला को मज़बूत बनाने के लिए लाइनिंग लगाई गई। इसके बाद चित्रकला को साफ फ्रेम पर ठीक से खींचकर लगाया गया और ज़रूरत वाले हिस्सों में रंग मिलान (रिटचिंग) किया गया। अंत में सुरक्षात्मक कोटिंग लगाई गई और चित्रकला को उसके साफ और बहाल किए गए मूल फ्रेम में दोबारा लगाया गया।

तेल चित्र की बहाली: एक कैनवास पर बना तैल चित्र बहाली के लिए प्राप्त हुआ। इसका आकार 30" x 24" था। इसका फ्रेम लकड़ी का और भूरे रंग का था।
सामान्य स्थिति: चित्रकला में दीमक लगी हुई थी। यह बहुत ही खराब और नाज़ुक स्थिति में थी।
संरक्षण कार्य: चित्रकला को फ्रेम और स्ट्रेचर से अलग किया गया और कीड़े खत्म करने के लिए फ्यूमीगेशन किया गया। उखड़ती रंग परत को उपयुक्त सामग्री से मजबूत किया गया। फिर सतह की सफाई की गई और आवश्यक संरक्षण विधियों को अपनाकर चित्रकला को बहाल किया गया।

तेल चित्रों की बहाली: अक्तूबर के मध्य में महाजाति सदन से पंद्रह तैल चित्र बहाली के लिए प्राप्त हुए। इस संग्रह में स्वतंत्रता सेनानियों, लेखकों, कवियों और वैज्ञानिकों के चित्र शामिल थे, और ये अलग-अलग आकार के थे। चित्रकलाएं बहुत खराब और नाज़ुक हालत में थीं। आचार्य जगदीश चंद्र बोस का पोर्ट्रेट सबसे

हाथ से मरम्मत से पहले

हाथ से मरम्मत के बाद

ज़्यादा क्षतिग्रस्त था। अब तक तीन चित्रकलाओं का उनके फ्रेम और स्ट्रेचर से हटाकर फ्यूमीगेशन किया गया है। संरक्षण का काम अभी जारी है।
तीन चित्रकलाओं को अब तक उनके फ्रेम और स्ट्रेचर से अलग किया जा चुका है। इसके बाद कीट पतंगों को खत्म करने के लिए फ्यूमिगेशन किया गया। संरक्षण का काम अभी भी चल रहा है।

श्याम-श्वेत फ़ोटोग्राफ़ की मरम्मत: त्रिपुरा हाउस से प्राप्त एक श्याम-श्वेत फ़ोटोग्राफ़ को इन्टैक कोलकाता ने बहाल किया। इसका आकार 21.5" x 16" था। यह फोटो बिना फ्रेम के था।

कार्टून पुस्तक की बहाली: 1921 में प्रकाशित इंडियन कार्ट्न्स के पहले अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसका संपादन बी. गंगूली ने किया था। यह पुरानी प्रति बंगाल की व्यंग्यात्मक कार्टून कला का जीवंत प्रमाण है। इसमें मिस के. रॉय, जी.एन. टैगोर, बी. गंगूली, मिस्टर फिलिप ग्रीव्स और मिस मैक्लियोड द्वारा बनाए गए 10 पोर्ट्रेट शामिल हैं।

आईसीआई भुवनेश्वर

के.आर. कामा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, मुंबई – चरण XVI: के.आर. कामा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी में दुर्लभ पांडुलिपियों और पुस्तकों का बड़ा संग्रह है। यह ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण सामग्री है और इसे तुरंत संरक्षण की ज़रूरत है। 2003 से 2020 के बीच इन्टैक संरक्षण संस्थान, भुवनेश्वर ने 5,01,261 पन्नों की पांडुलिपियों, पत्रिकआओं और दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण कार्य पूरा किया है।

के.आर. कामा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, मुंबई में कागज़ी पांडुलिपियों और पुस्तकों के संरक्षण का चरण–XVI 11 अगस्त 2025 से शुरू हो गया है। इस चरण में लगभग 30,000 पन्नों का संरक्षण किया जाएगा, जो औसतन लगभग 100 पुस्तकों के बराबर है।

टाटा सेंट्रल आर्काइव्स, पुणे के अभिलेखों का संरक्षण: टाटा सेंट्रल आर्काइव्स (टीसीए), पुणे के लगभग 22,000 पन्नों और महत्वपूर्ण अभिलेखों का चार चरणों में 2011–2025 के बीच संरक्षण किया जा चुका है। अब टीसीए के निमंत्रण पर 2025–26 के लिए नया चरण शुरू किया गया है। इस बार जिन दस्तावेजों का संरक्षण हो रहा है, उनमें परिवार के रिकॉर्ड, कंपनी रिकॉर्ड, फ़ाइलें, समाचार-कतरने और कानूनी दस्तावेज शामिल हैं।

आईसीआई भुवनेश्वर केन्द्र में तैल चित्र, स्केच और लाइन ड्रॉइंगों का संरक्षण: सितंबर 2025 में भुवनेश्वर के निजी कला संग्राहकों की कैनवास पर बने महत्वपूर्ण तैलचित्रों, कागज़ पर बने स्केच और लाइन ड्रॉइंगों का संरक्षण कला संरक्षण केंद्र में किया गया।

के.आर. कामा लाइब्रेरी में काम करता हुआ संरक्षक

बँधी हुई पुस्तक का संरक्षण – पुनरुद्धार से पहले और बाद में

कागज़ पर बने स्केच – संरक्षण से पहले और बाद में

टीसीए, पुणे में चल रहा संरक्षण कार्य

प्राकृतिक विरासत प्रभाग

एनएच प्रभाग प्रायोजकों की मदद से चल रही उपयोगी परियोजनाओं और विशेष कोष से मिले सहयोग से शोध और प्रलेखन का कार्य कर रहा है।

गुवाहाटी, असम में बासिष्ठा नदी के किनारे का विकास एवं सौंदर्यीकरण

बासिष्ठा नदी के किनारे के विकास और सौंदर्यीकरण के कार्य के लिए ब्रह्मपुत्र बोर्ड द्वारा धनराशि दी जा रही है। इसका उद्देश्य नदी के किनारे की सुंदरता और पारिस्थितिक महत्व को बढ़ाना है, साथ ही ब्रह्मपुत्र बोर्ड परिसर के भू-परिदृश्य को बेहतर बनाना है। परियोजना का उद्देश्य उपेक्षित नदी तट को लोगों के लिए उपयोगी, जीवंत और सार्वजनिक स्थल में बदलना है। इसमें कंक्रीट के ढांचों की बजाय अधिक से अधिक हरियाली पर ध्यान दिया गया है, ताकि पर्यावरण पर कम से कम प्रतिकूल प्रभाव पड़े, नदी के किनारों को स्थिर किया जा सके और स्थानीय पर्यावरण को समृद्ध किया जा सके। परियोजना में जैव विविधता बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इसके तहत स्थानीय पेड़ पौधों और जीव जंतुओं के लिए रहने की बेहतर जगह बनाई जाएगी, ताकि क्षेत्र के पर्यावरण में और अधिक सुधार हो सके। आधुनिक डिज़ाइन और प्राकृतिक तत्वों के मेल से यह नदी का किनारा सुंदर और शांत वातावरण देगा, जहाँ से बासिष्ठा नदी के के मनमोहक दृश्य दिखाई देंगे।

असम, गुवाहाटी में बासिष्ठा नदी का भूदृश्य डिज़ाइन

वह-उमक्राह नदी, शिलांग – नदी संरक्षण, जैव सुधार और भूदृश्य

यह परियोजना शिलांग नगरपालिका बोर्ड द्वारा वित्तपोषित है और इन्टैक इसे संचालित कर रहा है। इसका उद्देश्य प्रकृति आधारित उपायों से नदी के प्रदूषण को कम करना और नदी किनारों को लोगों के लिए उपयोगी सार्वजनिक जगहों में बदलना है। परियोजना का मुख्य ध्यान ऐसे खुले स्थान विकसित करने पर है, जहाँ लोग एक दूसरे से जुड़ सकें और पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी बढ़ सके।

पानी की गुणवत्ता और पर्यावरणीय संतुलन को बेहतर बनाने के लिए परियोजना में कुछ जगहों पर नारियल रेशा से बने फिल्टर लगाए जा रहे हैं। इसके साथ ही बैक्टीरिया आधारित सफाई और ढलान वाले हिस्सों पर पानी में हवा मिलाने के लिए छोटे-छोटे झरना-नुमा

ब्रह्मपुत्र नदी में मजुली द्वीप का हवाई दृश्य

प्रयागराज में संगम का हवाई दृश्य

ढांचे भी बनाए जा रहे हैं। इन सभी उपायों का उद्देश्य नदी को फिर से जीवंत करना, इसकी पारिस्थितिकी को मजबूत बनाना और इसे एक टिकाऊ तथा लोगों के लिए उपयोगी शहरी जलमार्ग में बदलना है।

ब्रह्मपुत्र के नदी द्वीपों के लिए नीति बनाने की पहल

यह परियोजना ब्रह्मपुत्र बोर्ड द्वारा वित्तपोषित है। इसका उद्देश्य ब्रह्मपुत्र नदी के नदी द्वीपों (चार) के सतत प्रबंधन और संरक्षण के लिए एक व्यापक नीति तैयार करना है। ये द्वीप लगातार बदलते रहने वाले भू-रूप हैं। इनका पर्यावरण, संस्कृति और स्थानीय लोगों की आजीविका के लिए बहुत महत्व है, लेकिन कटाव, बाढ़ और विकास की उपेक्षा के कारण ये बहुत संवेदनशील भी हैं। इस परियोजना में फील्ड सर्वेक्षण, सैटेलाइट तस्वीरों का अध्ययन, साहित्य समीक्षा और कानूनी मूल्यांकन जैसे कार्य भी शामिल हैं।

यमुना नदी का सांस्कृतिक प्रलेखन

इस परियोजना का उद्देश्य यमुना नदी के किनारे बसे जिलों — यमुनोत्री से लेकर संगम तक — के आसपास लगभग 5–7 कि.मी. क्षेत्र में मौजूद इमारतों, परंपराओं, लोक-संस्कृति और प्राकृतिक विरासत की जानकारी इकट्ठा करना है। इसमें पुरानी इमारतें, स्थानीय गीत, रीति रिवाज़, प्राकृतिक दृश्य और यमुना घाटी की संस्कृति और पर्यावरण से जुड़े अन्य तत्व शामिल हैं। कुल 31 जिलों में से 18 जिलों का क्षेत्रीय कार्य पूरा हो चुका है और उनकी रिपोर्ट भी तैयार कर ली गई है। यमुना पर एक फ़िल्म और एक पुस्तक/प्रकाशन बनाने का काम भी शुरू हो गया है।

सीएसओ के लिए नदियों की समझ, प्रलेखन और संरक्षण पर एक आधारभूत पाठ्यक्रम

भारत की नदियाँ इस समय गंभीर संकट से गुज़र रही हैं — जहाँ एक ओर प्रदूषण बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर नदी का पानी तेजी से कम होता जा रहा है। कई जगह तो नदी का तल भी सूखने लगा है। हालाँकि केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) और राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (एनडब्ल्यूडीए) जैसी संस्थाएँ बड़ी नदियों की निगरानी में अच्छा काम कर रही हैं, लेकिन छोटी नदियाँ, सहायक नदियाँ और मौसमी जलधाराएँ — जो बड़ी नदी प्रणाली को जीवित रखने में बेहद महत्वपूर्ण हैं — अब भी लगभग अनदेखी हैं और उनका ठीक से रिकॉर्ड भी नहीं रखा जाता। इस महत्वपूर्ण कमी को दूर करने के लिए इन्टैक के प्राकृतिक विरासत प्रभाग ने, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम बनाना शुरू किया है। इसका उद्देश्य लोगों को नदियों और उनके संरक्षण से जुड़ी बुनियादी जानकारी देना है। इस पाठ्यक्रम में नदी का स्वरूप, नदी में बहने वाली मिट्टी (तलछट), नदी के आसपास का नदियों तंत्र और नदियों को फिर से स्वस्थ बनाने जैसे प्रमुख विषय शामिल होंगे।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य "नदी संरक्षक" का एक जागरूक और स्थानीय स्तर पर काम करने वाला नेटवर्क तैयार करना है, ताकि समुदाय के प्रयासों को संस्थागत ढांचे से जोड़ सके। इस कार्यक्रम का उद्देश्य "नदी संरक्षक" का ऐसा जागरूक और स्थानीय स्तर पर काम करने वाला समूह बनाना है, जो समुदाय के प्रयासों को संस्थागत ढांचे से जोड़ सके। इससे यह सुनिश्चित होगा कि छोटी धाराएँ और सहायक नदियाँ भी भारत की नदी पुनर्जीवन पहल का अहम हिस्सा बनें और उनकी सुरक्षा हो।

परियोजना अब लगभग पूरी हो चुकी है। अंग्रेज़ी और हिंदी में 11 मॉड्यूल बन गए हैं, और अंतिम रिलीज़ से पहले उनका पोस्ट-प्रोडक्शन चल रहा है।

सीएसआर परियोजनाएँ

इंडियन बोटैनिक गार्डन, हावड़ा का पुनरुद्धार

इंडियन बोटैनिक गार्डन के पुनरुद्धार की यह तीन वर्षीय परियोजना है, जिसे एचएसबीसी द्वारा वित्तपोषित किया गया है। पहले दो वर्ष सफलतापूर्वक पूरे हो चुके हैं, और अब परियोजना अपने तीसरे और अंतिम वर्ष में है। इस चरण में मुख्य गतिविधियाँ हैं — झीलों की सफाई, दो आपस में जुड़े चैनलों का निर्माण, मैंग्रोव पौधरोपण और विशेष विदेशी प्रजातियों का रोपण।

तीसरे वर्ष की दूसरी तिमाही में झीलों की सफाई का काम लगातार जारी रहा। पिछली तिमाही में साफ की गई किंग लेक और प्रेन लेक की इस अवधि में अच्छी तरह देखभाल की गई। फिलहाल, धोबी लेक, कूली लेन लेक और नर्सरी 2 के पीछे की झील की सफाई चल रही है। स्वीकृत योजना के अनुसार जैव सुधार का भी प्रयोग किया जा रहा है।

दो किस्मों की चंदन के पौधों की व्यवस्था कर ली गई है। मैंग्रोव पौधरोपण पूरा हो चुका है और नियमित देखभाल जारी है। साथ ही, झील की सफाई के दौरान नुकसान पहुंचाने वाले पौधों को भी समय-समय पर हटाया जा रहा है।

मध्य हिमालय में प्रकृति संरक्षण और आवास पुनरुद्धार

पिछले पाँच वर्षों में इन्टैक के प्राकृतिक विरासत प्रभाग ने एचसीएल फ़ाउंडेशन के सहयोग से उत्तराखंड के चमोली और अल्मोड़ा ज़िलों में एक महत्वपूर्ण पर्यावरण सुधार परियोजना चलाई है। इस परियोजना का लक्ष्य हिमालय के नाज़ुक पर्यावरण को फिर से स्वस्थ बनाना है। इसके तहत रुद्राक्ष और भोजपत्र जैसे दुर्लभ स्थानीय पौधों के 31,000 से ज़्यादा पौधे लगाए गए हैं, जिससे 30 एकड़ से अधिक खराब हो चुकी ज़मीन को फिर से जीवित किया गया है। यह पहल सिर्फ पौधे लगाने तक सीमित नहीं है। इसमें जैव विविधता का रिकॉर्ड रखना, जानवर पौधों के रहने की जगहों में सुधार करना, और परागण करने वाले कीटों की रक्षा के लिए कृत्रिम संरचनाएँ बनाने जैसे उपाय भी शामिल हैं।

मुख्य पर्यावरणीय उपायों में स्थानीय झाड़ियों से प्राकृतिक बाड़ लगाना शामिल है। इससे पौधे सुरक्षित रहते हैं, पेड-पौधों का प्राकृतिक रूप से फिर से उगना आसान होता है और मिट्टी कटने से बचती है। वैज्ञानिक तरीकों और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर बनाई गई इस पद्धति से जानवर और पौधों के पर्यावास, मिट्टी की गुणवत्ता और बीजों के फैलाव में सुधार हुआ है। इस परियोजना के दौरान 300 से अधिक वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की प्रजातियों की एक जैव-विविधता सूची भी तैयार की गई है, जो भविष्य में लंबे समय तक निगरानी और संरक्षण की योजनाएँ बनाने में मदद करेगी।

इस पहल की सफलता का मूल कारण स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी है। लोग अब अपने इलाके की प्रकृति के संरक्षक बन गए हैं। वे पौधे लगाने, उनकी देखभाल करने, वन्यजीवों पर नज़र रखने और पर्यावरण से जुड़े कामों को अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के साथ जोड़कर कर रहे हैं। जो काम पहले सिर्फ पौधे लगाने की पहल था, वह अब एक सफल, समुदाय-आधारित संरक्षण मॉडल बन गया है। यह मॉडल स्थानीय जैव-विविधता को फिर से जीवित करता है, इंसान और प्रकृति के रिश्ते को मजबूत बनाता है और हिमालय में पर्यावरण को मज़बूत रखने के लिए एक अच्छा तरीका साबित हो रहा है।

मशीन से चलने वाले स्प्रे सिस्टम का उपयोग करके झील में बायोरिमेडिएशन बैक्टीरिया डालते हुए

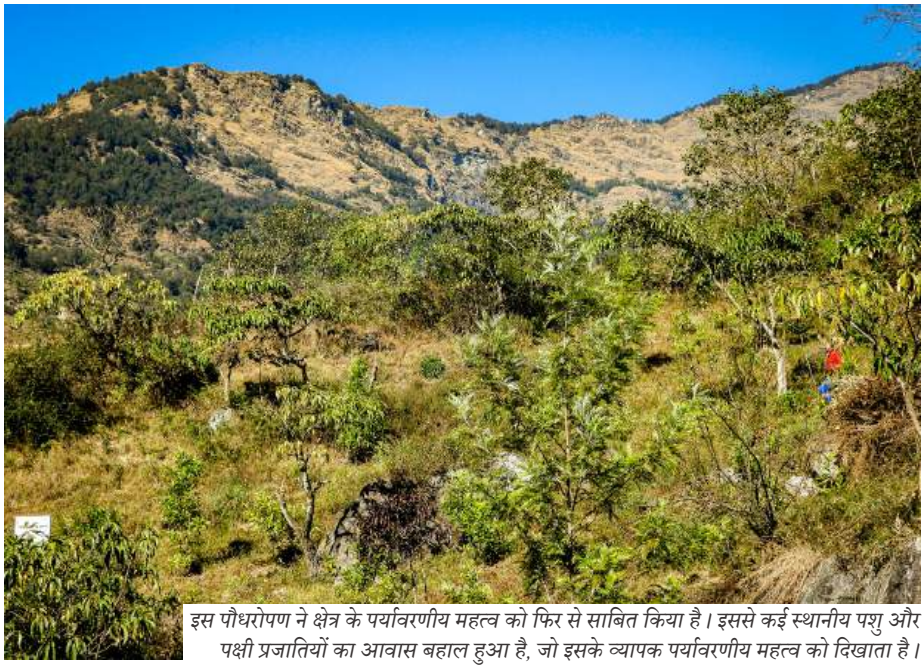

इस पौधरोपण ने क्षेत्र के पर्यावरणीय महत्व को फिर से साबित किया है। इससे कई स्थानीय पशु और पक्षी प्रजातियों का आवास बहाल हुआ है, जो इसके व्यापक पर्यावरणीय महत्व को दिखाता है।

विशेष कोष निधि परियोजनाएँ

भारत में पारंपरिक नौका/जहाज निर्माण का प्रलेखन

भारत की लंबी समुद्री तटरेखा और जटिल नदी प्रणाली के कारण यहाँ सदियों से लकड़ी की नौकाएँ बनाने की परंपरा रही है। यह परंपरा स्थानीय संस्कृति और लोगों की आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन अब ये पारंपरिक तरीके तेज़ी से खत्म हो रहे हैं। इसी वजह से इन्टैक के प्राकृतिक विरासत विभाग ने भारत में बनी पारंपरिक लकड़ी की नौकाओं और देशी नौका निर्माण तकनीकों का रिकॉर्ड तैयार करना शुरू किया है। चूंकि आधुनिक और मशीनों से बनी नौकाएँ इन पुराने शिल्पों की जगह ले रही हैं, इसलिए इस विरासत को खोने से पहले इसे दर्ज करना और बचाना बहुत ज़रूरी है।

उत्तर प्रदेश में किए गए क्षेत्रीय सर्वेक्षण से पता चला है कि यहाँ पारंपरिक नौका-निर्माण का समृद्ध ज्ञान मौजूद है, लेकिन यह ज़्यादातर सिर्फ़ मौखिक परंपराओं के ज़रिए ही बचा हुआ है। सर्वेक्षण बताते हैं कि लोग अब सस्ती और टिकाऊ होने के कारण फाइबर और धातु की नौकाएँ ज़्यादा पसंद कर रहे हैं। इसी वजह से पारंपरिक लकड़ी की नौकाएँ बनाने की पुरानी विधियाँ धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं। प्रयागराज में पिछले 20–25 सालों से लकड़ी की डेक वाली धातु की नौकाएँ बन रही हैं। इनकी तकनीक देश के बाकी हिस्सों से अलग है। इन नौकाओं के निचले और अंदरुनी हिस्से आम तौर पर साल की लकड़ी से बनाए जाते हैं, जबकि बाकी हिस्सों में सागौन की लकड़ी इस्तेमाल की जाती है ताकि लागत कम रहे। वाराणसी के पास रामनगर भी नौका निर्माण का एक प्रमुख केंद्र बन गया है, जो विशेष रूप से बाज़राव और क्रूज़र नौकाओं के लिए प्रसिद्ध है। कभी-कभी यहाँ एक साथ दस नौकाएँ भी बनाई जाती हैं।

वाराणसी के आदि केशव घाट के पास नाव की वॉटरप्रूफिंग का काम करते हुए

पारंपरिक नौका-निर्माण अब कई बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है। सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि इसका कोई लिखित रिकॉर्ड या औपचारिक दस्तावेज़ नहीं है। यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी कम होती जा रही है और इससे जुड़ी रोज़गार की संभावनाएँ भी घट रही हैं। निशाद जैसे समुदाय सबसे ज़्यादा प्रभावित हैं, क्योंकि अब लोग लकड़ी की जगह सस्ती और आसान आधुनिक सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके अलावा, पर्यावरणीय प्रतिबंधों के कारण स्थानीय लकड़ी का उपयोग सीमित हो गया है, जिससे परंपरागत शिल्प के साथ काम करना मुश्किल होता जा रहा है। क्योंकि इस शिल्प के न तो ब्लूप्रिंट हैं और न ही तकनीकी रिकॉर्ड, इसलिए यह पूरी तरह मौखिक ज्ञान पर निर्भर है। इसके कारीगर बूढ़े हो रहे हैं और उनके बाद यह ज्ञान आगे नहीं बढ़ रहा। यदि इसे जल्द ही सुरक्षित और दर्ज नहीं किया गया, तो भारत अपनी समुद्री और सांस्कृतिक विरासत का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा खो सकता है।

भारत के छोटे लवणीय झीलों का सर्वेक्षण

आर्द्रभूमि जलतंत्र की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, लेकिन कई बार इन्हें कम महत्व दिया जाता है और ये खतरे में हैं। खासकर खारे और लवणीय पानी की झीलें, जिन पर भारत में बहुत कम शोध हुआ है। ये झीलें अधिकतर राजस्थान, गुजरात और लद्दाख जैसे सूखे इलाकों के जलग्रहण क्षेत्रों में मिलती हैं। इनमें नमक की मात्रा 3 से 300 पीपीटी तक होती है और ये झीलें पानी के बहाव और वाष्पीकरण के नाज़ुक संतुलन से बनी रहती हैं। ये झीलें मध्य एशियाई फ्लाइवेम मार्ग पर आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए सर्दियों में बहुत महत्वपूर्ण ठिकाना हैं। फिर भी इन पर वैज्ञानिक शोध और संरक्षण की ठोस योजनाएँ नहीं हैं।

इस कमी को दूर करने के लिए, प्राकृतिक विरासत विभाग ने अल्प ज्ञात लवणीय आर्द्रभूमियों का शुरुआती पर्यावरणीय अध्ययन शुरू किया है। इस अध्ययन में इन झीलों की जैव-विविधता, उनकी पर्यावरणीय स्थिति और स्थानीय लोगों के लिए उनके सामाजिक सांस्कृतिक महत्व पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

पंजाब में बेन नदी तंत्र के लिए संरक्षण योजना का निर्माण

पंजाब की बेन नदी प्रणाली, जिसमें काली बीन और सफेद बेन (चित्ती बेन) शामिल हैं, दोआबा क्षेत्र की प्रकृति और संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। काली बेन सुल्तानपुर लोधी से होकर बहती है और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहीं गुरु नानक देव जी ने ज्ञान प्राप्त किया था। यह नदी पहले साफ और मौसमी थी, लेकिन अब सीवेज, कचरा और अतिक्रमण की वजह से बहुत गंदी हो गई है। सफेद बेन शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी से निकलती है और सालभर बहने वाली नदी है। लेकिन रेत खनन, शहरों का गंदा पानी और खेती से होने वाला प्रदूषण इसे नुकसान पहुँचा रहे हैं। दोनों नदियाँ खेती, भूजल भरने और जैव-विविधता के लिए जरूरी हैं, लेकिन अब ये गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गई है। इसलिए बेन नदी प्रणाली का संरक्षण पंजाब के पर्यावरण और जल सुरक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है।

भारत का पवित्र परिदृश्य नेटवर्क

भारत में पवित्र जगहों की पहचान के लिए एक बड़ा अध्ययन चल रहा है। इससे बनने वाला खास नक्शा पवित्र जंगलों को सुरक्षित रखने और उनका रिकॉर्ड बनाने में मदद करेगा। साथ ही यह सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा देगा।

डिडवाना नमक झील, राजस्थान में नमक तैयार करने के क्रमबद्ध चरण

सामुदायिक ज्ञान

पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही ज्ञान की सशक्त प्रणाली खास तौर पर लोगों के एक समूह के बारे में बताती है जो उनके दैनिक जीवन से परिलक्षित होती है, इसे सामुदायिक ज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है। मौखिक परंपराएं, ललित कलाएं, धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं से संबंधित जागरूकता या पारंपरिक शिल्प बनाने के लिए विरासत से प्राप्त कौशल, ये सभी सामुदायिक ज्ञान के घटक हैं। भारत की विरासत के संरक्षण में उपर्युक्त के महत्व को देखते हुए ट्रस्ट में अमूर्त विरासत संरक्षण के लिए अलग से एक विशेष प्रभाग है।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

यमुना सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण परियोजना

यमुना सांस्कृतिक प्रलेखन परियोजना, भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) द्वारा शुरू की गई एक विरासत संरक्षण परियोजना है। इस परियोजना के तहत अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) प्रभाग ने हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली-एनसीआर और उत्तर प्रदेश के उन सभी ज़िलों का विस्तृत अध्ययन और दस्तावेज़ तैयार किया है, जिनसे होकर यमुना नदी बहती है।

आईसीएच टीम के सदस्य इन ज़िलों में व्यापक क्षेत्रीय दौरे करते हैं और स्थानीय समुदायों से सीधे संवाद करते हैं, जिनकी सांस्कृतिक परंपराएँ और जीवन-यापन यमुना नदी से गहराई से जुड़ी हैं। शोध के तहत नदी से जुड़े पवित्र और ऐतिहासिक स्थलों की पहचान और रिकॉर्डिंग की जाती है। साथ ही लोक नृत्य, पारंपरिक गीत और सामुदायिक त्योहार जैसी जीवित सांस्कृतिक परंपराओं को भी संरक्षित किया जाता है। यमुना की इतनी विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को इस तरह पहली बार व्यवस्थित रूप से दर्ज किया जा रहा है। इसका उद्देश्य नदी की सांस्कृतिक पहचान को समझना और उसे मजबूत बनाना है। यह काम आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ज़रूरी है, ताकि वे इन परंपराओं को जान सकें, उनकी कद्र कर सकें और उनसे प्रेरणा ले सकें।

फील्डवर्क के दौरान कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामने आई हैं, जैसे — शामली का कैराना घराना, जिसने हिंदू ध्रुपद और इस्लामी ख़याल शैली का अनोखा मेल सिखाया जाता है; सहारनपुर के ऐतिहासिक हवलियों में बने सुंदर भित्ति-चित्र, जो स्थानीय कला-कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं; और अलीगढ़ का ऐतिहासिक ताला उद्योग, जो शहर की मुगल विरासत को दर्शाता है।

इस समय टीम बागपत, गौतम बुद्ध नगर, गाज़ियाबाद और अलीगढ़ ज़िलों की विस्तृत रिपोर्टों को अंतिम रूप देने में लगी हुई है।

गौतम बुद्ध नगर में क्षरण रोकने के लिए चांदी के मुखौटे से ढकी द्रोणाचार्य की प्रतिमा

गौतम बुद्ध नगर, डांकौर – पारसी रंगमंच की मंच-सज्जा का परदे के पीछे का संसार

अलीगढ़ का हलीम पकवान

इगलास तहसील,अलीगढ़ की चमचम मिठाई

लोनी किला, गाज़ियाबाद का एक बुर्ज

गाज़ियाबाद के अखाड़े में एक कुश्ती का मुक़ाबला

खेरेश्वर महादेव मंदिर, अलीगढ़

गज लोक: एशिया में हाथियों का पर्यावास और उनका सांस्कृतिक महत्व

गज लोक परियोजना का उद्देश्य एशिया के अलग अलग देशों में हाथियों से जुड़े सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और कलात्मक संबंधों को समझना और प्रस्तुत करना है। यह एक ऐसी पहल है जिसमें शोध, संरक्षण की जागरूकता और रचनात्मक अभिव्यक्ति — तीनों को साथ लाया गया है, ताकि एशिया की विभिन्न परंपराओं में हाथी के साझा प्रतीकात्मक महत्व को उजागर किया जा सके। परियोजना के तहत कई कार्यक्रम, प्रदर्शनियाँ और प्रकाशन तैयार किए जा रहे हैं। इनमें विशेषज्ञ, संस्थान और आम लोग भाग लेंगे, ताकि मनुष्य और हाथी के लंबे और गहरे संबंध को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

वर्तमान में 20 नवंबर 2025 को होने वाली *गज लोक* गोलमेज सम्मेलन की तैयारियाँ चल रही हैं। यह गोलमेज सम्मेलन विद्वानों, पर्यावरण संरक्षण विशेषज्ञों और सांस्कृतिक क्षेत्र के जानकारों को एक मंच पर लाएगा, जहाँ वे उन प्रमुख विषयों पर बातचीत करेंगे, जो भविष्य में होने वाली बड़ी प्रदर्शनी और उससे जुड़े कार्यक्रमों की दिशा तय करेंगे।

गज लोक परियोजना के उद्देश्यों, दायरे और मुख्य हिस्सों को समझाने के लिए एक परियोजना सार तैयार किया गया है। यह सार सहयोगियों और प्रतिभागियों के लिए एक मार्गदर्शक दस्तावेज़ की तरह काम करेगा। गोलमेज सम्मेलन के साथ-साथ, परियोजना की थीम को लोगों तक पहुँचाने के लिए एक लघु प्रदर्शनी भी लगाई जा रही है। ये सभी प्रयास मिलकर गज लोक को एशिया की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत में हाथी की भूमिका को समझने वाली एक सार्थक और बहुआयामी पहल के रूप में आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं

बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर, तमिलनाडु की सीढ़ियों की दीवार पर हाथी की उभारदार नक्काशी

विदिशा, मध्य प्रदेश में उदयगिरि गुफाओं में स्थित पत्थर से तराशी गई गणेश की मूर्ति

राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखी हड़प्पा काल की कांसे की हाथी की मूर्ति

असम की सत्रिया नृत्य प्रस्तुति

"कण-कण में राम" की स्क्रीनिंग

आईसीएच की डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म *"कण-कण में राम"* की विशेष स्क्रीनिंग 23 जुलाई 2025 को नई दिल्ली स्थित इन्टैक के बहुद्देशीय हॉल में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के संस्कृति और पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। वरिष्ठ अधिकारियों, विद्वानों और आमंत्रित अतिथियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। माननीय मंत्री का स्वागत इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह (आईएएस, सेवानिवृत्त), और आईसीएच प्रभाग की प्रधान निदेशक श्रीमती निरूपमा मॉडवेल ने किया।

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और सदस्य–सचिव श्री रविन्द्र सिंह (सेवानिवृत्त आईएएस) की उपस्थिति में भारत सरकार के माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ज्ञान–दीप प्रज्वलित करते हुए

कर्नाटक की यक्षगान प्रस्तुति

ओडिशा की रावणछाया प्रस्तुति

श्री ठाकुर ने कहा कि इन्टैक का काम बहुत विशाल और विविध है। इसमें मूर्त, अमूर्त और प्राकृतिक — तीनों तरह की विरासत से जुड़ी कई परियोजनाएँ शामिल हैं। इसके साथ-साथ स्कूलों, शिल्पों और प्रकाशनों के ज़रिए हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने और आगे बढ़ाने का काम भी किया जाता है।

डॉक्यूमेंट्री में भारत में रामायण को विविध अभिव्यक्तियों से कैसे प्रस्तुत किया जाता है, यह विस्तार से दिखाया गया है — जैसे अनुष्ठान आधारित कार्यक्रम, नृत्य-नाट्य और कठपुतली कला। फ़िल्म में कर्नाटक का यक्षगान और उप्पिनकुद्रु कठपुतली, ओडिशा की लंका पोड़ी यात्रा और रावण छाया, असम की सत्रिया परंपरा, मेवात की भपंग प्रस्तुति और छत्तीसगढ़ का रामनामी समाज — इन सभी परंपराओं को शामिल किया गया है। यह फ़िल्म भारत की प्रदर्शन कलाओं के ज़रिए रामायण की सांस्कृतिक विविधता और उसके लंबे समय से चले आ रहे प्रभाव को सुंदर तरीके से दिखाती है।

फ़िल्म की स्क्रीनिंग के बाद माननीय मंत्री ने अपने संबोधन में इन्टैक टीम और फ़िल्म निर्माताओं के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह फ़िल्म रामायण को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कहानी के रूप में, और एक जीवंत परंपरा के रूप में प्रस्तुत करती है — जो अपने सार्वभौमिक संदेश से पूरे देश को जोड़ती है। मंत्री जी ने कहा कि "*कण-कण में राम*" कई सालों की मेहनत और गहरे शोध का परिणाम है। यह सिर्फ़ एक सुंदर फ़िल्म ही नहीं है, बल्कि मानव इतिहास के महानतम महाकाव्य से भावनात्मक जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है।

उन्होंने कहा कि भारत इस समय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के दौर से गुजर रहा है, जिसमें इन्टैक जैसी संस्थाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन्टैक पिछले चालीस सालों से सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में काम कर रहा है और इसने हमेशा प्रामाणिक और गुणवत्तापूर्ण काम किया है। उन्होंने यह भी बताया कि जब वे जल शक्ति मंत्रालय में थे, तब उन्हें गंगा सांस्कृतिक प्रलेखन परियोजना के दौरान इन्टैक के काम को करीब से देखने का मौका मिला था, जहां संस्था ने तय समय में उत्कृष्ट कार्य किया था। इन्टैक ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है—चाहे वह गंगा नदी के किनारे का क्षेत्र हो या पूरा गंगा बेसिन।

ओडिशा की चिलिका झील में मछुआरे अपनी ताज़ी पकड़ी हुई मछलियाँ देखते हुए

बहती विरासतें: भारत की समुद्री और नदी संस्कृति की अमूर्त विरासत का मानचित्रण

भारत का समुद्री तट और नदियों का व्यापक जाल कई सदियों से लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान, रोज़गार और आस्था का आधार रहा है। इन्टैक की *बहती विरासतें* परियोजना लोगों और पानी के बीच इस जीवित संबंध को समझने की कोशिश करती है। यह परियोजना यह जानने का प्रयास करती है कि समुद्र और नदियों से जुड़ी परंपराएँ समय के साथ कैसे बदली हैं और आज भी किस तरह समुदायों की पहचान और जीवन का हिस्सा बनी हुई हैं। क्षेत्रीय अध्ययन, लोगों की मौखिक कहानियों और स्थानीय संस्थाओं के साथ सहयोग के माध्यम से, यह परियोजना पारंपरिक ज्ञान, कौशल और रीति-रिवाज़ों को दर्ज करती है। ये परंपराएँ आज भी भारत के तटीय और नदी किनारे बसे लोगों के जीवन और पहचान को आकार देती हैं।

थैक्कल, तमिलनाडु में उस्ताद शिल्पी और मालवाहक जहाज़ के कप्तान

कडलोर जेट्टी की मछली मंडी में मछुआरिन

पहले चरण का क्षेत्रीय कार्य गोदावरी नदी और कोंकण तट पर किया गया। यहाँ महाराष्ट्र और गोवा में लकड़ी की नाव बनाने की परंपरा, मछली पकड़ने के तरीके और स्थानीय धार्मिक प्रथाओं को दर्ज किया गया। इस शोध से पता चला कि पर्यावरण, रोज़गार और आस्था — ये तीनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। समुदाय नए तकनीकी साधन अपनाते हुए भी पानी, मौसम और प्रकृति से जुड़े अपने पारंपरिक ज्ञान को आज भी संभाले हुए हैं।

दूसरा चरण 24 से 31 अक्टूबर 2025 के बीच तमिलनाडु और ओडिशा में किया गया। चेन्नई, कुड्डालोर, तैक्कल, भुवनेश्वर, चिल्का झील और मंगलाजोड़ी में टीम ने मछुआरों, नाव बनाने वालों और मछली पकड़ने वाले समुदाय की महिलाओं से मुलाकात की। बातचीत में ज्वार, हवाओं और तारों को पहचानने जैसे गहरे पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान सामने आए। साथ ही लकड़ी की नावों से एफआरपी नावों की ओर बदलाव, मछली पकड़ने के बदलते तरीकों और जलवायु परिवर्तन के असर पर भी चर्चा हुई। टीम ने इंस्टीटूट फ्रैनकाइस डे पांडिचेरी और दक्षिणा चित्र संग्रहालय के साथ मिलकर पुराने व्यापार मार्गों, जहाज़ बनाने की परंपराओं और समुद्री संस्कृति को सुरक्षित रखने के आधुनिक संग्रहालय प्रयासों का भी अध्ययन किया।

अगला चरण असम और पश्चिम बंगाल में किया जाएगा, जहाँ ब्रह्मपुत्र और हुगली नदियों से जुड़ी जीवित परंपराओं का अध्ययन होगा। भीतरी जलमार्गों और तटीय परंपराओं को साथ जोड़कर बहती विरासतें परियोजना का लक्ष्य भारत की समुद्री विरासत की एक पूरी तस्वीर पेश करना है — जो सिर्फ नावों और व्यापार की कहानी नहीं, बल्कि स्मृति, बदलाव और निरंतरता की कहानी भी है।

चेन्नई में पलायम अन्ना कैटमरैन मॉडल के विभिन्न हिस्सों के बारे में बताते हुए

श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त), सदस्य–सचिव, इन्टैक आईएफ़एस अधिकारियों को उद्घाटन भाषण देते हुए

सुषमा स्वराज इंस्टीट्यूट ऑफ़ फ़ॉरेन सर्विस (एसएसआईएफएस) के साथ सहयोग: "भारतीय विरासत संरक्षण का अध्ययन" इन्टैक में 2024 बैच के विदेशी सेवा अधिकारियों के लिए कार्यशाला

आईसीएच प्रभाग ने यह पहल इसलिए शुरू की, ताकि एसएसआईएफएस में प्रशिक्षण ले रहे आईएफएस अधिकारियों को भारत की सांस्कृतिक विरासत और उसकी महत्ता को बेहतर तरीके से समझाया जा सके। साथ ही यह भी बताया जा सके कि हमारी संस्कृति कैसे सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय साझेदारी को मजबूत बनाती है।

7 अगस्त 2025 को 2024 बैच के विदेशी सेवा अधिकारियों ने इन्टैक का दौरा किया और आईसीएच प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्य विभाग और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) का भी सहयोग रहा। यह सत्र "भारतीय विरासत संरक्षण का अध्ययन" नामक प्रशिक्षण मॉड्यूल का हिस्सा था। बैच को इन्टैक के सदस्य सचिव, श्री रविन्द्र सिंह (आईएएस, सेवानिवृत्त) ने संबोधित किया और भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र के बारे में व्यापक जानकारी दी। प्रसिद्ध क्विज़ मास्टर कुणाल सावरकर ने एक हेरिटेज क्विज़ भी कराई, जिससे कार्यक्रम और भी रोचक और सहभागितापूर्ण बन गया। इसके अलावा, अधिकारियों को इन्टैक की संरक्षण प्रयोगशालाओं का दौरा भी कराया गया, जहाँ उन्होंने संरक्षण की विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में जाना। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की सराहना की और कहा कि इससे उन्हें भारत की सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न पहलुओं को समझने और उनके महत्व को जानने का मूल्यवान अवसर मिला।

क्विज़ मास्टर कुनाल सावरकर द्वारा इन्टैक हेरिटेज क्विज़ का संचालन किया गया, जिसमें सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह (सेवानिवृत्त आईएएस) और इन्टैक के प्रधान निदेशक भी उपस्थित थे

प्रश्नोत्तरी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए उत्साही दर्शक

इन्टैक संरक्षण प्रयोगशाला का दौरा

कुछ वरिष्ठ आईएफ़एस अधिकारियों के साथ इन्टैक के प्रधान निदेशक

सुषमा स्वराज इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन सर्विसेज़ (एसएसआईएफएस) में वरिष्ठ विदेशी सेवा अधिकारियों के साथ आयोजित कार्यक्रम

25 अगस्त 2025 को इन्टैक के चार प्रधान निदेशक — सुश्री निरूपमा वाई. मॉडवेल (आईसीएच), श्री मनु भटनागर (प्राकृतिक विरासत), सुश्री विजय अमुजुरे (वास्तुकला विरासत) और श्री नीलाभ सिन्हा (कला एवं सामग्री विरासत) ने नई दिल्ली स्थित एसएसआईएफएस का दौरा किया। उन्होंने 27 वरिष्ठ भारतीय विदेशी सेवा अधिकारियों के मिड-कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान भारतीय कला और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उसकी वर्तमान स्थिति पर चर्चा की और अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

सोशल मीडिया सहभागिता और प्रसार

आईसीएच प्रभाग ने अपनी सोशल मीडिया उपस्थिति को सक्रिय बनाए रखने के लिए लगातार बेहतर सामग्री तैयार की है। प्रभाग के सदस्यों ने कई विषयों और परियोजनाओं पर पोस्ट साझा की हैं, जैसे यमुना सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण परियोजना, आईसीएच द्वारा बनाई गई फ़िल्में, भारत के पारंपरिक खाद्य, और आईसीसीआर के साथ आयोजित भारतीय विरासत संरक्षण कार्यशाला आदि। क्षेत्रीय कार्य से प्राप्त वीडियो और जानकारी का उपयोग कर बनाए गए ये पोस्ट न केवल देखने में आकर्षक हैं बल्कि भारत की सांस्कृतिक परंपराओं की समृद्ध विरासत को भी उजागर करते हैं।

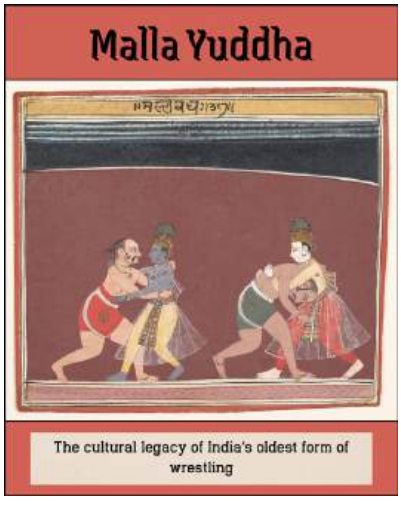

मल्ल युद्ध के इतिहास पर इंस्टाग्राम पोस्ट

गज-लोक:
एशिया में हाथियों के पर्यावास और उनका सांस्कृतिक महत्व

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) प्रभाग, इन्टैक द्वारा आयोजित

श्री अशोक सिंह ठाकुर, श्री रविन्द्र सिंह (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.), सुश्री निरूपमा वाई. मॉडवेल और श्री मनु भटनागर द्वारा संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री विवेक अग्रवाल आई.ए.एस. को इन्टैक के प्रकाशन भेंट किए गए

भारतीय सांस्कृतिक निधि (इन्टैक) ने अपनी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) प्रभाग के माध्यम से गज-लोक: एशियाई हाथियों और उनकी सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता परियोजना शुरू की। यह पहल एशियाई हाथियों से जुड़ी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पारिस्थितिक और जलवायु-सहनशीलता संबंधी कथाओं को उजागर करती है। गज-लोक एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक पहल है, जो एशिया के उन देशों की साझा विरासत को दिखाती है, जहाँ हाथी सिर्फ सांस्कृतिक प्रतीक नहीं, बल्कि पर्यावरण के संतुलन के महत्वपूर्ण संकेतक भी माने जाते हैं।

यह कार्यक्रम गज-लोक प्रदर्शनी और गोलमेज चर्चा के साथ शुरू हुआ, जिसमें शिक्षाविद, सांस्कृतिक विशेषज्ञ, संरक्षणकर्मी और विरासत पेशेवर शामिल हुए। इन आयोजनों ने कई देशों के बीच संवाद की शुरुआत की, जहाँ हाथी को सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय सहनशीलता का एक महत्वपूर्ण और जीवंत प्रतीक माना जाता है।

श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक, श्री रविन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), सदस्य सचिव, इन्टैक, श्री विवेक मेनन और प्रो. रमण सुकुमार की उपस्थिति में संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री विवेक अग्रवाल आई.ए.एस. द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

मुख्य अतिथि द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन

गज-लोक परियोजना: गोलमेज चर्चाएँ

संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री विवेक अग्रवाल, आई.ए.एस. प्रोजेक्ट गज-लोक की गोलमेज चर्चा को संबोधित करते हुए

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और इन्टैक के सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) के साथ, इन्टैक की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) प्रभाग की टीम

यह कार्यक्रम मुख्य अतिथि, श्री विवेक अग्रवाल, आई.ए.एस., सचिव, संस्कृति मंत्रालय द्वारा दीप प्रज्ज्वलन समारोह के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक और श्री रविन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), सदस्य–सचिव, इन्टैक भी उपस्थित थे। इसके बाद परियोजना का परिचय श्रीमती निरूपमा वाई. मॉडवेल, प्रधान निदेशक, आईसीएच प्रभाग, इन्टैक ने दिया। गज-लोक गोलमेज चर्चा में कई प्रमुख विशेषज्ञ शामिल हुए, अर्थात् प्रो. रमन सुकुमार, पारिस्थितिक विज्ञान केंद्र, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु; श्री विवेक मेनन, अध्यक्ष, आईयूसीएन स्पेसीज सर्वाइवल कमीशन एंड फाउंडर एंड ईडी, भारतीय वन्यजीव संस्थान; डॉ. विनोद माथुर, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण और पूर्व निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान; डॉ. खालिद पाशा, आईयूसीएन एशिया रीजनल कोऑर्डिनेटर, बैंकॉक; श्री रवि सिंह, सेक्रेटरी जनरल और सीईओ, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया; सुश्री सुजाता शंकर, आर्किटेक्ट और कन्वीनर, इन्टैक चेन्नई अध्याय; डॉ. नंदिता कृष्णा, अध्यक्ष, सी.पी. रामास्वामी अय्यर फाउंडेशन, चेन्नई; प्रो. अर्चना शास्त्री, पूर्व निदेशक, मेकांग-गंगा कोऑपरेशन एशियन ट्रेडिशनल टेक्सटाइल म्यूज़ियम, सिम रीप, कंबोडिया; डॉ. एन.वी.के. अशरफ, वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया; डॉ. अरुण वेंकटरमन, टेक्निकल कंसल्टिंग डायरेक्टर, ईआरएम; प्रो. महेश रंगराजन, इतिहासकार, अशोका यूनिवर्सिटी; सुश्री ईना पुरी, लेखिका, जीवनीकार और आर्ट क्यूरेटर; प्रो. अली अनुशहर, इतिहासकार, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया।

गज-लोक प्रदर्शनी में छह थीम आधारित पैनल लगाए गए थे, जो मानव और हाथी के लंबे और गहरे संबंध को दर्शाते हैं — प्रागैतिहासिक कला और पुराने व्यापार संबंधों से लेकर धार्मिक महत्व, शाही परंपराओं और पर्यावरण से जुड़ी बातचीत तक। गज-लोक सिर्फ़ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह मानव और हाथियों के बीच सदियों पुराने गहरे और जीवंत संबंध का उत्सव है। यह पहल शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को जोड़कर पूरे एशिया में सांस्कृतिक विरासत, संरक्षण और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति साझा प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

प्रदर्शनी में प्रदर्शित प्रतिकृति

विरासत शिल्प और समुदाय प्रभाग

इन्टैक वाराणसी अध्याय के सहयोग से वाराणसी के सनबीम स्कूल में आयोजित सुलेख कार्यशाला

विरासत शिल्प और समुदाय प्रभाग (एचसीसीडी) ने इन्टैक वाराणसी अध्याय के सहयोग से 6-8 अगस्त 2025 को सनबीम स्कूल में तीन दिवसीय सुलेख कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला छात्रों में देवनागरी लिपि के महत्व के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। समापन दिवस पर इस कार्यक्रम में इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर उपस्थित रहे। कार्यशाला छात्रों और शिक्षकों दोनों द्वारा बेहद सराही गई।

सुलेख कार्यशाला में उत्साह से भाग लेते हुए छात्र और शिक्षक

पेशवा हवेली, वाराणसी का दौरा

इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने एचसीसीडी की प्रमुख सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा, वाराणसी अध्याय के संयोजक श्री अशोक कपूर और इन्टैक वाराणसी अध्याय के अन्य सदस्यों के साथ पेशवा हवेली का दौरा किया। अध्यक्ष ने परिसर का निरीक्षण किया और प्रदर्शनी का अवलोकन किया, इसके बाद टीम के साथ विभिन्न मामलों पर चर्चा की गई।

इन्टैक अध्यक्ष, श्री अशोक सिंह ठाकुर, देवनागरी सुलेख लिपि में हाथ आजमाते हुए

इन्टैक और पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के बीच समझौता-ज्ञापन

एचसीसीडी की प्रमुख सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा ने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ का दौरा किया तथा इन्टैक और पंजाब विश्वविद्यालय के बीच समझौता-ज्ञापन और अन्य सहयोगी पहल को अंतिम रूप दिया।

होशियारपुर में पांडुलिपि एवं प्राचीन वस्तु संग्रहालय का प्रस्ताव तैयार करना

एचसीसीडी की प्रमुख सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा और एचसीसीडी टीम होशियारपुर में विश्वेश्वरानंद विश्वबंधु संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन संस्थान (वीवीबीआईएसएंडआईएस) परिसर में स्थापित होने वाली पांडुलिपियों और प्राचीन वस्तुओं के संग्रहालय के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट और प्रस्ताव तैयार कर रही है। यह रिपोर्ट संग्रहालय अनुदान योजना के तहत संस्कृति मंत्रालय को प्रस्तुत की जाएगी। यह संग्रहालय होशियारपुर के इतिहास और यहाँ के समृद्ध शिल्पों को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, विशेष रूप से दुर्लभ भोजपत्र और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई पांडुलिपियों को प्रदर्शित करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

कार्यशाला के समापन समारोह में इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, एचसीसीडी की प्रमुख बिंदु वंदना मनचंदा, श्री अशोक कपूर (वाराणसी अध्याय के संयोजक), श्री इंकु कुमार (सुलेख कला विशेषज्ञ) और वाराणसी अध्याय के अन्य सदस्यगण

पुनेरी साड़ी पुनरुद्धार परियोजना का शुभारंभ

एचसीसीडी ने इन्टैक पुणे और अनेगुंडी-हम्पी अध्याय के सहयोग से पुनेरी साड़ी बुनाई परियोजना के तहत नए डिजाइनों की एक विशेष श्रृंखला सफलतापूर्वक लॉन्च की है। ये सादगी भरी पुनेरी साड़ियाँ हमारी पारंपरिक वस्त्रकला और बुनाई कौशल की समृद्ध परंपरा को खूबसूरती से दर्शाती हैं। इन साड़ियों का शुभारंभ 27 सितंबर 2025 को पुणे में आयोजित एक कार्यक्रम में किया गया, जिसका उद्घाटन कई गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया।

परियोजना के तहत पुनर्जीवित किए गए डिज़ाइन

पेशवा हवेली में दौरे के दौरान इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, एचसीसीडी की प्रमुख बिंदु वंदना मनचंदा, श्री अशोक कपूर (वाराणसी अध्याय के संयोजक) और इन्टैक वाराणसी अध्याय के अन्य सदस्यगण

कलाकृतियों का कैटलॉग तैयार करने, प्रारंभिक विश्लेषण करने और फोटोग्राफों का दस्तावेज बनाने में जुटी एचसीसीडी

जोरबाग मेट्रो स्टेशन पर डीएमआरसी अधिकारियों के साथ एचसीसीडी टीम

कार्यशाला में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी

सूखने के लिए रखी गई प्रतिभागियों द्वारा निर्मित अगरबत्तियां

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के संग्रह में कुछ खूबसूरत पत्थर की मूर्तियाँ और टेराकोटा प्रतिमाएँ

एचसीसीडी टीम का पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी का दौरा

सितंबर में एचसीसीडी टीम ने विद्यापीठ का दौरा कर वहां मौजूद कलाकृतियों का दस्तावेजीकरण किया। यह कार्य इन्टैक वाराणसी अध्याय के सहयोग से किया गया। योजना है कि पार्श्वनाथ विद्यापीठ के लिए एक संग्रहालय प्रदर्शन की रूपरेखा तैयार की जाए। एचसीसीडी टीम 31 अक्तूबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय में जैन ट्रस्ट को यह प्रारंभिक संग्रहालय रूपरेखा प्रस्तुत करेगी।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) के लिए प्रदर्शनी पैनलों का उन्नयन

एचसीसीडी टीम जोरबाग, ग्रीन पार्क और हौज खास मेट्रो स्टेशनों में प्रदर्शित प्रदर्शनी पैनलों के उन्नयन और सुधार पर काम कर रही है। इसके लिए टीम नियमित रूप से डिज़ाइनर और स्थापना टीम के साथ बैठकें और दौरे कर रही है।

इन्टैक राजकोट अध्याय के सहयोग से कच्छ, गुजरात में तांगड़िया बुनाई का पुनरुद्धार

एचसीसीडी विभाग को यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि कच्छ, गुजरात की पारंपरिक तांगड़िया बुनाई को बचाने और पुनर्जीवित करने के लिए बनाए गए प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई है। एचसीसीडी जल्द ही इन्टैक राजकोट अध्याय के सहयोग से इस पर कार्य शुरू करेगा।

इन्टैक गोरखपुर अध्याय के सहयोग से गोरखपुर में पवित्र अवशेष प्रशिक्षण कार्यशाला

एचसीसीडी टीम ने अक्टूबर 2025 में गोरखपुर में हुई पवित्र अवशेष प्रशिक्षण कार्यशाला में 25 ग्रामीण महिलाओं को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया। ये महिलाएँ गोरखपुर और आसपास के गाँवों से थीं। उन्हें मंदिरों से इकट्ठा किए गए फूलों को अगरबत्ती बनाने का तरीका सिखाया गया। कार्यशाला में महिलाओं ने यह भी सीखा कि बचे हुए फूलों को खाद में कैसे बदला जाए, जिससे कचरे का सही उपयोग हो सके और पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे। चार दिवसीय इस कार्यशाला के अंत तक प्रतिभागियों ने व्यावहारिक कौशल सीखे, रोजगार के नए अवसर पाए और कचरे या बचे हुए पदार्थों को फिर से उपयोगी वस्तुओं में बदलने की कला सीखी। इससे उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनने और पर्यावरण की जिम्मेदारी निभाने में मदद मिली।

कार्यशाला के समापन दिवस पर प्रतिभागी, एचसीसीडी टीम और इन्टैक गोरखपुर टीम

भारत में मूर्ति निर्माण परंपराओं का दस्तावेजीकरण

एचसीसीडी प्रभाग ने विभिन्न क्षेत्रों की मूर्ति-निर्माण परंपराओं पर शोध और संकलन पूरा कर लिया है। इनमें *दरभंगा और मिथिला क्षेत्र* – मिट्टी और पेपर-मेचे की मिथिला शैली की मूर्तियाँ; *मुजफ्फरपुर और वैशाली क्षेत्र* – लोक टेराकोटा और पूजा में उपयोग होने वाली मिट्टी की मूर्तियाँ; *गया क्षेत्र* – काले पत्थर की मूर्ति-शिल्प परंपरा; *चंपारण क्षेत्र* – ग्रामीण देवी-पूजा में उपयोग होने वाली लोक मूर्तियाँ; *छोटा नागपुर पठार का इलाका* (अब बिहार और झारखंड के हिस्से) – पारंपरिक मूर्ति-निर्माण शैलियाँ शामिल हैं।

जनजातीय और आदिवासी प्रभाव - सारना, ओराव, और मुंडा जनजातियों की पत्थर, लकड़ी और मिट्टी की मूर्तियाँ; *पटना और भागलपुर के शहरी क्षेत्र* में दुर्गा पूजा और सरस्वती पूजा के लिए मिट्टी और भूसे से बनाई गई मूर्तियाँ।

झारखंड में रांची और हजारीबाग जिलों में पारंपरिक टेराकोटा मूर्तियाँ और पहान मूर्तियाँ, जो आदिवासी अनुष्ठानों से जुड़ी हैं, का दस्तावेजीकरण किया गया। इसके अलावा, पत्थर, धातु और लकड़ी की मूर्ति निर्माण प्रथाओं के साथ दोनों राज्यों में डोकरा शिल्प का भी अध्ययन किया गया, जहाँ कारीगर खोई हुई मोम प्रक्रिया का उपयोग करके पीतल की मूर्तियाँ, पूजा की वस्तुएं और जनजातीय आकृतियाँ बनाते हैं।

असम में कारीगर बांस की महीन जाली बनाकर उस पर मिट्टी की परत लगाते हैं और प्राकृतिक रंगों से रंगते हैं। यह ढांचा ही एक शिल्प परंपरा है, जो क्षेत्र में बांस की प्रचुरता को दर्शाता है। त्रिपुरा में मूर्ति निर्माण पीढ़ियों से चली आ रही जानकारी पर आधारित है, जहाँ कारीगर मिट्टी को सहज और भक्ति भाव से आकार देते आ रहे हैं। ये मूर्तियाँ, जिन्हें अक्सर प्राकृतिक रंगों से सजाया जाता है, धार्मिक महत्व और कारीगरों की परंपरा — दोनों को दर्शाती हैं। मणिपुर में *उमंग लई-हराओबा* जैसे त्योहारों से जुड़ी स्थानीय प्रथाओं में मिट्टी और लकड़ी की छोटी-छोटी मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। यहाँ कभी-कभी अनुष्ठानिक ढाँचे बनाने में बांस और टोकरी जैसी बुनाई का उपयोग किया जाता है।

नागालैंड और मेघालय में बड़ी मिट्टी की मूर्तियाँ कम बनती हैं, लेकिन यहाँ लकड़ी की नक्काशी और बांस का शिल्प धार्मिक मूर्तियों और सजावटी ढाँचों में बहुत महत्वपूर्ण है। अरुणाचल प्रदेश में, खासकर तवांग और बमडिला में, बौद्ध मूर्तिकला प्रमुख है। यहाँ कारीगर बौद्ध, तारा और पद्मसंभव की मिट्टी और धातु की मूर्तियाँ पारंपरिक मिट्टी-मॉडलिंग और खोई हुई मोम की तकनीक से बनाते हैं। इन मूर्तियों को प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है और मठों में इन्हें पूजा जाता है।

मेघालय में खासी और जैंटिया समुदाय लकड़ी की मूर्तियाँ और "ख्नॉंग" नामक स्मारक स्तंभ बनाते हैं। ये आमतौर पर पूर्वजों या प्रकृति की आत्माओं का प्रतीक होते हैं और सामुदायिक तथा स्मारक समारोहों में उपयोग किए जाते हैं। मिजोरम में कारीगर लकड़ी और बांस से योद्धाओं, जानवरों और आत्माओं की आकृतियाँ बनाते हैं। पहले ये मूर्तियाँ जनजातीय स्मारक के रूप में इस्तेमाल होती थीं, लेकिन अब इन्हें लोक विरासत की पहचान माना जाता है।

नागालैंड में मोरुंग (सामुदायिक घर) की नक्काशी सागौन और मुलायम लकड़ी से की जाती है। इन नक्काशियों में पूर्वजों की आकृतियाँ, प्रजनन से जुड़े प्रतीक और जानवरों के रूपक दिखते हैं, जो जनजातीय कहानियों और उनकी पहचान को दर्शाते हैं। त्रिपुरा में त्रिपुरी, रीआंग और चाकमा जनजातियाँ लकड़ी और मिट्टी की मूर्तियाँ बनाती हैं, जिन्हें गाँव के अनुष्ठानों और नृत्य कार्यक्रमों में उपयोग किया जाता है। ये मूर्तियाँ हाथ से तराशी जाती हैं और प्राकृतिक रेशों से सजाई जाती हैं।

सिक्किम में बौद्ध मूर्तियाँ बनाने की पुरानी और सुदृढ़ परंपरा है, विशेषकर रुमटेक और गंगटोक में। यहाँ मठों के कारीगर बौद्ध, वज्रपाणी और महाकाल की मिट्टी और कांस्य की मूर्तियाँ पारंपरिक मिट्टी-मॉडलिंग और खोई हुई मोम की तकनीक से बनाते हैं। धार्मिक समारोहों में मक्खन से बनी मूर्तियाँ, जिन्हें टॉरमा कहा जाता है, भी अक्सर बनाई जाती हैं।

बांस की शीटों पर पारंपरिक सामग्री और तकनीकों से भगवान गणेश का चित्रण

असम में भूसे (पुआल) से देवी दुर्गा के मुखौटे बनाने की प्रक्रिया

असम के माजुली मुखौटे

आर्ट डेको शैली में निर्मित विसालम, चेत्तिनाड, तमिलनाडु

वास्तुकला विरासत प्रभाग और इन्टैक के विभिन्न अध्यायों के सहयोग से - इन्टैक पारंपरिक भवन शिल्प निर्देशिका – आर्ट डेको

एचसीसीडी प्रभाग को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि भारत में आर्ट डेको आंदोलन के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर इसकी शिल्पकला का दस्तावेज बनाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। प्रभाग ने मुंबई, सूरत, जयपुर, शिमला, ग्वालियर, हैदराबाद और देश भर के 12 अन्य इन्टैक अध्यायों को आमंत्रित किया है कि वे अपने क्षेत्रों की आर्ट डेको इमारतों में इस्तेमाल होने वाले सजावटी तत्व जैसे अलंकरण, गोल झरोखे, खिड़कियाँ, फर्नीचर, सजावटी आकृतियां, उभरी हुई नक्काशी, लोहे की जालियां, रंग-बिरंगे पत्थरों वाला फर्श आदि का रिकॉर्ड तैयार करें और इस निर्देशिका के निर्माण में सहयोग दें।

इन्टैक, दिल्ली में पेशवा हवेली के पुन: उपयोग पर बैठक

20 अगस्त 2025 को इन्टैक मुख्यालय, दिल्ली में पेशवा हवेली, वाराणसी के पुन: उपयोग की रणनीति पर एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त), सदस्य-सचिव, इन्टैक ने की। इसमें श्री एस. प्रकाश (निदेशक, प्रशासन, इन्टैक), श्री अमन नाथ (संस्थापक सदस्य, इन्टैक), श्री अतुल खन्ना (शासी परिषद सदस्य, इन्टैक), सुश्री ज्योति मयाल (अध्यक्ष, टीएचएससी), श्री नीलाभ सिन्हा (प्रधान निदेशक- ए एंड एमएच प्रभाग), सुश्री विजय अमुजुरे (प्रधान निदेशक-एएच प्रभाग), सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा (प्रमुख, एचसीसीडी) और सुश्री राधिका मल्होत्रा (प्रोजेक्ट असोसिएट, एचसीसीडी) उपस्थित थे।

एचसीसीडी सलाहकार समिति और एचसीसीडी टीम के साथ श्री अशोक सिंह ठाकुर (अध्यक्ष) और श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त), सदस्य-सचिव

एचसीसीडी सलाहकार समिति की बैठक

24 सितंबर 2025 को इन्टैक परिसर में एचसीसीडी सलाहकार समिति की बैठक आयोजित हुई। इसमें सुश्री रितु सेठी, सुश्री ज्योत्सना सिंह, सुश्री पूर्णिमा राय और सुश्री रता चिस्ती के साथ सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा (प्रमुख- एचसीसीडी), श्री प्रवीण तिवारी (कार्यक्रम समन्वयक - एचसीसीडी), सुश्री अनुश्का रावत (प्रोग्राम असोसिएट- एचसीसीडी) और सुश्री राधिका मल्होत्रा (प्रोजेक्ट असोसिएट- एचसीसीडी) उपस्थित थीं। बैठक में सुश्री राधिका मल्होत्रा ने हस्तशिल्प पुनरुद्धार पहलों, भारत की पारंपरिक भवन शिल्प निर्देशिका, आगामी समुदाय केंद्रित संग्रहालयों, भारत की मूर्ति निर्माण परंपराओं और अन्य परियोजनाओं/कार्यक्रमों पर प्रस्तुति दी, जिसमें कारीगर समुदायों पर उनके प्रभाव को भी दिखाया गया। समिति के अनुभव, सुझाव और मार्गदर्शन के तहत एचसीसीडी टीम ने आगामी परियोजनाओं और प्रभाग की भावी दिशा पर चर्चा की। बैठक का समापन श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष-इन्टैक और श्री रविन्द्र सिंह (आईएएस, सेवानिवृत्त), सदस्य-सचिव, इन्टैक ने किया।

प्रभाग की महत्वपूर्ण पहलों और शिल्प पुनरुद्धार परियोजनाओं की प्रस्तुति देती हुई सुश्री राधिका मल्होत्रा (प्रोजेक्ट असोसिएट–एचसीसीडी)

डिजिटल आर्टिज़न्स ऑफ़ इंडिया अवार्ड 2025, पांडिचेरी में मानद ज्यूरी सदस्य के रूप में आमंत्रण

एचसीसीडी प्रमुख, सुश्री बिंदु वंदना मनचंदा ने 19 से 21 सितंबर 2025 तक पांडिचेरी के पास ऑरोविल के बगल में स्थित म्यूज़ियम ऑफ़ डिजिटल सोसाइटी में आयोजित डिजिटल आर्टिज़न्स ऑफ़ इंडिया अवॉर्ड्स 2025 में ग्रैंड जूरी सदस्य के रूप में भाग लिया।

इन्टैक मुख्यालय में क्षमता विकास कार्यशाला

8 अक्टूबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय में आयोजित क्षमता विकास कार्यशाला में एचसीसीडी टीम ने इन्टैक सदस्यों को प्रभाग की पहलों और परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी।

क्षमता विकास कार्यशाला में एचसीसीडी टीम

इन्टैक 2026 उत्सव

एचसीसीडी टीम 28 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित होने वाले वार्षिक इन्टैक उत्सव की तैयारी शुरू कर दी है।

शिक्षा, प्रशिक्षण और विस्तार

यह खंड देश भर में छात्रों के साथ जागरूकता बढ़ाने और विरासत के महत्व को बढ़ावा देने हेतु किए गए व्यापक कार्यों का संक्षिप्त विवरण देगा, जो सभी संरक्षण प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें विरासत पर्यटन, प्रकाशन, इन्टैक ज्ञान केंद्र, सांस्कृतिक मामले एवं विरासत शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण में चल रहे कार्यों से संबंधित गतिविधियाँ शामिल होंगी।

विरासत शिक्षा और संचार सेवा

विरासत जागरूकता और विरासत क्लबों के लिए शिक्षक कार्यशालाएँ

डीपीएस सोसाइटी एचआरडीसी, ग्रेटर नोएडा

11–12 अगस्त | 94 शिक्षक, 94 डीपीएस स्कूल

एचईसीएस, इन्टैक द्वारा पूरे भारत के डीपीएस स्कूलों के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन ग्रेटर नोएडा के डीपीएस नॉलेज पार्क-V स्थित एचआरडीसी भवन में किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को ऐसे तरीक़े और सामग्री उपलब्ध कराना था, जिनसे वे अपने स्कूलों में विरासत शिक्षा को प्रभावी रूप से शामिल कर सकें और छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ा सकें। कार्यशाला में संसाधन टीम के रूप में सुश्री पूर्णिमा दत्त (प्रधान निदेशक, एचईसीएस), सुश्री क्रिस्टीना शांगने, सुश्री वैष्णवी, सुश्री नानकी कौर और श्री दीपांशु शामिल थे। सत्र को रोचक और व्यावहारिक बनाने के लिए पावरपॉइंट प्रस्तुति, फ़िल्म प्रदर्शन, समूह चर्चा, इंटरैक्टिव खेल और कई गतिविधियाँ कराई गईं। साथ ही, शिक्षकों को संसाधन सामग्री भी वितरित की गई। कार्यशाला ने शिक्षकों को विरासत शिक्षा की सरल और रचनात्मक तरीक़े सिखाए, जिनसे वे भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को कक्षा में आसानी और प्रभावी रूप से शामिल कर सकें। प्रतिभागी नई प्रेरणा और स्पष्ट कार्ययोजना के साथ कार्यशाला से लौटे।

दीमापुर

28–29 अगस्त | 15 शिक्षक, 9 स्कूल

इन्टैक के विरासत शिक्षा और संचार सेवा (एचईसीएस) ने इन्टैक नागालैंड अध्याय के सहयोग से डोन बॉस्को इंस्टिट्यूट फॉर डेवलपमेंट एंड लीडरशिप, दीमापुर में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला शिक्षकों के लिए विरासत जागरूकता और हेरिटेज क्लब पर केंद्रित थी। प्रमुख उपस्थित लोगों में सुश्री सेंटिला टी. यांगर (संयोजक, इन्टैक नागालैंड अध्याय), श्री मेफुटिबा एओ (सह-संयोजक), अध्याय सदस्य और इन्टैक के आजीवन सदस्य शामिल थे। एचईसीएस का प्रतिनिधित्व सुश्री पूर्णिमा दत्त, प्रधान निदेशक, एचईसीएस और उनकी टीम ने किया। कार्यशाला का उद्घाटन सुश्री सेंटिला यांगर के स्वागत भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने क्षेत्र की समृद्ध अमूर्त विरासत और भारत की यूनेस्को नामांकन में भूमिका पर जोर दिया। सुश्री पूर्णिमा दत्त ने *हेरिटेज क्या है?* सत्र में भारत की सांस्कृतिक विविधता और संरक्षण के महत्व को समझाया। सुश्री यांगर ने पारंपरिक टैटू और प्राकृतिक रंगों के प्रयोग की कहानियों से सत्र को और रोचक बनाया। बाद में सुश्री दत्त ने कक्षा में विरासत शिक्षा को शामिल करने की रणनीतियाँ बताईं। दूसरे दिन शिक्षकों ने ऐतिहासिक कचारी खंडहर में हेरिटेज वॉक की, इसके बाद सुश्री दत्त और सुश्री शांगने ने एचईसीएस संसाधनों, यंग इन्टैक वेबसाइट और सोशल मीडिया पर परस्पर-चर्चा सत्र आयोजित किया। शिक्षकों ने रचनात्मक समूह प्रस्तुतियों के माध्यम से नागालैंड की विरासत को प्रदर्शित किया।

मंडला

28–29 अगस्त | 46 शिक्षक, 38 स्कूल

इन्टैक की विरासत शिक्षा और संचार सेवा (एचईसीएस) ने मंडला अध्याय के सहयोग से डीआईईटी, मंडला में दो दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में शिक्षकों ने ऐसे सत्रों में भाग लिया, जिनका उद्देश्य विरासत की समझ बढ़ाना और उसे कक्षा में शामिल करने के तरीके सीखना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री दीपक खांडेकर, संयोजक, इन्टैक मध्य प्रदेश, तथा श्री संजय मेहरोत्रा, संयोजक, इन्टैक जबलपुर अध्याय उपस्थित रहे। सत्र की शुरुआत ग्रुप कैप्टन (सेवानिवृत्त) अरविंद शुक्ला, निदेशक ने की, जिन्होंने मंडला की समृद्ध विरासत — डायनासोर जीवाश्मों से लेकर कलचुरी और गोंड वंश पर जानकारी साझा की। एचईसीएस के श्री अभिषेक दास और श्री दीपांशु ने प्राकृतिक, जीवित, निर्मित और भौतिक विरासत के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। मुख्य अतिथि श्री खांडेकर ने स्कूलों में हेरिटेज क्लबों के महत्व पर जोर दिया। दूसरे दिन रामनगर के मोती महल और आसपास के ऐतिहासिक स्थलों पर श्री शुक्ला के साथ विरासत भ्रमण कराया गया, जिसे स्थानीय कहानियों ने और रोचक बनाया। इसके बाद एचईसीएस की पुस्तकों और संसाधनों का परिचय शिक्षकों को दिया गया। अंत में शिक्षकों ने गरम पानी कुंड, नर्मदा आरती, गोंडी कला, और नर्मदा घाटों पर रचनात्मक समूह प्रस्तुति दी।

डीपीएस, ग्रेटर नोएडा

कछारी खंडहर

नागालैंड के दीमापुर में स्थित कछारी अवशेष 13वीं शताब्दी के दीमासा कछारी साम्राज्य के निशान हैं। यहाँ मशरूम जैसी आकृति वाले कई पत्थर के स्तंभ दिखाई देते हैं। इन स्तंभों का असली उद्देश्य और निर्माण का कारण आज भी रहस्य है। कुछ स्तंभ अभी भी खड़े हैं, जबकि कई टूटे हुए रूप में मिलते हैं, जो उस बीते युग की भव्यता को दर्शाते हैं।

कछारी खंडहर, दीमापुर

मोती महल

मध्य प्रदेश में 350 साल पुराना मोती महल, जिसे गोंड राजा हृदय शाह ने बनवाया था, अतीत का शानदार प्रतीक है। राजधानी के मंडला स्थानांतरित होने से पहले यह 85 वर्षों तक उत्तरी गोंडवाना का शक्ति केंद्र था। तीन मंज़िला यह महल मुगल शैली की वास्तुकला का प्रभाव दर्शाता है। इसके आँगन में एक शिलालेख भी है, जिसमें गोंड राजाओं की वंशावली दर्ज है।

मंडला

भोपाल

महानंदेश्वर मंदिर

नांदयाल से 14 किलोमीटर दूर, महानंदी मंडल में स्थित महानंदेश्वर मंदिर 7वीं शताब्दी ईस्वी का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इसकी सबसे खास बात है यहाँ के प्राकृतिक झरने, जिनका स्वच्छ और ठंडा पानी पूरे साल लगातार बहता रहता है।

नांदयाल

सिरोही

जीसीएचवी

भोपाल

3–4 सितंबर | 48 शिक्षक, 30 स्कूल

एचईसीएस, इन्टैक ने इन्टैक भोपाल अध्याय के सहयोग से राज्य संग्रहालय, भोपाल में दो-दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। इसमें शहर के सरकारी स्कूलों के शिक्षक शामिल हुए। स्वागत भाषण में सुश्री सृष्टि जैन और श्री मदन मोहन उपाध्याय (संयोजक, इन्टैक भोपाल अध्याय) ने मध्य प्रदेश की समृद्ध विरासत — प्रागैतिहासिक जीवाश्मों से लेकर गोंड जनजातीय संस्कृति तक पर प्रकाश डाला। श्री रमेश यादव, सेवानिवृत्त वरिष्ठ पुरातत्वविद् ने क्षेत्र के विकास को गुफा निवासों से लेकर सिंधु घाटी सभ्यता तक विस्तार से समझाया और गुप्त शासकों, जैन, बौद्ध और इस्लामी विरासत की वास्तुकला और सांस्कृतिक उपलब्धियों पर चर्चा की। एकलव्य फाउंडेशन की सुश्री तुलतुल विश्वास ने कहानी कहने और गोंड, भील और वारली जैसी जनजातीय कला शैलियों के माध्यम से रचनात्मक शिक्षा के तरीके बताए। पहला दिन संग्रहालय दीर्घाओं की हेरिटेज वॉक के साथ समाप्त हुआ। दूसरे दिन, सुश्री पूर्णिमा दत्त ने विभिन्न प्रकार की विरासत पर एक परस्पर-चर्चा सत्र लिया, जिसमें कलाकृतियों और शिक्षण सामग्री का उपयोग किया गया। उन्होंने और सुश्री नांकी कौर ने एचईसीएस के संसाधन और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म भी प्रस्तुत किए। अंत में शिक्षकों ने नर्मदा नदी, भोजताल, गोंड कला और गेड़ी नृत्य जैसे विषयों पर समूह गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं।

नांदयाल

13–14 अक्तूबर | 43 शिक्षक, 33 स्कूल

एचईसीएस, इन्टैक ने इन्टैक नांदयाल अध्याय के सहयोग से गुरु राजा इंग्लिश मीडियम स्कूल, नांदयाल में दो-दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। कार्यक्रम की शुरुआत श्री शिवकुमार रेड्डी के स्वागत संबोधन से हुई। पहले सत्र में डॉ. जी.एस. रामैया (आजीवन सदस्य, इन्टैक) ने नांदयाल की समृद्ध विरासत — रामायण काल के संदर्भों से लेकर अशोककालीन अभिलेखों और विजयनगर काल की वास्तुकला — पर प्रस्तुति दी। श्री के.बी. सेथुरामन (अतिरिक्त सह–संयोजक, नांदयाल अध्याय) ने नांदयाल के मंदिरों के बारे में बताया। एचईसीएस टीम ने विरासत के चार प्रकारों का परिचय दिया और रोल-प्ले व वस्तु-अध्ययन के माध्यम से कक्षा में उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियाँ समझाईं। दूसरे दिन शिक्षकों ने नल्लमाला वन, महानंदी मंदिर, बाँस शिल्प, और उगादी उत्सव जैसे विषयों पर समूह प्रस्तुतियाँ दीं। इसके बाद एचईसीएस टीम ने प्रकाशन और संसाधन शिक्षकों के साथ साझा किए। शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में विरासत शिक्षा शामिल करने और स्कूलों में हेरिटेज क्लब बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का समापन महानंदी मंदिर की हेरिटेज वॉक के साथ हुआ।

सिरोही

30 अक्तूबर | 26 शिक्षक, 8 स्कूल

एचईसीएस, इन्टैक ने इन्टैक सिरोही अध्याय के सहयोग से एस.पी. कॉलेज में विरासत जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। श्री अशुतोष पटनी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और इन्टैक की स्थापना की रूपरेखा बताई। प्रो. बद्री विशाल और श्री मदन लाल माली ने राजस्थान के इतिहास, संस्कृति, सिरोही के मंदिरों और जनजातीय परंपराओं पर सत्र लिए। एचईसीएस टीम के श्री अभिषेक दास और श्री दीपांशु ने विरासत के चार प्रकार समझाए और शिक्षण सामग्री, रोल-प्ले और वस्तु-अध्ययन के ज़रिए कक्षा में इनका उपयोग कैसे किया जाए, के बारे में बताया। प्रतिभागियों ने समूह गतिविधियों के माध्यम से सिरोही की विरासत को पहचानने और उसे सुरक्षित रखने पर काम किया।

कॉलेज विरासत स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यशाला

गुवाहाटी

11–12 सितंबर | 95 छात्र, 12 संकाय सदस्य, 3 कॉलेज

इन्टैक एचईसीएस ने इन्टैक असम अध्याय के सहयोग से असम रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में दो-दिवसीय कॉलेज विरासत स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। तीन कॉलेजों के छात्र और शिक्षक इसमें शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. सुष्मिता हज़ारिका ने किया। प्रो. आलक कुमार बुरागोहियन और

गुवाहाटी की विरासत

असम का इतिहास कई परतों में बँटा हुआ है — आहोम जल-प्रणालियाँ, प्राचीन अभिलेख, औपनिवेशिक काल की इमारतें और पुरातात्विक अवशेष। प्रतिभागियों ने जोरपुखुरी और दिघलि-पुखुरी तालाब, उग्रतारा देवालय, एक आहोम अभिलेख, नॉर्थ ब्रूक गेट, विष्णु-जनार्दन मंदिर, कॉटन विश्वविद्यालय के पुरातात्विक स्थल और पानबाज़ार व उजानबाज़ार जैसे ऐतिहासिक इलाकों का भ्रमण किया।

अहमदाबाद

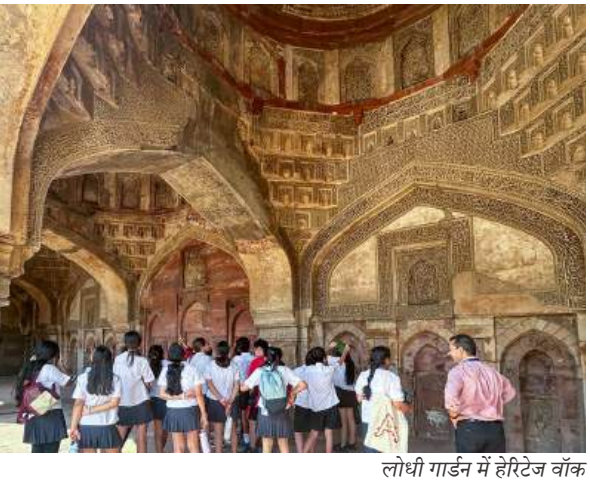

लोधी गार्डन में हेरिटेज वॉक

महरौली पुरातात्विक उद्यान में हेरिटेज वॉक

प्रो. सुरजीत सी. मुखोपाध्याय ने संबोधन दिया। सुश्री पूर्णिमा दत्त (प्रधान निदेशक, एचईसीएस) ने इन्टैक के देश भर में चल रहे संरक्षण प्रयासों पर प्रकाश डाला। डॉ. शीला बरा (सलाहकार, आरजीयू) ने असम की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत — लोक कथाएँ, बुनाई, पवित्र उपवन और सत्रों — पर चर्चा की। सुश्री वैष्णवी ने युवाओं को विरासत संरक्षण में जोड़ने के तरीकों पर सत्र लिया। दूसरे दिन छात्रों ने जोरपुखुरी, उग्रतारा देवालय, कॉटन यूनिवर्सिटी के पुरातात्विक स्थल आदि का भ्रमण किया। सुश्री दत्त ने हैंड्स फॉर हेरिटेज पर सत्र लिया और विद्यार्थियों ने अपनी मातृभाषाओं में लोरियाँ प्रस्तुत कीं। समूहों ने मूंगा सिल्क, माजुली के घर, और ब्रह्मपुत्र की परंपराओं पर प्रस्तुतियाँ दीं।

अहमदाबाद

8 अक्तूबर, 31 छात्र, 5 संकाय सदस्य

इन्टैक की एचईसीएस टीम ने विरासत प्रबंधन केंद्र और इन्टैक अहमदाबाद अध्याय के सहयोग से अहमदाबाद यूनिवर्सिटी में कॉलेज विरासत स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। इसमें छात्र और विश्वविद्यालय के शिक्षक जैसे श्री मोहित गुप्ता (निदेशक, सीडीसी) और प्रो. मॉली कौशल शामिल हुए। सुश्री पूनम दत्त ने विरासत की मूल बातें समझाईं। उन्होंने और सुश्री क्रिस्टीना शैंगने ने हेरिटेज वॉलंटियरिंग पर सत्र लिया, जिसमें छात्रों को बताया गया कि वे अपने कैंपस और समुदाय में विरासत से जुड़े काम कैसे आगे बढ़ा सकते हैं। इन्टैक पर बनी फ़िल्में और छात्र परियोजनाएँ भी दिखाई गईं। प्रसिद्ध कढ़ाई कलाकार श्री आसिफ़ शेख ने अहमदाबाद की वस्त्र परंपरा पर बात की, जबकि सुश्री उत्पला देसाई ने युवाओं की भागीदारी के महत्व पर ज़ोर दिया। यह सीख और प्रेरणा से भरा दिन था।

सिरोही

30 अक्तूबर, 36 छात्र, 3 कॉलेज

इन्टैक एचईसीएस ने इन्टैक सिरोही अध्याय के साथ मिलकर एस.पी. कॉलेज में विरासत जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। इसमें छात्र और भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के सदस्य शामिल हुए। वॉलंटियरिज़्म पर सत्र ने छात्रों को विरासत संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। प्रतिभागियों ने समूह गतिविधियों के ज़रिए सिरोही की विरासत पहचानने और बचाने पर चर्चा की।

विशेष गतिविधि

हेरिटेज वॉक और संरक्षण प्रयोगशाला दौरा

15 सितंबर 2025

द ब्रिटिश स्कूल, नई दिल्ली के छात्र–छात्राओं और शिक्षकों ने एचईसीएस टीम के साथ लोधी गार्डन में हेरिटेज वॉक में हिस्सा लिया। वॉक में इंडो-इस्लामिक वास्तुकला और ऐतिहासिक विशेषताओं के बारे में जानकारी दी गई। बाद में छात्रों ने इन्टैक मुख्यालय का दौरा किया, जहाँ सुश्री पूनम दत्त ने इन्टैक की पहलें बताईं। संरक्षक प्रयोगशाला में सुश्री मेरिन और उनकी टीम ने संरक्षित हो रहे कार्य दिखाए और छात्रों को संरक्षण प्रक्रियाओं की प्रत्यक्ष झलक दी।

मेहरौली पुरातत्व पार्क हेरिटेज वॉक

13 अगस्त 2025

एचईसीएस ने दिल्ली पब्लिक स्कूल इंटरनेशनल, साकेत के छात्रों के लिए मेहरौली पुरातत्व पार्क में हेरिटेज वॉक आयोजित की। सुश्री वैश्नवी सिंह और श्री दीपांशु के नेतृत्व में 18 छात्रों ने कई महत्वपूर्ण स्मारकों को देखा। वॉक में दिल्ली सल्तनत, मुगल काल और अंग्रेज़ अधिकारी थॉमस मेटकाफ द्वारा किए गए परिवर्तनों पर जानकारी दी गई। छात्रों ने ऐतिहासिक कथाओं, स्थापत्य विशेषताओं और संरक्षण प्रयासों के बारे में सीखा। यह वॉक मेहरौली इंटरप्रिटेशन सेंटर की यात्रा और क़ुतुब मीनार के साथ समूह फोटो के साथ समाप्त हुई।

खतरे में पड़ी जीवित विरासत – लुप्तप्राय कला और शिल्प कार्यशालाएँ (संबंधित अध्यायों के सहयोग से)

कश्मीर 24 जुलाई 2025 गवर्नमेंट बॉयज़ हायर सेकेंडरी स्कूल, सौरा, कश्मीर	**9 स्कूलों से 36 छात्र** यह कार्यशाला श्री बशीर अहमद द्वारा आयोजित की गई। वे विलो पेड़/बेंत शिल्प के कुशल कारीगर हैं। उन्होंने छात्रों को इस शिल्प में उपयोग होने वाले औज़ारों, बुनाई की तकनीकों और प्रक्रिया के बारे में सरल तरीके से जानकारी दी।
दिल्ली 20 अगस्त 2025 कथिका कल्चरल सेंटर, पुरानी दिल्ली	**2 स्कूलों से 50 छात्र** उर्दू माध्यम वाले स्कूलों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें श्री इरशाद आलम खुबी और श्री सुधीर ने क़िस्सागोई, नस्तालीक़ सुलेख और भारतीय शास्त्रीय संगीत के बारे में जानकारी दी।
अयोध्या 18 और 20 अगस्त 2025 • जेबी अकादमी, अयोध्या	**5 स्कूलों से 77 छात्र** यह कार्यशाला श्रीमती कुसुम पांडे ने कराई। उन्होंने छात्रों को चटोलीया शिल्प और कथरी बनाने की परंपरा सिखाई।
शांतिनिकेतन 20 और 22 अगस्त 2025 बिनुरिया सुमित्रा बालिका विद्यालय, बीरभूम	**2 स्कूलों से 35 छात्र** श्रीमती इप्सा बंद्योपाध्याय ने मैक्रेमे शिल्प के महत्व पर दो दिवसीय कार्यशाला का नेतृत्व किया। मैक्रेमे, रस्सी या धागे को गाँठों में बाँधकर सजावटी वस्तुएँ बनाने की कला है, जिसकी उत्पत्ति 13वीं शताब्दी के अरबी बुनकरों से हुई थी, जिन्होंने वस्त्रों को पूरा करने के लिए गाँठों का प्रयोग किया।
मंगलुरु 23 अगस्त 2025 गवर्नमेंट हाई स्कूल, मांची–कोलनाडु, बंटवाल तालुक	**3 स्कूलों से 50 छात्र** पारंपरिक टोकरी बुनाई पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। श्री शंकर कोरगा गुत्तकडु और सुश्री सुप्रिया ने जीवंत प्रदर्शन किया और छात्रों को अभ्यास कराया।
अंबाला 23 अगस्त 2025 सिख सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अंबाला कैंट	**4 स्कूलों से 60 छात्र** यह शिल्प कार्यशाला सुश्री ललिता चोपड़ा और सुश्री डैनिशा ने कराई। बच्चों ने रंग-बिरंगे गुलदस्ते बनाए, त्योहारों के लिए दीवार सजाई और राजस्थानी संगीत के बारे में सीखा।
भागलपुर 29 अगस्त 2025 डिवाइन हैप्पी स्कूल, भागलपुर	**5 स्कूलों से 90 छात्र** क्षेत्र की लुप्त होती चित्रकला पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। छात्रों को इस कला की सराहना करने और संस्कृति को बचाने के लिए प्रेरित किया गया।
अंडमान व निकोबार द्वीप समूह 30 अगस्त 2025 गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल, जंगलीघाट, पोर्ट ब्लेयर	**50 छात्र** कलाकारों द्वारा मिट्टी की ढलाई (क्ले मोल्डिंग) पर कार्यशाला कराई गई। छात्रों को मिट्टी से बनने वाली वस्तुओं और उनके महत्व के बारे में बताया गया।
मुर्शीदाबाद 8 और 9 सितंबर 2025 सेवा मिलोनी हाई स्कूल, खागरा, बेरहामपुर	**36 छात्र** प्रसिद्ध जूट कलाकार श्री संदीप गुइन ने दो दिवसीय कार्यशाला कराई। छात्रों को जूट की रस्सियों से कला और शिल्प वस्तुएँ बनाना सिखाया गया।
धर्मशाला 18 सितंबर 2025 अचीवर्स हब सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दाड़ी, धर्मशाला	**कुछ स्कूलों के 50 छात्र** कांगड़ा लघु चित्रकला पर कार्यशाला आयोजित की गई। प्रसिद्ध कारीगर श्री मुकेश कुमार और श्री मनु शर्मा ने छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।
जामनगर 20 सितंबर 2025 लखोटा म्यूज़ियम, जामनगर	**6 स्कूलों से 80 छात्र** क्यूरेटर डॉ. चौधरी ने खादी पर कार्यशाला आयोजित की। छात्रों ने खादी के थैलों पर संरक्षण, पर्यावरण और भारत की विरासत से जुड़े संदेश लिखे।
नगालैंड 15 अक्तूबर 2025 • एनईजेडसीसी, दीमापुर	**8 स्कूलों से 82 छात्र** तुली, अमेनला और अतीला के शिल्पकारों ने पारंपरिक बाँस की चटाई बनाने की कला से छात्रों को परिचित कराया।
बालासोर 18 और 19 अक्तूबर 2025 बालासोर आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स कॉलेज, बालासोर	**7 स्कूलों से 33 छात्र** श्री दैतारी बेहरा और श्री राजीब कुमार बारिक ने टेराकोटा शिल्प पर दो दिवसीय कार्यशाला कराई। छात्रों ने पर्यावरण–अनुकूल मूर्तियाँ और वस्तुएँ बनाना सीखा।
त्रिशूर 30 अक्तूबर 2025 कुलपति मुंशी भवन विद्यामंदिर, पोट्टोर	**35 छात्र** कुरुथोला शिल्प पर आयोजित कार्यशाला का नेतृत्व कलाकार नवनीत चेग्रो ने किया, जिन्होंने विद्यार्थियों को नारियल के पत्तों से पारंपरिक शिल्पकला का परिचय कराया। विद्यार्थियों ने इस कला के माध्यम से मछली, साँप, ओलपीपी (पत्ते की सीटी) और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना सीखा, जिससे उनकी रचनात्मकता और कौशल प्रदर्शित हुआ।
ग्वालियर 1 नवंबर 2025 सिम्पकिन पब्लिक स्कूल, ग्वालियर	**7 स्कूलों से 89 छात्र** मध्य कक्षाओं के छात्रों के लिए चितेरा चित्रकला पर एक दिवसीय शिल्प कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला हरिजी प्रजापति द्वारा कराई गई।

विलो पेड़/बेंत शिल्प – कश्मीर

गुलदस्ता बनाना – अंबाला

मैक्रमे शिल्प – शांतिनिकेतन

चटोलिया कला – अयोध्या

टोकरी बुनाई कार्यशाला – मंगलुरु

खादी कार्यशाला – जामनगर

प्रकाशन और वेबसाइट

यंग इन्टैक समाचार-पत्रिका

भारत के आकर्षक शिरोवस्त्र

(जुलाई–सितंबर 2025)
(अंग्रेज़ी और हिंदी)

यह समाचार-पत्रिका भारत में पहने जाने वाले अलग-अलग रंगों और प्रकारों के शिरोवस्त्रों पर आधारित है। इसमें इनके इतिहास, उपयोग और महत्व को सरल भाषा में बताया गया है। पाठ, चित्र, गतिविधियाँ और खेलों के माध्यम से यह हमारी वेशभूषा से जुड़ी परंपराओं को समझने और उनके संरक्षण में मदद करता है।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति

(अक्तूबर–दिसंबर 2025)
(अंग्रेज़ी और हिंदी)

यह समाचार-पत्रिका भारत के प्रकृति-आधारित त्योहारों की विविधता को दर्शाती है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित परंपराओं के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध को समझाया गया है। रोचक पाठ, चित्र, रचनात्मक गतिविधियाँ और खेलों के ज़रिए यह बताता है कि हमारे त्योहार प्रकृति से कैसे जुड़े हैं।

'अडॉप्ट' श्रृंखला का पुनर्मुद्रण

एक पेड़ गोद लें, एक स्मारक गोद लें, कोई शिल्प अपनाएं, कोई ललित कला अपनाएं

ये पुस्तिकाएँ शिक्षकों, छात्रों और विरासत प्रेमियों के लिए हैं। इनसे भारत की निर्मित और प्राकृतिक विरासत, शिल्प और लोक-कला के संरक्षण के बारे में आसान तरीके से जानकारी मिलती है।

जारी प्रकाशन

- मिज़ोरम पर कहानी-एवं-रंग भरने की पुस्तक
- मोलोया ब्रेड्स ए रिवर जर्नी का असमिया अनुवाद
- हेरिटेज क्लब पासपोर्ट का पुनर्मुद्रण
- यंग इन्टैक का क्षेत्रीय भाषा अनुवाद (2024–25) – 10 भाषाओं में
- एचईसीएस डेस्क कैलेंडर 2026

यंग इन्टैक की वेबसाइट: यंग इन्टैक की वेबसाइट (www.youngintach.org) पर नए शैक्षणिक संसाधन नियमित रूप से जोड़े जा रहे हैं। इनमें वस्त्र, जूते, धातु शिल्प, शिरोवस्त्र और आभूषणों पर वर्कशीट्स, मासिक ई-न्यूज़लेटर और साप्ताहिक विरासत समाचार शामिल हैं। सभी समाचार-पत्रिकाएं अंग्रेज़ी और हिंदी में, रोचक और पढ़ने में आसान रूप में उपलब्ध हैं।

ई-न्यूज़लेटर

मासिक यंग इन्टैक ई-न्यूज़लेटर में वेबसाइट और सोशल मीडिया के अपडेट, मासिक कार्यक्रमों की झलकियाँ, उपलब्ध प्रकाशनों की सूची, महीने के महत्वपूर्ण दिन, आने वाले कार्यक्रमों की जानकारी और एचईसीएस गतिविधियों के अपडेट दिए जाते हैं।

सोशल मीडिया

अगस्त से नवंबर 2025 के महीने में ली गई चुनौतियां (अगस्त–नवंबर 2025)

माह	चुनौतियां
अगस्त	• हाथी दिवस कॉमिक स्ट्रिप चुनौती • पर्यावरण-अनुकूल गणेश चुनौती • हेरिटेज बीकन अवॉर्ड
सितंबर	• विश्व शांति दिवस • हमारी नदियाँ बचाओ चुनौती
अक्तूबर	• विश्व खाद्य दिवस चुनौती – मिष्ठी मैजिक
नवंबर	• शिक्षा और बुज़ुर्ग – चुनौती

राष्ट्रीय कार्यक्रम

इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 – सिटी राउंड

अध्याय	स्थल और उपस्थिति	विषय-सामग्री के मुख्य अंश और सहयोग
अंबाला 23 जुलाई	बी.डी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अंबाला कैंट **96 छात्र / 24 स्कूल**	कार्यक्रम में इन्टैक के सदस्य और गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। श्रीमती मधु सिंह क्विज़ मास्टर थीं। आर्मी पब्लिक स्कूल, अंबाला कैंट ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
यमुनानगर 29 जुलाई	संत निश्चल सिंह पब्लिक स्कूल **92 छात्र / 8 स्कूल**	संत निश्चल सिंह पब्लिक स्कूल स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल, सेक्टर-17, जगाधरी के अर्णव और आरव कालिया विजेता रहे।
हिसार 2 अगस्त	पैलेडियम स्कूल • **112 छात्र / 12 स्कूल**	ओ.पी. जिंदल स्कूल की खुशी और ओजस ने प्रथम स्थान तथा आरव और देवांश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
पानीपत 28 अगस्त	एमएएसडी स्कूल • **70 छात्र / 6 स्कूल**	दयाल सिंह पब्लिक स्कूल ने क्विज़ जीता।
गुरुग्राम 29 अगस्त	वेदात्या इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम • **52 छात्र / 6 स्कूल**	डॉ. पारुल मुंजाल क्विज़ मास्टर थीं। ग्यान इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर-31 विजेता रहा।
फरीदाबाद 8 अगस्त	के.एल. मेहता दयानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर-16 • **136 छात्र / 15 स्कूल**	क्विज़ दो चरणों में हुई। लिखित राउंड पहले की तारीख पर हुआ और उसके बाद 8 अगस्त को मौखिक राउंड हुआ। के.एल. मेहता दयानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर 16, फरीदाबाद की टीम ने फाइनल जीता।
अमृतसर 18 अगस्त	दिल्ली पब्लिक स्कूल **130 छात्र / 14 स्कूल**	विरासत विशेषज्ञ श्री मोहम्मद बिलाल फारूकी क्विज़ मास्टर थे। कार्यक्रम में दिल्ली पब्लिक स्कूल के कुलपति और इतिहासकार श्री सुरिंदर कोचर की गरिमामयी उपस्थिति रही। स्प्रिंग डेल स्कूल के सौरिश नागपाल (कक्षा 9) और सेहजनूर कौर (कक्षा 8) ने पहला स्थान प्राप्त किया।
संगरूर 8 अक्तूबर	जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल **140 छात्र / 11 स्कूल**	7 मौखिक राउंड के बाद जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल की टीमों ने पहला और दूसरा स्थान प्राप्त किया।
बठिंडा 9 अक्तूबर	एमएसडी स्कूल **92 छात्र / 8 स्कूल**	सिल्वर ओक्स पब्लिक स्कूल, बठिंडा ने पहला स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का आयोजन इन्टैक के सदस्यों द्वारा किया गया, जिसमें स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
फरीदकोट 15 अक्तूबर	**100 छात्र / 10 स्कूल**	डीसीएम इंटरनेशनल स्कूल, कोटकपूरा ने पहला स्थान प्राप्त किया।
मलेरकोटला 27 अक्तूबर	अल फला पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल • **80 छात्र**	अल फ़लाह पब्लिक स्कूल की तस्मिया और हब्बा नूरी ने क्विज़ प्रतियोगिता जीती।
तरन तारन 30 अक्तूबर	माझा पब्लिक स्कूल • **96 छात्र / 10 स्कूल**	गुरु नानक देव अकादमी की टीम प्रथम रही और राज्य स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेगी।
होशियारपुर 4 नवंबर	गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल **76 छात्र / 7 स्कूल**	गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल पहला स्थान प्राप्त कर विजेता बना। इस कार्यक्रम ने छात्रों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने और होशियारपुर की विरासत पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया।
कपूरथला	एमजीएन स्कूल • **82 छात्र / 8 स्कूल**	प्रतियोगिता एमजीएन स्कूल, कपूरथला में आयोजित की गई।
पटियाला	सरकारी बहुउद्देश्यीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल **62 छात्र / 7 स्कूल**	क्विज़ मास्टर परमवीर सिंह और हरप्रीत कौर ने सरबजीत सिंह विर्क, अधिवक्ता एवं संयोजक, पटियाला अध्याय की उपस्थिति में कार्यक्रम का सफल संचालन किया। द ब्रिटिश को- एड हाई स्कूल की टीम प्रथम रही। विरासत कार्यकर्ता अधिवक्ता जतिंदर सिंह सराओ ने छात्रों, शिक्षकों और अतिथियों का धन्यवाद किया।
फिरोज़पुर	डीसीएम इंटरनेशनल स्कूल **80 छात्र**	इन्टैक फिरोज़पुर के संयोजक डॉ. अनिरुद्ध गुप्ता ने फिरोज़पुर शहर के डीसीएम इंटरनेशनल स्कूल में नेशनल हेरिटेज क्विज़-2025 का आयोजन किया। विजेता टीम आगे स्टेट लेवल प्रतियोगिता में भाग लेगी।
वाराणसी 19 अगस्त	द आर्यन इंटरनेशनल स्कूल	सनबीम स्कूल, भगवानपुर के अरिहान और आदित्य विजेता रहे।
अयोध्या 24 अगस्त	जे.बी. अकादमी **150 छात्र / 15 स्कूल**	कार्यक्रम का आयोजन सुश्री अनुजा श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में किया गया। अयोध्या अध्याय के सह-संयोजक डॉ. इंद्रनील बनर्जी उस दिन के क्विज़ मास्टर थे। क्विज़ प्रतियोगिता में आर्मी पब्लिक स्कूल विजेता बनकर उभरा।
गोरखपुर 24 अगस्त	महात्मा गांधी इंटर कॉलेज **92 छात्र / 9 स्कूल**	छात्रों को विरासत विषय पर संबोधित करने के लिए सेंट एंड्रयूज़ पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज को आमंत्रित किया गया। एच.पी. चिल्ड्रन अकादमी की टीम को विजेता घोषित किया गया।
महोबा 29 अगस्त	**100 छात्र**	ज्ञानस्थली पब्लिक स्कूल के आयुष्मान शर्मा और अर्जित पालिवाल ने क्विज़ जीता। वे लखनऊ में होने वाले स्टेट लेवल राउंड में भाग लेंगे।
लखनऊ 30 अगस्त	ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ **82 छात्र / 21 स्कूल**	इस वर्ष लखनऊ में कार्यक्रम की शुरुआत लिखित प्रारंभिक राउंड से हुई। कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद विजेताओं की घोषणा की गई और उन्हें मुख्य अतिथि श्री मुकेश मेहराम, प्रमुख सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। क्विज़ मास्टर सुश्री सुरभि मोदी सहाय और श्री आदित्य वाखलू थे।
कानपुर 3 सितंबर	यूनाइटेड पब्लिक स्कूल	पूर्णचंद्र विद्या निकेतन के स्पर्श भारद्वाज और विनायक शुक्ला ने क्विज़ प्रतियोगिता जीती।
इलाहाबाद 12 सितंबर	दिल्ली पब्लिक स्कूल, नैनी **106 छात्र**	पहला पुरस्कार पतंजलि ऋषिकुल स्कूल के भाव्या पांडे और अंश यादव को मिला। क्विज़ मास्टर डॉ. दिव्या बाट्रिया थीं। मुख्य अतिथि कर्नल पराग भार्गव और डॉ. ऋतु जायसवाल ने कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की। डॉ. ऋतु जायसवाल ने विरासत संरक्षण में समुदाय की भागीदारी के महत्व पर चर्चा की। इन्टैक के मिशन और उपलब्धियों पर श्री वैभव मैनी द्वारा एक संक्षिप्त प्रस्तुति भी दी गई।
कोटद्वार 23 अगस्त	हेडे हेरिटेज अकादमी **102 छात्र / 11 स्कूल**	मुख्य अतिथि श्री सोहन सैनी (एसडीएम), कोटद्वार ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने भविष्य के कार्यक्रमों में शिक्षा अधिकारियों को शामिल करने और सरकारी स्कूलों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने पर ज़ोर दिया।

यमुनानगर

मलेरकोटला

बालासोर

अध्याय	स्थल और उपस्थिति	विषय-सामग्री के मुख्य अंश और सहयोग
मसूरी 20 सितम्बर	महात्मा योगेश्वर सरस्वती शिशु विद्या मंदिर **64 छात्र**	ओक ग्रोव स्कूल, मसूरी ने पहला पुरस्कार जीता। वायनबर्ग एलन स्कूल और सेंट क्लेयर कॉन्वेंट स्कूल ने क्रमशः दूसरा और तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्रीमती अल्पना पंत शर्मा, आईएफएस (सेवानिवृत्त) अधिकारी थीं।
बेलगावी 25 अगस्त	भारतेश एजुकेशन ट्रस्ट कैंपस **70 छात्र / 6 स्कूल**	क्विज़ मास्टर स्वाति जोग ने अंतिम दौर में छात्रों को मज़ेदार और चुनौतीपूर्ण सवालों के माध्यम से परखा। भारतेश इंग्लिश मीडियम स्कूल से प्रसन्ना अलैय्यनवर्मथ और यश धर्मोजी ने तीनों राउंड में सबसे अधिक अंक हासिल कर पहला स्थान प्राप्त किया।
बीजापुर 30 अगस्त	बीएलडीईए डॉ पीजी हलाकट्टी रिसर्च सेंटर **86 छात्र / 10 स्कूल**	श्री अरुण इनामदार, वीसी, बीएम पाटिल यूनिवर्सिटी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। बी.एम. पाटिल स्कूल से पृथ्वी करजिनगी और अनुप्रिया आर. कुलकर्णी ने पहला पुरस्कार जीता। क्विज़ का संचालन डॉ. वी. डी. ऐहोल्ली ने किया।
गुलबर्गा 30 अगस्त	विवेकानंद विद्या निकेतन स्कूल **50 छात्र / 7 स्कूल**	श्री सिद्धप्पा भगवती, प्रधानाचार्य, वी.वी.एन. स्कूल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। क्विज़ मास्टर डॉ. एस. रेड्डी और प्रो. सी.एस. आनंदी थे। पहला पुरस्कार कृष्णा टीम (वी.वी.एन. स्कूल) ने जीता।
शांतिनिकेतन 16 जुलाई	द्वारका हाई स्कूल **34 छात्र / 10 स्कूल**	क्विज़ मास्टर लोपमुद्रा सेन और तरित रॉयचौधरी थे। लबपुर जदबलाल हाई स्कूल के जयदीप मंडल और ज्योतिर्मय घोष ने पहला पुरस्कार प्राप्त किया।
मुर्शिदाबाद 19 अगस्त	स्टूडेंट्स हेल्थ होम, बरहामपुर **18 स्कूल**	क्विज़ दो चरणों (लिखित और मौखिक) में आयोजित किया गया। सारगच्छी आरकेएम स्कूल ने पहला स्थान प्राप्त किया, जबकि जेएन अकादमी और गोकर्ण पीएम हाई स्कूल ने संयुक्त रूप से दूसरा स्थान प्राप्त किया।
कोलकाता 30 अक्तूबर	एपीजे स्कूल, पार्क स्ट्रीट **38 छात्र / 7 स्कूल**	स्मिता मेहता, इन्टैक कलकत्ता अध्याय की सदस्य ने क्विज़ का संचालन किया। गार्डन हाई स्कूल ने सिटी स्तर का क्विज़ जीता और अब स्टेट लेवल इन्टैक कोलकाता अध्याय का प्रतिनिधित्व करेगा।
कांगड़ा 15 अक्तूबर	मॉन्टेसरी कैम्ब्रिज स्कूल **90 छात्र / 9 स्कूल**	मॉन्टेसरी कैम्ब्रिज स्कूल की भवना और वनिका ने क्विज़ जीता। संयोजक श्री एल.एन. अग्रवाल ने छात्रों को जानकारी दी।
मंडी 11 अक्तूबर	सरकारी बिजाई सीनियर सेकेंडरी स्कूल **110 छात्र / 12 स्कूल**	स्वामी विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल की इनायत और आयुष की टीम ने क्विज़ जीता। उप-महापौर श्रीमती माधुरी कपूर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थीं।
पटना 23 अगस्त	बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम, पटना **120 छात्र / 30 स्कूल**	कार्यक्रम का उद्घाटन संयोजक श्री भैरव लाल दास ने किया। दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना के खनक वर्मा और रेयांस ने सिटी स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया।
भागलपुर 30 अगस्त	सेंट पॉल्स स्कूल, नाथनगर, भागलपुर **54 छात्र**	क्विज़ दो राउंड में हुआ। पहले लिखित राउंड के आधार पर चार टीमों का चयन किया गया। क्विज़ मास्टर श्री कौशल किशोर सिंह ने क्विज़ के नियम समझाए। अध्याय संयोजक, सह-संयोजक और अतिरिक्त सह-संयोजक ने कार्यक्रम की शुरुआत की और छात्रों को जानकारी दी।
पूर्णिया 30 अगस्त	विद्या विहार रेजिडेंशियल स्कूल, परोरा **186 छात्र / 18 स्कूल**	श्री समिरान मंडल क्विज़ मास्टर के रूप में आमंत्रित थे। सबल कुमार और विद्या विहार रेजिडेंशियल स्कूल, परोरा के दर्शिल ने पहला स्थान प्राप्त किया।
महासमुंद 25 जुलाई	नवीकरण अकादमी • **110 छात्र / 11 स्कूल**	लिखित और मौखिक राउंड के बाद वृंदावन विद्यालय के अमन यादव और नमन साहू विजेता टीम बने।
रायपुर 1 अगस्त	लक्ष्मीनारायण गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल, कालीबाड़ी रोड • **88 छात्र / 11 स्कूल**	प्रो. जे.एन. पांडे सरकारी एम.ए.यू.एच.एम.एस. स्कूल के वीरेन्द्र निधाद और खिलेश मणिकपुरी विजेता टीम रहे। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए।
बिलासपुर 20 अगस्त	देवकीनंदन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल **129 छात्र / 16 स्कूल**	इन्टैक बिलासपुर अध्याय ने एचईसीएस प्रभाग की मदद से सिटी राउंड आयोजित किया।
गौरेला पेंड्रा मारवाही 23 अगस्त	एस.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन **130 छात्र / 11 स्कूल**	65 टीमों ने लिखित राउंड से क्विज़ शुरू किया। मौखिक राउंड के बाद स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल के कौस्तुभ शुक्ला और खुश्बुमा ने पहला स्थान प्राप्त किया।
सरायपाली 3 सितंबर	सेजेस सरायपाली एंड सेंट विंसेंट पल्लोटी स्कूल **256 छात्र / 38 स्कूल**	लिखित राउंड सेजेस सरायपाली और सेंट विंसेंट पल्लोटी हायर सकेंड्री स्कूल, कुटेला में आयोजित किया गया, जबकि मौखिक राउंड सेंट विंसेंट पैलोटी स्कूल में हुआ। सेंट विंसेंट पल्लोटी हायर सकेंड्री स्कूल, कुटेला के आदर्श साहू और कु. सोम्या पांडा सिटी राउंड के विजेता रहे।
कोरिया 29 सितंबर	दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल • **8 छात्र**	यूनिवर्सल पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल, मनेन्द्रगढ़ के सॉमनाथ और शहीस्ता परवीन विजेता बने।
बालांगीर 27 जुलाई	**65 छात्र / 9 स्कूल**	आईडीएम पब्लिक स्कूल के संवी नायक और सर्वेश मेहर ने पहला पुरस्कार जीता।
बालासोर 17 अगस्त	सिद्धि विनायक पब्लिक स्कूल **90 छात्र / 9 स्कूल**	क्विज़ मास्टर श्री वी. उदय कुमार द्वारा लिखित और मौखिक राउंड आयोजित किए गए। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के द्युतिदीप्त नायक और त्थास्तु त्थागत दास विजेता बने।
मयूरभंज 24 और 31 अगस्त	एम.पी.के. गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल, बालांगीर **137 प्रतिभागी / 12 स्कूल**	ओडिशा आदर्श विद्यालय, रानीभोल की विजेता टीम भाग्यश्री दास और दिव्यांशु चौहान रही।
भीलवाड़ा 21 अगस्त	गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भीलवाड़ा **76 छात्र / 8 स्कूल**	लिखित, मौखिक और बज़र राउंड के बाद, माहेश्वरी पब्लिक स्कूल की अदिति गगार और जिनिशा जैन विजेता बनीं।
अलवर 28 अगस्त	श्री अग्रवाल महासभा भवन • **73 छात्र / 7 स्कूल**	बाल भारती स्कीम-8 के तनमय कुमार मीना और प्रदीप कुमार यादव की टीम विजेता रही।

अलवर

कांगड़ा

शांतिनिकेतन

अध्याय	स्थल और उपस्थिति	विषय-सामग्री के मुख्य अंश और सहयोग
बाड़मेर 29 अगस्त	महात्मा गांधी सरकारी स्कूल, हाउसिंग बोर्ड, बालोतरा • **98 छात्र / 10 स्कूल**	विजेता एमजीजीएस स्कूल की वर्षिका और जयश्री रही।
सिरोही 6 सितंबर	अजित विद्या मंदिर **84 छात्र / 10 स्कूल**	क्विज़ दो चरणों, लिखित और मौखिक राउंड में आयोजित हुआ। पहला स्थान अजीत विद्या मंदिर की कीर्ति चौहान और सुषिल घांची ने प्राप्त किया।
जोधपुर 12 सितंबर	कोणार्क सीनियर सेकेंडरी स्कूल, प्रताप नगर **97 छात्र / 7 स्कूल**	क्विज़ लिखित और मौखिक दौर में आयोजित की गई। श्रीमती विमलेश राठौड़ क्विज़ मास्टर थीं।
जैसलमेर 18 सितंबर	आर.के. एस. पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल एवं विनायक प्री स्कूल **121 छात्र / 2 स्कूल**	कार्यक्रम में पूर्व विधायक श्री रूपाराम धांदेव, पंचायत समिति प्रमुख श्री अमरदीन फ़कीर और नगर निगम अध्यक्ष श्री हरिवल्लभ उपस्थित रहे। आर.के.एस. सीनियर पब्लिक स्कूल के धरमवीर महिपाल और लोकेन्द्र फ़कीर विजेता रहे।
करौली 20 सितंबर	भंवर विलास मैरिज गार्डन • **130 छात्र / 13 स्कूल**	लोकहितकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के ईशांत चतुर्वेदी और पूर्वी चतुर्वेदी ने क्विज़ जीती।
अजमेर 28 सितंबर	टर्निंग पॉइंट स्कूल **72 छात्र / 11 स्कूल**	ऑल सेंट्स स्कूल के विशाक तिलोकिनी और नमन राज विजेता घोषित हुए। मुख्य अतिथि श्री नीरज त्रिपाठी, अधीक्षक, अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग थे।
ब्यावर	गवर्नमेंट पटेल सीनियर सेकेंडरी स्कूल **148 छात्र / 16 स्कूल**	लिखित और मौखिक राउंड के बाद, बांगड़ पब्लिक स्कूल की अन्वी अग्रवाल और तमन्ना ने पहला स्थान प्राप्त किया।
बुरहानपुर 6 अगस्त	आर.एस.ई.टी. संस्थान • **88 छात्र**	जौनाबाद ज़िले की के. दीपाली कुशवाहा और के. अनीता गडरियन क्विज़ की विजेता रहीं।
जबलपुर 25 अगस्त	सेंट ज़ेवियर्स स्कूल **500 छात्र / 10 स्कूल**	स्प्रिंग डे हायर सेकेंडरी स्कूल की पीजीटी सुश्री रूपाली शर्मा क्विज़ मास्टर थीं। जॉय सीनियर सेकेंडरी स्कूल के आर्याँश सोनी और रिद्धिमा तिवारी ने पहला स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त श्री अरविंद यादव और एनडीटीवी के मुख्य संपादक श्री संजीव चौधरी उपस्थित रहे।
कटनी 30 अगस्त	**92 छात्र / 8 स्कूल**	कटनी शहर के इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़–2025 में दिव्यांशु राज और मुग्धम पंजवानी विजेता बने।
खंडवा 30 अगस्त	न्यू वे कोचिंग परिसर **64 छात्र / 7 स्कूल**	खंडवा अध्याय ने 32 टीमों के लिए क्विज़ आयोजित की। चार सर्वश्रेष्ठ टीमें मौखिक दौर के लिए चुनी गईं। सेंट जोन्स कॉन्वेंट हायर सेकेंडरी स्कूल की गीतांजलि सोलंकी और वाणी शर्मा ने पहला स्थान प्राप्त किया।
ग्वालियर 6 सितंबर	सिंधिया कन्या विद्यालय **188 छात्र / 11 स्कूल**	चार टीमों को मौखिक दौर के लिए चुना गया। ग्वालियर ग्लोरी हाई स्कूल के सजल चतुर्वेदी और अश्वेन्द्र गुबरेले विजेता रहे।
मुरैना 9 सितंबर	अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल पुरातत्व संग्रहालय • **60 छात्र / 8 स्कूल**	सरोजिनी विद्या निकेतन की स्वाति राठौड़ और कृष्णा तोमर ने क्विज़ जीती।
दतिया 16 सितंबर	**75 छात्र / 5 स्कूल**	क्विज़ का संचालन क्विज़ मास्टर श्री श्याम शर्मा ने किया और समन्वय श्रीमती रानी ठाकुर, सुश्री रीना राठौड़ और सुश्री योगिता देवड़ा ने किया। गवर्नमेंट एक्सीलेंस स्कूल के मयंक नालवाया और मोहम्मद ज़ुबैर प्रथम रहे।
मंडला 23 अगस्त •29 सितंबर	ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी इंग्लिश मीडियम स्कूल **100 छात्र / 10 स्कूल**	चार स्कूलों की टीमों ने भाग लिया। निर्मला सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने क्विज़ जीती और वह स्टेट लेवल के लिए चयनित हुआ।
दीमापुर, नागालैंड 22 अगस्त	दीमापुर लोथा होहो की **62 छात्र / 6 स्कूल**	प्लास्टिक के प्रभाव और प्राकृतिक विरासत पर आजीवन सदस्य थांगी मन्नेन ने संक्षिप्त व्याख्यान दिया। लिखित दौर के बाद चार टीमें मौखिक राउंड में पहुँचीं। होल्लोटोली स्कूल के अकांगजुंगशी ए. जामीर और डाउलेन एम. फोम विजेता बने।
श्रीनगर 9 और 10 सितंबर	गवर्नमेंट बॉयज़ हायर सेकेंडरी स्कूल, सौरा **68 छात्र / 10 स्कूल**	दो–दो छात्रों वाली चार टीमें अगले चरण के लिए चुनी गईं।
आइज़ोल, मिज़ोरम 25 सितंबर	सम्मेलन कक्ष, स्कूल शिक्षा निदेशालय **36 छात्र / 18 स्कूल**	कार्यक्रम की अध्यक्षता सुश्री रोज़ी लालफाकजुअली सैलो, उप निदेशक, प्रशासन ने की। गवर्नमेंट मिज़ो हाई स्कूल की हेलन लैइनुनमावई और एम.एस. डॉन्गज़ेला ने पहला स्थान प्राप्त किया।
दिल्ली 9 अक्तूबर	इंडिया इंटरनेशनल सेंटर **212 छात्र / 61 स्कूल**	कार्यक्रम की शुरुआत एचईसीएस की प्रधान निदेशक सुश्री पूर्णिमा दत्त के स्वागत भाषण से हुई। इन्टैक के सदस्य-सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) ने छात्रों को प्रोत्साहित किया। एक्सप्रेसमाइंड्स एडुटेनमेंट के क्विज़ मास्टर कुणाल सावरकर ने छात्रों को क्विज़ के नियमों से परिचित कराया। मौखिक दौर में मुख्य अतिथि श्री के.एन. श्रीवास्तव (निदेशक, इंडिया इंटरनेशनल) ने छात्रों को संबोधित किया। मौखिक राउंड के अंत में इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने छात्रों को शुभकामनाएँ दीं। दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा ने पहला स्थान प्राप्त किया।
त्रिशूर 28 अगस्त	राज्य संग्रहालय **20 से अधिक छात्र / 6 स्कूल**	इन्टैक त्रिशूर अध्याय ने केरल राज्य संग्रहालय में संग्रहालय एवं चिड़ियाघर विभाग के सहयोग से हेरिटेज क्विज़ आयोजित की। सलभा टी.जी. (क्विज़ मास्टर), अनिल सर (अधीक्षक, संग्रहालय और चिड़ियाघर), विनोद कुमार एम. (इन्टैक संयोजक), डॉ. पी.एस. ईसा (ईसी सदस्य), आर्किटेक्ट अथिरा (समन्वयक) तथा पुण्य, विनायक और कृष्णा (स्वयंसेवक) ने प्रतियोगिता का आयोजन किया। भारतीय विद्या भवन, इरिंजलाकुडा के नंदकिशोर के.एस. और श्रीहरी सी. नायर ने ज़िला स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

खंडवा

जोधपुर

ब्यावर

अध्याय	स्थल और उपस्थिति	विषय-सामग्री के मुख्य अंश और सहयोग
कालीकट 5 अगस्त	**106 छात्र / 13 स्कूल**	53 टीमों ने लिखित राउंड में भाग लिया, जिनमें से 4 टीमें फाइनल में पहुँचीं। श्री गुजराती विद्यालय, कोझिकोड की श्रीया थिलक और वेदव्यास विद्यालयम की वेदा बैजू ने पहला पुरस्कार जीता और स्टेट लेवल के लिए चयनित हुईं।
कोची 29 अक्तूबर	केरल संग्रहालय **66 छात्र / 16 स्कूल**	इन्टैक कोचीन अध्याय और केरल संग्रहालय ने केरल संग्रहालय में कोचीन सिटी राउंड आयोजित किया। क्विज़ में 33 टीमों ने भाग लिया। भावन्स विद्या मंदिर, एलामक्करा के निरंजन शेखर ए. और कीर्तना कृष्णमोहन ने पहला स्थान प्राप्त किया और राज्य स्तर के लिए चयनित हुए।
कासरगोड 12 अगस्त, 10 और 22 सितंबर	जीएचएसएस कान्हांगड़ साउथ, होसदुर्ग कान्हांगड़ तथा राजा हायर सेकेंडरी स्कूल	अंतिम राउंड 22 सितंबर को राजा हायर सेकेंडरी स्कूल, नीलश्वरम में आयोजित हुआ, जिसमें 92 छात्रों ने भाग लिया। जी.एच.एस.एस. होसदुर्ग के अमित के. को कासरगोड अध्याय का स्टेट लेवल पर प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया।
पालक्काड़ 1 नवंबर	एएसआई हॉल, पालक्काड़ किला **19 स्कूल / 132 छात्र**	क्विज़ मास्टर अरुण नारायण थे। चिन्मय विद्यालय, तट्टा-मंगलम की आत्मिका एन.एस. और वेदा एम.सी. ने पहला स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम को मलयाला मनोरमा की नल्लपादम पहल का सहयोग मिला।
तंजावुर 30 जुलाई	लिटिल स्कॉलर्स मैट्रिक हायर सेकेंडरी स्कूल, तंजावुर • **226 छात्र / 8 स्कूल**	तमिल विश्वविद्यालय की प्रो. डॉ. बी. शीला विशेष वक्ता रहीं। क्विज़ मास्टर श्री एन. सेल्वराज थे। ब्लॉसम पब्लिक स्कूल, तंजावुर के पी. विश्वनाथन और बी. पृथिव विजेता रहे।
चेन्नई 23 अगस्त	श्री शंकरा विद्या आश्रमम स्कूल **20 स्कूलों की 66 टीमें**	पाँच टीमें फाइनल में पहुँचीं। पीएसबीबी मिलेनियम स्कूल, गेरुगम्बक्कम के अनिरुद्ध प्रेम और प्रभव नंदन आर. ने पहला स्थान प्राप्त किया।
कोडाइकनाल 26 अगस्त	ज़ायन स्कूल **98 छात्र / 9 स्कूल**	लिखित राउंड की शीर्ष पाँच टीमें मौखिक फाइनल में पहुँचीं। भवन्स गांधी विद्यासरम, कोडाइकनाल की जियाना वर्गीज़ और हासिनी डी. ने प्रथम पुरस्कार जीता।
सेलम 28 अगस्त	श्री विद्या मंदिर स्कूल ऑडिटोरियम **102 छात्र / 11 स्कूल**	चार सर्वोच्च अंक पाने वाली टीमें मौखिक राउंड में पहुँचीं। श्री विद्या भारती एम.एच.एस.एस. के आर. राजा मुरुगन और वाई. विनीत ने सराहनीय प्रदर्शन किया।
कोयंबटूर 1 सितंबर	विवेकालयाज़ विचारा वर्ल्ड स्कूल **258 छात्र / 15 स्कूल**	इन्टैक कोयंबटूर अध्याय के श्री शैलेन्द्र भंसल क्विज़ मास्टर थे। युवा भारती स्कूल के गौरव अग्रवाल और ईशान जैन विजेता बने।
विशाखापत्तनम 1 अगस्त	अलवरदास पब्लिक स्कूल, एमवीपी कॉलोनी, विशाखापत्तनम • **208 छात्र / 23 स्कूल**	शीर्ष चार टीमें फाइनल मौखिक राउंड में पहुँचीं। नेवी चिल्ड्रन स्कूल के ईशान गुप्ता और इशिता गुप्ता ने पहला स्थान प्राप्त किया।
श्रीकाकुलम 30 अगस्त	विकास स्कूल, श्रीकाकुलम **52 छात्र / 12 स्कूल**	सह-संयोजक श्रीमती जगन्नाधा नायडू क्विज़ मास्टर रहीं और श्री एन. सन्यासी राव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। ऑक्सफोर्ड स्कूल के यशवंत और बी. रक्षित ने पहला पुरस्कार जीता।
गुंटूर 3 सितंबर	भारतीय विद्या भवन स्कूल **56 छात्र / 14 स्कूल**	क्विज़ मास्टर डॉ. ए. राजशेखर थे। सेंट लॉरेल्स पब्लिक स्कूल, गुंटूर के एस.के. जावेद अबरार और एस.के. नवीन विजेता रहे।
मछलीपट्टनम 2 नवंबर	लिटिल फ्लावर इंग्लिश मीडियम हाई स्कूल, राजूपेट, मछलीपट्टनम	विभिन्न हाई स्कूलों की 14 टीमों ने भाग लिया। श्री बालाजी विद्यालयम की जी. हर्षा वर्धिनी और के. रागा श्रुजना ने पहला स्थान प्राप्त किया।
अनंतपुर 3 नवंबर	गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, अनंतपुर **6 स्कूल**	प्रतियोगिता दो राउंड में हुई — 20 प्रश्नों का लिखित राउंड और शीर्ष चार टीमों के लिए मौखिक राउंड। रोटरी इंग्लिश मीडियम स्कूल के वाई. मिधुन कुमार और जी. भरत राठौर ने पहला स्थान प्राप्त किया।
महबूबनगर 25–26 और 28–30 अगस्त	गांधी हॉल, गवर्नमेंट बी.एड. कॉलेज, महबूबनगर **742 छात्र / 103 स्कूल**	लिखित राउंड तीन चरणों में आयोजित हुआ। प्रत्येक मंडल की शीर्ष टीम जिला (सिटी) राउंड में पहुँची। मौखिक राउंड के क्विज़ मास्टर श्री टी. श्रीधर थे। एमजेपीटीबीसीडब्ल्यूआरईआईएस, जडचेरला के देवेंदर गौड़ और जी. विकास स्टेट लेवल पर महबूबनगर का प्रतिनिधित्व करेंगे।
जमशेदपुर 9 अक्टूबर	जुस्को स्कूल, कदमा **70 छात्र / 7 स्कूल**	केरल पब्लिक स्कूल, कदमा की अस्मिता ठाकुर और अनिंदो पुरकैत ने पहला स्थान प्राप्त किया और वे रांची में स्टेट लेवल क्विज़ में जमशेदपुर का प्रतिनिधित्व करेंगे।
नागपुर 20 अगस्त	श्रीमती मनोरमाबाई मुंडले कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, सेमिनरी हिल्स **18 स्कूलों के 175 छात्र**	इंटर-सिटी हेरिटेज क्विज़ का आयोजन डॉ. मधुरा राठौड़ (शासी परिषद सदस्य, इन्टैक, नई दिल्ली) के मार्गदर्शन में हुआ। क्विज़ मास्टर श्री अनुप मंचलवार थे। भवन्स त्रिमूर्ति नगर के आदित्य राजुरकर और नमन त्रिपाठी ने स्कूल श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
बारामती 21 अगस्त 2025	विद्या प्रतिष्ठान स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, बारामती • **42 छात्र / 11 स्कूल**	बारामती में पहली बार इन्टैक इंडिया हेरिटेज क्विज़ 2025 आयोजित की गई। वी.पी. इंग्लिश मीडियम सीबीएसई स्कूल की प्रांजली प्रविण घोरपड़े और शिवेंद्र गणेश जाधव ने पहला स्थान प्राप्त किया।
नासिक 22 अगस्त	मीना भुजबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस **170 छात्र / 14 स्कूल**	एसकेडी इंटरनेशनल स्कूल, देओला लगातार दूसरे वर्ष विजेता रहा। विद्यालय का प्रतिनिधित्व अविष्कार पवार और अमेय निकम ने किया।
वाई–पंचगनी 23 अगस्त 2025	कल्पतरु मंगल कार्यालय, वाई **96 छात्र / 9 स्कूल**	छह टीमें फाइनल में पहुँचीं। गार्गी कमलाकर डेरे और सोहाना सहलम मोल्ला को वाई का स्टेट लेवल पर प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया।
अमरावती 10 सितंबर 2025	डॉ. पं. जबराराव देशमुख मेमोरियल साइंस एंड इनोवेशन सेंटर **99 छात्र / 12 स्कूल**	इन्टैक अमरावती अध्याय ने श्री शिवाजी साइंस कॉलेज के सहयोग से इंटर-स्कूल हेरिटेज क्विज़ 2025 आयोजित की। क्विज़ मास्टर श्री अनुप मंचलवार थे। पोडार इंटरनेशनल स्कूल, अमरावती के स्मयन लड्ढा और प्रणव पाटिल ने पहला स्थान प्राप्त किया।
सोलापुर 22 सितंबर	एसपीएम इंग्लिश मीडियम स्कूल **64 छात्र / 17 स्कूल**	कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नरेंद्र कातिकर और सह-संयोजक आर्किटेक्ट श्वेता कोठावले ने किया, जो क्विज़ मास्टर भी थीं। लेट वी.एम. मेहता हाई स्कूल की अनुष्का अमोल गायकवाड़ और मास्टर सुजय मोहन हजारे विजेता बने।
जामनगर 19 अगस्त 2025	हेरिटेज होटल अराम क्रिस्टल बैंक्वेट हॉल, जामनगर • **72 छात्र / 6 स्कूल**	जामनगर राउंड शहर के एक ऐतिहासिक विरासत स्थल पर आयोजित हुआ। मौखिक और रैपिड-फायर राउंड तथा पाँच टाई-ब्रेकर के बाद एसएसएसवी गुजराती मीडियम स्कूल के अस्मिताबा परमार और दर्शन सोनछत्रा विजेता बने और वे गुजरात स्टेट लेवल पर जामनगर का प्रतिनिधित्व करेंगे।
राजकोट 4 अगस्त 2025	मुख्य सभागार, आत्मिया विश्वविद्यालय **250 छात्र / 18 स्कूल**	इन्टैक राजकोट अध्याय ने जिला स्तरीय हेरिटेज क्विज़ आयोजित की। क्विज़ मास्टर हिरेन आचार्य थे और एंकरिंग इन्टैक सदस्य नियति शाह ने की। जीनियस इंग्लिश मीडियम स्कूल के देव देपानी और आरव पंभाड़ ने पहला स्थान प्राप्त किया।

इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 — स्टेट राउंड

छत्तीसगढ़ – 12 अक्तूबर 2025

छत्तीसगढ़ स्टेट लेवल क्विज़ का आयोजन आनंद समाज लाइब्रेरी, गांधी सदन, रायपुर में हुआ। इसमें 8 अध्यायों से 15 प्रतिभागियों और 8 शिक्षकों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि डॉ. शिव कुमार पांडेय, पूर्व कुलपति और श्री शशांक शर्मा, राज्य मंत्री, संस्कृति ने विरासत के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री अरविंद मिश्रा, राज्य संयोजक और डॉ. राकेश तिवारी, रायपुर संयोजक ने विभिन्न अध्यायों की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में छात्रों, इन्टैक सदस्यों और गणमान्य अतिथियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। महासमुंद अध्याय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

बिहार – 12 अक्तूबर 2025

इन्टैक पटना अध्याय द्वारा बुद्ध स्मृति पार्क संग्रहालय सभागार, पटना में स्टेट लेवल हेरिटेज क्विज़ आयोजित की गई। पटना, गया, नवादा, भागलपुर और पूर्णिया के सिटी राउंड विजेताओं ने भाग लिया। क्विज़ में ऑडियो, विज़ुअल और चित्र आधारित राउंड शामिल थे। क्विज़ मास्टर श्री अतुल प्रियदर्शी, मुख्य यांत्रिक अभियंता, ईस्ट सेंट्रल रेलवे थे। विद्या विहार रेसिडेंशियल स्कूल, पूर्णिया के सबल कुमार और दर्शिल विजेता रहे, जबकि सेंट कैरन स्कूल, पटना के अर्णव प्रकाश और जयेश राणा दूसरे स्थान पर रहे। विजेताओं को पदक, स्मृति चिह्न और प्रमाण-पत्र दिए गए। बुद्ध स्मृति पार्क के डॉ. शिव कुमार मिश्रा ने विजेताओं को बधाई दी और बच्चों में विरासत के प्रति जागरूकता पर ज़ोर दिया।

मध्य प्रदेश – 25 अक्तूबर 2025

इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का स्टेट राउंड ग्वालियर ग्लोरी हाई स्कूल, ग्वालियर में आयोजित हुआ। क्विज़ में व्यक्तित्व, स्मारक, अमूर्त विरासत, प्राकृतिक विरासत और पौराणिक कथाओं से जुड़े पाँच राउंड थे। कड़े मुकाबले के बाद निर्मला सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मंडला की हर्षिका सोनकेसरी और अंशिका यादव विजेता बनीं। कार्यक्रम में इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी और श्री राजीव तोमर उपस्थित रहे। विजेताओं को ट्रॉफी और इन्टैक प्रकाशन दिए गए तथा सभी प्रतिभागियों को शैक्षणिक पुस्तकें प्रदान की गईं।

केरल – 1 नवंबर 2025

इन्टैक हेरिटेज क्विज़ – केरल राउंड का आयोजन 1 नवम्बर 2025 को एएसआई हॉल, पलक्कड़ किला में दोपहर 2 से 4 बजे तक किया गया। इस प्रतियोगिता में छह विद्यालयों ने भाग लिया, जिनमें 12 विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा में शामिल हुए और लगभग 30 अभिभावक, शिक्षक तथा अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन और संचालन इन्टैक की 10 सदस्यीय टीम द्वारा किया गया। निर्धारित प्रारूप के अनुसार क्विज़ में मौखिक सेमीफ़ाइनल और 'अनुसरण-शैली' का फ़ाइनल राउंड शामिल था, जिसके आधार पर केरल राज्य का विजेता चुना गया। इस कार्यक्रम ने अपने उद्देश्यों को पूरा किया—बाहरी प्रतिभागियों के लिए स्वागतपूर्ण वातावरण प्रदान करना, राष्ट्रीय स्तर की संस्था के अनुरूप प्रतियोगिता प्रस्तुत करना, और विद्यालयी पाठ्यक्रम से परे केरल की विविध विरासत को उजागर करना। त्रिशूर के भारतीय विद्या भवन्स विद्या मंदिर के श्रीहरी सी. नायर और नंदकिशोर के. एस. ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गुजरात – 4 अक्तूबर 2025

गुजरात राज्य फाइनल ब्राइट डे स्कूल, वडोदरा में आयोजित हुआ। अहमदाबाद, भावनगर, भरूच, जामनगर और राजकोट की छह विजेता स्कूलों ने भाग लिया। क्विज़ मास्टर सुश्री तरिषा देसाई ने अंग्रेज़ी और गुजराती दोनों भाषाओं में क्विज़ का संचालन किया। तीन राउंड के बाद चार टीमें रैपिड फायर फाइनल में पहुँचीं। ब्राइट डे स्कूल सीबीएसई, वासना यूनिट के दत्त पटेल और एस. कार्तिक विजेता बने और दिल्ली में होने वाले नेशनल फाइनल में गुजरात का प्रतिनिधित्व करेंगे। शांति एशियाटिक स्कूल, अहमदाबाद दूसरे और श्री सत्य साईं विद्यालय, जामनगर तीसरे स्थान पर रहे।

उत्तर प्रदेश – 30 अक्तूबर

इन्टैक लखनऊ अध्याय द्वारा ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ में उत्तर प्रदेश राज्य फाइनल आयोजित किया गया। प्रदेश भर से नौ विजेता टीमों ने इसमें भाग लिया। क्विज़ में भारत के इतिहास और संस्कृति से जुड़े कई राउंड शामिल थे। विजेताओं को मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी एन.के एस. चौहान, ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ के प्राचार्य गैरी एवरेट, इन्टैक लखनऊ अध्याय की संयोजक डॉ. नीतू अग्रवाल, सह-संयोजक धनुंजय वर्मा, क्विज़ मास्टर सुरभि मोदी सहाय तथा इन्टैक के सदस्य सुश्री कनक रेखा चौहान, प्रो. सुमना वर्मा और

मध्य प्रदेश

बिहार

केरल स्टेट राउंड

गुजरात

उत्तर प्रदेश राज्य

पश्चिम बंगाल

पंजाब

हिमाचल प्रदेश

आंध्र प्रदेश

राजस्थान

श्री ए.के. श्रीवास्तव ने सम्मानित किया। प्रथम पुरस्कार आर्मी पब्लिक स्कूल, अयोध्या की अंशु सिंह और वर्तिका मिश्रा को मिला।

पश्चिम बंगाल – 30 अक्तूबर

इन्टैक कोलकाता क्षेत्रीय अध्याय ने एपेजे स्कूल, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता में स्टेट लेवल क्विज़ का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में इन्टैक के कोलकाता, हुगली और मुर्शिदाबाद अध्यायों का प्रतिनिधित्व करते हुए 3 स्कूलों के 6 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री बालकनाथ भट्टाचार्य, संयोजक, मुर्शिदाबाद अध्याय के उद्घाटन भाषण से हुई। क्विज़ का संचालन सुश्री स्मिता मेहता, इन्टैक कोलकाता अध्याय की सदस्य ने पाँच राउंड में किया। इन्टैक मुर्शिदाबाद अध्याय का प्रतिनिधित्व कर रहे सरगाछी रामकृष्ण मिशन हाई स्कूल ने स्टेट लेवल पर पहला स्थान प्राप्त किया।

पंजाब – 7 नवंबर

इन्टैक पंजाब राज्य अध्याय ने आर्मी पब्लिक स्कूल, ब्यास में स्टेट लेवल क्विज़ प्रतियोगिता आयोजित की। मेजर जनरल बलविंदर सिंह (सेवानिवृत्त), वीएसएम, राज्य संयोजक, इन्टैक पंजाब ने कहा कि यह प्रतियोगिता हर साल आयोजित की जाती है ताकि नई पीढ़ी को हमारी सांस्कृतिक विरासत की जानकारी मिल सके। इस वर्ष पंजाब के 11 ज़िलों अर्थात् अमृतसर, तरनतारन, फिरोज़पुर, संगरूर, फरीदकोट, होशियारपुर, बठिंडा, मलेरकोटला, पटियाला, जालंधर और कपूरथला ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। स्प्रिंग डेल स्कूल के छात्र सेहजनूर कौर और सौरिश नागपाल ने पहला स्थान प्राप्त किया और वे दिसंबर में दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पंजाब का प्रतिनिधित्व करेंगे। एमजीएन पब्लिक स्कूल, कपूरथला दूसरे स्थान पर रहा। क्विज़ मास्टर श्री रूपिंदर निज्जर और सुश्री रशिमा सिंह थे।

आंध्र प्रदेश – 9 नवंबर

आंध्र प्रदेश राज्य स्तरीय हेरिटेज क्विज़ का आयोजन एसकेआर और एसकेआर महिला डिग्री कॉलेज, कडप्पा में किया गया। यह कार्यक्रम श्री एस.वी.एस. लक्ष्मी नारायण, राज्य संयोजक की अनुमति और श्री के. चिनप्पा रेड्डी, संयोजक, इन्टैक कडप्पा अध्याय की देखरेख में हुआ। अनंतपुर, गुंटूर, कडप्पा, श्रीकाकुलम, विशाखापट्टनम और मछलीपट्टनम के सिटी लेवल विजेता प्रतिभागियों ने 8 नवम्बर को पहले दिन कडप्पा के विरासत स्थलों का क्षेत्रीय दौरा किया। दूसरे दिन, 9 नवम्बर को, प्रतिभागियों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के ज्ञान का प्रदर्शन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से किया। अनंतपुर की टीम — वाई. मिधुन कुमार और जी. भरत राठौरे (रोटरी इंग्लिश मीडियम स्कूल) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

हिमाचल प्रदेश – 10 नवंबर

हिमाचल प्रदेश स्टेट लेवल क्विज़ का आयोजन 10 नवंबर 2025 को एचईसीएस प्रभाग, इन्टैक के सहयोग से किया गया। शिमला, कांगड़ा, धर्मशाला और मंडी से आई टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रम राज महल होटल एवं रेस्टोरेंट के सभागार में आयोजित हुआ। क्विज़ मास्टर श्री अभिषेक दास, वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक, एचईसीएस थे, जिन्हें श्री दीपांशु, कार्यक्रम प्रबंधक ने सहयोग दिया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री नरेश मल्होत्रा, संयोजक, मंडी अध्याय के स्वागत भाषण से हुई और क्विज़ चार राउंड में आयोजित की गई। अचीवर्स हब सीनियर सेकेंडरी स्कूल, धर्मशाला के शौर्य और अंगना पठानिया ने पहला स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का समापन श्री अनिल शर्मा, सह-संयोजक, मंडी अध्याय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

राजस्थान – 11 नवंबर

राजस्थान स्टेट लेवल क्विज़ का आयोजन इन्टैक जोधपुर अध्याय के सहयोग से मेहरानगढ़ किले के चोखेलाव महल में किया गया। इसमें अजमेर, अलवर, भीलवाड़ा, ब्यावर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, करौली, सिरोही, जयपुर और उदयपुर की टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रम में श्रीमती अदिति पुरोहित, उपायुक्त, जोधपुर विकास प्राधिकरण, मुख्य अतिथि रहीं। डॉ. महेंद्र सिंह तंवर, संयोजक, जोधपुर अध्याय ने छात्रों और शिक्षकों का स्वागत किया। चार रोमांचक राउंड के बाद कैम्ब्रिज कोर्ट वर्ल्ड स्कूल, जयपुर की कृतिका जिंदल और केशव गर्ग ने पहला स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान लोकहितकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, करौली के ईशांत चतुर्वेदी और पूर्वी चतुर्वेदी को मिला, जबकि तीसरा स्थान बंगड़ पब्लिक स्कूल, ब्यावर की तमन्ना सिंह और अन्वी अग्रवाल को मिला। क्विज़ का समापन डॉ. महेंद्र सिंह तंवर के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

फिल्मिट इंडिया

वर्ष 2025–2026 में फिल्मिट इंडिया ने अपने 18 वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर परियोजना के तहत विभिन्न फिल्मिट शहरों में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं और आगे भी आयोजित करने की योजना बनाई गई। श्री फैज़ल अलकाज़ी और एचईसीएस टीम ने सामग्री से जुड़ी कार्यशालाएँ कराईं, जबकि तकनीकी कार्यशालाएँ ट्यूनिंग फोर्क फ़िल्म्स की टीम द्वारा कराई गईं। इस टीम में श्री अंकित पोगुला, सुश्री हिमांशी सैनी, सुश्री साशा सिंह, सुश्री शिखा गुप्ता, श्री आदित्य वर्मा, श्री विनोद श्रीधर और श्री अंशुल उनियाल शामिल थे।

अध्याय	उपस्थिति, मुख्य विषय-बिंदु और सहयोग
दिल्ली 28 और 29 जुलाई इन्टैक	**दिल्ली एनसीआर के 38 स्कूलों से 114 छात्र और 39 शिक्षक शामिल हुए** दिल्ली एनसीआर के स्कूलों के लिए एक रोचक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों को कहानी सुनाने, फ़िल्म निर्माण और सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से विषयों से परिचित कराया गया।
दिल्ली 30 और 31 जुलाई 2025 • इन्टैक	**दिल्ली एनसीआर के 38 स्कूलों से 112 छात्र और 39 शिक्षक शामिल हुए** कार्यक्रम में उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली, जहाँ तकनीकी विशेषज्ञों ने छात्रों को एक आकर्षक फ़िल्म बनाने की बारीकियाँ समझाईं।
वाराणसी और अयोध्या 31 जुलाई 2025 सनबीम स्कूल, लहरतारा	**वाराणसी के 18 और अयोध्या के 5 स्कूलों के 150 छात्र और शिक्षक शामिल हुए** वाराणसी संयोजक श्री अशोक कपूर, सह-संयोजक श्री निर्मल जोशी और श्री अनिल केशरी, सनबीम के चेयरमैन श्री दीपक मधोक, मेजबान स्कूल की प्रिंसिपल और सुश्री परवीन क्वैसर ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।
चंडीगढ़ और अंबाला 31 जुलाई 2025 स्ट्रॉबेरी फील्ड्स हाई स्कूल, चंडीगढ़	**चंडीगढ़ के 9 स्कूलों और अंबाला के 4 स्कूलों से 61 छात्र और 16 शिक्षक शामिल हुए** छात्रों ने फिल्म-निर्माण की कला के बारे में सीखा और कैमरे के ज़रिए विरासत को दिखाने के रचनात्मक तरीके खोजे। कार्यक्रम में इन्टैक चंडीगढ़ अध्याय की सह-संयोजक सुश्री दीपिका गांधी और श्री विवेक अत्रेय, तथा इन्टैक अंबाला अध्याय के संयोजक कर्नल आर.डी. सिंह उपस्थित थे।
अमृतसर और पंजाब 1 अगस्त स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल, अमृतसर	**अमृतसर के 6 स्कूलों और पंजाब के अन्य शहरों अर्थात् ब्यास, कपूरथला, तरनतारन, फिरोज़पुर, होशियारपुर और जालंधर के 7 स्कूलों से 63 छात्र और 24 शिक्षक शामिल हुए** कार्यशाला में छात्रों को विषयों की समझ और फिल्म-निर्माण का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिला। कार्यक्रम में इन्टैक पंजाब अध्याय के संयोजक मेजर जनरल बलविंदर सिंह, इन्टैक अमृतसर अध्याय के संयोजक श्री गगनदीप विर्क और स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल के प्रिंसिपल श्री राजीव शर्मा उपस्थित थे।
कोलकाता 1 अगस्त श्री श्री एकेडमी, अलीपुर	**15 स्कूलों के 78 छात्र और 21 शिक्षक शामिल हुए** छात्रों ने फिल्म-निर्माण की तकनीकी बातें सीखीं। इन्टैक कोलकाता अध्याय की सह-संयोजक सुश्री कंचना मुखोपाध्याय कार्यक्रम में उपस्थित थीं।
वडोदरा 5 अगस्त 2025 नवरचना इंटरनेशनल स्कूल, वासना	**वडोदरा, अंकलेश्वर और भरूच के 12 स्कूलों से 85 छात्र और शिक्षक शामिल हुए** प्रसिद्ध फिल्म शोले को याद करते हुए फिल्म-निर्माण के विषयों और प्रक्रिया की दिलचस्प शुरुआत की गई। कार्यक्रम में इन्टैक वडोदरा अध्याय के संयोजक श्री संजीव जोशी, सह-संयोजक सुश्री तारित्सा देसाई, और दोनों विंगों अर्थात् सीबीएसई और आईबी के प्रचार्य क्रमशः सुश्री कश्मीरा जायसवाल और श्री थियोफेन डी'सूज़ा उपस्थित थे।
अहमदाबाद 6 अगस्त 2025 श्रेयस फाउंडेशन	**12 स्कूलों के 72 छात्र और 20 शिक्षक शामिल हुए** अहमदाबाद में छात्रों को फिल्म-निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें विभिन्न विषयों से परिचित कराया गया। सत्र में इन्टैक अहमदाबाद की संयोजक सुश्री उत्पलाबेन, श्रेयस फ़ाउंडेशन के चेयरमैन श्री अभय मंगलदास और श्रेयस फ़ाउंडेशन की प्रचार्य सुश्री लताबेन उपस्थित थीं।
जयपुर 7 अगस्त 2025 नीरजा मोदी स्कूल	**15 स्कूलों के 72 छात्र और 25 शिक्षक शामिल हुए** फिल्म-निर्माण और विषयों की समझ पर एक उपयोगी सत्र आयोजित किया गया। सत्र में इन्टैक जयपुर के सह-संयोजक श्री निखिल पंडित उपस्थित थे।
मुंबई 7 अगस्त 2025 आईईएस कॉलेज ऑफ़ आर्किटेक्चर	**10 स्कूलों के 60 से अधिक छात्र और 16 शिक्षक शामिल हुए** कार्यशाला में छात्रों को फिल्म-निर्माण की प्रक्रिया और विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई। आईईएस टीम, जिसका नेतृत्व सुश्री शिल्पा चंदावरकर कर रही थीं, ने भी सत्र में भाग लिया।
गोवा 8 अगस्त 2025 शारदा मंदिर स्कूल, मीरामार	**12 स्कूलों के 82 छात्र और 17 शिक्षक शामिल हुए** कार्यशाला में छात्रों को विभिन्न विषयों से परिचित कराया गया और फिल्म-निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया। इन्टैक गोवा की संयोजक सुश्री फ़ातिमा और शारदा मंदिर स्कूल की प्रचार्य सुश्री शर्मिला उमेश भी उपस्थित थीं।
हैदराबाद 12 अगस्त गीतांजलि देवाश्रय	**25 स्कूलों के 95 छात्र और 25 शिक्षक शामिल हुए** सत्र में विषयों की समझ और फिल्म-निर्माण का प्रशिक्षण रोचक तरीके से दिया गया। इन्टैक हैदराबाद अध्याय की संयोजक श्रीमती अनुराधा रेड्डी और मेजबान स्कूल की प्रचार्य श्रीमती कस्तूरी चटर्जी भी उपस्थित थीं।
चेन्नई 13 अगस्त श्री शंकरा सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अड्यार	**11 स्कूलों के 65 छात्र और 15 शिक्षक शामिल हुए।** छात्रों को विभिन्न विषयों से परिचित कराया गया और फिल्म-निर्माण का प्रशिक्षण भी दिया गया। मेज़बान स्कूल की प्रचार्य श्रीमती विजयलक्ष्मी, उप-प्रचार्य श्रीमती कविता और इन्टैक चेन्नई अध्याय की संयोजक सुश्री सुजाता शंकर भी उपस्थित थीं।
कोच्चि 14 अगस्त केरल म्यूज़ियम, कोच्चि	**11 स्कूलों के 57 छात्र और 13 शिक्षक शामिल हुए** सत्र में विषयों की समझ और फिल्म-निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में इन्टैक कोच्चि अध्याय के संयोजक श्री बाबू सी. राजीव, केरल संग्रहालय की निदेशक सुश्री अदिति नायर और इन्टैक कोच्चि अध्याय के सह-संयोजक श्री बिले मेनन उपस्थित थे।

मुंबई

हैदराबाद

चेन्नई

जयपुर

जयपुर अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म उत्सव (जेआईएफएफ) 28–29 अगस्त 2025

28–29 अगस्त 2025 को आयोजित जयपुर अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म उत्सव (जेआईएफएफ) में फिल्मिट इंडिया परियोजना की छह फ़िल्मों का चयन हुआ। सभी छह फ़िल्मों को पुरस्कार भी मिले। चयनि त फ़िल्में इस प्रकार थीं — श्याम सुंदर पालीवाल और उनका इको-फ़ेमिनिज़्म सिद्धांत — लीलावतीबाई पोदार हाई स्कूल (प्रथम), अहिल्याबाई होल्कर के 300 वर्ष: न्याय, करुणा और सशक्तिकरण की विरासत — सेठ एम.आर. जयपुरिया स्कूल, बाबतपुर, वाराणसी (द्वितीय), मैंग्रोव व्हिस्पर्स — इंडस वैली वर्ल्ड स्कूल, कोलकाता (तृतीय), माय विलेज लीलापुर, नवरचना इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा (छठा), द सोल ऑफ सरखेज रोज़ा, महात्मा गांधी इंटरनेशनल स्कूल, अहमदाबाद (छठा), इतिहास की अमर विरासत – नूरपुर क़िला — स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल, अमृतसर (16वाँ)।

आईजीएनसीए, नई दिल्ली में फ़ुटप्रिंट फ़िल्म उत्सव में 'फ़िल्मों के माध्यम से विरासत' पर एक सत्र का आयोजन

6वाँ फ़ुटप्रिंट फ़िल्म उत्सव, आईजीएनसीए, नई दिल्ली 31 अक्तूबर 2025

इन्टैक ने 31 अक्तूबर 2025 को आईजीएनसीए, जनपथ, नई दिल्ली में आयोजित 6वें फ़ुटप्रिंट फ़िल्म उत्सव में भाग लिया। यह आयोजन आईजीएनसीए और द पेनिनसुला स्टूडियो के सहयोग से हुआ। इन्टैक की फिल्मिट परियोजना के अंतर्गत छात्रों द्वारा बनाई गई छह विरासत फ़िल्में प्रदर्शित की गईं, जिनमें डॉन बॉस्को सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मुंबई की पुरस्कार विजेता फ़िल्म स्टिरिंग अप हिस्ट्री: द ओरिजिन ऑफ पावभाजी भी शामिल थी। 'फ़िल्मों के माध्यम से विरासत' विषय पर एक संवादात्मक सत्र सुश्री पूर्णिमा दत्त ने संचालित किया, जिसमें श्री अभिषेक दास और सुश्री क्रिस्टीना शांगने ने सहयोग किया। सीएम श्री स्कूल सहित दिल्ली के विभिन्न स्कूलों के लगभग 60 छात्रों ने यह जाना कि संवेदनात्मक कहानी कहने की कला से व्यक्तिगत और सांस्कृतिक विरासत को कैसे अभिव्यक्त किया जा सकता है। एक छात्र ने पुरानी दिल्ली में *कबूतरबाज़ी* पर बनी अपनी फ़िल्म का अनुभव भी साझा किया, जिससे यह समझ आया कि सिनेमा परंपराओं को संरक्षित करने और सांस्कृतिक गर्व बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकता है।

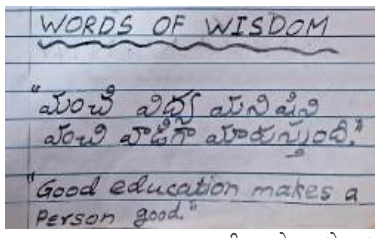

बवीशा कोडम (तेलुगु)

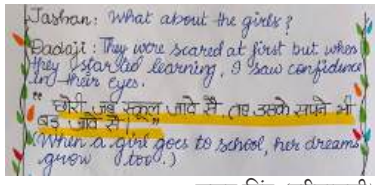

जशन सिंह (हरियाणवी)

शिक्षा और बुज़ुर्गों के लिए सोशल मीडिया चुनौती – राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (11 नवंबर)

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर एचईसीएस ने सोशल मीडिया पर 'शिक्षा और बुज़ुर्ग' विषय पर एक चुनौती आयोजित की। इस पहल में देश के अलग-अलग हिस्सों से कई भाषाओं में प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। इस चुनौती में बच्चों से कहा गया कि वे अपने दादा-दादी या नाना-नानी का इंटरव्यू लें और उनसे पूछें कि उनके अनुसार अच्छी शिक्षा के गुण क्या होते हैं। इस चुनौती की कुछ श्रेष्ठ प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैं —

1. बविशा कोडम (तेलुगु), कक्षा II, द ग्लोबल एज स्कूल, कोकापेट
2. जी. लोगसारी (तमिल), कक्षा VIII, रॉयल पार्क स्कूल, सलेम
3. जशन सिंह (हरियाणवी), कक्षा IX, प्राइम स्टेप्स इंटरनेशनल स्कूल, अंबाला कैंट
4. निरवी जैन (मारवाड़ी), कक्षा IX, सीडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल, उदयपुर
5. प्रकृति शर्मा (पंजाबी), कक्षा IX, आर. डी. खोसला डी. ए. वी. मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बटाला
6. रुहानिका मोटवानी (सिंधी), कक्षा III, महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल, उदयपुर

प्रकृति शर्मा

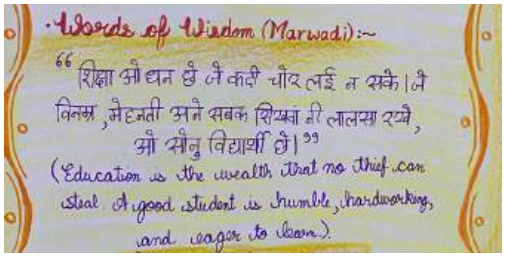

निरवी जैन (मारवाड़ी)

रूहानिका मोटवानी

सांस्कृतिक कार्य प्रभाग

इतिहासकार और लेखिका डॉ. स्वप्ना लिडल का व्याख्यान **1857 इन दिल्ली – ए वर्ल्ड टर्न्ड अपसाइड डाउन, एंड द रोड टू फ्रिडम 11** अगस्त 2025 को नई दिल्ली स्थित इन्टैक के बहुद्देशीय हॉल में आयोजित किया गया। यह व्याख्यान यूट्यूब पर लाइव प्रसारित किया गया।

यह व्याख्यान 1857 के विद्रोह पर केंद्रित था, जो भारत के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी। इस विद्रोह ने देश के बड़े हिस्सों को अपनी चपेट में लिया और अनेक भारतीयों को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ खड़ा कर दिया। भले ही यह विद्रोह ब्रिटिश शासन को खत्म नहीं कर सका, लेकिन इसके बाद ब्रिटिश शासन में कई बड़े बदलाव हुए। आगे चलकर इस विद्रोह ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा पर भी असर डाला। व्याख्यान में विद्रोह से जुड़े मुद्दों पर विशेष रूप से दिल्ली के संदर्भ में चर्चा हुई, क्योंकि दिल्ली इस विद्रोह का मुख्य केंद्र थी और इस घटना के बाद शहर में बहुत बदलाव आए। यह भी बताया गया कि 1947 में जब दिल्ली स्वतंत्र भारत की राजधानी बनी, तो इसे कहीं-न-कहीं 1857 के विद्रोह से जुड़ा हुआ माना जा सकता है।

डॉ. स्वप्ना लिडल: व्याख्यान देती हुईं

विशिष्ट वक्ता श्री के.के. मुहम्मद: व्याख्यान देते हुए

डॉ. स्वप्ना लिडल को सम्मान स्वरूप भेंट देते हुए अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर

व्याख्यान में अध्यक्ष, श्री अशोक सिंह ठाकुर, सदस्य सचिव, श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त), संस्थापक सदस्य प्रो. मेनन और जीसी सदस्य श्री माहेश्वरी

विशिष्ट वक्ता श्री के.के. मुहम्मद: व्याख्यान देते हुए

श्री के.के. मुहम्मद द्वारा दिया गया व्याख्यान **भारतीय पुरातत्व से जुड़ी कहानियाँ** 12 अगस्त 2025 को नई दिल्ली स्थित इन्टैक के बहुद्देशीय हॉल में आयोजित किया गया।

यह व्याख्यान भारतीय पुरातत्व पर केंद्रित था, जिसमें कई दिलचस्प और प्रेरक कहानियाँ शामिल थीं। देशके विभिन्न हिस्सों में पुरातत्वविदों द्वारा की गई खोजों और खुदाइयों से यह पता चलता है कि पुरातत्व अपने रहस्य धीरे-धीरे उजागर करता है। छोटे-छोटे साक्ष्यों को जोड़कर, उन्हें सावधानी से समझने और आपस में पिरोने के बाद ही पूरा इतिहास सामने आता है। उदाहरण के लिए, चार्ल्स मैसन ने 1826 में हड़प्पा स्थल को खोज लिया था और प्रसिद्ध पुरातत्वविद अलेक्ज़ेंडर कनिंघम ने 1853 में इसका दौरा भी किया। फिर भी वे यह समझ नहीं पाए कि यह स्थल एक बहुत बड़ी प्राचीन सभ्यता का केंद्र था। लगभग 98 वर्षों बाद, पुरातत्वविद आर.डी. बनर्जी और जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के वास्तविक महत्व को पहचाना और इतिहास की दुनिया को चौंका दिया। इसी प्रकार, बिहार के राजगीर के पास बड़गांव स्थल की पहचान 1811 में फ्रांसिस बुकानन ने कर ली थी, लेकिन लगभग 50 साल बाद, 1861 में अलेक्ज़ेंडर कनिंघम ने इसे प्राचीन महान नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में पहचाना, जहाँ प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग छात्र और शिक्षक दोनों रहे थे। इसी तरह, फतेहपुर सीकरी में स्थित इबादत ख़ाना और ईसाई चैपल की पहचान भी श्री के.के. मुहम्मद ने की थी।

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) तथा संस्थापक सदस्य प्रो. मेनन (अग्रिम पंक्ति में) ध्यानपूर्वक व्याख्यान सुनते हुए

23 से 26 सितंबर तक **भारत की बावड़ियों** पर आधारित चित्रों सहित व्याख्यानों की एक श्रृंखला नई दिल्ली स्थित इन्टैक के बहुद्देशीय हॉल में आयोजित की गई। इन व्याख्यानों में भारत की बावड़ियों पर एक विस्तृत लेख 'फ़ीचर आर्टिकल' में प्रकाशित किया गया है।

23 सितंबर | जल संरचना: भारत की बावड़ियों की बनावट और इतिहास

डॉ. जुट्टा जैन-न्यूबॉयर, *कला इतिहासकार और जल-वास्तुकला विशेषज्ञ*

https://youtube.com/live/b_IN-whgcuo?feature=share

मुख्य वक्ता डॉ. जुट्टा जैन-न्यूबॉयर: व्याख्यान देती हुईं

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) अतिथि वक्ता को इन्टैक के प्रकाशन भेंट करते हुए

24 सितंबर | गोलकुंडा की बावड़ियों का संरक्षण

रतीश नंदा, *सीईओ, आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर, नई दिल्ली*

https://youtube.com/live/2tNH36jYaUQ?feature=share

संस्कृति मामले निदेशक वक्ता और व्याख्यान के विषय से परिचय कराती हुईं

अतिथि वक्ता रतीश नंदा: व्याख्यान देते हुए

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

25 सितंबर | पारंपरिक जल-वास्तुकला का आधुनिक रूप: बिरखा बावड़ी (भारत की 21वीं सदी की बावड़ी)

अनु मृदुल, *वास्तुकार*

https://youtube.com/live/soq8Sd9l9uo?feature=share

अतिथि वक्ता अनु मृदुल: व्याख्यान देते हुए

व्याख्यान के बाद प्रश्न–उत्तर सत्र

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

26 सितंबर | महाराष्ट्र की बावड़ियों पर क्षेत्रीय अध्ययन

रोहन काले, *संस्थापक एवं समन्वयक, महाराष्ट्र बावड़ी अभियान*

https://youtube.com/live/_rTsTxsndVM?feature=share

अतिथि वक्ता रोहन काले: व्याख्यान देते हुए

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर की उपस्थिति में सदस्य सचिव इन्टैक श्री रविन्द्र सिंह, सेवानिवृत्त (आईएएस) द्वारा वक्ता और श्रीमती काले को इन्टैक के प्रकाशन भेंट करते हुए

सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त): व्याख्यान के बाद प्रश्न–उत्तर सत्र के दौरान

विश्व धरोहर सप्ताह समारोह

19 नवंबर से 25 नवंबर तक नई दिल्ली स्थित इन्टैक बहुद्देशीय हॉल में **गज लोक** विषय पर व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। भारत में लगभग चार हजार साल पहले मनुष्य और हाथी के बीच संबंध विकसित हुए। गज लोक इसी लंबे और विकसित होते संबंध का अध्ययन करता है। यह श्रृंखला सांस्कृतिक स्मृति और पर्यावरण से जुड़े पहलुओं से जुड़ी हुई है तथा इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिकता और पर्यावरण की कहानियों को एक साथ जोड़ती है। यह भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सह-अस्तित्व की साझा परंपरा को भी दर्शाती है। इस चयनित व्याख्यान श्रृंखला में इंसान और हाथी के बीच परस्पर संबंध के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय पहलुओं की खोज की गई। उदाहरण के लिए: अर्थशास्त्र में हाथियों के बारे में क्या लिखा गया? मुगलों ने इस हाथियों का उपहार देने और युद्ध में कैसे उपयोग किया? ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में हाथियों के साथ कैसा अनुभव रहा? भारतीय हाथियों की उपमहाद्वीप से बाहर की यात्राओं पर भी चर्चा की गई। यह व्याख्यान लाइव स्ट्रीम किया गया और श्रृंखला गज लोक के विषय और उनके लिंक उपलब्ध हैं।

19 नवंबर | भारतीय इतिहास में हाथी

डॉ. प्रत्यय नाथ, *इतिहास के एसोसिएट प्रोफेसर, अशोका विश्वविद्यालय*

https://youtube.com/live/08Upu79d-vU?feature=share

अतिथि वक्ता डॉ. प्रत्यय नाथ: व्याख्यान देते हुए

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और जीसी सदस्य श्रीमती अनिता सिंह वक्ता को इन्टैक के प्रकाशन भेंट करते हुए

ध्यानपूर्वक व्याख्यान सुनते हुए श्रोतागण

विश्व विरासत सप्ताह समारोह के दौरान इन्टैक आँगन में सांस्कृतिक संध्या

विद्या शाह द्वारा गजेंद्र मोक्ष – भाव और भक्ति की कहानियाँ विषय पर प्रस्तुति

प्रसिद्ध गायिका और संगीतकार विद्या शाह ने गजेंद्र मोक्ष की कथा के माध्यम से गीतों में पृथ्वी, जंगल, नदियाँ और जीवों को जोड़ने वाले आत्मा के संबंध को प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति उत्तर भारतीय अर्ध-शास्त्रीय संगीत की परंपरा पर आधारित थी और इसमें प्राचीन कथा को प्रकृति और संस्कृति का उत्सव मनाने वाले रूपक के रूप में प्रस्तुत किया गया।

19 नवंबर | सांस्कृतिक कार्यक्रम | विद्या शाह, *गायिका, संगीतकार एवं लेखिका*

सांस्कृतिक संध्या के दौरान विद्या शाह द्वारा कथाओं पर आधारित प्रस्तुति

सुश्री विद्या शाह और उनके सह-कलाकारों का स्वागत करने के बाद अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, जीसी सदस्य सुश्री अनिता सिंह तथा संस्कृति कार्य निदेशक श्रीमती मनीषा सिंह

इन्टैक आँगन में सह-कलाकारों के साथ प्रस्तुति देती हुई सुश्री विद्या शाह

20 नवंबर | संस्कृति, प्रकृति और एशियाई हाथी का प्रबंधन

प्रो. रमन सुकुमार, *नेशनल साइंस चेयर, सेंटर फॉर इकोलॉजिकल साइंसेज, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरु*

https://youtube.com/live/fwecBHXAq4U?feature=share

अतिथि वक्ता प्रो. रमन सुकुमार: व्याख्यान देते हुए

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर वक्ता को इन्टैक के प्रकाशन भेंट करते हुए

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

21 नवंबर | भारत में हाथियों के लिए सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित करना

विवेक मेनन, *अध्यक्ष, आईयूसीएन स्पीशीज़ सर्वाइवल कमीशन; संस्थापक एवं कार्यकारी निदेशक, वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया*

https://youtube.com/live/rVMVLemEnb4?feature=share

अतिथि वक्ता श्री विवेक मेनन: व्याख्यान देते हुए

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, श्री विवेक मेनन को सम्मान-स्वरूप स्मृति-चिह्न प्रदान करते हुए

25 नवंबर | भारतीय वस्त्रों में हाथियों की कहानियाँ

प्रो. अर्चना शास्त्री, *कला, डिज़ाइन और वस्त्रों की विशेषज्ञ*

https://youtube.com/live/T_LMgDIjaMo?feature=share

अतिथि वक्ता प्रो. अर्चना शास्त्री: व्याख्यान देती हुईं

सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) वक्ता को इन्टैक के प्रकाशन भेंट करते हुए

व्याख्यान के दौरान श्रोतागण

प्रभाग द्वारा प्रकाशित सामग्री

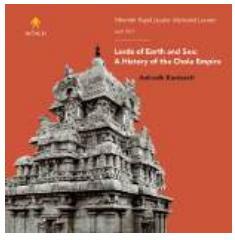

1. **वार्षिक रिपोर्ट 2024–2025:** इसका प्रारूप तैयार हो चुका है और इसे जीसी की बैठक में प्रस्तुत किया गया।
2. **15वाँ पुपुल जयकर स्मृति** व्याख्यान –'भूमि और समुद्र के अधिपति: चोल साम्राज्य का इतिहास' प्रकाशित किया गया है।
3. वर्तमान में **इन्टैक व्याख्यान श्रृंखला** तैयार की जा रही है।

इसके अतिरिक्त, विभाग इस समय आईएचए की कुछ परियोजनाओं का कार्य भी देख रहा है।

इन्टैक अंतरविषयक विरासत लेखन पुरस्कार 2025 – पुरस्कार समारोह एवं प्रदर्शनी

पुरस्कार समारोह 9 अक्तूबर को आयोजित किया गया, जिसमें तीन श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए — *एक उत्कृष्टता पुरस्कार, तीन मेरिट पुरस्कार और तीन प्रशस्ति पुरस्कार*। इस समारोह में विजेता टीमों के 35 छात्र, उनके अभिभावक और शिक्षक उपस्थित रहे। पुरस्कार – विजेता कृतियों की प्रदर्शनी 7 अक्तूबर 2025 को इन्टैक परिसर में लगाई गई, जिसमें पाँच प्रविष्टियाँ ए2 पैनल पर और दो वीडियो प्रविष्टियाँ प्रदर्शित की गईं।

शोध कार्यक्रम सत्र 2023–24

अंतिम रिपोर्टों पर 8 में से 4 समीक्षकों की टिप्पणियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। बाकी 3 समीक्षाएँ 15 दिसंबर तक मिलने की उम्मीद है।

'भारत में सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों का संरक्षण' विषय पर आधारित इन्टैक जर्नल ऑफ हेरिटेज स्टडीज़ – खंड 6, अंक 2

वर्तमान में इस प्रकाशन पर काम चल रहा है। छह शोध पत्रों का अध्ययन पूरा हो चुका है और वे अंतिम संपादन चरण में हैं। इसके नवंबर के अंत तक (अनुमानित) प्रकाशित होने की योजना है।

इन्टैक अंतरविषयक विरासत प्रलेखन पुरस्कार 2025 के उद्घाटन समारोह में सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

इन्टैक परिसर में पुरस्कार–विजेता प्रविष्टियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर

अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) प्रशस्ति पुरस्कार प्रदान करते हुए

विरासत पर्यटन प्रभाग

रायपुर हेरिटेज वॉक – इन्टैक रायपुर अध्याय ने रायपुर शहर और उसके आसपास छात्रों के लिए अपनी पहली हेरिटेज वॉक आयोजित की। इस वॉक में इन्टैक के कई सदस्य — श्री एस.एन. शुक्ला, श्री सुनील बघेल, डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा और श्री कुलेश्वर प्रसाद साहू — के साथ विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के छात्र सक्रिय रूप से शामिल हुए। इस हेरिटेज वॉक के दौरान अध्याय द्वारा निम्नलिखित विरासत स्थलों का अवलोकन किया गया:

- तुरीहात्री (लगभग 200 वर्ष पुराना)
- जगन्नाथ स्वामी मंदिर (लगभग 100 वर्ष पुराना)
- जैतुसाव मठ (लगभग 200 वर्ष पुराना)
- श्री सिद्ध संकटमोचन हनुमान मंदिर (बावली) (लगभग 150 वर्ष पुराना)
- श्री महावीर व्यायामशाला (अखाड़ा) (लगभग 140 वर्ष पुराना)
- श्री राज राजेश्वरी महामाया देवी मंदिर (14वीं शताब्दी)
- श्री रामचंद्र स्वामी ट्रस्ट (नागरीदास) मंदिर (लगभग 100 वर्ष पुराना)

रायपुर हेरिटेज वॉक के दौरान छात्र और सदस्य

रायपुर हेरिटेज वॉक के दौरान छात्र और सदस्य

इन सभी स्मारकों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है, जो रायपुर की समृद्ध विरासत को दर्शाता है। हेरिटेज वॉक के दौरान प्रतिभागियों का मार्गदर्शन रायपुर संयोजक डॉ. राकेश कुमार तिवारी, छत्तीसगढ़ राज्य संयोजक श्री अरविंद मिश्रा और सह-संयोजक श्रीमती शिवी जोशी ने किया। उन्होंने प्रत्येक स्थल के बारे में विस्तार से जानकारी दी। शहर के बीच स्थित 200 वर्ष पुरानी तुरीहात्री को छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रारंभिक प्रतीक माना जाता है, क्योंकि यह बाज़ार ऐतिहासिक रूप से महिलाओं द्वारा चलाया जाता था।

200 वर्ष से अधिक पुराना जैतुसाव मठ कई प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों का विश्राम स्थल रहा है। अपने क्षेत्रीय दौरों के दौरान महात्मा गांधी और डॉ. राजेंद्र प्रसाद भी यहाँ ठहरे थे। 14वीं शताब्दी का महामाया मंदिर तंत्र-साधना से जुड़े साधकों के लिए ऐतिहासिक महत्व रखता है। लगभग 140 वर्ष पुरानी श्री महावीर व्यायामशाला (अखाड़ा) भी प्रसिद्ध है, जहाँ दारा सिंह जैसे महान पहलवानों ने कुश्ती की थी।

आगामी रायपुर हेरिटेज वॉक के लिए नए मार्गों की योजना बनाई जा रही है, जो मुख्य रूप से शहर के बाहरी क्षेत्रों में होंगे।

इन्टैक वाराणसी के संयोजक अशोक कपूर द्वारा अतिथि के साथ दीप प्रज्ज्वलन

'बौद्ध धर्म, स्थानीय विरासत और पर्यटक' विषय पर व्याख्यान देते हुए बौद्ध विद्वान डॉ. सुमेधो थेरो

'जैन दर्शन, काशी और पर्यटक' विषय पर व्याख्यान देते हुए प्रो. आनंद जैन, प्रोफेसर, बीएचयू, वाराणसी एवं जैन दर्शन के विद्वान

'काशी के द्वादश आदित्य' विषय पर व्याख्यान देते हुए श्री अखिलेश कुमार, अध्यक्ष, टूरिस्ट गाइड एसोसिएशन, वाराणसी

धन्यवाद-ज्ञापन देते हुए इन्टैक आजीवन सदस्य श्री नीलेश सिन्हा

ग्वालियर शहर में छात्रों, सदस्यों और अन्य संस्थानों के लिए ग्वालियर अध्याय के संयोजक द्वारा **हेरिटेज वॉक** आयोजित की जा रही हैं। प्रत्येक विरासत भ्रमण का उद्देश्य हमारी विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और प्रतिभागियों को अध्याय की विरासत गतिविधियों से परिचित कराना है। ये वॉक शहर की विरासत गतिविधियों में स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर आधारित हैं।

इसी क्रम में, वाराणसी अध्याय द्वारा **घरेलू पर्यटन और सतत सामुदायिक अर्थव्यवस्था विषय पर एक दिवसीय परिचय कार्यक्रम** आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम एसोसिएशन ऑफ डोमेस्टिक टूर ऑपरेटर्स ऑफ इंडिया – उ.प्र. अध्याय (एडीटीओआई), वाराणसी टूरिज़्म एसोसिएशन (वीटीए) और टूरिस्ट गाइड एसोसिएशन (टीजीए), वाराणसी के सहयोग से आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम 26 सितंबर 2025 को होटल रीजेंसी, आंध्रापुल, वाराणसी में आयोजित किया गया, जिसमें वाराणसी के 50 पर्यटन सेवा प्रदाताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में सतत पर्यटन पद्धतियाँ, बौद्ध

धर्म, काशी और उसका परिवर्तन, जैन तीर्थंकर, संग्रहालय, वाराणसी की कला एवं शिल्प, पर्यटकों से जुड़े मुद्दे तथा वाराणसी के विरासत स्थलों की व्याख्या और संरक्षण जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

विरासत पर्यटन सलाहकार समिति की बैठक – 2025

विरासत पर्यटन सलाहकार समिति (एचटी-एसी) की परिचयात्मक बैठक 17 जुलाई 2025 को जूम पर आयोजित की गई। सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) ने समिति के नए सदस्यों का स्वागत किया। सदस्यों से अगले बैठक के एजेंडा के लिए सुझाव और चर्चा के बिंदु मांगे गए। इसके बाद समिति के सदस्यों को 16 सितंबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय में आमंत्रित किया गया। बैठक की अध्यक्षता सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) ने की। समिति के सदस्य हैं:

- श्री रुझबीर फिरोज उमरीगर, सह-संयोजक, नवसारी अध्याय
- श्री अशोक कुमार शर्मा, संयोजक, मुरैना अध्याय
- श्री कम्बम चिनापा रेड्डी, संयोजक, कडपा अध्याय
- डॉ. सलीम बेग, राज्य संयोजक, जम्मू और कश्मीर अध्याय
- श्री अशोक कपूर, संयोजक, वाराणसी अध्याय
- श्री राकेश माथुर, सह-संस्थापक एवं ईसी सदस्य, रिस्पांसिबल टूरिज्म सोसाइटी ऑफ इंडिया
- सुश्री रेखा खोसला, निदेशक, विरासत पर्यटन प्रभाग

बैठक में विचारों और सुझावों का सार्थक आदान-प्रदान हुआ। इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। सदस्यों द्वारा दिए गए सुझाव इस प्रकार हैं:

- विरासत स्थलों पर हितधारकों के माध्यम से जिम्मेदार विरासत जागरूकता को बढ़ावा देना
- विरासत स्थलों पर हेरिटेज वॉक के माध्यम से जागरूकता फैलाना
- विरासत से जुड़े मुद्दों पर समझौता-ज्ञापन की प्रक्रिया को सरल और एक-सा बनाना
- राज्य और स्थानीय स्तर पर गतिविधियों को अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए जिला स्तर पर इन्टैक सदस्यों की नियुक्ति या उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

बैठक में विचारों और सुझावों का सार्थक आदान-प्रदान हुआ। इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। सदस्यों द्वारा दिए गए सुझाव इस प्रकार हैं:

- पर्यटन मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से स्कूल शिक्षा के पाठ्यक्रम में विरासत जागरूकता से जुड़े छोटे-छोटे पाठ शामिल किए जाएँ।
- विरासत से जुड़े मुद्दों पर प्रभाव डालने के लिए इन्टैक अध्यायों को जिलों में स्थानीय सांस्कृतिक उत्सवों के आयोजन में भाग लेना चाहिए।
- हेरिटेज वॉक को प्रोत्साहित किया जाए
- प्रत्येक अध्याय का एक सदस्य जिला प्रशासन या जिला विरासत समिति में शामिल होना चाहिए।
- इन्टैक द्वारा तैयार किया गया डॉक्यूमेंटेशन सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाए।
- विरासत जागरूकता के लिए एक मानक समझौता-ज्ञापन (एमओयू) तैयार किया जाए; इसके लिए सदस्यों से सुझाव मांगे गए और एमओयू का मसौदा प्रसारित किया गया।
- निदेशक, विरासत पर्यटन ने 8 नवंबर 2025 को जूम लिंक के माध्यम से रिस्पांसिबल टूरिज़्म सोसाइटी ऑफ इंडिया (आरटीएसओआई) की 17वीं वार्षिक आम बैठक में भाग लिया। इस बैठक में सतत इको-टूरिज़्म और पर्यटन उद्योग में विरासत जागरूकता से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा हुई और तय प्रक्रिया के अनुसार नए सदस्यों का चुनाव किया गया।

नागालैंड में लोंगखुम विरासत संकेतक/ सूचना बोर्ड लगाना:

नागालैंड के मोकोकचुंग ज़िले के लोंगखुम गाँव में विरासत संकेतक/सूचना बोर्ड लगाने की परियोजना चल रही है। यह गाँव 'मोंगज़ु की' नामक ऊँची चट्टान पर स्थित है। लोंगखुम के जैव क्षेत्र में कई प्राकृतिक विरासत स्थल मौजूद हैं। यह नागालैंड आने वाले पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

कोई मुद्रित जानकारी न होने के कारण पर्यटक इन प्राकृतिक स्थलों से जुड़ी समृद्ध विरासत, मिथकों और लोककथाओं के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर पाते। इनमें चीलों के घोंसले जैसे स्थल भी शामिल हैं, जहाँ सदियों से चीलें बसेरा करती आई हैं और जो लोंगखुम की लोक परंपराओं से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इस परियोजना को लागू करने के लिए के लिए नागालैंड अध्याय को आवश्यक सहयोग प्रदान किया गया है।

विरासत पर्यटन सलाहकार समिति (एचटी-एसी) की चल रही बैठक

विरासत पर्यटन सलाहकार समिति (एचटी-एसी) की चल रही बैठक

एचटी-एसी के सदस्यों का ग्रुप फोटो, जिसमें इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह, आईएएस (सेवानिवृत्त) भी शामिल हैं

प्रकाशन

पुस्तकें

ओरछा कलम नामक एक पुस्तक प्रकाशित की गई है, जो ओरछा की भित्ति चित्रकला पर आधारित है और बुंदेला राजाओं के जीवन को दर्शाती है। मध्य प्रदेश के ओरछा चित्रों का विशेष महत्व है। ये सुंदर भित्ति चित्र केवल सजावटी कला नहीं हैं, बल्कि बुंदेला राजाओं के जीवन, विश्वास और उस काल की जीवंत झलक प्रस्तुत करते हैं।

काशी के बड़े आदित्य नामक एक पुस्तिका काशी की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए प्रकाशित की गई है। इसमें काशी की पुरानी परंपराएँ, द्वादश आदित्य परिक्रमा, पंचकोशी परिक्रमा/यात्रा, 56 विनायक परिक्रमा/यात्रा, अंतरगृह यात्रा आदि शामिल हैं। यह पुस्तिका श्री पुलकित गर्ग (आईएएस), उपाध्यक्ष, वाराणसी विकास प्राधिकरण को प्रस्तुत की गई। स्थानीय प्रकाशकों ने इस पुस्तिका के माध्यम से स्थानीय विरासत को जनता तक पहुँचाने में रुचि दिखाई है।

भारतीय सिक्कों का इतिहास शीर्षक पुस्तिका को ग्वालियर चैप्टर के संयोजक द्वारा पुनर्मुद्रित किया गया है। यह पुस्तिका पहले शिवपुरी अध्याय द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसमें सिक्कों का इतिहास, उनका उपयोग और सिक्के बनाने की प्रक्रिया को सरल रूप में बताया गया है।

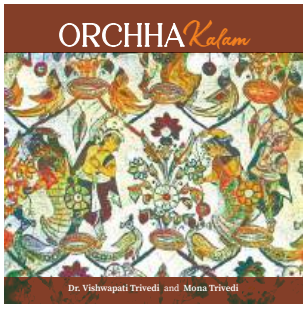

विविध गतिविधियां

- इन्टैक के प्रकाशन राष्ट्रीय पुस्तकालय को भेजे गए, ताकि वे कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और दिल्ली स्थित उनकी लाइब्रेरी में रखे जा सकें। इनमें इन्टैक जर्नल ऑफ हेरिटेज स्टडीज़ – हेरिटेज एंड कम्युनिटीज़ (खंड 6, अंक 1), 2025 और हिमाचल प्रदेश के भित्ति चित्र स्थल (केवल 1 प्रति) शामिल हैं, जो कोलकाता लाइब्रेरी के लिए भेजी गई है।
- राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन, कोलकाता के लिए चयन प्रक्रिया के तहत विभाग द्वारा फाउंडेशन की केंद्रीय पुस्तक चयन समिति को इन्टैक के निम्न प्रकाशनों की दो नमूना प्रतियां भेजी गईं: कंजरविंग द स्पिरिट ऑफ ए हिस्टोरिक गार्डन और बुद्धिस्ट सर्चेस इन झारखंड।
- 4 से 9 अगस्त 2025 तक मुंबई में आयोजित इन्टैक प्रदर्शनी के लिए विरासत पर्यटन और प्रकाशन गतिविधियों को प्रदर्शित करते हुए दो आकर्षक पैनल तैयार किए गए और इन्हें ग्रेटर मुंबई अध्याय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया।

- अध्याय प्रभाग की गतिविधियों पर आधारित एक ब्रोशर तैयार किया जा रहा है, जिसमें विशेष परियोजनाओं की रंगीन तस्वीरें शामिल हैं। इसमें इन्टैक की आचार संहिता, अध्यायों का गठन, अध्यायों की भूमिका एवं गतिविधियाँ, सदस्यता, परिचय और क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ, संयोजकों के सम्मेलन एवं बैठकें, अध्यायों द्वारा किए गए प्रमुख प्रोजेक्ट, समाचार-पत्र और अध्यायों के प्रकाशन शामिल हैं।

विभाग ने निम्नलिखित पुस्तक(कों) के लिए इन्टैक प्रकाशनों के डिजिटल आईएसबीएन जारी किए हैं:

पुस्तक का नाम	आईएसबीएन	लेखक/संपादक	प्रकाशन माह
पंद्रहवां पुपुल जयकर मेमोरियल लेक्चर - लॉर्ड्स ऑफ़ अर्थ एंड सी: ए हिस्ट्री ऑफ़ द चोल एम्पायर	978-81-987776-6-9	अनिरुद्ध कानिसेट्टी	अक्तूबर 2025

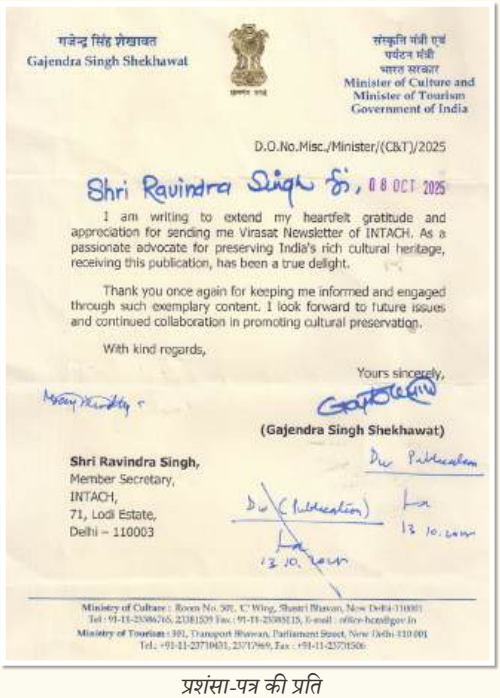

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

संस्कृति मंत्री एवं
पर्यटन मंत्री
भारत सरकार
Minister of Culture and
Minister of Tourism
Government of India

D.O.No.Misc./Minister/(C&T)/2025

Shri Ravindra Singh ji, 08 OCT 2025

I am writing to extend my heartfelt gratitude and appreciation for sending me Virasat Newsletter of INTACH. As a passionate advocate for preserving India's rich cultural heritage, receiving this publication, has been a true delight.

Thank you once again for keeping me informed and engaged through such exemplary content. I look forward to future issues and continued collaboration in promoting cultural preservation.

With kind regards,

Yours sincerely,

(Gajendra Singh Shekhawat)

Shri Ravindra Singh,
Member Secretary,
INTACH,
71, Lodi Estate,
Delhi – 110003

प्रशंसा-पत्र की प्रति

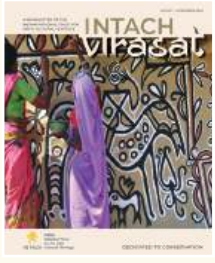

इन्टैक विरासत समाचार-पत्रिका

प्रभाग विरासत नामक त्रैवार्षिक समाचार-पत्रिका प्रकाशित करता है, जिसमें सभी विभागों और अध्यायों की गतिविधियों को रंगीन तस्वीरों के साथ प्रदर्शित किया जाता है। इसमें विभागों/ अध्यायों के लेख, पुस्तक समीक्षा, विरासत की जानकारी और महत्वपूर्ण विरासत कॉलम शामिल होते हैं।

इन्टैक को देश भर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री, भारत सरकार, द्वारा समाचार-पत्रिका के लिए प्रशंसा-पत्र मिला है।

इन्टैक ज्ञान केंद्र (आईकेसी)

पुस्तक संग्रह में नए संकलन

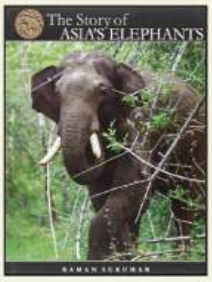

स्टोरी ऑफ एशियाज एलिफेंट्स

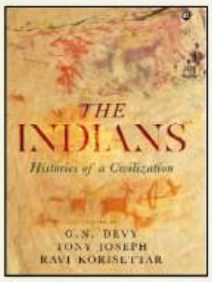

इंडियन्स: हिस्ट्रीज ऑफ ए सिविलाइजेशन

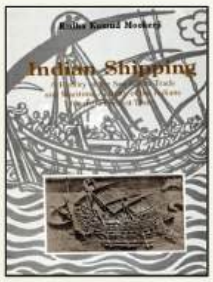

इंडियन शिपिंग

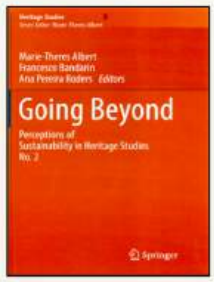

गोइंग बियोंड

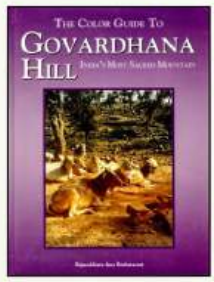

गोवर्धन हिल

होर्स एंड एलिफेंट आर्मर

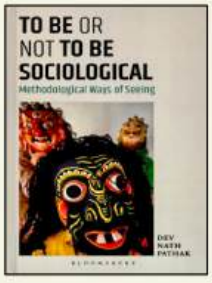

टू बी ऑर नोट टू बी सोशियोलोजिकल

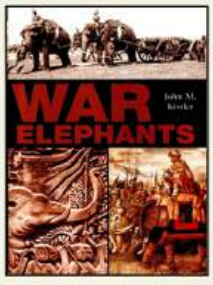

वॉर एलिफेंट्स

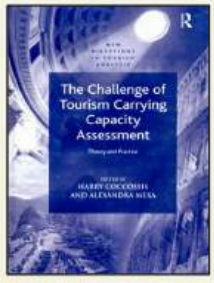

चैलेंज ऑफ टूरिज्म कैरिंग कैपेसिटी एसेसमेंट

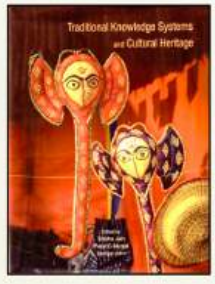

ट्रेडिशनल नॉलेज सिस्टम्स एंड कलचरल हेरिटेज

इंटरप्रेटिंग हेरिटेज

मेटामॉडल फॉर हेरिटेज बेस्ड अर्बन डेवलेपमेंट

स्टेट ऑफ इंडियाज एनवायरनमेंट 2025

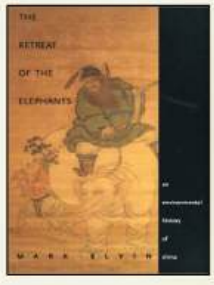

रेट्रीट ऑफ द एलिफेंट्स

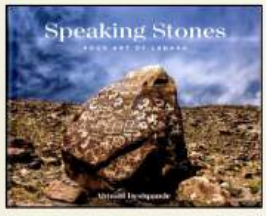

स्पीकिंग स्टोन्स

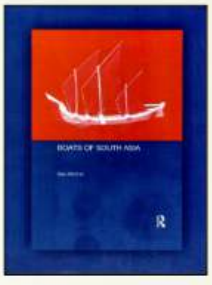

बोट्स ऑफ साउथ एशिया

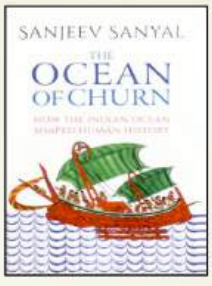

ओशन ऑफ चर्न

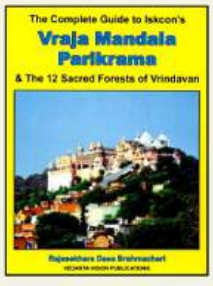

कंपलीट गॉइड टू इस्कॉन्स व्रज मंडला परिक्रमा एंड द ट्वेल्व सैक्रेड फोरेस्ट्स ऑफ वृंदावन

आर्किटेक्चर इन महाराष्ट्र: ट्रेडिशन एंड जर्नी

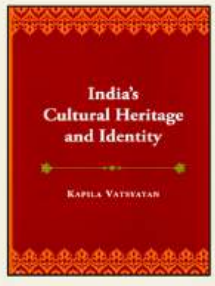

इंडियाज कल्चरल हेरिटेज एंड अदर एस्सेज

केंद्रीय कार्यालय

से विशेष

नई दिल्ली स्थित केंद्रीय कार्यालय विचारों, दृष्टिकोणों और परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य करता है। यह इन्टैक की संरक्षण गतिविधियों के बारे में जानने में रुचि रखने वाले अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को प्राथमिक जानकारी देने का भी कार्य करता है।

इन्टैक की कार्यकारिणी समिति की 62वीं बैठक 4 सितंबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष ने पूर्व शासी परिषद सदस्य, श्रीमती तारा मुरली के निधन की दुखद सूचना दी, जिनका 26 जुलाई 2025 को निधन हो गया था। सभी उपस्थित सदस्यों ने उनकी स्मृति में दो मिनट का मौन रखा।

विशेष कोर्पस फंड से मिलने वाली ब्याज राशि से चल रही कंपनी की भौतिक और वित्तीय प्रगति की समीक्षा के लिए **निगरानी समिति की बैठक** 23 जुलाई 2025 को इन्टैक मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

परियोजना चयन समिति की विशेष बैठक 22 सितंबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

इन्टैक की कार्यकारिणी समिति की 63वीं बैठक 18 नवंबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय, नई दिल्ली में हुई।

इन्टैक की शासी परिषद की अगली बैठक 4 दिसंबर 2025 को इन्टैक मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित होनी निश्चित हुई है।

जमीनी स्तर पर

पिछले कुछ वर्षों में, इन्टैक ने एक जन आंदोलन का रूप ले लिया है, जिसमें भारत की विरासत के संरक्षण के लिए आम लोगों को जोड़ा गया है। क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर इन्टैक की गतिविधियों को चलाने के लिए अध्यायों का एक व्यापक नेटवर्क बनाया गया है। पूरे देश में फैला यह नेटवर्क स्वयंसेवी प्रयासों पर आधारित है। इसका संचालन संयोजकों और सह-संयोजकों द्वारा केंद्रीय कार्यालय के मार्गदर्शन और सहयोग से किया जाता है।

अध्याय प्रभाग

आंध्र प्रदेश

गुंटूर

अध्याय ने हेरिटेज क्विज़ का सफल आयोजन किया, जिसमें स्कूल निदेशकों, प्रचार्यों, शिक्षकों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चौदह स्कूलों की अट्ठाईस टीमों ने लिखित राउंड में हिस्सा लिया, जिनमें से सात टीमें फाइनल राउंड के लिए चयनित हुईं। सेंट लॉरेल्स पब्लिक स्कूल के स्क. जावेद अब्रार और स्क. नवीद विजेता बने और राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में शहर का प्रतिनिधित्व करेंगे, जबकि डॉ. केएलपी पब्लिक स्कूल की चौधरी लहरी और के. रोहिता उपविजेता घोषित किए गए। अध्याय ने श्री पी. रामचंद्र राजू, सचिव, भारतीय विद्या भवन, और सदस्यों डॉ. ए. राजशेखर, ए. वेणुगोपाल और एस. विजयकुमार के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

श्रीकाकुलम

4 नवंबर को विशाखापत्तनम डीआरएम कार्यालय में हुई बैठक में नागरिक उड्डयन मंत्री श्री के. राममोहन नायडू ने इन्टैक द्वारा प्रस्तावित हेरिटेज कार्य सहित दूसी रेलवे स्टेशन के विकास का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। महाप्रबंधक ने पुष्टि की कि इन्टैक सदस्यों के साथ चर्चा के बाद दिसंबर में कार्य शुरू होगा। इसके बाद उन्होंने स्टेशन का दौरा कर डीआरएम को गांधी स्मृतिवनम का विकास तुरंत शुरू करने का निर्देश दिया। इस पहल से हेरिटेज परियोजना में तेजी आई है और इन्टैक के वरिष्ठ सदस्य पोन्नड़ा रविकुमार इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं।

कोंडमकोठा महोत्सव – श्रीकाकुलम अध्याय

एआरटीएस टीम ने टी.के. जामू गाँव में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया, जो बच्चों की शिक्षा को संस्कृति और पारंपरिक पहचान के माध्यम से मजबूत करने की पहल का हिस्सा था। कार्यक्रम के दौरान बच्चों और बुज़ुर्गों ने कोंडम कोठा त्योहार मनाया, जो पोडू धान की फसल के समय होता है। यह त्योहार बच्चों को उनके कृषि विरासत और टिकाऊ खेती की परंपराओं से जोड़ने का अवसर देता है। इस अवसर पर पीढ़ियों के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ, पोडू खेती के महत्व को समझाया गया और बच्चों में सांस्कृतिक गर्व और पहचान को बढ़ावा मिला, ताकि स्थानीय प्रथाएँ जीवंत बनी रहें।

एआरटीएस टीम ने जीवा प्रोजेक्ट के तहत नाबार्ड के सहयोग से आईएफएडी और मलावी से आए अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल के महत्वपूर्ण दौरे की व्यवस्था की। प्रतिनिधिमंडल ने बीज महोत्सव में हिस्सा लिया, जहाँ स्थानीय खेती की परंपराएँ दिखाई गईं और फसल उत्सव तथा बीज संरक्षण की पारंपरिक विधियाँ प्रस्तुत की गईं। बाजरा और स्थानीय बीजों को फूल जैसी गोल आकृति में सजाकर समुदाय और प्रकृति के गहरे संबंध को दर्शाया गया।

एआरटीएस टीम ने श्रीकाकुलम जिले में बच्चों के लिए राष्ट्रीय विरासत और संस्कृति क्विज़ कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम ने छात्रों को क्षेत्र के इतिहास, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी दी और उनके बीच सांस्कृतिक जागरूकता और रुचि बढ़ाई। क्विज़ ने बच्चों को स्मारकों, कला और इतिहास के बारे में गहराई से सीखने के लिए प्रेरित किया। इससे उनकी सांस्कृतिक पहचान मजबूत हुई और स्थानीय व राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण को बढ़ावा मिला।

जिल्लेदुपाडु आदिवासी गाँव में जेसीआई, रोटरी और श्रीकाकुलम के डॉक्टर परिवारों के सहयोग से एक व्यापक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में आवश्यक स्वास्थ्य जांच की सुविधा प्रदान की गई, जिससे समुदाय को तत्काल स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध हुई। बातचीत के दौरान, गाँव के लोगों ने पर्यटकों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और स्थानीय प्रथाओं से परिचित कराने के लिए मेज़बान और गाइड बनने में रुचि दिखाई। इस पहल ने स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ आदिवासी संस्कृति को बनाए रखने और नए

दुसी रेलवे स्टेशन पर विरासत का संरक्षण – श्रीकाकुलम अध्याय

पर्यटन संवर्धन और स्वास्थ्य जांच शिविर – श्रीकाकुलम अध्याय

आजीविका अवसर पैदा करने वाले स्थायी पर्यटन मॉडल की शुरुआत की।

विजयवाड़ा

अध्याय ने 12 अक्तूबर को विजयवाड़ा में अपने नए अध्याय के गठन के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। इस अवसर पर विरासत प्रेमी, गणमान्य व्यक्ति और इन्टैक सदस्य एकत्रित हुए और आंध्र प्रदेश में संगठन की बढ़ती उपस्थिति का जश्न मनाया।

दिन की शुरुआत 'गुफाओं और नहरों के शहर' में फैमिली हेरिटेज अभियान से हुई, जहाँ सदस्य, गणमान्य व्यक्ति और आम नागरिक अपने परिवारों के साथ ऐतिहासिक स्थलों का दौरा करने निकले। रैली का उद्घाटन श्री जी. लक्ष्मीशा, आईएएस, कलेक्टर और विजयवाड़ा जिला मजिस्ट्रेट ने किया और इसे श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस कार्यक्रम में लगभग 125 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिसमें प्रमुख संस्थानों के छात्र स्वयंसेवक भी शामिल थे।

विजयवाड़ा क्लब में स्थापना समारोह की शुरुआत नए अध्याय की सह-संयोजक सुश्री प्रसूना बालंत्रापु के स्वागत भाषण से हुई। मुख्य अतिथियों में श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक; ग्रुप कैप्टन (सेवानिवृत्त) अरविंद शुक्ला, निदेशक, अध्याय प्रभाग, इन्टैक; श्री के. चिनप्पा रेड्डी, सदस्य, शासी परिषद, इन्टैक; श्री रामु कुमार, संयोजक, अनंतपुर अध्याय; श्री वेदकुमार मणिकोंडा, इन्टैक हैदराबाद; और श्री एस.वी.एस. लक्ष्मी नारायण, राज्य संयोजक, आंध्र प्रदेश शामिल थे।

अपने भाषण में श्री अशोक सिंह ठाकुर ने विजयवाड़ा की सांस्कृतिक और वास्तुशिल्प विरासत को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित किया और श्री एस.वी. एस. लक्ष्मी नारायण को आंध्र प्रदेश के राज्य संयोजक के रूप में नियुक्त किया। ग्रुप कैप्टन (सेवानिवृत्त) अरविंद शुक्ला ने विजयवाड़ा में इन्टैक के 240वें अध्याय के गठन की घोषणा की और श्री साई पपिनेनी को संयोजक तथा सुश्री प्रसूना बालंत्रापु को सह-संयोजक के रूप में नियुक्त किया।

नए अध्याय ने विरासत स्थलों का दस्तावेज बनाने, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने और स्थानीय अधिकारियों के साथ संरक्षण परियोजनाओं पर काम करने की योजनाएँ प्रस्तुत कीं। सुश्री उमा

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर (ऊपर बीच में) द्वारा विजयवाड़ा अध्याय का उद्घाटन और रैली को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए

अदुसुमिली, निदेशक, रणनीति, एपीसीआरडीए ने वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया, जबकि श्री सतीश चागंती ने आने वाली पहलों के लिए समर्थन का वचन दिया। नया अध्याय सहयोगात्मक और समुदाय-आधारित प्रयासों के माध्यम से शहर में विरासत संरक्षण को मजबूत करने का लक्ष्य रखता है।

असम

6 और 7 अगस्त को यूनिवर्सिटी म्यूजियम और इतिहास विभाग ने डाक विभाग (डाक टिकट संग्रह अनुभाग, गुवाहाटी) और इन्टैक असम अध्याय के सहयोग से दो दिवसीय डाक टिकट संग्रह प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्देश्य डाक टिकटों और कहानियों के माध्यम से डाक-टिकट संग्रह के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को प्रदर्शित करना था। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय उपकुलपति, प्रो. आलोक कुमार बुरागोहैन ने किया, और स्वागत भाषण संग्रहालय प्रभारी, सुश्री संहति अधिकारी ने दिया। प्रदर्शनी में 15 फ्रेम, लगभग 1,595 डाक-टिकटें और 122 दुर्लभ कवर प्रदर्शित किए गए। प्रसिद्ध डाक-टिकट संग्रह विद्वान श्री बिनोद जैन, श्री विशाल संगेनरिया और सुश्री तपासी बर्मन ने अपने संग्रह को प्रदर्शित किया, जिससे डाक विरासत और कला को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया।

डाक-टिकट संग्रह पर एक विशेष व्याख्यान स्वपननील बरुआ, आईएएस (सेवानिवृत्त) और प्रो. सुरजीत मुखोपाध्याय, डीन, रॉयल स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज द्वारा दिया गया। प्रदर्शनी ने डाक-टिकट संग्रह के शैक्षिक और सांस्कृतिक महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

द असम रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में डाक-टिकट संग्रह प्रदर्शनी – असम अध्याय

महाबोधि मंदिर की हेरिटेज वॉक – गया अध्याय

हेरिटेज क्विज़ – गया अध्याय

बिहार

गया

अध्याय ने आईआईएम बोधगया के सहयोग से 31 अगस्त को नए एकीकृत प्रबंधन कार्यक्रम के बैच के लिए परिचय कार्यक्रम के भाग के रूप में महाबोधि मंदिर तक हेरिटेज वॉक आयोजित की। छात्रों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया और बोधगया की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में जाना।

अध्याय ने डीएवी स्कूल कैंटोनमेंट क्षेत्र के सहयोग से 7 अक्तूबर को डीएवी कैंटोनमेंट स्कूल में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ का सिटी लेवल पर आयोजन किया। इसमें कई स्कूलों ने उत्साह से भाग लिया। डीएवी कैंटोनमेंट की टीम, श्री निरज कुमार भारती और श्री सुरज कुमार के नेतृत्व में, विजेता रही।

नवादा

28 जुलाई को टाटेश्वर नाथ मंदिर में "विरासत बचाओ – पर्यावरण बचाओ" कार्यक्रम के तहत एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गई, जिसे अध्याय और वारिसलीगंज ब्लॉक यूनिट ऑफ नेशनल सीनियर सिटिजन्स एसोसिएशन ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। मुख्य अतिथि प्रोफेसर बच्चन कुमार पांडे ने इन्टैक के विरासत संरक्षण कार्य पर प्रकाश डाला और बताया कि नवादा जिले के विरासत स्थलों का दस्तावेज बनाया जाएगा तथा कैथी लिपि प्रशिक्षण का दायरा नालंदा तक बढ़ाया जाएगा।

अध्याय द्वारा आयोजित हेरिटेज क्विज़ 2025 में छात्रों ने उत्साह से भाग लिया। लिखित और मौखिक राउंड

के बाद कन्हाई इंटर स्कूल के करण राज और ऋषभ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पटना

इन्टैक ने छठ पूजा को यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए, भारतीय फोटोग्राफी महोत्सव के सहयोग से इन्टैक नेशनल सैलून 2024 का आयोजन किया। प्रतियोगिता में चार योजनाएं थीं — ओपन कलर, ओपन मोनोक्रोम, वर्ल्ड इन फोकस और फोटो जर्नलिज्म। देश भर के फोटोग्राफरों ने इसमें भाग लिया और प्रत्येक श्रेणी के विजेताओं को पदक प्रदान किए गए।

पटना कलम स्टाइल प्रशिक्षण कार्यक्रम 5.0 का आयोजन 8 से 15 जून तक अर्चना कला केंद्र में हुआ। इसमें 32 कलाकारों को पारंपरिक पटना कलम तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया। रूपेश कुमार ने प्रशिक्षक के रूप में काम किया, और शिक्षा, पर्यटन और कला से जुड़े विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को मार्गदर्शन दिया।

'अंगरह' क्ले आर्ट प्रदर्शनी और कार्यशाला 13 से 19 जुलाई तक इन्टैक पटना अध्याय, बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम और आपकी विरासत के सहयोग से आयोजित की गई। इसमें 52 महिला कलाकारों को पारंपरिक मिट्टी के शिल्प का प्रशिक्षण दिया गया। कलाकार अलका दास के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने विभिन्न पारंपरिक मिट्टी की वस्तुएं बनाईं और उनके सांस्कृतिक और पुरातात्विक महत्व पर जोर दिया। संग्रहालय, रंगमंच और पुरातत्व क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों ने मिट्टी के इतिहास पर जानकारी दी। कार्यशाला का समापन एक प्रदर्शनी के साथ हुआ, जो एक सप्ताह तक जनता के लिए खुली रही।

वास्तुकला और योजना विभाग, एनआईटी पटना द्वारा इन्टैक पटना अध्याय के सहयोग से फोटोग्रामाउंट प्रशिक्षण कार्यक्रम 18 से 24 जुलाई तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन आईएएस अधिकारी रचना पाटिल ने किया। डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी ने उद्घाटन समारोह को संबोधित किया, और समापन सत्र में इन्टैक प्रतिनिधि भैरव लाल दास मुख्य अतिथि रहे।

26 जुलाई को, बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम में अध्याय की प्रारंभिक बैठक हुई, जिसमें आय-व्यय विवरण, लेखा-परीक्षा रिपोर्ट, वार्षिक रिपोर्ट और भावी योजनाओं की समीक्षा की गई। प्रो. आनंद मोहन शरण द्वारा लिखित पुस्तक पटना का इतिहास का विमोचन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. निगम प्रकाश नारायण ने पाटलिपुत्र के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए उसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यापार और शासन का एक वैश्विक केंद्र बताया।

कैथी लिपि कार्यशाला 12 से 14 अगस्त तक विद्यापति भवन, पटना में आयोजित की गई। इसे मैथिली साहित्य संस्थान, अनरियल टेक, और काउंसिल फॉर डाइवर्सिटी एंड रिवर ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। इन्टैक पटना अध्याय के संयोजक भैरव लाल दास और सह-संयोजक डॉ. शिवकुमार मिश्रा ने इस लुप्त होती लिपि का प्रशिक्षण दिया।

सिटी-लेवल हेरिटेज क्विज़ 23 अगस्त को बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम में आयोजित हुआ। पटना, रोहतास, भोजपुर और सारण जिलों के विद्यालयों ने इसमें भाग लिया। डीपीएस पटना की टीम, खनक वर्मा और रियांश, प्रथम स्थान पर रही। कार्यक्रम का आयोजन इन्टैक पटना अध्याय, बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम और आपकी विरासत ने किया। पटना कलम कार्यशाला 6.0 का समापन 14 सितंबर को एक समापन समारोह के साथ हुआ। इसमें आईएफएस श्रीमती स्वधा रिजवी, क्षेत्रीय अधिकारी, आईसीसीआर, बिहार-झारखंड ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाई गई चित्रकलाओं की प्रदर्शनी एक सप्ताह तक आयोजित रही। प्रशिक्षक श्री जितेन्द्र मोहन और प्रो. दिनेश कुमार का सम्मान किया गया। आयोजकों ने युवा पटना कलम कलाकारों के लिए शरीर रचना के अध्ययन के महत्व पर जोर दिया।

इन्टैक पटना अध्याय ने पटना शहर के बाहरी हिस्से में ऐतिहासिक बावड़ी का दो विरासत सर्वेक्षण किए। डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी, डॉ. शिवकुमार मिश्रा और प्रो. कामिनी सिन्हा के मार्गदर्शन विभिन्न प्रखंडों में संरचनाओं की खराब होती स्थिति का आकलन किया गया। इसके आधार पर इन्टैक केंद्रीय कार्यालय को मरम्मत के लिए अपील भेजी गई है।

28 सितंबर को छठ पूजा को आधिकारिक रूप से यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में दर्ज किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने *मन की बात* में इसकी घोषणा की। इस मान्यता में इन्टैक पटना अध्याय द्वारा 2024 में शुरू किए गए अभियानों को भी सम्मान मिला।

इन्टैक नेशनल सैलून 2025 छठ पूजा फोटोग्राफी पर केंद्रित था और इसे इन्टैक पटना अध्याय और भारतीय फोटोग्राफी महोत्सव ने मिलकर आयोजित किया। 11 अक्तूबर को बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम में *छठ पूजा के रीति-रिवाजों और परंपराओं* पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। इसमें नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के रॉब लिनरोथे ने मुख्य भाषण दिया। डॉ. शिवकुमार मिश्रा और डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी ने छठ पूजा और बिहार में सूर्य पूजा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व पर चर्चा की। पूरे भारत के 22 स्वयंसेवकों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

राज्य स्तरीय हेरिटेज क्विज़ 12 अक्तूबर को बुद्ध स्मृति पार्क म्यूजियम में आयोजित हुई। इसमें पटना, गया, नवादा, भागलपुर और पूर्णिया के सिटी-लेवल विजेता टीमों ने भाग लिया। पूर्णिया के विद्या विहार रेजिडेंशियल स्कूल के सबल कुमार और दर्शन ने प्रथम स्थान और पटना के सेंट कैरन स्कूल के अर्नव प्रकाश और जयेश राणा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

पूर्णिया

अध्याय ने 30 अगस्त को रविवंश नारायण मिश्रा मेमोरियल ऑडिटोरियम, विद्या विहार आवासीय विद्यालय, परोरा में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का सिटी-लेवल राउंड आयोजित किया। स्कूल स्तर के शुरुआती राउंड में लगभग 1,300 छात्रों ने भाग लिया। 18 विद्यालयों की 126 टीमों ने सिटी-लेवल राउंड के लिए मुकाबला किया। उद्घाटन में श्री राज कुमार गुप्ता, एडीएम एडीएम (कानून एवं व्यवस्था), पूर्णिया ने दीप प्रज्ज्वलन किया और डॉ. रमन कुमार सोनी, अतिरिक्त सह-संयोजक, इन्टैक पूर्णिया अध्याय ने संबोधन दिया। राष्ट्रीय स्तर के क्विज़ मास्टर श्री समीरन मंडल द्वारा आयोजित क्विज़ में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय विरासत पर लिखित राउंड हुआ, जिसमें से शीर्ष छह टीमें स्टेज राउंड के लिए चुनी गईं। विद्या विहार रेजिडेंशियल स्कूल की टीम, सबल कुमार और दर्शन, विजेता बनी। क्विज़ ने छात्रों में विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाई, उन्हें सीखने का समृद्ध अनुभव दिया और अपने उत्कृष्ट संचालन के कारण इसे व्यापक मीडिया कवरेज भी मिला।

विद्या विहार रेज़िडेंशियल स्कूल की टीम, सबल कुमार और दर्शील, ने बुद्ध स्मृति पार्क म्यूज़ियम, पटना में आयोजित इंटैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 के बिहार स्टेट राउंड में जीत हासिल की। यह

इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का सिटी लेवल राउंड – पूर्णिया अध्याय

जीत उनके लगातार अच्छे प्रदर्शन का परिणाम है। उन्होंने 2022 में स्टेट राउंड जीता था और 2023 व 2024 में उपविजेता रहे थे।

स्टेट लेवल क्विज़ में पूर्णिया, पटना, गया, भागलपुर और नवादा के नौ टीमों ने भाग लिया। क्विज़ मास्टर श्री अतुल प्रियदर्शी थे। दूसरा स्थान सेंट कैरन स्कूल, पटना के अर्नव प्रकाश और जयेश राणा को मिला।

स्कूल के निदेशक रंजीत कुमार पॉल और प्रधानाचार्य निखिल रंजन ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम छात्रों में भारत की विरासत के प्रति समझ और सम्मान बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। कार्यक्रम में भैरव लाल दास, डॉ. शिवकुमार मिश्रा, डॉ. रमन, बच्चन कुमार पांडे सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़

इन्टैक छत्तीसगढ़ के गौरेला–पेंड्रा–मरवाही (जीपीएम) अध्याय ने 23 अगस्त को एसएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सराभरा, पेंड्रा रोड में इन्टैक राष्ट्रीय विरासत क्विज़ प्रतियोगिता 2025 का सिटी राउंड आयोजित किया। इसमें 11 सरकारी और निजी स्कूलों के कुल 130 छात्रों (65 टीमों) ने भाग लिया और विरासत व संस्कृति के प्रति उत्साह और अच्छा ज्ञान दिखाया। इसमें 11 सरकारी और निजी स्कूलों के 130 छात्रों (65 टीमों) ने भाग लिया और विरासत व संस्कृति के प्रति उत्साह और ज्ञान दिखाया।

प्रतियोगिता में पहले लिखित राउंड और फिर शीर्ष चार टीमों के लिए मौखिक बज़र राउंड आयोजित किया गया। स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल, सेमरा के कौस्तुभ शुक्ला (कक्षा 9) और खुशनुमा (कक्षा 7) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मुख्य अतिथि श्री अरविंद मिश्रा, संयोजक, इन्टैक छत्तीसगढ़ राज्य; अध्यक्षता कर रहे डॉ. अतिथि राकेश कुमार तिवारी, संयोजक, इन्टैक रायपुर अध्याय; तथा विशेष अतिथि श्री विकास त्यागी, सुश्री वेंडी विलियम्स, श्री शरद अग्रवाल, श्री पार्थो चट्टोपाध्याय, सुश्री गायत्री भोसले और सुश्री कल्याणी दुबे सहित इन्टैक सदस्य डॉ. इमरान सिद्दीकी और श्री अंसार जुंजानी ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और विरासत के प्रति जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डाला।

विजेता टीम अब इन्टैक राष्ट्रीय विरासत क्विज़ प्रतियोगिता 2025 के छत्तीसगढ़ राज्य राउंड में जीपीएम अध्याय का प्रतिनिधित्व करेगी। कार्यक्रम का सफल समन्वय श्री शाहिद जमा खान, संयोजक, जीपीएम अध्याय और श्री नवीन जेम्स, सह-संयोजक, जीपीएम अध्याय द्वारा किया गया।

इन्टैक छत्तीसगढ़ अध्याय ने 12 अक्तूबर को आनंद समाज लाइब्रेरी, गांधी सदन, रायपुर में राज्य स्तरीय राष्ट्रीय विरासत क्विज़ का आयोजन किया। इसमें राज्य के आठ अध्यायों से छात्र और शिक्षक शामिल हुए।

पूर्व कुलपति डॉ. शिव कुमार पांडे मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृति राज्य मंत्री श्री शशांक शर्मा ने की, जिन्होंने राज्य की विरासत पर सारगर्भित विचार रखे। श्री अरविंद मिश्रा, राज्य संयोजक और डॉ. राकेश तिवारी, रायपुर संयोजक ने इन्टैक की पहलों और गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

महासमुंद अध्याय ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्टेट लेवल पर विजेता बनने का गौरव हासिल किया। कार्यक्रम में इन्टैक सदस्य, गणमान्य अतिथि और बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित रहे।

दुर्ग–भिलाई

इंडियन कल्चरल फंड, दुर्ग–भिलाई अध्याय ने 30 अगस्त को नेशनल हेरिटेज क्विज़ का सिटी राउंड आयोजित किया, जिसमें 10 स्कूलों के 98 छात्रों ने भाग लिया। अध्याय संयोजक डॉ. हंसा शुक्ला ने बताया कि इस क्विज़ का उद्देश्य बच्चों में विरासत के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उसके संरक्षण के लिए प्रेरित करना था। प्रतियोगिता में पहले लिखित राउंड और फिर शीर्ष चार टीमों के लिए मौखिक क्विज़ आयोजित की गई। मुख्य अतिथि डॉ. रजनी नेल्सन, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी ने दुर्ग की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक आभूषणों और सांस्कृतिक परंपराओं पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् प्रो. डॉ.डी. एन. शर्मा ने की, जिन्होंने पृथ्वी को प्राकृतिक विरासत मानने, लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों और त्योहारों के महत्व पर जोर दिया।

डीपीएस रिसाली, भिलाई की विजेता टीम में निनाशी पांडा और सचित साहू शामिल थे।

इन्टैक हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता का सिटी लेवल राउंड – दुर्ग–भिलाई अध्याय

इन्टैक हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता के सिटी लेवल राउंड के प्रतिभागी – दुर्ग–भिलाई अध्याय

गौरेला–पेंड्रा–मरवाही (जीपीएम)

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की 85वीं पुण्यतिथि पर भारत के राष्ट्रगान जन गण मन के रचयिता कवि और साहित्यकार को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। टैगोर 1901–02 में अपनी पत्नी मृणालिनी देवी के इलाज के लिए पेंड्रा सैनिटोरियम आए थे, जहाँ उनका निधन हो गया। टैगोर ने यहीं उनका अंतिम संस्कार किया, जिससे इस क्षेत्र से उनका गहरा संबंध जुड़ा। यह स्थान अब रवींद्र पार्क के नाम से जाना जाता है। बिलासपुर रेलवे स्टेशन पर उनकी यात्रा की स्मृति में एक पट्टिका लगी है और 2023 में टैगोर की प्रतिमा भी स्थापित की गई। सुझाव दिया गया है कि रवींद्र कॉम्प्लेक्स में स्थित मदर एंड चाइल्ड हॉस्पिटल को मृणालिनी देवी टैगोर के नाम पर राज्य चिकित्सा महाविद्यालय के रूप में विकसित किया जाए, ताकि टैगोर और उनकी पत्नी दोनों को स्थायी श्रद्धांजलि दी जा सके।

23 अगस्त को इन्टैक के जीपीएम अध्याय ने कक्षा 7 से 10 तक के छात्रों के लिए एक हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें 11 हिंदी और अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों के 120 छात्रों ने भाग लिया। आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल, सेमरा–गौरेला के

प्राचीन कलाकृतियाँ – गौरेला पेंड्रा मरवाही अध्याय

छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिन्हें सुश्री कल्याणी दुबे का मार्गदर्शन मिला।

पेंड्रा क्षेत्र का धनपुर ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह कभी जैन व्यापार का प्रमुख केंद्र था और ऐसी मान्यता है कि वनवास के दौरान पांडव यहाँ रुके थे। यहाँ देवी आदिशक्ति दुर्गा का प्राचीन मंदिर और बेनी बाई की प्रसिद्ध प्रतिमा सहित कई ऐतिहासिक विरासतें हैं। स्थानीय रूप से शक्तिपीठ

हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए – गौरेला पेंड्रा मरवाही अध्याय

प्राचीन कलाकृतियाँ – गौरेला पेंड्रा मरवाही अध्याय

के रूप में प्रसिद्ध धनपुर एक महत्वपूर्ण धार्मिक और पर्यटन स्थल है, हालांकि यहाँ मिली कुछ कलाकृतियों की उत्पत्ति को लेकर विवाद भी रहा है।

25वीं रजत जयंती के अवसर पर आयोजित चौथे छत्तीसगढ़ राज्य महोत्सव में इन्टैक जीपीएम के छात्रों ने छत्तीसगढ़ी नृत्य प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में संयोजक शाहिद जमा खान, सह-संयोजक नवीन जेम्स, वीरू यादव, गायत्री भोसले, स्वाति तिवारी, गायत्री साहू सहित अन्य अधिकारियों और छात्रों का सहयोग रहा।

गुजरात

भावनगर

अप्रैल 2025 में भावनगर में विश्व विरासत दिवस (18 अप्रैल) के अवसर पर 'आपदा और संघर्ष–रोधी विरासत' विषय पर साइकिल हेरिटेज टूर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भावनगर हेरिटेज और इन्टैक भावनगर ने भावनगर साइकिल क्लब के सहयोग से आयोजित किया। इसमें 60 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। इन्टैक स्वयंसेवकों ने स्मारकों के ऐतिहासिक महत्व और समुदाय आधारित संरक्षण की आवश्यकता पर जानकारी दी। इस साइकिल यात्रा को नीलमबाग पैलेस से युवराज जयवीरराज सिंह गोहिल और कुँवरी साहेब बृजेश्वरी कुमारी गोहिल ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

19–20 अप्रैल को भावनगर हेरिटेज और इन्टैक भावनगर ने क्षितिज आर्ट क्लासेज़ के सहयोग से नीलमबाग पैलेस में दो दिवसीय लिनोकट प्रिंटमेकिंग कार्यशाला आयोजित की। कलाकार अजय चौहान के नेतृत्व में प्रतिभागियों ने स्थानीय विरासत से प्रेरित

प्लाई स्प्लिट बुनाई कार्यशाला – भावनगर अध्याय

हौसले को समर्पित एक सवारी: विश्व विरासत दिवस – भावनगर अध्याय

खेल उत्सव: विरासत खेल – भावनगर अध्याय

'धरोहर: मारी माटीना संगीत नी सुगंध' के साथ विश्व विरासत दिवस समारोह – भावनगर अध्याय

डिज़ाइनों पर नक्काशी और प्रिंटिंग सीखी। इस कार्यशाला ने यह संदेश दिया कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल इमारतों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि रचनात्मकता और साझा कला अनुभव को बढ़ावा देना भी उतना ही जरूरी है।

भावनगर में विश्व विरासत दिवस समारोह का समापन 'धरोहर: मारी माटीना संगीत नी सुगंध' संगीत और विरासत संध्या के साथ हुआ। यह कार्यक्रम इन्टैक भावनगर और भावनगर हेरिटेज द्वारा नीलमबाग पैलेस में आयोजित किया गया। 18 अप्रैल को 2,000 से अधिक दर्शकों ने मूल रचना *'कन कुंवर नु भावेनु'* का लाइव विमोचन और भावनगर में जन्मे अल्गरी बैंड—अथर्व जोशी, वत्सल जोशी और जय ढापा—की सजीव प्रस्तुति का आनंद लिया, जिसमें पारंपरिक संगीत को आधुनिक अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया।

अध्याय ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नीलमबाग पैलेस लॉन में महिलाओं के लिए योग सत्र आयोजित किया। 'योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ' विषय पर 21 जून को हुए इस कार्यक्रम का आयोजन भावनगर हेरिटेज, इन्टैक भावनगर, नीलमबाग पैलेस और वेलनेस साझेदारों के सहयोग से किया गया। प्रमाणित योग प्रशिक्षक और गर्भसंस्कार कोच के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने श्वसन अभ्यास और हल्के योगासन किए। इससे आत्म-देखभाल और वैश्विक स्वास्थ्य के बीच संबंध को समझाया गया।

अध्याय ने बुक लवर्स डे के अवसर पर बार्टन लाइब्रेरी में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें कुमारशाला, श्री नंदकुवरबा, महदी स्कूल, अमरज्योति सरस्वती स्कूल और सिल्वर बेल्स के छात्रों को पढ़ने से मिलने वाली खुशी और आनंद का अनुभव करने के लिए आमंत्रित किया गया। 2 अगस्त को आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को अपनी पसंदीदा किताबें और उनसे जुड़ा अपना अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इससे एक जीवंत साहित्यिक संवाद हुआ और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिला।

2 अगस्त को बुक लवर्स डे के अवसर पर बार्टन लाइब्रेरी में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुमारशाला, श्री नंदकुवरबा, महदी स्कूल, अमरज्योति सरस्वती स्कूल और सिल्वर बेल्स के छात्रों ने भाग लिया। छात्रों ने अपनी पसंदीदा पुस्तकों और उनके महत्व को साझा किया, जिससे पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिला।

3 अगस्त को भावनगर हेरिटेज, इन्टैक भावनगर और क्षितिज फाउंडेशन ने नीलमबाग पैलेस में रक्षाबंधन विषय पर रेज़िन राखी शिल्प कार्यशाला आयोजित की। इन्टैक राष्ट्रीय विरासत और शिक्षा क्विज़ 2025 भी नीलमबाग पैलेस में आयोजित हुई, जिसमें अमरज्योति सरस्वती इंटरनेशनल स्कूल की टीम सिटी विजेता बनी और राज्य स्तर के लिए चयनित हुई। 27–28 सितंबर को नीलमबाग पैलेस में दो दिवसीय प्लाइ-स्प्लिट ब्रेडिंग कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध वस्त्र डिज़ाइनर और एनआईडी के सेवानिवृत्त प्रोफेसर एरोल पायर्स ने किया। कार्यशाला के पहले दिन बच्चों को हाथों से चोटी बुनने की तकनीक सिखाई गई। दूसरे दिन वयस्कों और कारीगरों ने सीखा कि इसे आभूषणों और कपड़ों में कैसे उन्नत तरीके से इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह राजस्थान और गुजरात में ऊँटों की पट्टियों में उपयोग होने वाली इस पारंपरिक कला को फिर से जीवित किया गया।

9 नवंबर को डॉ. इंद्रा गढ़वी, समुद्री जीवविज्ञान के प्रोफेसर और मानद वन्यजीव वार्डन के नेतृत्व में बगुलों के बसेरे को देखने के लिए एक वॉक आयोजित की गई। प्रतिभागियों ने आर्द्रभूमि पक्षियों के घोंसले, मौसमी व्यवहार और पारिस्थितिक महत्व के बारे में जाना। डॉ. गाधवी ने गुजरात के जलीय पक्षियों के बारे में अपना विस्तृत ज्ञान साझा किया और बताया कि क्षेत्र की जैव विविधता किस तरह उसकी सांस्कृतिक और पर्यावरणीय विरासत से जुड़ी है। इससे सभी प्रतिभागियों को सीखने और सोचने का अच्छा अवसर मिला।

हरियाणा

अंबाला

एचईसीएस के अंतर्गत अध्याय ने 23 जुलाई को बी.डी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अंबाला कैंट में राष्ट्रीय विरासत क्विज़ आयोजित की। इसमें 24 स्कूलों के 96 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल राम प्रताप (सेवानिवृत्त) सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। क्विज़ में हिंदी और अंग्रेज़ी में लिखित राउंड के बाद मौखिक राउंड हुआ। आर्मी पब्लिक स्कूल, अंबाला कैंट प्रथम स्थान पर रहा। पुरस्कार वितरित किए गए, सक्रिय हेरिटेज क्लबों को सम्मानित किया गया और "पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी" सत्र आयोजित

नेशनल हेरिटेज क्विज़ के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए – अंबाला अध्याय

नेशनल हेरिटेज क्विज़ का ग्रुप फोटो – अंबाला अध्याय

किया गया। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों के लिए एक यादगार और शिक्षाप्रद अनुभव के साथ हुआ।

अध्याय ने 23 जुलाई को नेशनल हेरिटेज क्विज़ के साथ-साथ अपनी सदस्य बैठक आयोजित की। बैठक में प्रमुख सदस्य और संयोजक कर्नल आर.डी. सिंह उपस्थित थे। बैठक की शुरुआत दिवंगत पूर्व संयोजक ब्रिगेडियर जी.एस. लांबा को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई। इसके बाद अध्याय की उपलब्धियों पर चर्चा की गई, जिसमें लगातार सातवीं बार सर्वश्रेष्ठ अध्याय पुरस्कार और यंग इन्टैक की गतिविधियाँ शामिल रहीं। आगामी कार्यक्रमों जैसे फ़िल्म कार्यशाला और लुप्तप्राय कला पर कार्यशाला पर भी विचार किया गया तथा एक कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। वित्त वर्ष 2024–25 के लेखापरीक्षित विवरण प्रस्तुत किए गए। सदस्यों ने अध्याय के कार्यों की सराहना की और बैठक का समापन इन्टैक के प्रचार-प्रसार तथा नए सदस्यों को जोड़ने के आह्वान के साथ हुआ।

यंग इन्टैक प्रतियोगिता विजेता – अंबाला अध्याय

3 नवंबर को इन्टैक अंबाला अध्याय के संयोजक कर्नल आर. डी. सिंह को अंबाला में थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी द्वारा वेटरन अचीवर्स अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान राष्ट्र निर्माण, सामाजिक सेवा और युवाओं के मार्गदर्शन में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया। उनके नेतृत्व में इन्टैक अंबाला को लगातार सात वर्षों से सर्वश्रेष्ठ अध्याय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वे एक समर्पित मार्गदर्शक और मानवतावादी हैं। वे जरूरतमंद बच्चों की मदद करते हैं, युवाओं में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं और एक नियमित रक्तदाता हैं। अब तक वे 102 बार रक्तदान कर चुके हैं।

अंबाला संयोजक और सेना के पूर्व सैनिक का सेना प्रमुख द्वारा सम्मान – अंबाला अध्याय

राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी – फरीदाबाद अध्याय

क्विज़ प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का ग्रुप फोटो – कांगड़ा अध्याय

कांगड़ा अध्याय के सदस्य जोनल अस्पताल के सीएमओ का सम्मान करते हुए – कांगड़ा अध्याय

फरीदाबाद

यंग इन्टैक ने एक ऑन-द-स्पॉट विरासत चित्रकला प्रतियोगिता के दौरान, सेक्टर 17, फरीदाबाद स्थित वासो स्कूल का नए स्कूल सदस्य के रूप में स्वागत किया। कक्षा 6 से 8 के 30 विद्यार्थियों को बैज और पासपोर्ट देकर यंग इन्टैक सदस्य बनाया गया। श्रेष्ठ पाँच विद्यार्थियों को उनकी चित्रकला के लिए इन्टैक ट्रॉफी दी गई। फरीदाबाद में राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी दो चरणों में आयोजित की गई। पहले चरण में के.एल. मेहता दयानंद महिला कॉलेज में लिखित परीक्षा हुई, जिसमें 15 सीबीएसई स्कूलों की 63 टीमों (126 विद्यार्थी) ने भाग लिया। शीर्ष सात टीमें फाइनल में पहुँचीं। फाइनल राउंड के.एल. मेहता दयानंद स्कूल, सेक्टर 16, फरीदाबाद ने जीता। बाद में इस टीम ने हरियाणा स्टेट लेवल राउंड में दूसरा स्थान प्राप्त किया और मात्र दो अंकों से प्रथम स्थान से चूक गई।

हिमाचल प्रदेश

धर्मशाला

अचीवर्स हब सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दाड़ी, धर्मशाला में कांगड़ा लघु चित्रकला पर एक कला कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें विभिन्न स्थानीय स्कूलों के लगभग 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मास्टर कलाकार श्री मुकेश कुमार और श्री मनु शर्मा ने इस लुप्तप्राय कला पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया, जिससे विद्यार्थियों को इसकी बारीकियों और सांस्कृतिक महत्व को समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंडलीय आयुक्त श्री विनोद कुमार, आईएएस थे। अध्याय संयोजक डॉ. नरेंद्र अवस्थी ने इन्टैक के उद्देश्यों और गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का समापन संवादात्मक सत्र के साथ हुआ।

अध्याय ने छात्रों में भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का आयोजन किया। इसमें छह विद्यालयों के 50 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी जानकारी का प्रदर्शन किया। अचीवर्स हब सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दाड़ी की सुश्री अंगना पठानिया और श्री शौर्य कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और अब वे स्टेट लेवल हेरिटेज क्विज़ में धर्मशाला अध्याय का प्रतिनिधित्व करेंगे।

डॉ. नरेंद्र अवस्थी, संयोजक, इन्टैक धर्मशाला अध्याय ने मुख्य अतिथि सुश्री शिल्पी बेक्टा, एडीएम कांगड़ा को सम्मानित किया। उन्होंने विजेताओं और प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए और विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इन्टैक के प्रयासों की सराहना की।

कांगड़ा

अध्याय ने संगीतांजलि कला केंद्र सोसायटी के सहयोग से रेडियो गुंजन, धर्मशाला में *कला गुरु सम्मान समारोह* और *पुस्तक लोकार्पण समारोह* का आयोजन किया। कार्यक्रम में कांगड़ा के मंडलीय आयुक्त श्री विनोद कुमार मुख्य अतिथि थे, जबकि हिमाचल प्रदेश के पूर्व चुनाव आयुक्त श्री के.सी. शर्मा ने अध्यक्षता की।

26 जुलाई को विजय दिवस के अवसर पर संयोजक श्री एल.एन. अग्रवाल ने धर्मशाला के वॉर मेमोरियल पर कारगिल युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। अध्याय ने 15 अगस्त को *आज़ादी का महोत्सव* के तहत स्वतंत्रता दिवस भी मनाया और सितंबर 2025 में जोनल अस्पताल, धर्मशाला के नए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सम्मानित किया।

अध्याय के सदस्य राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत *स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान* में शामिल हुए। कार्यक्रम में सीएमओ डॉ. विवेक करोल, संयोजक एल.एन. अग्रवाल, तिब्बत सरकार-इन-एग्ज़ाइल के प्रवक्ता श्री तेनज़िन, एमओएच-सह-डीटीओ डॉ. राजेश सूद, पुलिस अधीक्षक विकास भटनागर और सह-संयोजक ऋषि वालिया सहित कई गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन जिला जेल के दौरे और क्रांतिकारी नेता लाला लाजपत राय को श्रद्धांजलि देने के साथ हुआ।

कांगड़ा अध्याय ने कर्मापा मठ में स्वास्थ्य विभाग और जोनल अस्पताल द्वारा आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर में सहयोग दिया। इस अवसर पर राज्य सभा सदस्य सुश्री इंदु गोस्वामी मुख्य अतिथि, विधायक श्री सुधीर शर्मा विशिष्ट अतिथि और संयोजक श्री एल.एन. अग्रवाल विशेष अतिथि थे।

राजा-का-बाग, नूरपुर स्थित मोंटेसरी कैम्ब्रिज स्कूल में राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी 2025 आयोजित की गई, जिसमें नौ स्कूलों के 90 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मेजबान स्कूल की टीम ने सिटी राउंड में प्रथम स्थान प्राप्त किया और वह 10 नवंबर को मंडी में होने वाले स्टेट लेवल राउंड में शहर का प्रतिनिधित्व करेगी।

मंडी

अध्याय ने सरदार पटेल विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विद्यार्थियों के लिए एक हेरिटेज वॉक का आयोजन किया, जिनके साथ एक समझौता-ज्ञापन किया गया है। विद्यार्थियों ने बरसेला क्षेत्र का भ्रमण किया, जहाँ 1650 ई. के आसपास के मंडी राजाओं और सती प्रथा का पालन करने वाली रानियों की स्मृति शिलाएँ स्थित हैं। एएसआई द्वारा संरक्षित इन शिलाओं पर शाही चित्र और स्थानीय टांकरी लिपि में अभिलेख हैं।

पीएच.डी छात्रों द्वारा यूनेस्को स्थल 'कालका–शिमला रेलवे' का अध्ययन दौरा – शिमला अध्याय

शिमला

5 अक्तूबर से दिल्ली स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के शोधार्थियों ने एक सप्ताह तक कालका-शिमला रेलवे के विभिन्न हिस्सों का अध्ययन किया, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। हिमाचल प्रदेश के राज्य सह-संयोजक एवं शिमला अध्याय के संयोजक, जो 2008 में रेलवे के यूनेस्को अभिलेखन के समय टीम के साथ थे, ने विद्यार्थियों से संवाद किया और इस ऐतिहासिक रेलवे की रूपरेखा, इतिहास और महत्व पर अपने अनुभव साझा किए।

जम्मू और कश्मीर

जम्मू

वन महोत्सव के तहत, जम्मू अध्याय, जम्मू विश्वविद्यालय और पंच परिवर्तन एनजीओ ने शहीद भगत सिंह बॉयज हॉस्टल में क्लीन *जम्मू, ग्रीन जम्मू* अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. राजेश शर्मा, वार्डन और असिस्टेंट प्रोफेसर ने किया। मुख्य अतिथि डॉ. एस.पी. वैद, आईपीएस (सेवा-निवृत्त), पूर्व-डीजीपी जम्मू-कश्मीर ने गिंको बिलोबा का पौधा लगाया। अन्य पौधों में सीता अशोक, टेकोमा, पंजारा, चाइनीज रोज़, आम, चिनार, सिल्वर ओक और टेम्पल ट्री शामिल थे। प्रो. ललित सेन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री ओ.पी. शर्मा, आईएफएस (सेवा-निवृत्त), प्रो. अनिल रैना, श्रीमती भारती वैद, आईआईएस (सेवा-निवृत्त), और श्री एस.एम. साहनी (जेकेएएस सेवा-निवृत्त) ने पर्यावरण संरक्षण, वृक्षों के सांस्कृतिक महत्व और वनीकरण पर अपने विचार साझा किए।

मेजर जनरल (सेवा-निवृत्त) जी.एस. जमवाल, एवीएसएम, भारतीय सेना के 97 वर्षीय पूर्व सेनानी

97 वर्षीय वरिष्ठ और भारतीय सेना के अनुभवी जनरल एवं आजीवन सदस्य मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) जी.एस. जमवाल, एवीएसएम को औपचारिक रूप से शामिल करने के लिए आयोजित समारोह – जम्मू अध्याय

प्रसिद्ध जीवित जीवाश्म गिंको बिलोबा की पौध लगाते हुए श्रीमती एवं डॉ. एस.पी. वैद – जम्मू अध्याय

को इन्टैक जम्मू अध्याय का आजीवन सदस्य बनाया गया। यह सम्मान उनके दशकों लंबे विरासत संरक्षण, विशेषकर जम्मू छावनी की सैन्य विरासत में योगदान को मान्यता देने के लिए दिया गया। आजीवन सदस्यता पत्र और पिन श्रीमती रेशम कश्यप और कोर ग्रुप सदस्यों द्वारा प्रदान किया गया। जनरल जमवाल इन्टैक से इसके आरंभ से ही जुड़े हैं और 1990-91 से जम्मू अध्याय में सक्रिय रहे हैं। इसी अवसर पर श्री कृपाल सिंह को उनके जम्मू के रॉयल डोगरा पैलेस कॉम्प्लेक्स, मुबारक मंडी और अन्य विरासत स्थलों में किए गए कार्यों के लिए इन्टैक पिन से सम्मानित किया गया।

इंटरनेशनल दिल्ली पब्लिक स्कूल, घोउ मानहसन ने "आरंभ" नामक अपना इन्टैक हेरिटेज क्लब शुरू किया, जो सांस्कृतिक विरासतके संरक्षण और उत्सव

पौधरोपण अभियान – जम्मू अध्याय

माननीय मुख्यमंत्री के सलाहकार और मुख्य अतिथि, श्री नासिर असलम वानी संबोधन देते हुए – कश्मीर अध्याय

संगोष्ठी में भागीदारी – कश्मीर अध्याय

की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना और छात्रों द्वारा डोगरी गीतों और लोक नृत्यों के सांस्कृतिक प्रदर्शन से हुई। इसके बाद पर्यावरणविद् श्री ओ.पी. विद्यार्थी की देखरेख में पौधारोपण अभियान हुआ, जिसमें छात्रों ने 50 पौधे लगाए और अपनाए, और पर्यावरण संरक्षण का महत्व सीखा।

आरंभ – इन्टैक हेरिटेज क्लब, आईडीपीएस घोउमानहसन के छात्रों ने रक्षाबंधन उत्सव को सुचेतगढ़ अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सैनिकों के साथ मनाया। छात्राओं ने सैनिकों को प्रेम और सुरक्षा के प्रतीक स्वरूप हाथ से बनी राखियाँ बाँधीं, जबकि छात्रों ने उनके साहस और निस्वार्थ सेवा के सम्मान में प्रशंसा स्वरूप स्मृति-चिह्न भेंट किए।

कश्मीर

14 जून को, अध्याय ने अमर सिंह क्लब, श्रीनगर के सहयोग से *परंपरागत वास्तुकला की स्थायी अपील: आधुनिक निर्माण* के लिए सबक विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की। इसमें आर्किटेक्ट्स, संरक्षणकर्मी और शहरी योजनाकार शामिल हुए, ताकि कश्मीरी विरासत से आधुनिक और टिकाऊ डिज़ाइन सीखने के अवसर मिल सकें। कार्यक्रम की शुरुआत श्री एम. सलीम बेग, संयोजक इन्टैक जम्मू व कश्मीर के संबोधन से हुई। इसके बाद मुख्य वक्ता श्री काज़ी क़मर, वास्तुकला प्रमुख, आईयूएसटी ने मुख्य भाषण दिया। अन्य वक्ताओं में श्री इफ्तिखार हाकिम, मुख्य अतिथि श्री नासिर असलम वानी और श्री अहसान पर्देसी शामिल थे, जिन्होंने विरासत संरक्षण के सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और सामुदायिक पहलुओं पर जोर दिया। तकनीकी सत्र में श्रीमती साइमा इक़बाल, श्री मेहरान कुरैशी, श्री उमर फारूक, श्रीमती ज़ोया खान, श्रीमती अस्मा निसार भट तथा डॉ. हाकिम समीयर हम्दानी ने पारंपरिक सामग्री, डिज़ाइन की उपयुक्तता, अनुकूल उपयोग और कश्मीरी सौंदर्यशास्त्र की पुनर्व्याख्या पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उधमपुर (उप-अध्याय – जम्मू)

अध्याय ने जीसीडब्ल्यू उधमपुर, जीडीसी बॉयज उधमपुर और जीडीसी रामनगर के इतिहास विभाग और हेरिटेज क्लब के सहयोग से "सांस्कृतिक संसाधन मानचित्रण" पर 15-दिवसीय समर इंटर्नशिप (एनईपी-2020) का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की शुरुआत वन महोत्सव के तहत पौधरोपण, दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से हुई। मुख्य अतिथि श्री ओ.पी. शर्मा, आईएफएस (सेवा-निवृत्त) और विशिष्ट अतिथि डॉ. सी.एम. सेठ, आईएफएस (सेवा-निवृत्त) ने छात्रों को स्थानीय वनस्पति, जीव-जंतु और विरासत संरक्षण पर मार्गदर्शन दिया। अन्य वक्ताओं में प्रो. सुधीर सिंह, श्री अनिल पाबा, श्री अशोक शर्मा और श्री कृपाल सिंह (आजीवन सदस्य इन्टैक) ने स्थानीय भाषा, निर्मित विरासत, व्यंजन और कला-कौशल के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. पंकज सरस्वत (जीडीसी रामनगर) ने छात्रों को एनईपी-2020 के अंतर्गत इंटर्नशिप ढांचे की जानकारी दी। इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. यश पाल के समन्वय में आयोजित इस कार्यक्रम में 105 छात्रों, 80 स्टाफ सदस्यों और 15 इन्टैक सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्थानीय शिल्प प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिससे उधमपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ी।

उधमपुर नगर परिषद और रामनगर नगर परिषद कर सीमा का सांस्कृतिक संसाधन मानचित्रण – उधमपुर अध्याय

विरासत ड्राइंग प्रतियोगिता – बागलकोट अध्याय

25 अगस्त 2025 को हेरिटेज क्विज़ का आयोजन – बेलगावी अध्याय

झारखंड

रामगढ़ (उप-अध्याय)

इन्टैक रामगढ़ उप-अध्याय और ज़रीना खातून संग्रहालय, चितरपुर के सहयोग से "हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता 2025" का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य युवाओं में भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रतियोगिता में एपेक्स पब्लिक स्कूल, मेकोस पब्लिक स्कूल, गर्ल्स उर्दू हाई स्कूल और दर्सगाह इस्लामी स्कूल, चितरपुर के 32 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। एपेक्स पब्लिक स्कूल की दीक्षा मिश्रा और सुर्यांशी कुमारी ने पहला स्थान प्राप्त किया, जबकि गर्ल्स उर्दू हाई स्कूल की अर्जिया सुहाना और हानिया हुसैन ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री फैयाज़ अहमद, संयोजक इन्टैक रामगढ़ उप-अध्याय के स्वागत भाषण से हुई। प्रश्न भारतीय वास्तुकला, पुरातत्व, लोक कला और ऐतिहासिक स्मारकों से संबंधित थे। संग्रहालय निदेशक श्री फैयाज़ अहमद ने कहा कि यह प्रतियोगिता छात्रों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कर्नाटक

बागलकोट

अध्याय ने एसवीपी संस्था के बसवमंटप, बादामी में 8वीं और 9वीं कक्षा के छात्रों के लिए विरासत चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित किया, जिसमें लगभग 65 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सुश्री माला (एसवीपीएचएस कटापुर–पट्टदकल) ने प्रथम पुरस्कार, मंजुनाथ (एसवीपीएचएस बादामी) ने द्वितीय पुरस्कार और निंगम्मा (एसवीपीएचएस कटापुर–पट्टदकल) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। प्रसिद्ध बादामी कलाकार श्री दाजीबा जगदाले निर्णायक थे। कार्यक्रम में संयोजक डॉ. अरुण टी. मिस्किन, सह-संयोजक अधिवक्ता एम.एस. हिरेमठ, इन्टैक सदस्य, स्कूल शिक्षक, परिवार और अतिथि माननीय अधीक्षक पुरातत्वविद् श्री रमेश मुलिमानी उपस्थित थे।

हेरिटेज वॉक में प्रतिभागियों की ग्रुप फोटो: उपायुक्त श्री मोहम्मद रोशन और अभिनव जैन-आईएएस के साथ इन्टैक बेलगावी के सदस्य – बेलगावी अध्याय

बेलगावी

अध्याय ने 25 अगस्त को भरतेश एजुकेशन ट्रस्ट कैंपस में हेरिटेज क्विज़ 2025 का आयोजन किया, जिसमें छह स्कूलों के 70 छात्रों ने भाग लिया। लिखित राउंड के बाद चार टीमें फाइनल में पहुँचीं, जहाँ क्विज़मास्टर स्वाती जोग ने मजेदार ऑडियो-विज़ुअल राउंड कराया। भरतेश इंग्लिश मीडियम स्कूल के प्रसन्ना अल्लैयनावरमथ और यश धर्मोजी ने पहला स्थान जीता।

अध्याय ने 5 सितंबर को हेरिटेज वॉक आयोजित किया, जिसमें श्री मोहम्मद रोशन, उपायुक्त बेलगावी, श्री विनोद डोड्डनावर और सह-संयोजक श्रीमती स्वाती जोग और श्री किशोर काकड़े उपस्थित थे। वॉक में बेलगावी किला, कमल बसादी जैन मंदिर, रामकृष्ण मिशन आश्रम, दुर्गा देवी मंदिर, ओपन एयर संग्रहालय और छावनी के उपनिवेश कालीन स्थल शामिल थे।

श्री रोशन ने इन्टैक के संरक्षण प्रयासों की सराहना की और बेलगावी की विविध विरासतों को संरक्षित करने पर ज़ोर दिया। वॉक का समापन सतत विरासत संरक्षण पर एक परस्पर-चर्चा सत्र के साथ हुआ। 2016 में स्थापित इन्टैक बेलगावी अध्याय वॉक, प्रतियोगिताओं और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता और संरक्षण को बढ़ावा देता है।

मैंगलोर

अध्याय ने 19 जुलाई को आर्ट कनारा ट्रस्ट के सहयोग से "*मैंगलोर, तब...यज्ञ की नज़र से*" नामक एक सप्ताह लंबी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जो कोडियालगुथ कला और संस्कृति केंद्र में आयोजित हुई। इस प्रदर्शनी में वरिष्ठ फोटो पत्रकार यज्ञेश्वर आचार्य की श्याम-श्वेत तस्वीरें प्रदर्शित की गईं,

प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि – वी.यू. जॉर्ज, संपादक और प्रकाशक, मैंगलोर टुडे – मंगलुरु अध्याय

ग्रामीण स्कूल के बच्चों के लिए एक दिवसीय पारंपरिक टोकरी बुनाई कार्यशाला – मंगलुरु अध्याय

फर्नडेल – कंकिनाडी – मंगलुरु अध्याय

जो 1970 से 2000 तक के मैंगलोर के शहरी और ग्रामीण जीवन को दर्शाती हैं। मुख्य अतिथि वी.यू. जॉर्ज, संपादक और प्रकाशक, मैंगलोर टूडे ने यज्ञेश्वर की तस्वीरों में जीवन भर देने की कला की सराहना की। इन्टैक मंगलुरु अध्याय के संयोजक सुभाष चंद्र बसु ने तुलुनाडु की दृश्य विरासत को संरक्षित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। प्रदर्शनी में यज्ञेश्वर द्वारा हाल की तस्वीरें और युवा फोटोग्राफर द्वारा अनुभवों का दस्तावेज़ बनाना भी शामिल था।

23 अगस्त को अध्याय ने एचईसीएस-इन्टैक और गवर्नमेंट हाई स्कूल, मांची-कोलनाडु के इन्टैक हेरिटेज क्लब के सहयोग से ग्रामीण स्कूली बच्चों के लिए एक दिवसीय पारंपरिक बास्केट बुनाई कार्यशाला आयोजित की। विशेषज्ञ शंकर कोरगा गुट्ठाकड्डू और सुप्रिया ने सात स्कूलों के 67 छात्रों को प्रशिक्षण दिया।

संयोजक सुभाष चंद्र बसु ने पारंपरिक कलाओं के संरक्षण और जमीनी स्तर के कारीगरों को सहयोग देने की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य अतिथि, मंची-कोलनाडु हाई स्कूल की सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका श्रीमती देवकी एच. ने ग्रामीण बच्चों के लिए कौशल-आधारित प्रशिक्षण के महत्व को रेखांकित किया। स्कूल बेहतरी समिति के अध्यक्ष शिवशंकर राव मंची ने रचनात्मकता और समग्र विकास को बढ़ावा देने में ऐसी गतिविधियों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में एल्युमनाई एसोसिएशन के अध्यक्ष रामप्रसाद राय तिरुवाशे, इन्टैक समन्वयक राजेंद्र केडिगे, हरीश कोडियलबेल, रेशमा शेत्ती और शर्वाणी भट्ट के साथ शिक्षकगण उपस्थित रहे। कलाकार और हेरिटेज क्लब समन्वयक तरनथ कैरंगला ने कार्यक्रम का संचालन किया, और प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुशीला ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों को टोकरी बुनाई की पारंपरिक कला से परिचित कराना और स्थानीय कौशल के संरक्षण को प्रोत्साहित करना था। इसमें भाग लेने वाले स्कूलों में सरकारी हाई स्कूल, मंची-कोलनाडु और छह आस-पास के प्राथमिक स्कूल शामिल थे।

इस अध्याय द्वारा *अल्बम ऑफ द पोर्चेस नामक* एक फ़ोटोग्राफ़िक प्रदर्शनी प्रस्तुत की जाएगी, जिसमें पारंपरिक मंगलोरियन कैथोलिक हेरिटेज घरों का दस्तावेज़ बनाया गया है। इसका उद्घाटन 4 अक्तूबर को बालालबाग के कोडियालगुथु कला और संस्कृति केंद्र में किया जाएगा, जिसमें दक्षिण कन्नड़ कैथोलिक एसोसिएशन (सीएएसके) के अध्यक्ष रोनाल्ड गोम्स उपस्थित रहेंगे।

इस प्रदर्शनी में 27 घरों का दस्तावेज़ बनाया गया, जिसमें यूरोपीय और स्थानीय वास्तुकला का मिश्रण, पारिवारिक वेदी, बरामदे और मंगलोर टाइल की छतें दिखाई गई हैं। यह परियोजना सुभाष बसु, आर्किटेक्ट और इन्टैक मंगलूरु अध्याय के संयोजक के नेतृत्व में बनाई गई थी, जिसमें फ़ोटोग्राफ़र मुरली अब्बेमाने, शोधकर्ता शर्वाणी भट्ट और हैरियट विद्यसागर, डॉ. माइकल लोबो, नयाना फर्नांडीस और विन्सेंट डी'सौजा का योगदान शामिल था।

प्रमुख घरों में फर्नडेल (डॉ. लॉरेंस फर्नांडीस), नंदीगुड्डा हाउस (डॉ. डेरेक और सुश्री पैटी लोबो) और कैमेलॉट (डॉ. माइकल लोबो) शामिल हैं। इसके साथ एक एलबम-बुक भी होगी, जो इन हेरिटेज घरों की विरासत को तेजी से बदलती शहरी दुनिया में सुरक्षित रखेगी।

वुडलैंड्स बंगला – मंगलुरु अध्याय

प्रवीन भार्गव द्वारा वन्यजीव संरक्षण पर व्याख्यान – मंगलुरु अध्याय

15 अक्तूबर को अध्याय ने "मानव-प्रधान परिदृश्य में वन्यजीव संरक्षण" विषय पर एक वार्ता आयोजित की। वन्यजीव संरक्षणकर्मी प्रदीप भार्गव ने भारत में वर्तमान वन्यजीव स्थिति, प्राकृतिक आवास के टूटने से होने वाले खतरे, अवैध वन्यजीव व्यापार और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए समग्र रणनीतियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समन्वयन इन्टैक मंगलुरु अध्याय के सह-संयोजक निरेन जैन ने किया और संयोजक सुभाष बसु ने समापन टिप्पणी प्रस्तुत की।

केरल

कासरगोड

विश्व पर्यावरण दिवस एज़िमाला नेवल अकादमी में मनाया गया, जिसमें नदी के किनारे 1,000 मैंग्रोव पौधे लगाए गए। यह पहल कमोडोर श्रीकुमारन पिल्लई के नेतृत्व में और इन्टैक कासरगोड अध्याय के सहयोग से आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य नौसेना अधिकारियों और कैडेट्स में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

एयूपी स्कूल, उदिनूर सेंट्रल में विश्व पर्यावरण दिवस "पर्यावरण संरक्षण – हमारी जिम्मेदारी" थीम पर मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. वी. जयराजन, फोकलैंड के अध्यक्ष और आईसीसीएन के महासचिव ने इन्टैक कासरगोड अध्याय के सहयोग से किया।

वर्णामृतिका, केरल की भित्ति चित्रकला परंपरा पर आधारित एक प्रदर्शनी 16 जून को फोकलैंड और इन्टैक कासरगोड अध्याय के सहयोग से आयोजित की गई। इसमें समर्थ योजना के 21 प्रशिक्षुओं की कला प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती के.वी. ललिता, पय्यनूर नगरपालिका अध्यक्ष ने किया, और पद्मश्री नारायणन पेरुवन्नन मुख्य अतिथि थे।

21-30 जून को फोकलैंड, राग विराग शिक्षा एवं संस्कृति सोसायटी और इन्टैक कासरगोड अध्याय ने 10-दिवसीय कथक नृत्य कार्यशाला आयोजित की। इसे प्रसिद्ध कथक विशेषज्ञ श्रीमती पुनिता शर्मा ने संचालित किया। 45 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया और कार्यशाला का समापन सार्वजनिक प्रदर्शन के साथ हुआ।

इन्टैक कसारगोड़ अध्याय ने 23 जून को सी.के. एन.एस. जीएचएसएस, पिलिकोड में कथकली प्रदर्शनी आयोजित की, जिसका नेतृत्व कलमंडलम नारायणन नंबूतिरी ने किया और उद्घाटन प्रधानाचार्या श्रीमती लता ने किया। इस कार्यक्रम में 120 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इसी तरह 10 सितंबर को जीएचएसएस होसदुर्ग में भी कथकली प्रदर्शन हुआ, जिससे केरल की शास्त्रीय कला और सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी बढ़ी।

सितंबर 2025 में, इन्टैक कसारगोड़ अध्याय ने छात्रों में सांस्कृतिक साक्षरता बढ़ाने के लिए तीन स्कूलों में हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिताओं की श्रृंखला आयोजित की। 12 अगस्त को जीएचएसएस कन्हांगड़ साउथ में 22 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत लोक नर्तकी और संरक्षण विशेषज्ञ सुश्री राजिता राजन ने की और शिक्षक श्री स्नीदेव एम.वी. ने स्वागत किया। होसदुर्ग में 10 सितंबर को 20 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और भारत की विरासत को अधिक गहराई से समझने का अवसर प्राप्त किया। अंतिम प्रश्नोत्तरी 22 सितंबर को रजास हायर सेकेंडरी स्कूल, निलेश्वरम में हुई, जिसमें 92 छात्रों ने भाग लिया। इस क्विज़ का संचालन सुश्री राजिता वी.एम. और श्री व्यशक के. ने किया, जिसे विद्यालय के प्रधानाचार्य ने छात्रों में बौद्धिक जिज्ञासा और पाठ्यपुस्तकों से परे सीखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए सराहा।

22 अगस्त 2025 को विश्व लोककला दिवस के अवसर पर फोकलैंड, इन्टैक कासरगोड अध्याय और डॉर्फ केटल केमिकल्स इंडिया के सीएसआर सहयोग से पय्यनूर कॉलेज और सायर सईद कॉलेज, तालीपरम्बा में नादनपट्टु प्रदर्शन आयोजित किया गया। इसमें जनार्दनन पुडुस्सेरी ने केरल के लोक गीत प्रस्तुत किए, छात्रों ने संगीत और नृत्य में भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अनिला सुनील, राजिता राजन और के. सुरेशन ने किया।

पालक्कड़

अध्याय ने अपनी 10वीं वर्षगांठ मनाई और *जीवित विरासत, समृद्ध भविष्य* शीर्षक से एक कार्यशाला आयोजित की, जिसमें पिछले दशकों की उपलब्धियों की समीक्षा और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा

मेला पदम – पंचरिमेलम छात्रों का अरंगेटम – कासरगोड अध्याय

एझिमाला नौसेना अकादमी में विश्व पर्यावरण उत्सव – कासरगोड अध्याय

जीवंत विरासतें, समृद्ध भविष्य: पलक्कड़ विरासत के लिए कार्यशाला – पलक्कड़ अध्याय

हुई। अध्याय संयोजक अरुण नारायण ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। वरिष्ठ सदस्य सुभाष द्वारा संचालित पैनल चर्चा में ई.पी. उन्नी, राजनीतिक कार्टूनिस्ट और लेखक, डॉ. वेल्लिनेज़ी आचुथनकुट्टी, ललित कला विशेषज्ञ और डॉ. विश्वनाथ, अथाची ग्रुप के सीईओ ने विरासत संरक्षण, सांस्कृतिक विकास और उद्योग सहयोग पर अपने विचार साझा किए। चर्चा से प्राप्त सुझावों को अध्याय की आगामी वार्षिक कार्य-योजना में शामिल किया जाएगा।

त्रिशूर

14 अक्तूबर को, अध्याय ने श्री शंकर हॉल, ब्रह्मस्वोम माडोम में पांडुलिपि अनुभाग का दौरा आयोजित किया। विशेषज्ञों ने पांडुलिपियों का दस्तावेज बनाने और संरक्षण की प्रक्रिया दिखाई। इन्टैक की वास्तुकला विरासत प्रभाग की निदेशक विजया ब्रहमस्वोम मठ पुस्तक की पुनर्मुद्रित प्रतियां अधिवक्ता परमेश्वरन नाम्बूथिरी, अध्यक्ष, ब्रहमस्वोम मठ को सौंपीं। दौरे के बाद होटल मोती महल में "कनेक्ट एंड कोलैबोरेट" शीर्षक से परस्पर-चर्चा सत्र आयोजित किया गया, जिसमें इन्टैक के सदस्यों ने वास्तुकला विरासत प्रभाग के अधिकारियों के साथ संरक्षण और नवीनीकरण परियोजनाओं पर चर्चा की।

30 अक्तूबर को कुलपति मुंशी भवन, विद्यामंदिर, पोट्टोर में कुरुथोला शिल्प कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका नेतृत्व कलाकार नवनीत चेरो ने किया। लगभग 30-35 छात्रों ने नरम नारियल की पत्तियों से मछली, साँप और ओलापीपी (पत्तियों की सीटी) जैसे वस्तुएँ बनाना सीखा। इन्टैक प्रतिभागियों में संयोजक विनोद कुमार एम.एम., सदस्य सुजिथ और कृष्ण, तथा स्वयंसेवक पुण्य शामिल थे। स्कूल प्रतिनिधि, प्रधानाचार्या डॉ. बिंदु और शिक्षक जैमोल ने भारत की जीवंत विरासत से प्राप्त व्यावहारिक अनुभव की सराहना की। कार्यशाला ने कला, संस्कृति और स्थिरता का सफल संयोजन किया और पारंपरिक शिल्प के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

कुरुथोला शिल्प कार्यशाला में छात्र – त्रिशूर अध्याय

मध्य प्रदेश

बुहरानपुर

6 अगस्त को, अध्याय ने आरएसईटी संस्थान, बुहरानपुर में हेरिटेज क्विज़ आयोजित किया। इसमें 88 ग्रामीण छात्रों ने भाग लिया, जो सरकारी समर्थन वाले स्वरोजगार कार्यक्रमों में नामांकित हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नरेश सेंद्रे ने की, मुख्य अतिथि श्री विजय राठौर और विशेष अतिथि श्री सुरेश चौधरी थे। पहला पुरस्कार दीपाली कुशवाहा और अनिता गडरियन को, और दूसरा पुरस्कार लोनी गांव की कविता चौहान और उनकी साथी को दिया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। अतिथियों ने ग्रामीण पृष्ठभूमि के नेताओं की उपलब्धियों को उजागर कर छात्रों को प्रोत्साहित किया। इन्टैक समन्वयक श्री होशंग हवळदार ने भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के महत्व पर प्रस्तुति दी।

2 अक्तूबर को, इन्टैक सहयोगियों ने शाही किला में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। चूँकि सतियारा घाट, जहाँ उनकी अस्थियाँ रखी गई थीं, मिट्टी और पानी से प्रभावित था, कार्यक्रम शाही किले में आयोजित किया गया। इसके बाद एएसआई और भारत पर्यटन विभाग के सहयोग से स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। इसमें सहायक निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, इंदौर, श्री गोपाल, श्री जय तिवारी और स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

चंदेरी

अध्याय की उद्घाटन बैठक इन्टैक शासी परिषद सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी के नेतृत्व में आयोजित की गई और इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ सदस्य श्री उमेश पुरोहित ने की। श्री अरुण सोमानी को संयोजक और मुज़फ्फर अंसारी कल्ले भाई को सह-संयोजक नियुक्त किया गया। श्री महेश्वरी ने इन्टैक की स्थापना, उद्देश्य और मिशन पर प्रकाश डाला और बताया कि इसे 1984 में भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण के लिए स्थापित किया गया था।

अध्याय की बैठक – चंदेरी अध्याय

नेशनल हेरिटेज क्विज प्रतियोगिता में छात्र – दतिया अध्याय

श्री उमेश पुरोहित ने विरासत संरक्षण पर मार्गदर्शन दिया, जबकि संयोजक ने चंदेरी की पुरातात्विक विरासत की रक्षा करने, पर्यटन को बढ़ावा देने, स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करने और पारंपरिक त्योहारों के आयोजन पर जोर दिया। सह-संयोजक मुज़फ्फर अंसारी ने स्कूली छात्रों में जागरूकता बढ़ाने का सुझाव दिया।

दतिया

अध्याय ने सरस्वती विद्या मंदिर, बुंदेला नगर में नेशनल हेरिटेज क्विज़ और डॉ. मधु श्रीवास्तव स्मृति चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। क्विज़ में सरस्वती विद्या मंदिर की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जो स्टेट लेवल पर दतिया का प्रतिनिधित्व करेगी, जबकि राजकीय कन्या विद्यालय होलीपुरा द्वितीय स्थान पर रहा। तृतीय स्थान संत रविशंकर हाई स्कूल और राजकीय माध्यमिक विद्यालय नं. 2 को मिला।

चित्रकला प्रतियोगिता में राजा कैथले प्रथम, तमन्ना अहिरवार द्वितीय और उन्नति पाल तृतीय स्थान पर रहीं। जूनियर वर्ग में नैन्सी कुशवाहा प्रथम, नेहा प्रजापति द्वितीय, तान्या उज्जैनिया और आर्या रावत तृतीय रहीं, जबकि प्राची कुशवाहा को सांत्वना पुरस्कार मिला। कार्यक्रम का उद्घाटन जिला खेल अधिकारी डॉ. अरविंद सिंह राणा और प्रधानाचार्य कपिल तांबे ने किया। अतिथियों का स्वागत उमा चरण शर्मा, राम श्री मिश्रा, संजय रावत और इन्टैक के सदस्यों ने किया। प्रश्नोत्तरी का संचालन क्विज़ मास्टर ऋषिराज मिश्रा और धर्मेंद्र अग्रवाल ने किया, जबकि चित्रकला प्रतियोगिता में लगभग 100 छात्रों की प्रविष्टियों का मूल्यांकन अमर सोनी, संतोष कुमार, रश्मि कटारे, डॉ. आस्था भारद्वाज और स्तुति चौड़ा ने किया।

डॉ. अरविंद सिंह राणा ने कहा कि ऐसी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक होती हैं, जबकि चित्रकला प्रतियोगिताएँ उनकी रचनात्मकता को बढ़ाती हैं। प्रधानाचार्य कपिल तांबे ने इन गतिविधियों के शैक्षणिक महत्व की सराहना की और संयोजक उमा चरण शर्मा ने सभी प्रतिभागियों व सहयोगियों का धन्यवाद किया।

धार

इन्टैक ने उत्कृष्ट विद्यालय में सिटी लेवल हेरिटेज क्विज़ आयोजित किया, जिसमें पाँच स्कूलों के 75 छात्रों (कक्षा 7 से 10 तक) ने भाग लिया। टीमों ने विरासत, संस्कृति और कला पर आधारित विभिन्न राउंड में प्रतिस्पर्धा की।

प्रश्नोत्तरी का संचालन श्याम शर्मा ने किया और इसका समन्वय श्रीमती रानी ठाकुर ने किया, जबकि समय निर्धारकों ने कार्यक्रम में सहयोग दिया। इन्टैक शासी परिषद सदस्य एवं धार अध्याय के संयोजक डॉ. दीपेंद्र शर्मा ने छात्रों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी प्रश्नोत्तरी शिक्षा के साथ-साथ विरासत के प्रति जागरूकता भी बढ़ाती है। इन्टैक के आजीवन सदस्य हरिहर दत्त शुक्ला और डॉ. साधना चौहान भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। प्रश्नोत्तरी के बाद प्रतिभागियों ने विक्रम ज्ञान मंदिर (निर्माण वर्ष 1945) तथा राणा बख्तावर सिंह और रवींद्रनाथ टैगोर की प्रतिमाओं तक एक हेरिटेज वॉक की।

ग्वालियर

अध्याय ने ग्वालियर फ़ोटोग्राफी क्लब के साथ 18-19 अगस्त को दो दिवसीय प्रदर्शनी "मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारक: हमारी जीवित विरासत" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मध्य

फोटोग्राफी प्रदर्शनी में छात्रों की भागीदारी – ग्वालियर अध्याय

प्रदेश पर्यटन बोर्ड के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री नितिन कटारे ने किया। इसमें अध्याय के सदस्य तथा इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी और श्री राजीव तोमर उपस्थित रहे। कार्यक्रम में छात्र, विद्यालय और फोटोग्राफी प्रेमी बड़ी संख्या में शामिल हुए।

छह स्कूलों के छात्रों ने वरिष्ठ फोटोग्राफरों से बातचीत की, जिन्होंने फोटोग्राफी से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। अध्याय संयोजक श्री विकास सिंह ने अध्याय की सोच, हेरिटेज वॉक और स्कूलों में हेरिटेज क्लबों के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रदर्शनी का समापन ग्वालियर फोटोग्राफी क्लब के सदस्यों की भागीदारी के साथ हुआ। श्री विकास सिंह ने सहयोग के लिए इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम ने विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाई और मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारकों के प्रति सराहना को प्रोत्साहित किया।

इसके बाद आयोजित कार्यशाला में संयोजक श्री विकास सिंह ने कला रूप का परिचय देते हुए उसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को बताया। कार्यक्रम में इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी, श्री राजीव तोमर, सह-संयोजक श्री चंद्रदीप सिंह और स्कूल निदेशक श्री रोहित सक्सेना उपस्थित रहे, जिन्हें स्मृति-चिह्न प्रदान किया

गया। कार्यशाला ने छात्रों को भारत की कलात्मक विरासत से जोड़ने में सफल भूमिका निभाई और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति इन्टैक की प्रतिबद्धता को मजबूत किया।

अध्याय ने 6 सितंबर 2025 को सिंधिया कन्या विद्यालय में राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी के सिटी राउंड का आयोजन किया, जिसमें 11 स्कूलों के 188 छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता की शुरुआत लिखित प्रारंभिक राउंड से हुई, जिसमें से पाँच टीमें मंच पर आयोजित अंतिम राउंड के लिए चयनित हुईं। अंतिम राउंड में भारत की मूर्त और अमूर्त विरासत, स्थापत्य, परंपराएँ, जानी-मानी हस्तियों तथा मध्य प्रदेश और ग्वालियर की विरासत से जुड़े प्रश्न शामिल थे। विजेता टीम को स्टेट लेवल राउंड में ग्वालियर का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। कार्यक्रम में इन्टैक ग्वालियर अध्याय के संयोजक श्री विकास सिंह, सह-संयोजक श्री चंद्रदीप सिंह तथा अन्य सदस्य उपस्थित रहे। विजेताओं को ट्रॉफी, प्रमाणपत्र और पुस्तकें प्रदान की गईं। इस प्रश्नोत्तरी ने भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाई और उन्हें इसे बचाने में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया।

अध्याय ने सिम्पकिन्स पब्लिक स्कूल, ग्वालियर में लुप्तप्राय चितेरा चित्रकला पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की, जिसका उद्देश्य चितेरा समुदाय की इस अनोखी लोककला के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उसका संरक्षण करना था। इस कार्यशाला में सात स्कूलों के 89 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत इन्टैक ग्वालियर अध्याय के संयोजक श्री विकास सिंह ने चितेरा कला के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की जानकारी देकर की। पारंपरिक कलाकार श्री हरि ने प्राकृतिक रंग तैयार करने की विधि और पारंपरिक तकनीकें सिखाईं। कार्यक्रम में इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी, श्री राजीव तोमर, सह-संयोजक श्री चंद्रदीप सिंह और स्कूल निदेशक श्री रोहित सक्सेना उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सभी कार्यशाला सामग्री उपलब्ध कराई गई, जिससे प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी और यह इन्टैक की विरासत शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

25 अक्तूबर को ग्वालियर ग्लोरी हाई स्कूल में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का मध्य प्रदेश स्टेट राउंड आयोजित हुआ, जिसमें तीन टीमों - ग्वालियर, दतिया और मंडला ने अंतिम राउंड में प्रतिस्पर्धा की। प्रश्नोत्तरी में पाँच थीम आधारित राउंड शामिल थे: व्यक्तित्व, स्मारक, अमूर्त विरासत, प्राकृतिक विरासत, और पौराणिक कथाएँ एवं महाकाव्य। निर्मला सीनियर सेकेंडरी स्कूल, ललितपुर की मंडला टीम राज्य विजेता बनी, जबकि डाटिया टीम पहली उप-विजेता और ग्वालियर टीम दूसरी उप-विजेता रही। इस कार्यक्रम में इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी और श्री राजीव तोमर, साथ ही प्रतिभागी अध्यायों के संयोजक और सह-संयोजक तथा स्कूल के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। ग्वालियर अध्याय ने टीमों के लिए पूरी आतिथ्य व्यवस्था की, और विजेताओं तथा प्रतिभागियों को ट्रॉफी, इन्टैक प्रकाशन और अन्य शैक्षिक सामग्री प्रदान की गई।

खजुराहो

अध्याय ने सेक्रेड हार्ट कॉन्वेंट हाई स्कूल में राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी का सफल आयोजन किया, जिसमें तीन स्कूलों के 65 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। सेक्रेड हार्ट कॉन्वेंट के विजेता छात्र ग्वालियर राउंड के लिए चयनित हुए, जहाँ से उन्हें दिल्ली में नेशनल लेवल पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिलेगा। इस आयोजन को संयोजक अजय कश्यप, संरक्षक डॉ. मुराद अली और शासी परिषद सदस्य नीलकमल महेश्वरी का सहयोग मिला। स्कूल की प्रधानाचार्या सिस्टर सेल्वी को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया। इससे एक दिन पहले, अध्याय की बैठक आयोजित की गई, जिसमें विरासत संरक्षण पर चर्चा की गई, कार्यकारी समिति का गठन किया गया और उन्हें जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं। बैठक में स्थानीय सांस्कृतिक विरासत स्थलों की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया गया।

मंडला

अध्याय द्वारा डीआईईटी में दो दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सरकारी और निजी स्कूलों के 50 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उसके संरक्षण को प्रोत्साहित करना था। श्री दीपक खंडेकर, पूर्व सचिव, जनजातीय विकास एवं राज्य संयोजक, इन्टैक ने छात्रों को राष्ट्रीय विरासत के बारे में शिक्षित करने की नैतिक जिम्मेदारी पर जोर दिया। सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर

एक दिवसीय कार्यशाला में छात्रों ने संकटग्रस्त चित्रकला (चितेरा चित्रकला) सीखी – ग्वालियर अध्याय

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागी – मंडला अध्याय

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में अतिथि और विशेषज्ञ – मंडला अध्याय

विदिशा इन्टैक अध्याय का उद्घाटन – विदिशा अध्याय

अध्याय के उद्घाटन में उपस्थित सदस्यगण – विदिशा अध्याय

विपिन त्रिवेदी ने शिक्षकों से स्कूलों में भारतीय संस्कृति और कला को बढ़ावा देने का आह्वान किया। इन्टैक के मास्टर प्रशिक्षकों ने हेरिटेज क्लब, स्थानीय विरासत की पहचान और संरक्षण के तरीके तथा समुदाय में जागरूकता फैलाने के उपायों की जानकारी दी। दूसरे दिन शिक्षकों ने व्यावहारिक अध्ययन और चर्चा के लिए रामनगर किले का भ्रमण किया। यह कार्यक्रम कलेक्टर मंडला श्री सोमेश मिश्रा और जिला पंचायत के सीईओ श्री श्रेयांश कुमठ के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी और सहायक जनजातीय विकास बोर्ड का सहयोग मिला। कार्यक्रम में इन्टैक के संयोजकों, प्रधानाचार्यों और अन्य अधिकारियों का भी योगदान रहा। सभी प्रतिभागियों को स्कूल किट वितरित की गई।

विदिशा

इन्टैक के विदिशा अध्याय का उद्घाटन 26 अक्तूबर को एसएसएल जैन हायर सेकेंडरी स्कूल में किया गया। कार्यक्रम में राज्य संयोजक दीपक खंडेकर, संयोजक संजय मल्होत्रा, स्थानीय अधिकारी, पुरातत्वविद् और अध्याय के सदस्य उपस्थित रहे। अरविंद श्रीवास्तव को जिला संयोजक और ऋषि जलोरी को सह-संयोजक नियुक्त किया गया। श्रीमंत सेठ राजेंद्र जैन की स्मृति में उनके परिवार द्वारा अपना घर आश्रम को ₹51,000 तथा प्रतिभा विकास संस्थान को ₹31,000 का दान दिया गया। दीपक खंडेकर ने विदिशा की पुरातात्विक विरासत के संरक्षण के महत्व पर जोर दिया। संजय मल्होत्रा ने इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर का बधाई संदेश पढ़कर सुनाया। कार्यक्रम की शुरुआत देवी सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुई। इसके बाद अतिथियों का परिचय, स्वागत भाषण और विरासत संरक्षण में अध्याय की भूमिका पर चर्चा की गई।

महाराष्ट्र

ग्रेटर मुंबई

इन्टैक मुंबई ने 5 से 9 अगस्त तक नरीमन पॉइंट स्थित कमलनयन बजाज हॉल में "कंटिन्यूअम: अतीत के भविष्य के प्रति इन्टैक की प्रतिबद्धता" प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह आयोजन इन्टैक के 40 वर्ष और मुंबई की आर्ट डेको विरासत के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री अमिताभ सिंह (सीपीएमजी, महाराष्ट्र सर्कल) और इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने किया। इसमें संस्थापक सदस्यों श्रीमती आशा शेठ, डॉ. सारयू दोशी और डॉ. फेरोज़ा गोडरेज ने भाग लिया, जिनमें श्रीमती आशा शेठ और डॉ. सारयू दोशी को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सीपीएमजी महाराष्ट्र सर्कल के श्री अमिताभ सिंह और इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन – ग्रेटर मुंबई अध्याय

प्रदर्शनी में इन्टैक के विभिन्न प्रभागों, मुंबई की आर्ट डेको विरासत और आईईएस कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर के छात्रों द्वारा तैयार किए गए डिस्प्ले प्रदर्शित किए गए। कार्यक्रम के दौरान व्याख्यान, पैनल चर्चा, कार्यशालाएँ और कहानी-सुनाने के सत्र आयोजित किए गए, जिससे विरासत और समुदाय के बीच बेहतर जुड़ाव बना।

जून माह में इन्टैक ने प्राइम सिक्योरिटीज के साथ मिलकर राम पांडेय द्वारा लिखित और निर्देशित नाटक "सुल्ताना" का आयोजन किया, जो भारत की नाट्यशास्त्र परंपरा को समर्पित था।

इसके अलावा, द्विमासिक हेरिटेज वॉक का आयोजन भी जारी रहा, जिनमें जुमा मस्जिद, सेंट थॉमस कैथेड्रल, अल्पाईवाला संग्रहालय, मरीन ड्राइव की आर्ट डेको इमारतें, कुम्हारवाड़ा, भुलेश्वर बाजार और गणेशोत्सव की परंपराएँ शामिल रहीं।

ये सभी पहलें विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसके संरक्षण के लिए इन्टैक मुंबई की सतत प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

नागपुर

7 अगस्त को अध्याय ने एसएमएमसीए के सहयोग से बी.आर्क. 7वें सेमेस्टर के छात्रों के लिए विरासत सूचीबद्ध लेखा निदेशालय (डाक) भवन का स्थल दौरा आयोजित किया। डॉ. मधुरा राठौड़ के मार्गदर्शन में छात्रों ने भवन के इतिहास, वास्तुकला और निर्माण सामग्री का अध्ययन किया तथा संरक्षण

लेखा निदेशक (डाक) के साइट दौरे के दौरान प्रतिभागियों का ग्रुप फोटो – नागपुर अध्याय

पुराने उच्च न्यायालय स्थल का दौरा – नागपुर अध्याय

स्कूल ऑफ स्कॉलर, अत्रेय लेआउट, नागपुर में हेरिटेज क्लब के सदस्यों का ग्रुप फोटो – नागपुर अध्याय

की आवश्यकताओं और उपयुक्त पुनः उपयोग की संभावनाओं पर चर्चा की। इस दौरे में विरासत मूल्य के आकलन, संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों और संदर्भ के अनुरूप दृष्टिकोण पर विशेष जोर दिया गया। इससे छात्रों को व्यवहारिक अनुभव मिला और उनकी विश्लेषण, अवलोकन और दस्तावेज बनाने की क्षमता बढ़ी।

बी.आर्क. 7वें सेमेस्टर के छात्रों के लिए वास्तुकला संरक्षण वैकल्पिक विषय के तहत, शहर की एकमात्र केंद्रीय संरक्षित पुरानी हाई कोर्ट इमारत का स्थल दौरा डॉ. मधुरा राठौड़ के मार्गदर्शन में कराया गया। इस अभ्यास से छात्रों को विरासत संरक्षण, वास्तुकला दस्तावेज बनाने और संदर्भ के अनुसार काम करने की समझ मिली। इसमें भवन के ऐतिहासिक विकास, सामग्री के क्षरण, सांस्कृतिक संदर्भ, दस्तावेज बनाने की तकनीकें और उचित पुनः उपयोग की संभावनाओं पर अध्ययन किया गया। छात्रों ने स्केच बनाए, नोट्स लिए और संरक्षण नैतिकता पर चर्चा की। अंत में, अर्जित ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव को मजबूत करने के उद्देश्य से चिंतन सत्र का आयोजन किया गया।

डॉ. माधुरा राठौड़ को गुवाहाटी के युनेस्को एसोसिएशन में सदस्य के रूप में शामिल होने का सम्मान प्राप्त हुआ और उन्हें इन्टैक महाराष्ट्र राज्य सह-संयोजक (विदर्भ क्षेत्र) के रूप में नियुक्त किया गया। तस्वीर में उनके साथ इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर (मध्य) और ग्रुप कैप्टन (सेवानिवृत्त) अरविंद शुक्ला (निदेशक, अध्याय) हैं

स्कूल ऑफ स्कॉलर्स, अत्रेय लेआउट, नागपुर में विरासत क्लब की स्थापना – नागपुर अध्याय

20 अगस्त को अध्याय ने सेमिनरी हिल्स स्थित श्रीमती मनोरमाबाई मुंडले कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर में वार्षिक इंटर-सिटी हेरिटेज क्विज़ का आयोजन किया। इसमें 18 स्कूलों के लगभग 175 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम डॉ. मधुरा राठौड़, इन्टैक नई दिल्ली और नागपुर अध्याय के सह-संयोजक श्री मनोज जैन के मार्गदर्शन में हुआ। क्विज़ मास्टर श्री अनुप मांचलवार ने कला, इतिहास और विरासत से जुड़े प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को जोड़ा। स्कूल वर्ग में आदित्य राजुरकर और नमन त्रिपाठी (भवंस ट्रिमूर्ति नगर) ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

14 सितंबर को अध्याय की आम सभा की बैठक आयोजित की गई, जिसमें सदस्यों ने भावी योजनाओं और सहयोगात्मक पहलों पर चर्चा की। प्रमुख रूप से रोटरी, यूनेस्को एसोसिएशन गुवाहाटी और अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ साझेदारी पर विचार किया गया, ताकि विरासत के प्रति जागरूकता और पहुँच बढ़ाई जा सके। बैठक के अंत में सदस्यों ने इन पहलों को आगे बढ़ाने और आगामी बैठकों के लिए विस्तृत प्रस्ताव तैयार करने पर सहमति जताई। अध्याय ने रोटरी क्लब ऑफ नागपुर मिहान टाउन 3030 और प्रियदर्शिनी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के सहयोग से भावी नेताओं का शिखर सम्मेलन का आयोजन किया। इसका उद्देश्य विरासत के प्रति जागरूकता को आधुनिक नेतृत्व मूल्यों से जोड़कर

द फ्यूचर लीडर्स समिट में डॉ. मधुरा राठौड़ – नागपुर अध्याय

युवाओं को प्रेरित करना था। इस पहल ने छात्रों को सीखने, भाग लेने और जिम्मेदार, सांस्कृतिक रूप से जुड़े तथा समाज के प्रति संवेदनशील नेता के रूप में विकसित होने का अवसर दिया। यह कार्यक्रम बेहतर भविष्य के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करने की इन्टैक की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

पुणे

इन्टैक पुणे और हम्पी–अनेगुंडी अध्यायों ने विरासत शिल्प और संचार प्रभाग (एचसीसीडी) के सहयोग से पुनेरी साड़ी पुनरुद्धार परियोजना की शुरुआत 27 सितंबर को पुणे इंटरनेशनल सेंटर में की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुप्रिया सुले थीं। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य संयोजक मुकुंद भोगले, पुणे अध्याय की संयोजक डॉ. शर्वे धोंगडे और कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। उद्घाटन के दौरान मुख्य बुनकर रमेश आयोडी को सम्मानित किया गया तथा कावेरी संस्थान के छात्रों द्वारा नाट्य संगीत प्रस्तुति दी गई।

इन्टैक पुणे ने तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें पिछले 40 वर्षों के विरासत कार्य और पुणे अध्याय की परियोजनाएँ प्रदर्शित की गईं। इसमें बुनकरों से संवाद, स्कूली बच्चों के लिए कलाकार सचिन कुलकर्णी द्वारा गणजीफा कार्यशाला, वस्त्र डिज़ाइनर माला सिन्हा के साथ फिल्म प्रदर्शन और

पुणेरी साड़ी पुनरुद्धार कार्यक्रम – पुणे अध्याय

गांजिफा कार्ड पेंटिंग कार्यशाला – पुणे अध्याय

व्याख्यान, तथा भक्ति परंपराओं पर विशेषज्ञ सत्र शामिल थे।

28 सितंबर को एचईसीएस संकटग्रस्त शिल्प श्रृंखला के तहत गणजीफा कार्ड पेंटिंग कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 55 स्कूली बच्चों ने भाग लिया। कलाकार सचिन कुलकर्णी के मार्गदर्शन में बच्चों ने पारंपरिक चित्रकला सीखी। "महिलाएँ और क्रिकेट" विषय पर प्रतियोगिता भी हुई, जिसकी विजेता प्रविष्टियों को ब्लेड्स ऑफ ग्लोरी क्रिकेट संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया।

16 अक्तूबर को अध्याय ने सेवासदन इंग्लिश मीडियम स्कूल में पारंपरिक महाराष्ट्रीयन लोक उत्सव भोंडला का आयोजन किया। यह कार्यक्रम डॉ. अस्मिता जोशी के मार्गदर्शन में हुआ, जिसमें गीत, खेल और ठिपक्यांची रंगोली शामिल थीं। कार्यक्रम का समापन पारंपरिक महाराष्ट्रीयन नाश्ते के साथ किया गया।

11 अक्तूबर को यशोदा कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर और अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर ऐतिहासिक शहर श्रृंखला 2025 – सतारा संस्करण का आयोजन किया गया। छत्रपति वृषालीराजे भोंसले के संरक्षण में सतारा महल और आसपास के क्षेत्रों में हेरिटेज वॉक और जागरूकता सत्र आयोजित किए गए।

मासिक हेरिटेज वॉक श्रृंखला के तहत पुणे की सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत पर कई वॉक आयोजित की गईं, जैसे जुलाई में प्रार्थना समाज वॉक, सितंबर में विठ्ठल–रुक्मिणी मंदिर वॉक और अक्तूबर में कोर सिटी वॉक। अगस्त–सितंबर में गणेशोत्सव पर विशेष वॉक भी हुईं। पुणे छावनी और कोर सिटी क्षेत्रों में छात्रों, शिक्षकों, कॉरपोरेट समूहों और परिवारों के लिए विभिन्न आर्किटेक्चर कॉलेजों और स्कूलों के सहयोग से विशेष वॉक भी आयोजित की गईं।

इन्टैक विशेषज्ञों ने सार्वजनिक चर्चाओं में भाग लिया। डॉ. शर्वे धोंगडे ने वर्ल्ड कार फ्री डे पर पुणे में सतत परिवहन विषय पर पैनल चर्चा में भाग लिया, जबकि सह-संयोजक सुप्रिया महाबलेश्वरकर ने "पुणे के पौधे" विषय पर व्याख्यान दिया।

8 से 10 सितंबर तक विश्व जल सप्ताह के अवसर पर, इन्टैक पुणे ने महाराष्ट्र वृक्ष संवर्धिनी, वनराई और एसपीपीयू के साथ मिलकर आर्द्रभूमि संरक्षण पर तीन दिवसीय वेबिनार आयोजित किया। विशेषज्ञों ने जैव विविधता, मैंग्रोव और आर्द्रभूमि पुनर्स्थापन जैसे विषयों पर चर्चा की। इस कार्यक्रम का आयोजन सह-संयोजक सुप्रिया महाबलेश्वरकर और कार्यकारिणी सदस्य मुकुल महाबलेश्वरकर ने किया। इसमें 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें शोधकर्ता, छात्र और संरक्षण प्रेमी शामिल थे।

अध्याय ने 25 जुलाई को अपनी वार्षिक सदस्य बैठक आयोजित की, जिसमें 30 इन्टैक सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में वर्ष भर की गतिविधियों की समीक्षा और भावी योजनाओं पर चर्चा की गई।

अध्याय ने तिमाही ई-न्यूज़लेटर *पुणे पत्रिका आषाढ़ 2025* भी लॉन्च किया, जिसमें कार्यक्रम, गतिविधियाँ और विरासत से जुड़े लेख व फोटो निबंध शामिल हैं।

सोलापुर

अध्याय ने 22 जुलाई को एसपीएम इंग्लिश स्कूल में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 – सोलापुर सिटी राउंड आयोजित किया, जिसमें 17 स्कूलों की 33 टीमों और 64 छात्रों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी का संचालन आर्किटेक्ट पुष्पांजलि कातिकर ने किया, जबकि आर्किटेक्ट श्वेता कोठवले क्विज़ मास्टर थीं।

पहले राउंड का मूल्यांकन इन्टैक सदस्यों गोवर्धन चातला, मसाई चातला, गीतांजलि डिड्डी, अधिवक्ता मोनिका तिमके, अनुजा डुस्कर और रोहिणी जोकारे ने किया। कार्यक्रम के दौरान केएलई इंग्लिश मीडियम स्कूल की सामाजिक विज्ञान शिक्षिका श्रीमती माधुरी गायकवाड़ ने स्वामी विवेकानंद और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के उदाहरण देते हुए पढ़ाई को आदत बनाने पर बात की।

चार टीमें दूसरे राउंड में पहुंचीं, जिसमें वी.एम. मेहता हाई स्कूल की अनुष्का अमोल गायकवाड़ और मास्टर सुजय मोहन हजारे विजेता बने। विजेताओं को प्रमाण-पत्र और पुस्तकें प्रदान की गईं, जबकि सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिए गए।

अध्याय ने 3 अगस्त को नैवेद्य, होटल लोटस, सोलापुर में अपनी वार्षिक बैठक आयोजित की। बैठक में 15

सोलापुर में विभिन्न हथकरघा इकाइयों का हेरिटेज टूर – सोलापुर अध्याय

अभियंता कोथवाले द्वारा सोलापुर के इतिहास की प्रस्तुति, मुख्य डाकघर – सोलापुर अध्याय

सिविल इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए किला भ्रमण – सोलापुर अध्याय

हेरिटेज क्विज़ 2025 के दूसरे राउंड में प्रवेश करने वाली चार टीमें अपने शिक्षकों के साथ – सोलापुर अध्याय

सदस्य उपस्थित थे, जिनमें डॉ. किरण और डॉ. श्रीकांत पाटणकर, डॉ. संजय मंथले, राजीव दीपाली, गोवर्धन चातला, शशिकांत पाटिल, श्रीरंग रेगोती, शिरीष कोठवले, नितिन अणवेकर, डॉ. चाफळकर, डॉ. कातिकर और श्वेता कोठवले शामिल थे। बैठक में नए सदस्य प्रो. संगीता बावगे, प्रो. भीमगोंडा पाटिल और डॉ. धनेश लिगड़े ने भी भाग लिया।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2025 के अवसर पर, अध्याय ने सोलापुर में हथकरघा इकाइयों के लिए एक हेरिटेज वॉक आयोजित की। इस दौरान शहर की साड़ी, वॉल हैंगिंग, तौलिए और सातारंजी कारपेट की समृद्ध परंपरा को दर्शाया गया। वॉक में श्री नागनाथ मदगुंडी की साड़ी बुनाई इकाई, श्री श्रीनिवास और श्री सुदर्शन अनंतुलु की इकाइयाँ, और श्री राजेशम सादुल की वॉल हैंगिंग इकाई का दौरा शामिल था। प्रतिभागियों ने बुनाई तकनीक, सामग्री में बदलाव और इन वस्त्रों को बनाने में आवश्यक कौशल के बारे में जाना, और कई लोगों ने पांचा तौलिए बुनने का अनुभव भी लिया।

इस पहल का आयोजन इन्टैक जीवन सदस्य गोवर्धन चातला ने किया, सह-संयोजक श्वेता कोठवले और संयोजक प्रो. नरेंद्र कातिकर ने समन्वय किया। इसमें संस्थापक सदस्य डॉ. सीमांतीनी चाफळकर, प्रो. भीमगोंडा पाटिल, अनीता धोबले, रुपाली धामणे, श्रीरंग रेगोती, नितिन अणवेकर, शीतल बिराजदार और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम को प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक कवरेज मिला।

अध्याय को बैंक ऑफ इंडिया के ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरएसईटीआई), सोरेगाव ने सोलापुर जिले के 25 प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत के लिए आमंत्रित किया। सह-संयोजक आर्किटेक्ट श्वेता कोठवले और आर्किटेक्ट पुष्पांजलि कातिकर ने स्थानीय विरासत का दस्तावेज बनाने और संरक्षित करने के महत्व पर जोर दिया और प्रशिक्षुओं को पारंपरिक कला, शिल्प, भोजन और त्योहारों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर, अध्याय ने सोलापुर मुख्य डाकघर के लिए एक हेरिटेज वॉक आयोजित की, जिसमें स्टाफ, विरासत प्रेमी और इन्टैक सदस्य शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई, उसके बाद गांधी प्रतिमा तक मार्च किया गया। डॉ. नरेंद्र कातिकर और आर्किटेक्ट श्वेता कोठवले ने भवन के इतिहास और महत्व का परिचय दिया, जबकि संस्थापक संयोजक डॉ. सीमांतीनी चाफळकर ने इसके वास्तुशिल्प और निर्माण सामग्री का विवरण देते हुए भ्रमण कराया। कार्यक्रम का समापन जलपान के साथ हुआ और वरिष्ठ डाक अधीक्षक व वरिष्ठ अधीक्षक को ब्रोशर और धन्यवाद पत्र प्रदान किए गए।

24 अगस्त को, अध्याय ने आजीवन सदस्य नितिन अणवेकर के नेतृत्व में एक किला वॉक का आयोजन किया, जिसमें 70 से अधिक विरासत प्रेमी शामिल हुए। प्रतिभागियों ने हत्ती दरवाजा, शहर दरवाजा, पद्मावती बुर्ज, निशान बुर्ज, राणा मंडला, कैद-खाना, हत्ती-काना, कपिलसिद्धमल्लिकार्जुन मंदिर और बत्तीसखंबी मस्जिद सहित महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण किया और किले के 500 साल के इतिहास की जानकारी प्राप्त की।

अध्याय को शहर की विरासत पर चर्चा के लिए लोकमत डेली द्वारा भी आमंत्रित किया गया, जिसका नेतृत्व पत्रकार श्री जलकोटकर ने किया और संपादक श्री मिलिंद कुलकर्णी ने सहयोग दिया। संस्थापक संयोजक डॉ. सीमांतीनी चाफळकर, संयोजक डॉ. नरेंद्र कातिकर, सह-संयोजक आर्किटेक्ट श्वेता कोठवले और जीवन सदस्य नितिन अणवेकर ने इस सत्र में भाग लिया।

आर्किटेक्ट श्वेता कोठवले ने वालचंद इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के द्वितीय वर्ष के सिविल इंजीनियरिंग छात्रों को भारत की विरासत पर व्याख्यान दिया। उन्होंने निर्मित विरासत, दस्तावेजीकरण, सूचीकरण और पुनर्स्थापन प्रक्रियाओं पर जोर दिया। इसके बाद छात्र आर्किटेक्ट कोठवले और नितिन अणवेकर के मार्गदर्शन में किले का भ्रमण कर स्मारकों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। इसमें संयोजक डॉ. कातिकर और प्रो. झावेरी का भी सहयोग रहा।

ओडिशा

24 जुलाई को टीम ने जाजपुर का दौरा किया और अध्याय सदस्यों तथा संयोजक प्रो. अनिल कुमार मोहंती से भेंट की। अध्याय को सभी विरासत संरचनाओं की नई, विस्तृत सूची बनाने और 2024 के दिशा-निर्देशों का पालन करने की सलाह दी गई, जिसमें तीन साल का संयोजक कार्यकाल और सहमति से नेतृत्व परिवर्तन शामिल है। सदस्यों से कहा गया कि वे विरासत के रक्षक बनें और नए सदस्यों को जोड़कर, कॉलेजों में हेरिटेज क्लब शुरू करके और मासिक विरासत वॉक आयोजित करके जागरूकता बढ़ाएँ। अध्याय को स्थानीय उद्योगों से सीएसआर सहायता लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया, जिसमें राज्य अध्याय समर्थन करेगा। इसके बाद टीम बालासोर जिले गई जहां उनहोंने पूर्व नीलगिरी राज्य के श्री जगदीश चंद्र हरिचंदन मर्दराज से मुलाकात की।

नीलगिरी और ओउपाड़ा तहसीलों में विरासत स्थलों की विस्तृत सूची तैयार करने के लिए सहयोग प्रदान किया गया। अयोध्या साइट संग्रहालय, जो बौद्ध और जैन परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, में हुई चोरी की घटनाओं को उच्च अधिकारियों के ध्यान में लाया जाएगा।

मयूरभंज में टीम ने कप्तिपदा क्षेत्र के विरासत स्थलों की जानकारी जुटाई और बाद में बेलगड़िया पैलेस में महाराजा और महारानी से भेंट की। प्रमुख मुद्दों में दो सदियों पुराने मयूरभंज पैलेस को ध्वस्त करने के प्रस्ताव, जुबिली लाइब्रेरी की जर्जर स्थिति, मयूरभंज छाऊ नृत्य के संरक्षण हेतु समर्थन और स्थानीय शिल्प जैसे तुस्सर हथकरघा और साबई घास का संरक्षण शामिल थे। श्री अनिल धीर ने मयूरभंज जिले की व्यापक विरासत सूची तैयार करने और इसे भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को प्रस्तुत करने की योजना साझा की, ताकि संरक्षण प्रयास मजबूत हों। 25 जुलाई को बेलगड़िया पैलेस में संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई, जिसमें इन्टैक ओडिशा ने मयूरभंज जिले के सभी विरासत स्थलों की व्यापक सूची बनाने की पहल की घोषणा की। एक विशेष दस्तावेजी संकलन राष्ट्रपति को प्रस्तुत किया जाएगा, जो इस जिले की मूल निवासी हैं।

राज्य संयोजक और सह-संयोजक बालासोर अध्याय के सदस्यों के साथ रेड चर्च (1866) की विरासत का निरीक्षण – ओडिशा राज्य अध्याय

बालासोर अध्याय की बैठक में राज्य संयोजक, सह-संयोजक और सदस्यगण – ओडिशा राज्य अध्याय

16वां स्थापना दिवस – अध्याय बुलेटिन का विमोचन – बालासोर अध्याय

26 जुलाई को अमरदा रोड एयरफील्ड में 1945 की प्रशिक्षण दुर्घटना में शहीद हुए 14 सहयोगी वायुसेनाओं की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इन्टैक सह-संयोजक श्री अनिल धीर के नेतृत्व में यह कार्यक्रम मयूरभंज के महाराजा और महारानी, स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, छात्र और नागरिकों की उपस्थिति में हुआ। श्री धीर ने स्थानीय कला और छाऊ नृत्य को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक रसगोविंदपुर उत्सव आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा। इसके बाद टीम ने बालासोर अध्याय का दौरा किया, जहां सदस्यों को 2024 के दिशा-निर्देश, नेतृत्व परिवर्तन, हेरिटेज क्लब बनाने, मासिक वॉक और विरासत खतरों की रिपोर्टिंग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने लाल गिरिजा (रेड चर्च, 1866) का निरीक्षण किया और अनधिकृत बदलावों के कारण उसके पुनरुद्धार और सीएसआर प्राप्त करने पर चर्चा की।

भद्रक में सह-संयोजक ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए जीपीएस विवरण सहित अद्यतन सूची, सदस्यता विस्तार, मूर्ति-चोरी के प्रति सतर्कता तथा छात्रों की सक्रिय भागीदारी पर विशेष जोर दिया। डॉ. भगवत त्रिपाठी ने तीन सूचीबद्ध मूर्तियों की चोरी की जानकारी साझा की। अध्याय ने हेरिटेज क्लब स्थापित करने और नियमित हेरिटेज वॉक आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की।

भद्रक

अध्याय ने अपना निवेश समारोह 12 अगस्त को नित्यानंद भवन में आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता संयोजक दिगंबर मोहंती ने की और सह-संयोजक एस.एम. फ़ारूक़ ने समन्वय किया। इसमें 15 नए साधारण सदस्यों को शामिल किया गया तथा 11 सदस्यों को आजीवन सदस्यता प्रदान की गई। दिल्ली मुख्यालय द्वारा जारी पहचान-पत्र और लोगो वितरित किए गए तथा सदस्यों ने इन्टैक प्रतिज्ञा ली। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

बालासोर

अध्याय ने बालासोर आर्ट एंड क्राफ्ट्स कॉलेज और बालासोर आर्टिस्टिक क्राफ्ट्स स्कूल के सहयोग से 27 अप्रैल से 4 मई तक स्कूली छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया। इसमें 72 छात्रों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को क्ले मॉडलिंग, ग्लास पेंटिंग, ओरिगामी, ब्लॉक पेंटिंग, स्केचिंग और चित्रकला का प्रशिक्षण दिया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

17 अगस्त को सिधि विनायक पब्लिक स्कूल, बालासोर में इन्टैक अखिल भारतीय विरासत प्रश्नोत्तरी का आयोजन हुआ, जिसमें नौ स्कूलों के 90 छात्रों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी के मौखिक राउंड का संचालन क्विज़ मास्टर श्री वी. उदय कुमार ने किया। डीएवी पब्लिक स्कूल की विजेता टीम भुवनेश्वर में होने वाले क्षेत्रीय दौर के लिए चयनित हुई।

अध्याय ने 5 सितंबर को उद्योग भवन में अपना 16वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संयोजक श्री उदय रंजन दास ने की। राज्य संयोजक श्री बिस्वजीत मोहंती और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी श्री ज्ञान रंजन दास मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, श्री बिनोद बिहारी पांडा को "शिक्षक गौरव सम्मान" दिया गया, विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए तथा अध्याय बुलेटिन परंपरा का विमोचन किया गया।

18–19 अक्तूबर को बालासोर आर्ट एंड क्राफ्ट्स कॉलेज में टेराकोटा शिल्प पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें सात स्कूलों के 33 छात्रों

ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री गोविंद चंद्र दास ने किया। प्रशिक्षण शिल्प व्याख्याताओं और एमवीए के छात्रों द्वारा दिया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिए गए और श्रेष्ठ तीन कृतियों को आगे मूल्यांकन हेतु एचईसीएस प्रभाग को भेजा गया।

कोरापुट

अध्याय ने राज्य अध्याय, जिला प्रशासन और सीओएटीएस के सहयोग से केरांग परियोजना सफलतापूर्वक पूरी की। बुनकर श्रीमती सेबती सिसा और मणि किरसानी ने केरांग वस्त्र के छह जोड़े तैयार किए और 18 अप्रैल को भुवनेश्वर में आयोजित बैठक में उन्हें सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर परियोजना प्रमुख श्री संजीब चंद्र होता ने अपनी पुस्तक *ओडिशा के कोरापुट जिले के गदाबा का केरंग वस्त्र* का विमोचन किया। अध्याय ने श्रीमती सेबती सिसा को 6वें मार्तंड सिंह स्मृति पुरस्कार 2024 के लिए नामित किया, जिसके तहत उन्हें इन्टैक के विरासत शिल्प और समुदाय प्रभाग से ₹20,000 की नकद राशि प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त, केरांग बुनाई प्रशिक्षण के लिए ₹23.85 लाख तथा एक समर्पित भवन के लिए ₹15.5 लाख की अनुदान राशि स्वीकृत हुई, जो संयोजक श्री अनिल धीर के प्रयासों से प्राप्त हुई और वर्तमान में परियोजना पर कार्य चल रहा है।

अध्याय ने अधिकारियों से कोरापुट सर्किल जेल की उस सौ वर्ष पुरानी कोठरी के जीर्णोद्धार का आग्रह किया, जहाँ स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मण नायक को बेरहामपुर जेल ले जाने से पहले रखा गया था। 29 मार्च 1943 को उन्हें वहीं फांसी दी गई थी।

गुरु दिवस मनाते हुए – कोरापुट अध्याय

संयोजक अजीत पात्रा ने सेल के ऐतिहासिक महत्व और उसकी उपेक्षित स्थिति पर प्रकाश डालते हुए इसे पुस्तकालय, मूर्ति तथा फोटो गैलरी सहित एक *हेरिटेज कॉर्नर* के रूप में पुनर्स्थापित करने का सुझाव दिया। इन्टैक ने मूल संरचना को सुरक्षित रखते हुए नवीनीकरण कार्य का समन्वय करने की पेशकश की। उन्होंने कहा कि ऐसे स्थलों का संरक्षण स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान देने के साथ-साथ जनता में गर्व की भावना पैदा करता है। जेल अधीक्षक कुआंर मरांडी ने बताया कि हालांकि सेल प्रयोग में नहीं है, परंतु इसमें नायक का फोटो और बल्ब लगातार जलता रहता है, और इसके नवीनीकरण का प्रस्ताव उच्च अधिकारियों के पास भेजा जाएगा।

अध्याय ने कोट्स और फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सोसाइटी (एफईएस) के सहयोग से 9 अगस्त 2025 को कोट्स सेमिनार हॉल में विश्व आदिवासी दिवस आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी जरूरतों पर जागरूकता बढ़ाना और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाले आदिवासी नेताओं के परिवारों को सम्मानित करना था।

कोरापुट जिले के गदाबा समुदाय की केरांग वस्त्र निर्माण परंपरा – कोरापुट अध्याय

मुख्य अतिथि प्रो. मगुनी चरण बेहरा ने दिवस के महत्व और आदिवासी जनसंख्या की प्रगति पर प्रकाश डाला, जबकि अन्य वक्ताओं ने आदिवासी सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और आदिवासी विकास में एआई के संभावित उपयोग पर जोर दिया। स्वतंत्रता सेनानी शहीद दुर्लभ होंटाल के पुत्र श्री बनु बिहारी होंटाल को सम्मानित किया गया और कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

5 सितंबर को, अध्याय ने जेयपोर सरकारी हाई स्कूल में *गुरु दिवस* मनाया, जिसमें आदिवासी अध्ययन में योगदान देने वाले सेवानिवृत्त शिक्षकों और शोधकर्ताओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में विधायक श्री तारा प्रसाद बहिनिपाटी उपस्थित थे और प्रो. पी.सी. मोहापात्र ने अध्यक्षता की। प्रो. मगुनी चरण बेहरा, डॉ. सुभाष चंद्र मिश्रा और चार सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षकों सहित विद्वानों और शिक्षकों को सम्मानित किया गया। डॉ. परेश कुमार रथ द्वारा स्वतंत्रता सेनानी गदाधर मोहापात्र पर लिखी दो पुस्तकों का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में इन्टैक द्वारा कोरापुट की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयासों को भी उजागर किया गया और अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पंजाब

गुरमत संगीत के 13वीं पीढ़ी के साधक भाई बलदीप सिंह ने 24 मई को एक संगोष्ठी आयोजित की। उन्होंने सिख पवित्र संगीत, गुरबाणी के राग-आधारित गायन और रबाब, सरंदा तथा ताऊस जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों के पुनर्जीवन पर अपने शोध और अनुभव साझा किए। उन्होंने इस अमूर्त विरासत के ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और शैक्षिक महत्व पर विस्तार से

अमूर्त संस्कृति पर संगोष्ठी – पंजाब राज्य अध्याय

सारागढ़ी प्रसिद्ध नायक लाल सिंह, धुन ढाईवाला गाँव के विरासत कुएँ का संरक्षण – पंजाब राज्य अध्याय

प्रकाश डाला और स्पष्ट किया कि उनके ये निष्कर्ष भारत और पाकिस्तान में किए गए उनके दीर्घकालिक शोध पर आधारित हैं।

जून माह में 1839 में निर्मित फिरोज़पुर किला, जो अपनी तीन-स्तरीय रक्षा व्यवस्था और 1857 के सिपाही विद्रोह में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के लिए प्रसिद्ध है, सेना के अधिकारियों के प्रयासों से 200 से अधिक वर्षों बाद पहली बार आम जनता के लिए खोला गया। यह किला रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण था और दिल्ली के लाल किले को दोबारा अपने कब्जे में लेने के लिए अंग्रेजों के शस्त्रागार केंद्र के रूप में भी उपयोग किया गया था।

सुल्तानपुर लोधी, जो भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है, को गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं से प्रेरित होकर सर्वधर्म सौहार्द और सार्वभौमिक भाईचारे के केंद्र के रूप में पुनर्जीवित किया जा रहा है। यह शहर पहली शताब्दी ईस्वी में स्थापित माना जाता है और दिल्ली सल्तनत व लोधी वंश के काल में विशेष ऐतिहासिक महत्व रखता था। गुरु नानक देव जी यहाँ 14 वर्ष से अधिक समय तक रहे और काली बेन नाले में अपने परिवर्तनकारी अनुभव के बाद 'ना कोई हिंदू, ना मुसलमान' का संदेश दिया, जो मानव-एकता और समानता की भावना पर जोर देता है। इन्टैक पंजाब, मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) बलविंदर सिंह के नेतृत्व में, सुल्तानपुर लोधी की विरासत का संरक्षण कर रहा है, जिसमें ऐतिहासिक गुरुद्वारे, लोधी कालीन संरचनाएँ और पुनर्जीवित काली बेन शामिल हैं। इसके साथ ही शहर की आध्यात्मिक और ऐतिहासिक कहानी साझा करने के लिए सांस्कृतिक हेरिटेज वॉक और स्थानीय मार्गदर्शक प्रशिक्षण भी आयोजित किए जा रहे हैं।

होशियारपुर जिले में, इन्टैक पंजाब अध्याय ने गुरु गोबिंद पब्लिक स्कूल, नैनोवाल वैद के सहयोग से डोलबाहा युद्ध स्मारक को अपनाने और संरक्षित करने की योजना की घोषणा की, ताकि पंजाब के अल्प ज्ञात सैन्य इतिहास को उजागर किया जा सके। डोलबाहा गांव ने प्रथम विश्व युद्ध में 73 सैनिक दिए थे, जो अपने आकार के लिए अद्भुत संख्या है, जबकि आधिकारिक रिकॉर्ड में केवल दो के नाम ही दर्ज हैं। इन्टैक का उद्देश्य इन सैनिकों का सही दस्तावेज़ बनाना और उनकी याद को संजोना है। साथ ही, स्मारक पर एक छोटा संग्रहालय बनाने और पंजाब की सैन्य विरासत को सुरक्षित रखने के लिए एक सैन्य इतिहास विंग स्थापित करने की योजना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस विरासत को जान सकें और उससे जुड़ सकें।

इन्टैक ने सारागढ़ी ढाई ढूँ और उससे जुड़े विरासत स्थलों को सुरक्षित रखने के लिए भी काम किया है। 12 सितंबर 1897 को नायक लाल सिंह और 36वीं सिख रेजिमेंट के 21 सिख सैनिकों ने सरगढ़ी चौकी की रक्षा करते हुए 10,000 से अधिक अफगान हमलावरों का सामना करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। इन्टैक तरन तारन की संयोजक डॉ. बलजीत कौर और राज्य संयोजक मेजर जनरल बलविंदर सिंह के मार्गदर्शन में, ढूँ ढाईवाला गांव की पंचायत और स्वयंसेवकों ने नायक लाल सिंह की जमीन पर स्थित ऐतिहासिक कुएँ की सफाई और मरम्मत हाथ से की। खुदाई के दौरान मिट्टी की पुरानी बाल्टी मिलने से इस कुएँ की प्राचीनता की पुष्टि हुई। कुएँ के पास नायक लाल सिंह युद्ध स्मारक है, जहाँ हर साल 2,000 से ज़्यादा लोग शहीदों को श्रद्धांजलि देने आते हैं। इन सभी शहीदों को मरणोपरांत भारतीय ऑर्डर ऑफ़ मेरिट मिला था, जो उस समय का सबसे बड़ा वीरता सम्मान था। इन्टैक की यह पहल सुनिश्चित करती है कि यह वीर गाथा और इससे जुड़े विरासत स्थल आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें।

पंजाब का पहला सैन्य विरासत स्थल असाल उत्तर युद्ध स्मारक एवं संग्रहालय 30 सितंबर को राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया द्वारा, लेफ्टिनेंट जनरल मनोज कुमार कटियार की उपस्थिति में, राष्ट्र को समर्पित किया गया। खेमकरण सेक्टर में स्थित यह स्थल सितंबर 1965 की निर्णायक असाल उत्तर की लड़ाई को समर्पित है, जिसमें भारतीय सेना ने पाकिस्तानी टैंकों के बड़े हमले को विफल किया और यह युद्धक्षेत्र 'पैटन टैंकों का कब्रिस्तान' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्मारक में बड़की (1965) और सेहजरा (1971) जैसी अन्य महत्वपूर्ण लड़ाइयों का भी उल्लेख है तथा सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद जैसे वीर सैनिकों की बहादुरी को दर्शाया गया है, जिन्हें मरणोपरांत परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया। मेजर जनरल बलविंदर सिंह के नेतृत्व में इन्टैक, भारतीय सेना के सहयोग से, इस स्थल को एक ऐसा सैन्य विरासत केंद्र बना रहा है जहाँ निर्देशित भ्रमण, शैक्षिक कार्यक्रम और सामुदायिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी।

गुरदासपुर जिले के गांव सरवाली में प्रथम विश्व युद्ध के शहीद हवलदार काला सिंह और सिपाही हजारा सिंह (45 रैट्रे सिख) की 107वीं और 108वीं शहादत बरसी पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया। इन्टैक पंजाब के संयोजक मेजर जनरल बलविंदर सिंह, वीएसएम (सेवानिवृत्त) ने उनके बलिदान को स्मरण किया और युवाओं से पंजाब की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा भारतीय सेना में अवसरों पर विचार करने का आग्रह किया। 4 सिख (सरागढ़ी) बटालियन द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और विशेष अतिथि कुंवर अमृतबीर सिंह ने युवाओं को अनुशासन और फिटनेस के लिए प्रेरित किया।

इसके अतिरिक्त, 7 नवंबर को इन्टैक पंजाब ने आर्मी पब्लिक स्कूल, ब्यास में राज्य स्तरीय संस्कृति एवं विरासत प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया, जिसमें 11 जिलों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्मित, प्राकृतिक, जीवित और सैन्य विरासत के साथ-साथ पंजाब के सांस्कृतिक इतिहास से जुड़े प्रश्न शामिल थे। स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल, अमृतसर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और वह राष्ट्रीय स्तर पर पंजाब का प्रतिनिधित्व करेगा। द्वितीय स्थान एमजीएन पब्लिक स्कूल, कपूरथला और तृतीय स्थान जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल, संगरूर को मिला। मेजर जनरल सिंह ने युवाओं को पंजाब की विशिष्ट सांस्कृतिक और सैन्य विरासत से परिचित कराने के महत्व पर जोर दिया।

पंजाब बाढ़ राहत अभियान में सदस्यों की भागीदारी – अमृतसर अध्याय

विश्व पर्यटन दिवस मनाते हुए: अमृतसर के अल्प ज्ञात ऐतिहासिक स्थलों का दौरा – अमृतसर अध्याय

नेशनल हेरिटेज क्विज़, सिटी राउंड, दिल्ली पब्लिक स्कूल, अमृतसर – अमृतसर अध्याय

अमृतसर

अध्याय ने 9 जून को शहर की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को समझने के लिए एक हेरिटेज वॉक का आयोजित किया, जिसमें स्थानीय नागरिकों और लगभग 50 स्कूल शिक्षकों ने भाग लिया। वॉक की शुरुआत टाउन हॉल स्थित विभाजन संग्रहालय से हुई, जहाँ संयोजक गगनदीप सिंह विर्क ने प्रतिभागियों को अमृतसर की विरासत की रक्षा की शपथ दिलाई।

गुरविंदर जोहल के मार्गदर्शन में आयोजित इस वॉक में वास्तुकला और सांस्कृतिक धरोहर स्थलों को दिखाया गया, जबकि इतिहासकार सुरिंदर कोछर ने शहर के अतीत पर अपने विस्तृत शोध से जुड़ी जानकारी साझा की। इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों को अमृतसर की विरासत से परिचित कराना था, ताकि वे छात्रों को इसे समझने, सराहने और संरक्षित करने के लिए प्रेरित कर सकें तथा युवा पीढ़ी में जागरूकता और गर्व की भावना विकसित हो।

पंजाब में आई भीषण बाढ़ पर अध्याय ने त्वरित प्रतिक्रिया दी। बाढ़ से 8 से 14 जिले और 1,000 से अधिक गांव प्रभावित हुए, अज्नाला–रामदास क्षेत्र के लगभग 40 गांव जलमग्न हो गए और करीब तीन लाख एकड़ फसल नष्ट हो गई। हजारों परिवार बेघर हुए, स्कूल बंद हुए और जनजीवन प्रभावित हुआ। अध्याय ने स्थानीय संस्थाओं और स्वयंसेवकों के साथ मिलकर राहत कार्य शुरू किए, जिनमें भोजन, पानी, दवाइयाँ, तिरपाल और पशु चारा वितरित किया गया। साथ ही, कारीगरों के नुकसान का दस्तावेजीकरण और विरासत संरचनाओं को हुए नुकसान का आकलन भी किया जा रहा है। इन्टैक अमृतसर समुदाय की जरूरतों को पूरा करते हुए और पंजाब की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हुए राहत और पुनर्वास कार्यों के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है।

अध्याय ने 18 अगस्त को दिल्ली पब्लिक स्कूल, अमृतसर में नेशनल हेरिटेज क्विज़ के सिटी राउंड का आयोजन किया। संयोजक श्री गगनदीप सिंह विर्क ने बताया कि इसमें 14 स्कूलों के 130 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता पहले लिखित राउंड में हुई, जिसके बाद विरासत क्विज़ मास्टर श्री मुहम्मद बिलाल फारूकी द्वारा मौखिक राउंड कराया गया।

अंतिम राउंड में स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल विजेता रहा और सौरिश नागपाल तथा सेहजनूर कौर स्टेट लेवल के लिए चयनित हुए। डीएवी पब्लिक स्कूल ने दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल, डीएवी पब्लिक स्कूल, दिल्ली पब्लिक स्कूल अमृतसर, हॉवर्ड लेन सीनियर स्कूल, आर्मी पब्लिक स्कूल अमृतसर, संत ज्ञानी गुरबचन सिंह जी खालसा अकादमी, डीएवी इंटरनेशनल स्कूल, पाथसीकर्स, निशान-ए-सिखी इंटरनेशनल स्कूल, भारतीय विद्या भवन एस.एल. पब्लिक स्कूल, होली हार्ट प्रेसिडेंसी स्कूल, बीएएस रिआर्की पब्लिक स्कूल और खालसा कॉलेज इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल शामिल हुए।

इतिहासकार श्री सुरिंदर कोछर ने अमृतसर की विरासत को संरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला, जबकि प्रधानाचार्य श्री कमल चंद ने इन्टैक की इस पहल की सराहना की। कार्यक्रम का समापन विजेता टीमों के सम्मान और प्रधानाचार्य श्री कमल चंद तथा श्री सुरिंदर कोछर को विशेष सम्मान प्रदान करने के साथ हुआ।

अध्याय ने पंजाब फाउंडेशन, इन्टैक पंजाब और विशेष संस्थाओं के सहयोग से विश्व पर्यटन दिवस पर अमृतसर के कम प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों की हेरिटेज वॉक आयोजित की। यह यात्रा संयोजक श्री गगनदीप सिंह विर्क के नेतृत्व में और इतिहासकार श्री सुरिंदर कोछर के मार्गदर्शन में हुई। प्रतिभागियों ने सराय अमानत ख़ान, बावली, दीवान टोडरमल का तालाब, प्राचीन हवेलियाँ, कोस मीनार, शम सिंह अटारीवाला की समाधि और महाराजा शेर सिंह के परिवार के पैतृक घर का भ्रमण किया। छात्रों और विरासत प्रेमियों को इन स्थलों के इतिहास और वास्तुकला की महत्वपूर्ण जानकारी मिली। विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों और स्कूल समूहों की भागीदारी ने विरासत संरक्षण के लिए अनुभवात्मक शिक्षा और जन-जागरूकता के महत्व को रेखांकित किया।

इसके अलावा, पंजाब के रामदास के पास, नरोवाल जाने वाले पुराने मार्ग पर, बाबा बूढ़ा साहिब जी के काल के माने जाने वाले दो ऐतिहासिक कुओं की पुनः खोज की गई। गुरुद्वारा बाबा बूढ़ा साहिब जी (समाध) के निकट स्थित ये कुएँ 20 अक्तूबर को इन्टैक पंजाब, इन्टैक अमृतसर और रंधावा परिवार के संयुक्त प्रयास से उजागर हुए। कार्य की शुरुआत अरदास और कड़ाह प्रसाद वितरण के साथ की गई, जिससे सिख परंपरा का सम्मान किया गया। इस पहल का उद्देश्य इन लंबे समय से भूले-बिसरे ढांचों का संरक्षण और पुनर्स्थापन कर पंजाब की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ाव को मजबूत करना है। परियोजना की प्रगति से जुड़े अपडेट आगे भी साझा किए जाएंगे, और जो लोग सहयोग करना चाहें, उनका स्वागत है।

क्विज़ प्रतियोगिता में प्रतिभागी – बठिंडा अध्याय

बठिंडा

अध्याय ने 9 अक्तूबर को लॉर्ड रामा स्कूल में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें सात स्कूलों के 98 छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में सिल्वर ओक स्कूल के शिवम गुडारा और तृषत विजेता रहे। पुरस्कार कोलकाता से आए श्री जगजीत सिंह चौहान द्वारा प्रदान किए गए।

फिरोजपुर

22 अगस्त को डीसी मॉडल इंटरनेशनल स्कूल में इन्टैक हेरिटेज क्विज़ का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिष्ठित स्कूलों के 82 छात्रों ने भाग लिया। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित इस क्विज़ में इतिहास, संस्कृति, स्मारक, परंपराएँ और संरक्षण से जुड़े प्रश्न पूछे गए। डैस एंड ब्राउन वर्ल्ड स्कूल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुआ। कार्यक्रम से छात्रों में सीखने का उत्साह और विरासत के प्रति गर्व बढ़ा।

अध्याय द्वारा सारागढी स्मारक में आए विदेशी प्रतिनिधि का स्वागत – फिरोजपुर अध्याय

इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता में प्रतिभागी – होशियारपुर अध्याय

जालंधर सत्र में सदस्य और स्थानीय गणमान्य व्यक्ति – जालंधर अध्याय

होशियारपुर

गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल, नैनोवाल वैद में होशियारपुर के लिए इन्टैक राष्ट्रीय हेरिटेज क्विज आयोजित की गई, जिसमें सात स्कूलों के 76 छात्रों ने भाग लिया। उत्कृष्ट टीमवर्क और ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए जीजीपीएस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जालंधर

जालंधर सत्र में कई प्रमुख स्थानीय हस्तियाँ उपस्थित रहीं, जिनमें श्री प्रेम सिंह (अध्यक्ष, गुरु मिशन हॉस्पिटल), ले. जनरल अमरिक बाहिया, ले. जनरल गुरदीप सिंह, मेजर जनरल मंजीत सिंह, मेजर जनरल जेडीएस बेदी, ब्रिगेडियर टी. एस. संधू, कुलबीर सिंह (पूर्व आईजीपी), रश्मिमा सिंह (इंटीरियर डेकोरेटर), प्रधानाचार्य हरजीत सिंह तथा गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल के प्राचार्य शामिल थे।

अमरदीप सिंह और उनकी पत्नी विनिंदर कौर ने रूपक: गुरु नानक की यात्राओं का एक ताना-बाना नामक 24 एपिसोड की एक डॉक्यूमेंट्री श्रृंखला तैयार की है, जिसे नौ देशों में बहुधार्मिक स्थलों पर फिल्माया गया है और जो पाँच भाषाओं में TheGuruNanak.com पर उपलब्ध है। इस श्रृंखला के लिए अमरदीप सिंह को 2022 में हॉफस्ट्रा यूनिवर्सिटी (अमेरिका) से 8वाँ द्विवार्षिक इंटरफेथ अवॉर्ड मिला। वर्तमान में, वे विविधता में एकता परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसके तहत गुरु नानक और भक्ति काल के संतों पर आधारित बहुभाषी (अंग्रेज़ी, हिंदी, पंजाबी) ऑडियो-विजुअल शैक्षणिक सामग्री तैयार की जा रही है। यह परियोजना सार्वभौमिक सौहार्द और सामाजिक समरसता के संदेश को उजागर करती है, जिसमें पारंपरिक संगीत शास्त्र के अनुसार 1,653 शब्दों के रूपकात्मक अनुवाद शामिल हैं।

क्विज़ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए – कपूरथला अध्याय

जालंधर अध्याय ने 6 नवंबर को नकोदर में जिला स्तरीय इन्टैक हेरिटेज क्विज़ आयोजित की, जिसमें आठ स्कूलों की 39 टीमों के कुल 78 छात्रों ने भाग लिया। एआई इंटरनेशनल स्कूल, नकोदर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कपूरथला

5 नवंबर को अध्याय द्वारा क्विज़ प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 8 स्कूलों के कुल 82 छात्रों ने भाग लिया। एमजीएन कपूरथला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मलेरकोटला

27 अक्तूबर को अध्याय ने राष्ट्रीय विरासत क्विज़ 2025 का आयोजन किया, जिसमें लिखित और मौखिक दोनों राउंड शामिल थे। विभिन्न स्कूलों के 80 छात्रों ने लिखित राउंड में भाग लिया, जिनमें से शीर्ष पाँच टीमों ने मौखिक राउंड के लिए योग्यता प्राप्त की। अल-फलाह पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम और द्वितीय दोनों स्थान हासिल किए। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल प्रधानाचार्य श्रीमती रेहाना नक़वी के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों, अभिभावकों और इन्टैक टीम का अभिनंदन किया। स्थानीय पत्रकार भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अध्याय संयोजक डॉ. सलीम मोहम्मद ने विजेताओं और सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ छात्रों को प्रेरित करती हैं। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिए गए, जबकि विजेताओं को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र और सामान्य ज्ञान की पुस्तकें प्रदान की गईं। कार्यक्रम का समापन सह-संयोजक श्री साबिर अली ज़ुबैरी के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

पटियाला अध्याय की वार्षिक बैठक में सदस्य – पटियाला अध्याय

हेरिटेज क्विज़ के विजेता – पटियाला अध्याय

पटियाला

23 अगस्त को अध्याय ने गवर्नमेंट मल्टीपरपज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पटियाला में छात्रों के लिए दो प्रेरक व्याख्यान आयोजित किए, जिनका उद्देश्य मूल्यों को विकसित करना और समृद्ध विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रसिद्ध कलाकार सुखपाल सिंह ने हमारी सांस्कृतिक परंपराओं में निहित अच्छे मूल्यों को अपनाने पर ज़ोर दिया। प्राचार्य विजय कपूर ने सादगी, मेहनत, पौष्टिक भोजन, बड़ों का सम्मान और ज़रूरतमंदों की सहायता जैसे मूल्यों को संरक्षित रखने की आवश्यकता बताई। संयोजक श्री सरबजीत सिंह वीर्क ने पर्यावरणीय जिम्मेदारी पर छात्रों को संबोधित करते हुए प्रदूषण कम करने और प्रकृति की रक्षा करने का आह्वान किया, ताकि स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।

अध्याय ने स्कूल सभागार में राष्ट्रीय विरासत क्विज़ 2025 का भी आयोजन किया। क्विज़ मास्टर परमवीर सिंह और हसप्रीत कौर ने प्रतियोगिता का संचालन किया। सात स्कूलों के 62 छात्रों ने इसमें भाग लिया। लिखित परीक्षा के आधार पर टीमों का चयन मौखिक राउंड के लिए किया गया। ब्रिटिश को-एड हाई स्कूल की पर्णिका और प्रभासिस सिंह की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्य सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का समापन अधिवक्ता जतिंदर सिंह सराओ के धन्यवाद-ज्ञापन और छात्रों के लिए अल्पाहार के साथ हुआ।

पटियाला अध्याय की वार्षिक बैठक, 23 अगस्त को पटियाला बारादरी क्लब में वरिष्ठ सदस्य लालजीत सिंह संधू की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में सदस्यों ने अध्याय द्वारा चलाए जा रहे विरासत संरक्षण अभियानों की समीक्षा की। संयोजक सरबजीत सिंह वीर्क ने पिछले वर्ष की गतिविधियों — जैसे सेमिनार, कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ और शैक्षणिक व अन्य संस्थानों में विशेष व्याख्यान का विवरण प्रस्तुत किया। चर्चा में भावी योजनाओं पर भी ध्यान दिया गया, जिनमें विरासत स्थलों पर स्वच्छता अभियान और पटियाला जिले के ग्रामीण क्षेत्रों तक अध्याय की गतिविधियों का विस्तार शामिल है। बैठक का समापन वरिष्ठ सदस्य रीत इक़बाल सिंह मझैल के धन्यवाद-ज्ञापन और इन्टैक के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के निरंतर प्रयासों के आह्वान के साथ हुआ।

संगरूर

अध्याय ने 8 अक्तूबर को जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल में हेरिटेज क्विज प्रतियोगिता 2025 का आयोजन किया। स्कूल बंद रहने और बाढ़ के कारण तिथि कई बार बदली गई। लिखित राउंड में 11 स्कूलों के कुल 140 छात्रों ने भाग लिया।

मौखिक राउंड के चार टीमें लिए चुनी गईं, जिनमें तीन टीमें जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल से और एक टीम रोज़मेरी स्कूल से थी। सात मौखिक राउंड के बाद पहला और दूसरा स्थान दोनों जनरल गुरनाम सिंह पब्लिक स्कूल की टीमों ने प्राप्त किया। यह कार्यक्रम शिक्षकों की निगरानी में आयोजित किया गया, जिसमें छात्र क्विज़ मास्टर और स्कोरर की भूमिका निभा रहे थे। यह आयोजन तरन तारन ज़िले के खेमकरण में संपन्न हुआ। स्मारक और संग्रहालय का उद्घाटन पंजाब के राज्यपाल और पश्चिमी सेना कमांडर द्वारा किया गया, जिससे क्षेत्र की ऐतिहासिक सैन्य विरासत को उजागर किया गया।

तरन तारन

30 अक्तूबर को तरन तारन अध्याय ने माझा पब्लिक स्कूल में एक हेरिटेज क्विज़ का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में 10 स्कूलों के 96 छात्रों ने भाग लिया। गुरु नानक एकेडमी की टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया, जिससे उनके सांस्कृतिक विरासत के प्रति ज्ञान और उत्साह का उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ।

भारत पाकिस्तान 1965 युद्ध की डायमंड जुबली के उपलक्ष्य में, सेना और इन्टैक ने संयुक्त रूप से तरन तारन जिले के खेमकरण में पंजाब का पहला सैन्य विरासत स्मारक और संग्रहालय स्थापित किया। इस स्मारक और संग्रहालय का उद्घाटन पंजाब के राज्यपाल और पश्चिमी सेना कमांडर द्वारा किया गया, जो क्षेत्र की ऐतिहासिक सैन्य विरासत को उजागर करता है।

क्विज़ प्रतियोगिता के प्रतिभागी और विजेता – तरन तारन अध्याय

भारत की समृद्ध विरासत पर क्विज़ प्रतियोगिता के आयोजक – अजमेर अध्याय

राजस्थान

अजमेर

अध्याय ने टर्निंग पॉइंट स्कूल में हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें 11 स्कूलों के 72 छात्रों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री नीरज त्रिपाठी, सर्कल सुपरिंटेंडेंट, अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण युवा पीढ़ी की जिम्मेदारी है और इसका राष्ट्रीय महत्व है। संयोजक श्री राजेश गर्ग ने मुख्य अतिथि का माला पहनाकर स्वागत किया और इन्टैक की विरासत से जुड़ी गतिविधियों की जानकारी दी। सह-संयोजक महेंद्र सिंह चौहान ने इन्टैक का प्रतीक चिह्न भेंट किया और विजय शर्मा ने ओढ़ाकर अभिनंदन किया। मौखिक राउंड का संचालन इन्टैक सदस्य अनिल लोधा ने किया और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

अलवर

12 जुलाई को अध्याय ने राजगढ़ ब्लॉक के श्री बाल कृष्ण उच्च माध्यमिक विद्यालय में वन महोत्सव मनाया, जिसका उद्देश्य बच्चों में प्राकृतिक विरासत के संरक्षण और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 300 छात्रों को घर पर लगाने के लिए पौधे वितरित किए गए। अध्याय ने विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर पर्यावरण विरासत क्लब की शुरुआत की और एक ट्री हंटिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की, जिसमें छात्रों ने विभिन्न वृक्ष प्रजातियों की पहचान कर उनके नाम बताए।

संयोजक सुनीता मित्तल ने छात्रों को पेड़ों की देखभाल के लिए प्रेरित किया और वनों की कटाई से होने वाले नुकसान, पेड़ों के लाभ तथा पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में वनों की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने यह भी समझाया कि वृक्षारोपण से वायु गुणवत्ता सुधरती है, तनाव कम होता है और घरों में सकारात्मक ऊर्जा आती है। कार्यक्रम में विद्यालय निदेशक सतीश सैनी, प्राचार्य योगेश शर्मा, शिक्षक, इन्टैक समन्वयक सुनीता मित्तल, सदस्य राजकुमार सैनी और लगभग 350 छात्र उपस्थित रहे। अंत में सभी छात्रों और शिक्षकों ने प्रकृति संरक्षण के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने की शपथ ली।

6 अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय भू-विविधता दिवस के अवसर पर अध्याय ने जैव विविधता पार्क में भू-विरासत वॉक और चर्चा का आयोजन किया। 'एक धरती, अनेक कहानियां' थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ संजीव करगवाल ने पृथ्वी की सामग्री, चट्टानों, मिट्टी, जीवाश्मों और खनिजों की जानकारी दी तथा अलवर की समृद्ध भू-रचना पर प्रकाश डाला। उन्होंने मानव गतिविधियों के जलवायु परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी रेखांकित किया। प्रतिभागियों को स्थानीय औषधीय पौधों और उन पर निर्भर जीव-जंतुओं की जानकारी मिली। इन्टैक संयोजक सुनीता मित्तल ने जैव विविधता को जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक बताया, जबकि सह-संयोजक बिजेंद्र सिंह नरुका ने अंत में सभी का धन्यवाद किया।

बारां

पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, राज्य संग्रहालय बारां ने इन्टैक बारां अध्याय के सहयोग से जयपुर निदेशालय के अंतर्गत हिंदी दिवस पर एक संगोष्ठी आयोजित की। कार्यक्रम में आधुनिक समय में हिंदी की प्रासंगिकता पर भैरूलाल भास्कर, प्रद्युम्न वर्मा, जितेंद्र कुमार शर्मा, संदीप सिंह जडौन, डॉ. मनोज सिंगोरिया, हरि अग्रवाल और हेमराज बंसल ने विचार रखे। इसके बाद काव्य पाठ का आयोजन हुआ।

बाड़मेर

अध्याय ने मोकलसर स्थित वैद्यनाथ महादेव मंदिर में कला एवं शिल्प कार्यशाला का आयोजन किया। रावल किशन सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में विरासत संरक्षण पर जोर दिया गया। उन्होंने कहा कि कला, संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है और

परंपरागत तकनीकों और शिल्प का प्रदर्शन – बाड़मेर अध्याय

1,000 साल पुराने पग बावड़ी का अध्ययन करते हुए मोकलसर के छात्र – बाड़मेर अध्याय

भू-विरासत वॉक और चर्चा – अलवर अध्याय

वन महोत्सव में पर्यावरणीय विरासत क्लब के साथ भाग लेने वाले प्रतिभागी – अलवर अध्याय

आधुनिक जीवनशैली के कारण इन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। यशोवर्धन शर्मा ने इन्टैक के उद्देश्यों, लोक परंपराओं और कला पर्यटन को बढ़ावा देने की बात कही। विक्रम सिंह ने उपेक्षित लगभग 1000 वर्ष पुरानी पाग बावड़ी के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। कारीगर भूरा राम आती और माला राम शोभाला जैतमाल गुडामलानी ने कंबल, दरी और अन्य हस्तशिल्प बनाने की पारंपरिक तकनीकों का प्रदर्शन किया। स्थानीय स्कूलों के 71 छात्रों ने भाग लिया और उन्हें प्रमाण-पत्र दिए गए। कार्यक्रम में इन्टैक सदस्य, स्थानीय प्रशासन, शिक्षक और ग्रामीण उपस्थित रहे।

भीलवाड़ा

जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश जैन ने विरासत और प्रकृति संरक्षण के लिए अध्याय के उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की और इन गतिविधियों में सक्रिय योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया। होटल नंदिनी में आयोजित मिलन समारोह में शिक्षकों को प्रमाण-पत्र और स्मृति चिह्न भेंट किए गए। संयोजक बाबूलाल जाजू ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। स्कूल प्रतियोगिता प्रभारी गुमान सिंह पिपाड़ा ने इन्टैक के उद्देश्यों और चल रही पहलों की जानकारी दी। कार्यक्रम समन्वयक सीए दिलीप गोयल ने मुख्य अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए, जबकि इन्टैक सदस्यों ने भविष्य में संरक्षण को मजबूत करने के लिए अपने सुझाव रखे।

अध्याय ने महेश्वरी पब्लिक स्कूल में विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस भी मनाया। इस अवसर पर संयोजक बाबूलाल जाजू ने ओज़ोन परत की रक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला और छात्रों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने तथा फ्रिज और एयर कंडीशनर के अत्यधिक उपयोग से बचने के लिए प्रेरित किया। पर्यावरण जागरूकता पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विजेताओं को प्रमाण-पत्र दिए गए। ओम नारायणिवाल, स्कूल अध्यक्ष ने भी छात्रों को स्वस्थ पर्यावरण के लिए सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

अध्याय ने वन्यजीव संरक्षण सप्ताह के तहत डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें तीन स्कूलों के 176 छात्रों ने भाग लिया। छात्रों ने अपनी चित्रकला के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण का संदेश दिया। इन्टैक संयोजक बाबूलाल जाजू ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वन्यजीव अत्यंत आवश्यक है और सभी को पशुओं तथा प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने स्कूल के परिसर में जामुन सहित कई पौधे भी लगाए। इन्टैक स्कूल गतिविधि प्रभारी गुमान सिंह पिपाड़ा और सुरेश सुराणा ने प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए। कक्षा 6–8 में कमला मीणा प्रथम, आकांक्षा लखारा द्वितीय और साक्षी खटीक तृतीय रहीं। कक्षा 9–10 में गायत्री रेगर प्रथम, दीपिका रेगर द्वितीय और संजना मीणा तृतीय रहीं। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए तथा छात्रों ने वन्यजीव संरक्षण की शपथ ली।

बूंदी

2 अक्तूबर को बूंदी में अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर राज्य संग्रहालय, सुखमहल में पुरातत्व विभाग और इन्टैक बूंदी अध्याय द्वारा संगोष्ठी और कविता पाठ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन पुलिस उपाधीक्षक अरुण कुमार शर्मा, सर्किल अधीक्षक हेमेन्द्र अवस्थी, जिला पर्यटन अधिकारी प्रेमशंकर सैनी और इन्टैक संयोजक राजकुमार दधीच ने किया। इन्टैक सदस्यों जे.पी. त्रिपाठी और ओमप्रकाश शर्मा कुक्की ने कविताएं पढ़ीं, जबकि अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाषण दिए। छात्रों ने अहिंसा की शपथ ली, संग्रहालय और सुखमहल स्मारक का दौरा किया और स्मारक परिसर में पेड़ लगाए।

बूंदी अध्याय ने कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की 210वीं जयंती कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा को रानीजी की बावड़ी में माला चढ़ाने के साथ मनाई, जिसके बाद एक हेरिटेज वॉक आयोजित की गई। इन्टैक संयोजक राजकुमार दधीच ने कवि की साहित्यिक विरासत और इसकी राजस्थान और भारतीय इतिहास में महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रमुख अतिथियों में कवि के वंशज खुमान सिंह और सीएमओ डॉ. लक्ष्मी नारायण मीना शामिल थे। राजस्थानी लेखक और शिक्षाविदों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया, जबकि छात्रों और स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों ने नगर सागर कुंड, चौगान दरवाजा और कवि की पैतृक हवेली जैसे ऐतिहासिक स्थलों का दौरा कर बूंदी की समृद्ध स्थापत्य और सांस्कृतिक विरासत का अनुभव किया।

उत्सव के भाग के रूप में, इन्टैक ने नगर सागर कुंड

चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागी – बूंदी अध्याय

में दीप प्रज्ज्वलन और गंगा आरती आयोजित की, जिसमें बावड़ी हजारों दीपकों से रोशन हुई। इन्टैक पदाधिकारियों और स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीपक जलाए गए, और रमेश नवयुवक मंडल को बावड़ी के तालाब साफ करने के लिए सम्मानित किया गया। प्रतिभागियों ने विरासत संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और कुओं और जल स्रोतों को साफ रखने की शपथ ली।

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण जयंती सप्ताह के तहत पीएम श्री सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बूंदी में व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। मुख्य अतिथि तेज कंवर ने कवि के चारण साहित्य में योगदान और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणा देने की भूमिका पर प्रकाश डाला। इन्टैक संयोजक राजकुमार दधीच ने सूर्यमल्ल मिश्रण की साहित्यिक और वीरता विरासत का विवरण प्रस्तुत किया। समन्वयकों और स्कूल अधिकारियों ने उनके प्रभाव पर चर्चा की। कार्यक्रम में कवि का चित्र भी प्रस्तुत किया गया और कार्यक्रम धन्यवाद-ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ। चौगान गेट स्कूल में एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें लगभग 100 छात्रों ने भाग लिया। कनिष्ठ और वरिष्ठ श्रेणियों में कुल सोलह विजेताओं का चयन हुआ। इन्टैक ने बूंदी चित्रकला और सूर्यमल्ल मिश्रण के स्थानीय कला में योगदान का महत्व बताया। शीर्ष पुरस्कार प्रियंका राठौर, लक्ष्य, राजवीर रावत और रिया फातिमा को दिए गए, जबकि शेष पुरस्कार इन्टैक और श्रीमती शंकारी देवी की स्मृति में प्रदान किए गए। चित्रकार नंद प्रकाश शर्मा नांजी ने अपनी कला की तकनीक दिखाई और सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार भी दिए।

अध्याय ने दशहरा के अवसर पर वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया और जिला पुस्तकालय के पास सूर्यमल्ल वाटिका में एक शमी खेजड़ी का पौधा

विश्व पर्यावरण दिवस पर व्याख्यान श्रृंखला – बूंदी अध्याय

लगाया, इसके बाद सुखमहल में विभिन्न पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में डीएसपी अरुण कुमार शर्मा, पर्यटन अधिकारी प्रेम शंकर सैनी, संयोजक राजकुमार दधीच, सह-संयोजक राजेंद्र भारद्वाज और अन्य सदस्य उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर इन्टैक बूंदी ने पाथवे संस्थान, मतुंडा में 'पर्यटन और सतत परिवर्तन' पर व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की। छात्रों ने पर्यटन के महत्व, इसके विरासत, संस्कृति और पुरातत्व से संबंध, तथा बूंदी की पर्यटन संभावनाओं के बारे में सीखा। संयोजक राजकुमार दधीच ने "वसुधैव कुटुम्बकम" के दर्शन और भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के महत्व को उजागर किया। कार्यक्रम में सह-संयोजक राजेंद्र भारद्वाज, अशोक तालवास और पूर्व सरपंच महेन्द्र शर्मा के विचार भी शामिल थे। संस्थान के प्रधानाचार्य ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सतत पर्यटन और ग्रीन टूरिज्म पहल पर चर्चा की सराहना की।

चित्तौड़गढ़ – उप-अध्याय

इन्टैक चित्तौड़गढ़ अध्याय द्वारा बोर्डा गांव में कन्या पूजन का आयोजन किया गया। यह नवरात्रि की एक महत्वपूर्ण परंपरा है, जिसमें कन्याओं के सम्मान के साथ उनकी शिक्षा और सुरक्षा का संकल्प लिया

कन्या पूजन एवं कन्या भोज – चित्तौड़गढ़ अध्याय

जाता है। कार्यक्रम में ग्रामीण बालिकाओं के लिए कन्या भोज और उपहार वितरण किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य परंपराओं का संरक्षण और नारी शक्ति का सम्मान था।

करौली

इन्टैक करौली अध्याय के सदस्यों ने देवउठनी एकादशी के अवसर पर करौली नगर की 678वीं वर्षगांठ मनाई। युवराज विवस्वत पाल ने कल्याणराय मंदिर में पूजा की और आचार्य प्रकाश चंद जाती ने सामूहिक आरती कराई। संगोष्ठी में करौली की स्थापना (1348 ई.) राजा अर्जुन देव द्वारा किए जाने, मंदिरों के निर्माण और ऐतिहासिक बिरवास गांव पर चर्चा हुई। इन्टैक ने किलों, उद्यानों, मंदिरों और रियासत कालीन इमारतों सहित करौली की विरासत को बचाने की आवश्यकता पर जोर दिया। वक्ताओं ने अतिक्रमण और ऐतिहासिक स्थलों को हो रहे नुकसान पर चिंता व्यक्त की। कार्यक्रम में शहर के प्रमुख नागरिक और विरासत प्रेमी उपस्थित रहे।

अध्याय ने भंवर विलास मैरिज गार्डन में राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया, जिसमें 13 विद्यालयों के 125 विद्यार्थियों ने भाग लिया। लोकहितकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के ईशांत और पूर्वी चतुर्वेदी की टीम विजेता रही। प्रतियोगिता में भारत, राजस्थान और करौली की विरासत से जुड़े लिखित और मौखिक राउंड शामिल थे। प्रमाण पत्र, पुरस्कार तथा "सेलिब्रेटिंग इंडिया" पोस्टर प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित किए गए। अध्याय को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अध्याय का पुरस्कार मिलने पर राजेन्द्र देवन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में साइलेंट, डेफ एंड डंब स्कूल के विद्यार्थियों ने भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

मारवाड़ / जोधपुर

राज्य स्तरीय इन्टैक विरासत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 2025 का आयोजन जोधपुर के मेहरानगढ़ किले स्थित चकलेव पैलेस में किया गया। इसमें राजस्थान भर से विद्यार्थियों ने भाग लिया। जयपुर की कृतिका जिंदल और केशव गर्ग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी में राजस्थान और भारत के इतिहास, कला, संस्कृति तथा सामान्य ज्ञान पर आधारित चार चरण शामिल थे। मुख्य अतिथि अदिति पुरोहित ने विद्यार्थियों से सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करने और अध्ययन पर ध्यान देने का आग्रह

'महामंदिर बावड़ी पुनरुद्धार और जोधपुर नगर की विरासत' प्रदर्शनी में आयोजक एवं आगंतुक – जोधपुर अध्याय

'महामंदिर बावड़ी पनरुद्धार एवं जोधपुर नगर विरासत' प्रदर्शनी में छात्र – जोधपुर अध्याय

किया। विजेताओं और प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। राज्य स्तर के विजेता नई दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय इन्टैक विरासत प्रश्नोत्तरी में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे।

2 सितंबर को 'महामंदिर बावड़ी पुनर्स्थापन और जोधपुर शहर की विरासत' विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन आनंदया फाउंडेशन, इन्टैक जोधपुर अध्याय, मेहरानगढ़ संग्रहालय ट्रस्ट और जोधपुर लोर द्वारा किया गया। इसका उद्घाटन महाराजा श्री गज सिंह ने किया। प्रदर्शनी में जोधपुर की प्राचीन झालरों, बावड़ियों, भीतरी शहर और घंटाघर क्षेत्र के संरक्षण कार्यों को प्रदर्शित किया गया। विद्या आश्रम इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने जल संरक्षण पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सुश्री आनंदया ने पनघट संरक्षण परियोजना की जानकारी देते हुए झालरों के संरक्षण और विरासत के प्रति जागरूकता पर जोर दिया। इसके बाद 12 सितंबर को कोणार्क सीनियर सेकेंडरी स्कूल में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता 2025 का प्रथम चरण आयोजित किया गया, जिसमें सात विद्यालयों के 97 विद्यार्थियों ने भाग लिया। दिल्ली पब्लिक स्कूल के धैर्य महेश्वरी और मुकुट भाटी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

स्थानीय बच्चों एवं कलाकारों द्वारा मीरा महोत्सव का आयोजन – नागौर अध्याय

आम सभा बैठक – सवाई माधोपुर अध्याय

नागौर

4 अक्तूबर को मेड़ता में स्थित भक्त शिरोमणि मीराबाई स्मारक पैनोरमा का 18वां स्थापना दिवस श्रद्धा और सांस्कृतिक उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमें इन्टैक नागौर अध्याय की सक्रिय भागीदारी रही । मीरा उत्सव के अंतर्गत भक्ति भजन, राजस्थानी लोकगीत, पारंपरिक नृत्य और स्थानीय बच्चों व युवाओं द्वारा लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की गईं। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, संगीत नाटक अकादमी और स्थानीय कलाकारों ने लाल अंगी गैर नृत्य और तेजाजी महाराज के लोकगीतों सहित मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन और नगाड़ा-शहनाई के स्वागत से हुई। मुख्य अतिथि ओंकार सिंह लाखावत ने स्मारक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे राज्य का सर्वाधिक दर्शनीय स्थल बताया, जो भक्ति के साथ-साथ मध्यकालीन राजस्थान की नारी शक्ति का प्रतीक है। उन्होंने पंच गौरव योजना के अंतर्गत स्मारक के विकास हेतु 42 लाख रुपए की स्वीकृति की घोषणा की, जिसमें भविष्य में भक्तों के लिए संगीत और गीत गैलरी की स्थापना भी शामिल है।

14 नवंबर को इन्टैक हेरिटेज फाइव क्लबों के लगभग 300 विद्यार्थियों ने नागौर किले में विरासत भ्रमण (हेरिटेज वॉक) में भाग लिया। विद्यार्थियों ने किले की भव्य वास्तुकला, प्राचीन गलियारों और सुंदर भित्ति चित्रों को देखा। उनकी जिज्ञासा और उत्साह ने भ्रमण को जीवंत बना दिया। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई थी। यह भ्रमण उनके लिए यादगार अनुभव रहा, जिससे इतिहास से उनका जुड़ाव बढ़ा और भारत की सांस्कृतिक विरासत पर गर्व की भावना विकसित हुई, साथ ही वे भविष्य में विरासत के संरक्षक बनने के लिए प्रेरित हुए।

सवाई माधोपुर

23 जुलाई को अध्याय की सामान्य सभा की बैठक जोगी महल रेस्टोरेंट में आयोजित की गई । मुख्य अतिथि श्री मोहम्मद यूनुस खान, निदेशक, राजीव गांधी प्राकृतिक संग्रहालय तथा विशेष अतिथि व्यंग्यकार श्री प्रभा शंकर उपाध्याय का स्वागत किया गया । अध्याय संयोजक पदम खत्री ने आगामी योजनाओं और पिछले वर्ष के वित्तीय विवरण की जानकारी दी। सह-संयोजक हनुमान शर्मा द्वारा नए सदस्यों गोवर्धन लाल कुमावत, श्रवण कुमार जैन और रामजी लाल मीणा का माला पहनाकर औपचारिक स्वागत किया गया। श्री उपाध्याय ने अपनी पुस्तक इनविज़िबल इडियट से अंश प्रस्तुत किए तथा सदस्य चंद्रशेखर जोशी ने अपनी नई कविताओं का पाठ किया।

पर्यावरणविद एवं प्रकृति गाइड अधिवक्ता लेखराज सिंह राठौड़ अध्याय के सामान्य सदस्य के रूप में जुड़े, जिससे इन्टैक की गतिविधियों को सामाजिक सहयोग और मजबूती मिली।

नागौर किले में हेरिटेज वॉक में भाग लेते हेरिटेज क्लब के छात्र – नागौर अध्याय

उदयपुर

10 जुलाई को सेंट एंथनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, गोवर्धन विलास के हेरिटेज क्लब ने गुरु पूर्णिमा मनाई । विद्यार्थियों ने भाषण, गीत और कविताएं प्रस्तुत कर गुरु-शिष्य परंपरा का सम्मान किया और शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

11 जुलाई को सेंट एंथनी स्कूल, हिरण मगरी के इन्टैक हेरिटेज क्लब के विद्यार्थियों ने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित एक लघु नाटिका प्रस्तुत की । इसके साथ भाषण और नृत्य प्रस्तुतियां भी हुईं, जिनमें विरासत संरक्षण में गुरु की भूमिका को दर्शाया गया।

12 जुलाई को इन्टैक हेरिटेज क्लब के अंतर्गत विवेकानंद केंद्र विद्यालय में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें "शिक्षा जनसंख्या नियंत्रण का सबसे प्रभावी साधन है" और "जनसंख्या सतत विकास के लिए सबसे बड़ा खतरा है" जैसे विषय शामिल थे । शिक्षकों और निर्णायकों ने विद्यार्थियों की भागीदारी की सराहना की।

19 जुलाई को रॉकवुड्स हाई स्कूल के इन्टैक हेरिटेज क्लब के विद्यार्थियों ने उदयपुर के आहड़ संग्रहालय का भ्रमण किया । संग्रहालय में मेवाड़ राजवंश से जुड़ी शाही वस्तुएं, हथियार, चित्र और परिधान प्रदर्शित किए गए थे, जिससे विद्यार्थियों में विरासत और संस्कृति के प्रति रुचि बढ़ी।

23 जुलाई को रॉकवुड्स हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने हरियाली अमावस्या मनाई । इस अवसर पर

हरित-थीम वाले खाद्य पदार्थों का आदान-प्रदान किया गया और घर पर कम समय में उगाई जाने वाली सब्जियां उगाने का संकल्प लिया गया। इस पहल से पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का संदेश मिला।

24 जुलाई को सीडलिंग स्कूल में हरियाली अमावस्या के अवसर पर कक्षा आठ की विशेष सभा और एक रंगारंग मेले का आयोजन किया गया। मेले में पारंपरिक हस्तशिल्प, जैविक उत्पाद और पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं के स्टॉल लगाए गए। साथ ही सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से इस पर्व के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाया गया।

7 अगस्त को महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के इन्टैक हेरिटेज क्लब ने शपथ-ग्रहण समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम में इन्टैक उदयपुर के संयोजक श्री गौरव सिंघवी तथा अन्य विशिष्ट सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर क्लब को लगातार चौथे वर्ष देश में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। क्लब और क्लब प्रभारी सुश्री प्रतिमा पालीवाल को हेरिटेज बीकन पुरस्कार तथा नमन मुकेश मेहता को श्रेष्ठ हेरिटेज क्लब विद्यार्थी का पुरस्कार दिया गया। नव-निर्वाचित सदस्यों को पट्टियां (सैश) पहनाई गईं। इसके बाद सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं, जिनमें श्लोक पाठ, कविता पाठ, नृत्य, समूह गीत और पुरस्कार वितरण शामिल थे। श्री गौरव सिंघवी और श्री सतीश शर्मा ने प्रेरक संबोधन दिए जिनमें निदेशक श्री एस.के. शर्मा के शुभाशीष भी शामिल थे।

12 अगस्त को एमएमपीएस में इन्टैक हेरिटेज क्लब के अंतर्गत विश्व हाथी दिवस मनाया गया। कक्षा 1 से 4 के छात्रों को डाक्यूमेंट्री दिखाई गई, विषय आधारित पावरपॉइंट प्रस्तुति दी गई तथा कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए श्री सतीश कुमार शर्मा द्वारा विशेषज्ञ व्याख्यान दिया गया। इससे हाथी संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन के प्रति जागरूकता बढ़ी।

21 अगस्त को महाराणा मेवाड़ विद्या मंदिर में नव-निर्वाचित इन्टैक क्लब सदस्यों के लिए शपथ-ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। प्रो. महीप भटनागर और श्री गौरव सिंघवी ने विरासत संरक्षण पर मार्गदर्शन और प्रेरक विचार साझा किए। कार्यक्रम का समापन प्राचार्य के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

रॉकवुड्स इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को करीब से जानने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। टीम साधना, जो पारंपरिक शिल्पों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का कार्य करती है, द्वारा आयोजित एक विशेष सत्र में छात्रों ने हथकरघा कला के महत्व को समझा। उन्होंने विभिन्न कपड़ों का अध्ययन किया, निर्माण प्रक्रिया जानी और जूट के कपड़े पर रंगीन ऊनी धागों से कलाकृति बनाई। इस सत्र में स्थानीय कारीगरों को समर्थन देने और पारंपरिक शिल्पों से आजीविका बचाए रखने के महत्व पर भी बात हुई।

इसके बाद शिल्पग्राम भ्रमण के दौरान छात्रों ने राजस्थान की जीवंत संस्कृति के बारे में जाना। उन्होंने मिट्टी और घास-फूस से बने पारंपरिक घरों को देखा, कठपुतली नाट्य प्रस्तुतियां देखीं तथा सब्जी प्रिंटिंग और टाई-डाई तकनीक से रूमाल सजाए। इन गतिविधियों से छात्रों को राजस्थान की परंपराओं की गहरी समझ मिली।

वर्व – द स्कूल ऑफ डिज़ाइन एंड वास्तु में, संयोजक गौरव सिंघवी के मार्गदर्शन में भक्ति और श्रीनाथ जी पर आधारित 29 हस्तलिखित पुस्तकों का डिजिटलीकरण किया गया। इससे अमूल्य विरासत ग्रंथों का संरक्षण हुआ और छात्रों ने आधुनिक तकनीक के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत बचाने की प्रक्रिया को समझा।

28 अगस्त को रॉकवुड्स हाई स्कूल, उदयपुर में इन्टैक राष्ट्रीय विरासत प्रश्नोत्तरी 2025–26 का आयोजन किया गया, जिसमें 17 स्कूलों के 108 छात्रों ने भाग लिया। क्विज़ मास्टर श्री सतीश शर्मा और श्री विष्णु शर्मा ने भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत से जुड़े प्रश्न पूछे। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिए गए। सीडलिंग स्कूल की जिन्नी दलाल और सूर्या शर्मा की टीम प्रथम रही और अब राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगी। कार्यक्रम में इन्टैक के पदाधिकारी उपस्थित रहे और वंडर सीमेंट द्वारा प्रायोजन किया गया।

29 अगस्त को इन्टैक उदयपुर द्वारा टाई-डाई (बंधनी) कला को पुनर्जीवित करने हेतु क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें प्रतिभागियों को बंधनी की गांठ बांधने की तकनीक सिखाई गई तथा प्राकृतिक रंगों से दुपट्टे, स्कार्फ और रूमाल तैयार किए गए। यह प्रशिक्षण डॉ. डॉली मोगरा, ले. डॉ. सिम्पल जैन और संयोजक गौरव सिंघवी के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ, जिसका उद्देश्य कौशल विकास के साथ भारत की वस्त्र विरासत का संरक्षण करना था।

टाई एंड डाई पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम में स्थानीय भागीदारी

इन्टैक हेरिटेज क्लब के तत्वावधान में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल द्वारा विश्व हाथी दिवस का आयोजन – उदयपुर अध्याय

29 हस्तलिखित पुस्तकों का डिजिटलीकरण – उदयपुर अध्याय

कठपुतली कला पर संवादात्मक सत्र एवं प्रदर्शन: राजस्थान की कठपुतली विरासत का संरक्षण – उदयपुर अध्याय

30 अगस्त को इन्टैक उदयपुर ने पारंपरिक कठपुतली कला के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से "कठपुतली कला: राजस्थान की कठपुतली विरासत का संरक्षण" कार्यक्रम का आयोजन किया। विशेषज्ञ वक्ताओं ने 45 प्रतिभागियों को संवादात्मक सत्रों और प्रदर्शन के माध्यम से कठपुतली कला के इतिहास, महत्व और तकनीकों की जानकारी दी तथा इस समृद्ध लोककला के संरक्षण के लिए प्रेरित किया।

13 सितंबर को इन्टैक उदयपुर द्वारा संयोजक गौरव सिंघवी के मार्गदर्शन में ग्रामीण पर्यटन द्वारा सांस्कृतिक विरासत संरक्षण विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. डॉली मोगरा और ले. डॉ. सिम्पल जैन ने लगभग 50 प्रतिभागियों के साथ पर्यावरण एवं ग्रामीण पर्यटन, विरासत संरक्षण, पारंपरिक कलाओं और समुदाय की भागीदारी पर चर्चा और अभ्यास कराए। कार्यक्रम में समावेशी पर्यटन, महिला सशक्तिकरण और सतत विकास पर विशेष जोर दिया गया।

13 सितंबर को ही छात्रों ने राजस्थान के बाड़मेर से प्रसिद्ध हस्तशिल्प डिज़ाइनर एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा नारी शक्ति पुरस्कार 2018 से सम्मानित रूमा देवी का स्वागत किया। लगभग 30 छात्राओं ने महिला सशक्तिकरण और पारंपरिक वस्त्रों के संरक्षण पर संवाद किया। रूमा देवी ने अपनी टीम के साथ लोकगीत भी प्रस्तुत किए, जिससे छात्रों को जीवंत सांस्कृतिक अनुभव मिला।

15 सितंबर को विद्यालय में "म्यूज़ियम ऑन व्हील्स" का आयोजन किया गया। यह चलती-फिरती प्रदर्शनी प्राचीन भारत, मिस्र, सीरिया, यूनान और रोम की मूर्तियों पर आधारित थी। छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुंबई, रोटरी क्लब मीरा और युवा उदयपुर के सहयोग से आयोजित इस प्रदर्शनी ने विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर में ही विभिन्न सभ्यताओं से परिचित कराया। इन्टैक प्रभारी सुश्री दृष्टि राव के मार्गदर्शन में छात्रों ने इतिहास और विरासत को गहराई से समझा।

22 से 24 सितंबर के बीच संयोजक गौरव सिंघवी ने डेनमार्क के आर्हुस में आयोजित एक कार्यशाला में भाग लिया, जिसमें राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि भी शामिल थे। कार्यशाला का उद्देश्य विरासत और डिज़ाइन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना था। उन्होंने डेनमार्क में आयोजित इंटररेग बाल्टिक सी रीजन सम्मेलन में "प्रकृति आधारित समाधानों के सफल विकास में सांस्कृतिक विरासत की भूमिका" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया और भारत की विरासत परंपराओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया।

10 अक्तूबर को उदयपुर संयोजक ने इन्टैक दिल्ली मुख्यालय का दौरा किया और अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर, सदस्य सचिव श्री रविन्द्र सिंह (सेवानिवृत्त आईएएस) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से भेंट की। इस दौरान उदयपुर अध्याय की भावी योजनाओं और सहयोगात्मक गतिविधियों पर चर्चा हुई। इसके पश्चात इन्टैक उदयपुर को डेनमार्क की सिटी ब्लू संस्था से प्राकृतिक विरासत विभाग के साथ सहयोग हेतु औपचारिक करार पत्र प्राप्त हुआ।

11 अक्तूबर को इन्टैक उदयपुर द्वारा संयोजक गौरव सिंघवी के नेतृत्व में बचे हुए वस्त्रों के पुनः उपयोग पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. डॉली मोगरा और ले. डॉ. सिम्पल जैन ने प्रतिभागियों को पुरानी साड़ियों और ऊन से पायदान और दोबारा इस्तेमाल होने वाले थैले जैसे पर्यावरण अनुकूल सामान बनाना सिखाया। यह कार्यशाला सतत विकास को बढ़ावा देने के साथ साथ विरासत और पर्यावरण संरक्षण को रचनात्मक रूप से जोड़ने वाली रही।

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर और उदयपुर अध्याय संयोजक गौरव सिंहवी 'इन्टैक विरासत समाचार-पत्रिका' के साथ

बचे हुए वस्त्रों के पुनः उपयोग संबंधी कार्यशाला में निर्मित उत्पाद – उदयपुर अध्याय

तमिलनाडु

चेन्नई

चेन्नई अध्याय की संयोजक एवं इन्टैक की शासी परिषद सदस्य श्रीमती सुजाता शंकर ने एसआरएम स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड इंटीरियर डिज़ाइन, कट्टनकुलथुर में विरासत संरक्षण पर अपने मुख्य वक्तव्य से जागरूकता की शुरुआत की। 4 अगस्त को आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम का विषय "मद्रास का सम्मान – विरासत संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका" था, जिसमें शहर की समृद्ध वास्तुकला और सांस्कृतिक विरासत पर प्रकाश डाला गया। 16 अगस्त को चेन्नई इंटरनेशनल सेंटर, टैगोर ऑडिटोरियम, आर.ए. पुरम में आयोजित व्याख्यान

चेन्नई अध्याय द्वारा मद्रास दिवस का आयोजन

शिक्षकों के लिए विरासत प्रशिक्षण कार्यशाला – चेन्नई अध्याय

में उन्होंने मद्रास आर्ट डेको वास्तुकला के विकास पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि 1925 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शुरू हुई आर्ट डेको शैली ने चेन्नई में अपनी अलग पहचान बनाई और दशकों तक शहर की सुंदरता को प्रभावित किया।

20 अगस्त को क्रिडा के सहयोग से आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम "मद्रास से मैड्रिड" में पारंपरिक खेलों को जीवंत किया गया। विनीता सिद्धार्था ने दहदी खेल, जो नाइन मेन्स मॉरिस के नाम से भी जानी जाती है, की भारत से स्पेन तक की यात्रा पर जानकारी दी। स्पेन की बुक ऑफ गेम्स की प्रतिकृति के माध्यम से प्रतिभागियों को ऐतिहासिक पांडुलिपि से सीधे जुड़ने का अवसर मिला।

23 अगस्त को श्री शंकरा विद्याश्रमम स्कूल, तिरुवनमियूर में "इंडिया हेरिटेज क्विज़ 2025" का चेन्नई चरण आयोजित किया गया। वरिष्ठ इन्टैक सदस्य सुश्री सुशी नटराज द्वारा संचालित इस प्रतियोगिता में 20 स्कूलों की 66 टीमों ने भाग लिया। एएमएम स्कूल, डीएवी बॉयज़ स्कूल, पीएसबीबी मिलेनियम स्कूल, श्री शंकरा सीनियर सेकेंडरी स्कूल और श्री शंकरा स्कूल, उरापक्कम की टीमें फाइनल में पहुँचीं। पीएसबीबी मिलेनियम स्कूल के अनिरुद्ध प्रेम और प्रभव नंदन आर. विजेता रहे और तमिलनाडु राज्य स्तरीय फाइनल में प्रवेश किया।

30 अगस्त को इन्टैक और क्रिडा के संयुक्त तत्वावधान में स्कूल शिक्षकों के लिए एक विशेष विरासत प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 40 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। विनीता सिद्धार्था ने बताया कि पारंपरिक खेलों को गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाई में कैसे शामिल किया जा सकता है। साथ ही, इन खेलों से मन में की जाने वाली गणना, योजना और समस्या समाधान कौशल विकसित होते हैं, जिससे शिक्षा रोचक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनती है।

मद्रास दिवस समारोह के तहत सविता कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर एंड इंटीरियर डिज़ाइन, पूनामल्ले में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें इन्टैक चेन्नई अध्याय की संयोजक श्रीमती सुजाता शंकर मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने छात्रों को मद्रास की विरासत के बारे में संबोधित किया और डॉक्यूमेंट्री फिल्म "स्टोरी ऑफ मद्रास – द फर्स्ट सिटी ऑफ मॉडर्न इंडिया" का प्रदर्शन किया। एस. मुथैया द्वारा लिखित और श्रीमती सुजाता शंकर द्वारा निर्देशित इस फिल्म में शिक्षा, रेलवे, चिकित्सा, नगर प्रशासन और भारतीय सर्वेक्षण में मद्रास के योगदान के साथ-साथ शहर की निर्मित विरासत और उसके दीर्घकालिक प्रभाव को दर्शाया गया।

29 अक्तूबर को अध्याय ने एम. आरएम. आरएम. कल्वरल फाउंडेशन के सहयोग से चेट्टीनाड शिल्पों के पुनरुद्धार पर एक व्याख्यान और प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसमें विशेष रूप से कोट्टन ताड़ के पत्तों की टोकरी कला पर ध्यान केंद्रित किया गया। श्रीमती विशालाक्षी रामास्वामी ने चेट्टीनाड की शिल्प विरासत के दस्तावेजीकरण, संरक्षण और पुनर्जीवन से जुड़े अपने कार्य साझा किए। उन्होंने कारीगरों को प्रशिक्षण देने, पुस्तकों का प्रकाशन करने, पारंपरिक बुनाई और टाइल निर्माण को जीवित रखने तथा प्रदर्शनियों के आयोजन के माध्यम से इस विरासत को आगे बढ़ाया। उनके कार्यों को यूनेस्को सील ऑफ एक्सीलेंस और कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कोयंबटूर

इन्टैक कोयंबटूर अध्याय ने पीएसजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के सहयोग से जर्मनी से आए विदेशी आदान-प्रदान छात्रों के लिए एक विशेष हेरिटेज वॉक का आयोजन किया। 9 सितंबर को आयोजित इस वॉक का उद्देश्य छात्रों को कोयंबटूर के इतिहास, संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली से परिचित कराना था।

भ्रमण की शुरुआत 1872 में निर्मित ऐतिहासिक सीएसआई ऑल सोल्स चर्च से हुई, जहाँ पादरी ने 15 छात्रों का स्वागत किया और संवादात्मक भाषण दिया। इसके बाद पीएसजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के डीन श्री एस. श्रीनिवासन और इन्टैक कोयंबटूर के संयोजक श्री जगन्नाथन एस. ने छात्रों को संबोधित किया। इतिहासकार श्री सी.आर. इलंगोवन ने समूह को कोयंबटूर के प्रमुख विरासत स्थलों — कोनिअम्मन मंदिर, अतर जामद मस्जिद और चितिरई चावड़ी चेक डैम का भ्रमण कराया। चितिरई चावड़ी में छात्रों को चोल काल की जल प्रबंधन प्रणाली और उसकी खेती व पर्यावरण में भूमिका के बारे में बताया गया। भ्रमण के दौरान मानव-निर्मित झीलों, नोय्यल नदी के बहाव, प्रवासी पक्षियों और पुरानी संरचनाओं की वैज्ञानिक योजना के बारे में भी जानकारी दी गई। चित्रों की मदद से यह समझाया गया कि आपस में जुड़े टैंक और चेक

विदेशी छात्रों के लिए विशेष हेरिटेज वॉक – कोयंबटूर अध्याय

विदेशी छात्रों के लिए विशेष हेरिटेज वॉक – कोयंबटूर अध्याय

डैम कैसे लगातार पानी की आपूर्ति बनाए रखते हैं और बाढ़ को रोकने में मदद करते हैं।

एक यादगार क्षण तब आया जब एक स्थानीय किसान ने छात्रों को अपने खेत पर जलपान के लिए आमंत्रित किया। इससे छात्रों को भारतीय आतिथ्य का सजीव अनुभव मिला। जर्मनी से आए छात्रों ने कोयंबटूर की हरित विरासत की प्रशंसा की और इस पूरे अनुभव को ज्ञानवर्धक व अत्यंत प्रेरणादायक बताया।

नागरकोइल

6 सितंबर को अध्याय ने कन्याकुमारी की समृद्ध विरासत को जानने के लिए भ्रमण किया। यात्रा की शुरुआत साउथ त्रावणकोर लाइन्स से हुई, जो 18वीं शताब्दी में राजा मार्तंड वर्मा द्वारा नंजिलनाडु की रक्षा के लिए बनवाया गया किला था। चूना युक्त बलुआ पत्थर को ईंटों के आकार में तराशकर बनी इसकी दीवारें उत्कृष्ट शिल्पकला का नमूना हैं, हालांकि वर्तमान में कटाव और वनस्पति से इनके संरक्षण को खतरा है। इस भ्रमण से प्रतिभागियों को स्थल के ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व को प्रत्यक्ष रूप से समझने का अवसर मिला और संरक्षण तथा भविष्य में हेरिटेज वॉकवे विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

6 सितंबर को अध्याय ने कन्याकुमारी सरकारी संग्रहालय का भी भ्रमण किया। 1991 में स्थापित यह बहुविषयक संग्रहालय क्षेत्र की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है। यहाँ पुरातत्व, मानव विज्ञान, इतिहास, मुद्राशास्त्र, भूविज्ञान, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और स्थानीय संस्कृति से जुड़े संग्रह हैं, जिनमें पाषाण युग के औज़ार, स्वामिथोप्पु का लकड़ी का रथ, त्रावणकोर राजवंश की वस्तुएं, ब्रिटिश और भारतीय सिक्के, संरक्षित पक्षी व समुद्री जीव तथा नंजिल-नाडु के घरेलू उपयोग की वस्तुएं शामिल हैं। इन्टैक के सदस्यों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और संग्रहालय अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सुझाव दिए, जिससे उन्हें कन्याकुमारी की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की गहरी समझ मिली।

संयोजक श्रीमती अनीता नटराजन के नेतृत्व में, डॉ. अरुणाचलम, श्रीमती प्रेमा अरुणाचलम, श्री चेंथी नटराजन सहित सदस्यों ने कन्याकुमारी रेलवे स्टेशन के पास स्थित अरुल्मिगु गुहनाथेश्वरर मंदिर का भ्रमण किया। 6 सितंबर को आयोजित इस यात्रा में मंदिर के

गुहनाथेश्वर मंदिर, कन्याकुमारी का दौरा – नागरकोइल अध्याय

कन्याकुमारी सरकारी संग्रहालय में सदस्य – नागरकोइल अध्याय

शिलालेख विशेषज्ञ श्री चेंथी नटराजन ने भाग लिया, जिन्होंने मंदिर के 10वीं-11वीं शताब्दी के शिलालेखों की व्याख्या की, जो चोज़ा राजाओं जैसे राजराजा प्रथम, राजेंद्र प्रथम और द्वितीय, तथा राजथिराजन प्रथम के शासनकाल के दौरान बनाए गए थे। इन अभिलेखों में स्थायी दीपदान, भेड़ों का दान और जल संरचनाओं (थन्नीर पंडाल) की स्थापना का उल्लेख है, जो सदियों पुरानी मंदिर की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक भूमिका को दर्शाता है।

इसी दिन अध्याय ने आवर लेडी ऑफ रैनसम चर्च (कन्याकुमारी) का भी भ्रमण किया। इस चर्च की उत्पत्ति *आवर लेडी ऑफ डिलाइट्स ग्रोटो* से मानी जाती है, जहाँ सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर ने 1542 में पूजा की थी। वर्तमान गोथिक शैली की इमारत की नींव 1900 में श्रद्धेय फादर जॉन कॉन्सोल्वेज़ ने रखी। चर्च में रोमन कला और प्राचीन गोथिक वास्तुकला के तत्व दिखाई देते हैं। 1917 में तूतीकोरिन के एक व्यापारी द्वारा दान किया गया ध्वजस्तंभ और उससे जुड़ी रोचक कथा इस चर्च की विशेषता है। आज भी यह चर्च कन्याकुमारी समुदाय के लिए आस्था का महत्वपूर्ण केंद्र है।

सेलम

28 अगस्त को श्री विद्या मंदिर स्कूल ऑडिटोरियम में हेरिटेज क्विज़ 2025 का आयोजन किया गया, जिसमें 11 स्कूलों के 102 छात्रों ने भाग लिया। बाल कल्याण की प्रख्यात समर्थक डॉ. युवाश्री मुख्य अतिथि रहीं और उन्होंने पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धतियों पर भी विचार रखे। कई चरणों के बाद अंतिम मौखिक राउंड में दो टीमों के बीच बराबरी हुई,

नेशनल हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. युवाश्री द्वारा दीप प्रज्ज्वलन – सेलम अध्याय

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर द्वारा वास्तुकला प्रलेखन प्रदर्शनी का उद्घाटन – रंगा रेड्डी अध्याय

जिसे रैपिड फायर राउंड से सुलझाया गया। श्री विद्या भारती एम.एच.एस.एस., सेलम की टीम विजेता रही और राज्य स्तर के लिए चयनित हुई। मुख्य अतिथि, विद्यालयों और विजेता/उपविजेता टीमों को स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

तेलंगाना

रंगारेड्डी

इन्टैक रंगारेड्डी जिला अध्याय का उद्घाटन जेबीआर आर्किटेक्चर कॉलेज, मोइनाबाद में *"अतीत का संरक्षण, भविष्य को प्रेरणा"* थीम के साथ किया गया। मुख्य अतिथि इन्टैक के अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने युवाओं से भारत की विरासत की सक्रिय रूप से बचाने का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने जेबीआर कॉलेज के छात्रों द्वारा तैयार विशेष वास्तुकला प्रलेखन प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। विशिष्ट अतिथियों में सज्जाद शाहिद, प्रो. अर्जुन राव कुथाड़ी और डॉ. मंगारी राजेंद्र शामिल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंजी. वेदा कुमार मणिकोंडा ने की और जिला अध्याय की संयोजक प्रो. आर्किटेक्ट जे. गायत्री ने पूरे वर्ष की कार्य-योजना प्रस्तुत की, जिसमें हेरिटेज वॉक और शैक्षिक गतिविधियाँ शामिल थीं। इंजी. वेदा कुमार ने तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में इन्टैक की गतिविधियाँ बढ़ाने पर जोर दिया। यह शुभारंभ रंगारेड्डी की सांस्कृतिक और पुरातात्विक विरासत के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर द्वारा रंगा रेड्डी अध्याय का उद्घाटन

वारंगल

10 जुलाई को अध्याय ने स्नातक विद्यार्थियों के लिए जकाराम मंदिर, रामप्पा मंदिर और हजार स्तंभ मंदिर का शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया। ये सभी स्मारक वर्तमान में जर्जर अवस्था में हैं। सह-संयोजक प्रो. देवा प्रताप ने काकतीय शासकों द्वारा अपनाई गई निर्माण तकनीकों और विधियों की जानकारी दी तथा सिंचाई और क्षेत्रीय विकास में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

13 अगस्त को अध्याय द्वारा हनमकोंडा शहर के हाई स्कूल के छात्रों के लिए नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मास्टरजी हाई स्कूल, गुरुकुल, विकास हाई स्कूल, तुषारा हाई स्कूल, रमन स्कूल और आदर्श हाई स्कूल के 120 छात्रों (60 टीमों) ने भाग लिया। मास्टरजी हाई स्कूल के छात्र विजेता रहे।

8 से 17 अक्तूबर तक इन्टैक वारंगल अध्याय ने यूनेस्को विश्व विरासत सूची में शामिल काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, पालमपेट, मुलुग जिले में आयोजित विश्व विरासत स्वयंसेवक (डब्ल्यूएचवी) शिविर 2025 को प्रायोजित किया और इसमें सक्रिय भागीदारी निभाई। काकतीय हेरिटेज ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस शिविर में 39 स्वयंसेवकों ने भाग लिया, जिनमें भारत के विभिन्न हिस्सों से 36 और ईरान से 3 स्वयंसेवक शामिल थे। प्रतिभागी वास्तुकला, सिविल इंजीनियरिंग, पर्यटन, इतिहास, पुरातत्व और भूविज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों से थे। इस दस दिवसीय शिविर में योग, व्याख्यान, प्रदर्शन, क्षेत्रीय कार्य, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और स्मारक की साफ-सफाई जैसे कार्य शामिल थे। इन्टैक, एनआईटी वारंगल, काकतीय विश्वविद्यालय, एएसआई, आईकोमोस और तेलंगाना विरासत विभाग के विशेषज्ञों ने संरक्षण तकनीकों, निर्माण विधियों, सतत सामग्री, सिविल इंजीनियरिंग पहलुओं और विरासत संरचनाओं के प्रलेखन पर मार्गदर्शन दिया।

15 अक्तूबर को तेलंगाना सरकार की मंत्री श्रीमती डॉ. डी. अनसूया सीतक्का ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए काकतीयों के क्षेत्रीय योगदान पर प्रकाश डाला। वहीं, सम्मक्का-सरक्का केंद्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वाई.एल. श्रीनिवास ने विरासत संरक्षण के महत्व पर अपने विचार साझा किए। इस कार्यक्रम से प्रतिभागियों के तकनीकी कौशल, बहु-विषयक ज्ञान और स्वयंसेवी भावना में वृद्धि हुई।

18 अक्तूबर 2025 को रामप्पा मंदिर में आयोजित समापन समारोह के साथ डब्ल्यूएचवी शिविर का सफल समापन हुआ। मुख्य अतिथि श्री एम. रतन, आईपीएस (सेवानिवृत्त), पूर्व पुलिस महानिदेशक, आंध्र प्रदेश ने विरासत संरक्षण में जन-भागीदारी के महत्व पर बल दिया। प्रो. एम. पांडु रंगा राव की अध्यक्षता में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

त्रिपुरा

इन्टैक ने त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद के सहयोग से 5 जून 2025 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसके बाद शोधार्थियों के साथ पिलक का अध्ययन दौरा किया गया। पिलक 8वीं से 12वीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध हिंदू–बौद्ध पुरातात्विक स्थल है। वहाँ संग्रहालय अधिकारियों ने त्रिपुरा की पुरातात्विक विरासत पर प्रस्तावित चित्रात्मक पुस्तक के लिए टेराकोटा मूर्तियों के अध्ययन में सहयोग किया। इसके बाद, 18 अगस्त को महाराजा बीर बिक्रम माणिक्य बहादुर की 117वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर पूर्वोत्तर-I क्षेत्र के पोस्ट मास्टर जनरल श्री जोसेफ लालरिनसैलोवा द्वारा एक विशेष डाक आवरण जारी किया गया। कार्यक्रम में शाही परिवार के सदस्य और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस अवसर पर दो दिवसीय फोटो प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें दुर्लभ चित्र, महाराजा की सैन्य वर्दी तथा माणिक्य वंश के मध्यकालीन हथियार और कवच प्रदर्शित किए गए। साथ ही तीन विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान, स्मृति-चिह्न स्टॉल और इन्टैक सदस्य बोयर द्वारा लिखित स्मारक पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

29 अक्तूबर 2025 को अगरतला के नज़रुल कलाक्षेत्र में सर्कल स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी – ट्राइपेक्स 2025 का उद्घाटन इन्टैक त्रिपुरा अध्याय की संयोजक महाराज कुमारी प्रज्ञा देबबर्मन ने किया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य डाक टिकट संग्रह को बढ़ावा देना और टिकटों पर दर्शाई गई समृद्ध विरासत व संस्कृति को लोगों तक पहुँचाना था। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य डाक टिकट संग्रह — जिसे "शौकों का राजा" कहा जाता है — को बढ़ावा देना था। इसमें डाक टिकटों पर दर्शाई गई समृद्ध विरासत और संस्कृति को प्रदर्शित किया गया, जिससे ट्राइपेक्स-2025 क्षेत्र में डाक-टिकट संग्रह के शैक्षिक

महाराजा बीर बिक्रम माणिक्य बहादुर का जयंती समारोह – त्रिपुरा अध्याय

सर्कल स्तरीय डाक टिकट संग्रह प्रदर्शनी 'ट्राइपेक्स–2025' का उद्घाटन – त्रिपुरा अध्याय

और ऐतिहासिक महत्व के संरक्षण और प्रचार के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में स्थापित हुआ।

उत्तर प्रदेश

अयोध्या

अध्याय ने 24 अगस्त को जेबी अकादमी, फैजाबाद में सुश्री अनुजा श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में हेरिटेज क्विज़ का आयोजन किया। इसमें 15 स्कूलों के 150 छात्रों ने 75 टीमों के रूप में भाग लिया। डॉ. इंद्रनील बनर्जी ने क्विज़ मास्टर की भूमिका निभाई, जबकि लिखित राउंड में अध्याय के सदस्यों ने पर्यवेक्षक के रूप में सहयोग किया। लिखित राउंड में आर्मी पब्लिक स्कूल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, इसके बाद जेबी अकादमी, सनबीम स्कूल और अवध इंटरनेशनल स्कूल रहे। मौखिक राउंड के दौरान श्रीमती मंजुला झुंझुनवाला ने छात्रों के लिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विरासत जागरूकता के महत्व पर जोर दिया। कुल मिलाकर आर्मी पब्लिक स्कूल विजेता रहा, अवध इंटरनेशनल उपविजेता रहा, जबकि जेबी अकादमी और सनबीम स्कूल को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। विजेताओं और प्रतिभागियों को ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र और पुस्तकें प्रदान की गईं तथा सभी प्रतिभागियों की भागीदारी की सराहना की गई। कार्यक्रम का समापन सुश्री अनाहिता कोशुर के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ और अंत में औपचारिक भोज के माध्यम से अतिथियों एवं इन्टैक सदस्यों के बीच आपसी सौहार्द को बढ़ावा मिला।

इन्टैक एचईसीएस द्वारा अयोध्या अध्याय के सहयोग से *हमारी जीवित विरासत: संकटग्रस्त चटोलिया कला* विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला 18 और 20 अगस्त को जेबी अकादमी के बहुद्देशीय हॉल में आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य लुप्त होती चटोलिया कला को पुनर्जीवित करना था, विशेष

जेबी अकादमी में इन्टैक विरासत प्रश्नोत्तरी में छात्रों की भागीदारी – अयोध्या अध्याय

हमारी जीवित विरासत: संकटग्रस्त चटोलिया कला पर दो दिवसीय कार्यशाला – अयोध्या अध्याय

रूप से पुराने कपड़ों से कथरी बनाने की पारंपरिक कला को बढ़ावा देना। श्रीमती सुधा मिश्रा ने इस कला के पर्यावरण-अनुकूल और उपयोगी पहलुओं पर प्रकाश डाला, जबकि विशेषज्ञ श्रीमती कुसुम पांडेय ने प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। जेबी अकादमी, यश विद्या मंदिर, भवडिया पब्लिक स्कूल, उदया पब्लिक स्कूल और तक्षशिला अकादमी के कुल 77 छात्रों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला का समापन छात्रों द्वारा बनाई गई चटोलिया की प्रदर्शनी तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए जाने के साथ हुआ।

28 सितंबर को अध्याय और यश पाका लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में सामाजिक कार्यकर्ता एवं कलाकार मिथिलेश दुबे और उनकी टीम ने अयोध्या के जेबीए ऑडिटोरियम में कठपुतली नाटक *मोहन से महात्मा* प्रस्तुत किया। इस नाटक में महात्मा गांधी की एक साधारण व्यक्ति से राष्ट्रपिता बनने तक की यात्रा को दर्शाया गया। प्रस्तुति में गांधीजी के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों — उनके प्रारंभिक वर्ष, दक्षिण

जैन हेरिटेज वॉक के दौरान प्रतिभागी – अयोध्या अध्याय

जैन हेरिटेज वॉक में सक्रिय भागीदारी – अयोध्या अध्याय

अफ्रीका में हुए परिवर्तन, चंपारण आंदोलन तथा सत्य और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता — को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। अध्याय द्वारा आयोजित अवध कला उत्सव के तहत इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को कठपुतली कला से परिचित कराना तथा उन्हें गांधीजी के संकल्प, मानवतावाद और कर्म में निरंतरता जैसे मूल्यों से प्रेरित करना था। प्रधानाचार्य वी.के. जोशी और संयोजिका मंजुला झुंझुनवाला के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम की इन्टैक सदस्यों, स्कूल के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और अन्य गणमान्य अतिथियों ने सराहना की।

9 नवंबर को अयोध्या में एक जैन हेरिटेज वॉक का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिसमें 50 उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस वॉक के दौरान शहर की समृद्ध जैन विरासत को जानने का अवसर मिला। इसमें अयोध्या में जन्मे पाँच तीर्थंकरों — भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ), भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ, भगवान सुमतिनाथ और भगवान अनंतनाथ — से जुड़े मंदिरों का भ्रमण किया गया, जहाँ मार्गदर्शकों ने उनके इतिहास, वास्तुकला, धार्मिक महत्व और प्रमुख घटनाओं की विस्तृत जानकारी दी। प्रत्येक मंदिर में दर्शन शांत और सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुए। वॉक का समापन द्वारकाधीश मंदिर में हुआ, जिसके बाद अंतिम जानकारी सत्र और भविष्य की विरासत गतिविधियों से संबंधित सूचना दी गई। इस आयोजन की सुचारु व्यवस्था, जानकारीपूर्ण विवरण और सार्थक सांस्कृतिक व आध्यात्मिक अनुभव के लिए सभी ने सराहना की, तथा प्रतिभागियों ने भविष्य में भी ऐसी वॉक में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की।

गोरखपुर

इन्टैक हेरिटेज क्विज़ का गोरखपुर सिटी राउंड 24 अगस्त को महात्मा गांधी इंटर कॉलेज, गोरखपुर में आयोजित किया गया। इसमें 9 स्कूलों के 92 छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सह-संयोजक अचिन्त्य लाहिड़ी के स्वागत भाषण से हुई। इसके बाद सेंट एंड्रयूज़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र आनंद ने विरासत के महत्व पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मूर्त और अमूर्त विरासत के अंतर को समझाते हुए इसके संरक्षण में युवाओं की भूमिका पर जोर दिया। लिखित राउंड में 45 टीमों ने भाग लिया, जिनमें से शीर्ष चार टीमें एच.पी. चिल्ड्रन्स अकादमी और रत्ना मेमोरियल पब्लिक स्कूल से थीं। मौखिक राउंड के बाद एच.पी. चिल्ड्रन्स अकादमी की टीम विजेता रही। कार्यक्रम में इन्टैक सदस्य, शिक्षक और अभिभावक उपस्थित रहे तथा विद्यार्थियों में विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रयासों की सराहना की गई।

20 सितंबर को इन्टैक संरक्षण संस्थान, लखनऊ ने अध्याय के सहयोग से दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग में दस्तावेज संरक्षण कार्यशाला आयोजित की। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों, पुराने कॉलेजों, नगर निगम के पुस्तकालयाध्यक्ष, इन्टैक सदस्य और शोधार्थियों ने भाग लिया। आईसीआई लखनऊ के निदेशक श्री धर्मेन्द्र मिश्रा ने दस्तावेजों में होने वाली सामान्य खराबियों, उनके कारणों और संरक्षण के उपायों की जानकारी दी। प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला को पुस्तकालय संग्रहों के संरक्षण और रखरखाव के लिए बेहद उपयोगी बताया। सत्र का समापन, इन्टैक की एक डॉक्यूमेंट्री दिखाने और संयोजक एम.पी. कंदोई द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत करने के साथ हुआ।

झांसी

2 अगस्त को आयोजित अध्याय की बैठक में सदस्यों का स्वागत किया गया और संयोजक श्री राजेंद्र कुमार राय द्वारा इन्टैक शासी परिषद के सदस्य श्री नीलकमल महेश्वरी का सम्मान किया गया। बैठक में सदस्यों ने अपना परिचय दिया और संयोजक राजेन्द्र कुमार राय ने आगामी गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। बैठक में बिजौली तालाब के पास स्थित उपेक्षित किले तथा अली गोल खिड़की और सैनीर दरवाजा जैसी ऐतिहासिक संरचनाओं के संरक्षण पर चर्चा हुई। श्री महेश्वरी ने 'एक स्मारक को गोद लें' योजना के तहत किसी स्थानीय स्मारक को अपनाने और इन्टैक के 40 वर्षों के कार्यों की प्रदर्शनी लगाने का सुझाव दिया। बैठक में कार्यकारिणी तथा पीआर एवं मीडिया सेल की घोषणा की गई और दिवंगत सदस्यों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा गया।

इन्टैक झांसी अध्याय द्वारा 8 अक्तूबर को राज्य संग्रहालय, झांसी में इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया

सिटी लेवल हेरिटेज क्विज़ में छात्रों की उत्साही भागीदारी – गोरखपुर अध्याय

अध्याय की बैठक में सदस्यगण एवं शासी परिषद सदस्य – झांसी अध्याय

नेशनल हेरिटेज क्विज़ प्रतियोगिता का उद्घाटन – झांसी अध्याय

गया। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और उपहार दिए गए। श्री नीलकमल महेश्वरी ने घोषणा की कि विजेता टीम लखनऊ राउंड में भाग लेगी और आगे चलकर दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्राप्त करेगी। डॉ. समीर दीवान, डॉ. मनोज कुमार गौतम, डॉ. नितीश सक्सेना और डॉ. प्रदीप तिवारी सहित अन्य अतिथियों ने पुरातत्व, पर्यटन, विरासत संरक्षण और बुंदेली कला पर अपने विचार साझा किए। संयोजक आर.के. राय ने विजेताओं की घोषणा करते हुए बताया कि कैथेड्रल कॉलेज ने प्रथम पुरस्कार, रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल ने द्वितीय पुरस्कार और ब्लू बेल्स पब्लिक स्कूल ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

ललितपुर

इन्टैक ललितपुर अध्याय द्वारा आयोजित हेरिटेज क्विज़ 2025 का सिटी राउंड कन्या इंटर कॉलेज के सभागार में संपन्न हुआ। इसमें 9 स्कूलों के 92 छात्रों ने भाग लिया। मौखिक राउंड में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय की छात्राएँ सृष्टि सिंह और भाव्या पाठक प्रथम स्थान पर रहीं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जीजीआईसी की प्रधानाचार्या अंजना वर्मा, इन्टैक संयोजक संतोष कुमार शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक एवं कलाकार ओ.पी. बिरथरे, तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति, शिक्षक और छात्र उपस्थित रहे।

लखनऊ

10 अप्रैल को अध्याय ने वसंत वैली स्कूल, नई दिल्ली के 70 शिक्षकों के लिए कैसरबाग विरासत परिसर में एक हेरिटेज वॉक का आयोजन किया। इस वॉक में छतर मंज़िल, कोठी फ़रहत बख़्श, जरनैल कोठी, गुलिस्तान-ए-इरम, दर्शन विलास, कसरूल-सुल्तान, नवाब सआदत अली ख़ान और ख़ुर्शीद ज़ादी की क़ब्रें, नील गेट, गोल दरवाज़ा और सफ़ेद बारादरी शामिल थे। कथाओं और ऐतिहासिक व्याख्या के माध्यम से प्रतिभागियों ने लखनऊ की समृद्ध गंगा-जमुनी तहज़ीब का अनुभव किया और शहर की स्थापत्य व सांस्कृतिक विरासत को गहराई से समझा।

विश्व विरासत दिवस के अवसर पर, अध्याय ने खुनखुनजी गर्ल्स पीजी कॉलेज की स्नातक छात्राओं के लिए एक हेरिटेज वॉक आयोजित की। शशांक के नेतृत्व में तथा डॉ. नीतू अग्रवाल, डॉ. पारुल सिंह और डॉ. विजेता दीक्षित के साथ छात्रों ने कैसरबाग

हेरिटेज क्विज़ 2025 सिटी राउंड के प्रतिभागी एवं विजेता – ललितपुर अध्याय

शहर के ऐतिहासिक स्थलों की हेरिटेज वॉक में शिक्षक – लखनऊ अध्याय

स्नातक छात्रों के लिए हेरिटेज वॉक – लखनऊ अध्याय

'महलों से जनमानस तक: अवध के नवाबी साहित्य का सफर' विषय पर पैनल चर्चा – इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर का अभिनंदन – लखनऊ अध्याय

हेरिटेज कॉम्प्लेक्स का भ्रमण किया, जिसका समापन सफेद बारादरी में हुआ। छात्रों ने कैसरबाग विरासत परिसर का भ्रमण किया और अंत में सफ़ेद बारादरी पहुँचे। वॉक में अवध के नवाबों की भव्य वास्तुकला और 1857 के विद्रोह से जुड़े प्रमुख स्थलों पर प्रकाश डाला गया। रोचक कथाओं से छात्रों में इतिहास के प्रति जुड़ाव, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और विरासत संरक्षण की समझ बढ़ी।

'महलों से जनमानस तक: अवध के नवाबी साहित्य का सफर' विषय पर पैनल चर्चा में प्रतिभागियों के साथ इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर – लखनऊ अध्याय

अध्याय ने "आपस में जुड़ी इतिहास कहानियाँ: लखनऊ की विरासत की खोज" नामक एक द्विमासिक वेब वार्ता श्रृंखला शुरू की। इसका पहला सत्र 10 मई 2025 को आयोजित हुआ। इसमें आईसीएआर के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक और लखनऊ पर लेखन के लिए प्रसिद्ध डॉ. पी.सी. सरकार ने ज़ूम सत्र में "लखनऊ की भूली-बिसरी धरोहर: अतीत में खो गई कुछ वास्तुकला की अद्भुत कृतियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने फ्रांसीसी, इस्लामी, ब्रिटिश और हिंदुस्तानी प्रभावों से निर्मित लखनऊ की मिश्रित स्थापत्य शैली पर चर्चा की और माची भवन, फ़ोर्ट जलालाबाद, मोती महल, मरमेड गेट, मूसा बाग़, सुनेहरी बुर्ज, ऐशबाग़ और रैनीज़ ब्रिज जैसी अनेक नष्ट या जर्जर संरचनाओं का उल्लेख किया। सत्र में शिक्षा, फ़िल्म, पत्रकारिता, पुरातत्व, संग्रहालय और कला जगत से जुड़े अनेक लोग शामिल हुए।

17 मई को अध्याय की तिमाही बैठक हुई, जिसमें जुलाई से सितंबर तक की गतिविधियों की योजना बनाई गई। 15 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया और आगामी कार्यक्रमों, पहलों तथा क्षेत्र में विरासत जागरूकता और संरक्षण की रणनीतियों पर चर्चा हुई।

20 सितंबर को अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ में "महलों से जनमानस तक: अवध के नवाबी साहित्य का सफर" विषय पर एक विचार–गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें प्रसिद्ध मानवशास्त्री प्रो. नदीम हसनैन, प्रसिद्ध दास्तानगो डॉ. हिमांशु बाजपेयी और साहित्य आलोचक कनक रेखा चौहान (संचालक) शामिल रहे। चर्चा में अवध के नवाबी साहित्य का विकास, फ़ारसी काव्य परंपरा, महफ़िल संस्कृति और गंगा-जमुनी तहज़ीब पर प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने 1857 के बाद साहित्य के जन–सुलभ होने, संगीत और नाट्य तत्वों के समावेश तथा उर्दू शायरी की लखनऊ शैली पर भी बात की।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अशोक सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, इन्टैक, नई दिल्ली रहे। उन्होंने अवध की पहचान गढ़ने में विरासत की भूमिका पर जोर दिया और स्मारकों, परंपराओं तथा सांस्कृतिक शिक्षा के संरक्षण के लिए इन्टैक की प्रतिबद्धता दोहराई। कार्यक्रम में विद्वानों, शिक्षकों, छात्रों और विरासत प्रेमियों ने भाग लिया और अंत में प्रश्न–उत्तर सत्र हुआ।

30 अगस्त को ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ में नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 का सिटी फाइनल आयोजित किया गया। इसमें 21 स्कूलों की 41 टीमों के 82 प्रतिभागियों ने भाग लिया। फाइनल राउंड में ला मार्टिनियर कॉलेज, सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, स्टडी हॉल स्कूल और आर्मी पब्लिक स्कूल, नेहरू रोड के छात्रों की टीमें शामिल रहीं। ला मार्टिनियर कॉलेज की दूसरी टीम को विशेष उल्लेख प्रदान किया गया।

आर्मी पब्लिक स्कूल के उत्कर्ष विश्वकर्मा और श्रेयसी चक्रवर्ती (मार्गदर्शक: सुश्री बबीता राकेश) प्रथम रहे, जबकि स्टडी हॉल स्कूल के पुलकित देशवाल और

समृद्धि बाजपेयी (मार्गदर्शक: सुश्री प्रिया कलसी) उपविजेता बने। पुरस्कार मुख्य अतिथि श्री मुकेश मेहराम, मुख्य सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्री गैरी डोमिनिक एवरेट, प्रधानाचार्य, ला मार्टिनियर कॉलेज, क्विज़ मास्टर्स और इन्टैक सदस्य भी उपस्थित रहे, जिसमें डॉ. नीतू अग्रवाल (संयोजक) और श्री धनुंजय वार्ष्णेय (सह-संयोजक) भी शामिल थे।

महोबा

इन्टैक महोबा अध्याय ने 11 अगस्त को कजली महोत्सव के मेला मैदान में आल्हा गायन प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें दीक्षा और प्रतीक्षा ने प्रस्तुति दी।

14 अगस्त को उसी स्थल पर भारतीय विरासत और उसके संरक्षण पर एक सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किया गया। इन्टैक सदस्यों ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और भारतीय विरासत के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

मेरठ

26 जुलाई को इन्टैक मेरठ अध्याय ने रोज़ मैरी इंस्टिट्यूट, मेरठ में कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। सदस्यों ने पुष्प अर्पित किए और दो मिनट का मौन रखा। लेफ्टिनेंट कर्नल ए.डी. त्यागी ने कारगिल युद्ध से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। मुख्य अतिथियों डॉ. किरण सिंह, ए.के. जोहरी और डॉ. ईश्वर चंद गंभीर ने शहीदों को समर्पित कविताएँ पढ़ीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर ने की और संचालन सह–संयोजक ए.के. जोहरी ने किया। कार्यक्रम में आम नागरिकों से रोज़मर्रा के जीवन में सैनिकों के प्रति सम्मान बनाए रखने का आह्वान किया गया।

29 जुलाई को अध्याय ने ओजस ज्ञान केंद्र, मेरठ में समग्र स्वास्थ्य पर एक विशेष चर्चा आयोजित की, जिसमें आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया। डॉ. राहुल बंसल ने दो घंटे का व्याख्यान देते हुए आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य के संबंध को समझाया तथा बताया कि आध्यात्मिकता किस प्रकार चिरकालिक बीमारियों और जीवन की चुनौतियों से निपटने में सहायक होती है। उदाहरणों, चित्रों और महत्वपूर्ण पुस्तकों के संदर्भों के साथ सत्र संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन ए.के. जोहरी ने

कारगिल शहीदों के सम्मान एवं स्मरण कार्यक्रम में सदस्यगण – मेरठ अध्याय

समग्र स्वास्थ्य के वैज्ञानिक आधार और आध्यात्मिक कल्याण पर विशेष चर्चा के प्रतिभागी – मेरठ अध्याय

किया, विषय पर ए.के. गांधी ने विस्तार से बात रखी और धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. आर.के. भटनागर ने प्रस्तुत किया।

6 सितंबर को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में द आर्यन्स पब्लिक स्कूल, मेरठ में शिक्षक सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन ए.के. जोहरी ने किया और अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर ने की। छात्रों ने भाषणों के माध्यम से शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री अश्वनी गुप्ता सहित छात्रों ने अपने विचार रखे, जबकि श्री जोहरी ने अपने शिक्षण अनुभव साझा किए। कार्यक्रम का समापन डॉ. भटनागर के आशीर्वचनों और प्रधानाचार्या श्रीमती प्रीति मल्होत्रा के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

27 सितंबर को अध्याय ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के वीर बंदा बैरागी सभागार में शहीद–ए–आजम भगत सिंह की जयंती मनाई। यह कार्यक्रम इतिहास विभाग के छात्रों के सहयोग से आयोजित किया गया। शिक्षकों और छात्रों ने भगत सिंह के जीवन और उनके क्रांतिकारी संघर्ष पर भाषण दिए। कार्यक्रम का संचालन ए.के. जोहरी ने किया और समापन डॉ. आर.के. भटनागर के संदेश और आशीर्वचनों के साथ हुआ। छात्रों को भविष्य में इन्टैक की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया।

21 सितंबर को आंगन रेस्टोरेंट, मेरठ कैंट में संगीत विरासत संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सह–संयोजक ए.के. जोहरी ने किया। उन्होंने हिंदुस्तानी संगीत पर फ़ारसी और मुग़ल प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संगीत कैसे लोगों को जोड़ता है और सांस्कृतिक पहचान को सहेजता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर, आईएएस ने की। इसमें राग, ताल, ख़याल और ग़ज़ल की प्रस्तुतियाँ ए.डी. त्यागी, ए.के. गोयल, के.पी. प्रधान, सरदार एम.एम. आहूजा, डी.पी. श्रीवास्तव, शील वर्धन गुप्ता, दीपक शर्मा, किरण सिंह, श्री दीवान, ई.ए.के. सक्सेना, ए.के. गांधी और श्रीमती अनुपमा भटनागर द्वारा दी गईं।

मुंशी प्रेमचंद स्मृति निबंध एवं कहानी लेखन प्रतियोगिता, जिसे इन्टैक मेरठ अध्याय और अखिल भारतीय कायस्थ महासभा ने संयुक्त रूप से द आर्यन्स

शहीद-ए-आज़म भगत सिंह का जयंती समारोह – मेरठ अध्याय

पब्लिक स्कूल, मेरठ में आयोजित किया था, का पुरस्कार वितरण समारोह 13 अक्तूबर को संपन्न हुआ। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए तथा तीनों वर्गों के विजेताओं को स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन ए.के. जोहरी ने किया और अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर ने की। वरिष्ठ सदस्यों और स्कूल के अधिकारियों ने मुंशी प्रेमचंद के जीवन और साहित्य पर प्रेरक विचार साझा किए।

15 अक्तूबर को विश्व विद्यार्थी दिवस के अवसर पर इन्टैक मेरठ अध्याय ने श्री राम सहाय इंटर कॉलेज, मेरठ के वरिष्ठ छात्रों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर, वरिष्ठ आईएएस अधिकारी ने की। छात्रों ने डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम के जीवन और योगदान पर भाषण दिए। वरिष्ठ इन्टैक सदस्य जी.सी. शर्मा ने इस दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन इन्टैक मेरठ अध्याय के सह-संयोजक श्री ए.के. जोहरी ने किया। इसमें विद्यालय प्रशासन, इन्टैक सदस्य और छात्र उपस्थित रहे।

विरासत संरक्षण पहल के भाग के रूप में मुंशी प्रेमचंद स्मृति निबंध एवं कहानी लेखन प्रतियोगिता, जो जुलाई 2025 में इस्माइल गर्ल्स नेशनल इंटर कॉलेज, मेरठ में आयोजित की गई थी, का पुरस्कार वितरण समारोह 29 अक्तूबर को संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन ए.के. जोहरी ने किया और अध्यक्षता डॉ. आर.के. भटनागर ने की। दो वर्गों के विजेताओं को प्रमाणपत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्री ए.के. सक्सेना, इन्टैक सदस्य एवं कार्यक्रम समन्वयक भी उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य और छात्रों को इन्टैक से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया तथा प्रधानाचार्य को यंग इन्टैक पत्रिका भेंट की गई।

प्रयागराज (इलाहाबाद)

इन्टैक प्रयागराज अध्याय ने वार्षिक हेरिटेज क्विज़ 2025 से पहले ऑटो सेल्स बिल्डिंग, प्रयागराज में एक कर्टन रेज़र कार्यक्रम आयोजित किया। यह क्विज़ 12 सितंबर को दिल्ली पब्लिक स्कूल, नैनी में आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता वर्ष 2014 से इन्टैक का प्रमुख कार्यक्रम रही है, जिसका उद्देश्य विद्यालयी छात्रों में विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। इसमें सिटी, स्टेट और नेशनल लेवल की प्रतियोगिताएँ होती हैं। अध्याय वर्ष 2016 से इस कार्यक्रम का नियमित आयोजन कर रहा है। पूर्व में पतंजलि ऋषिकुल स्कूल की अन्विता और अन्विशा तिवारी जैसी छात्राएँ सिटी लेवल पर विजेता रहीं और वर्ष 2021 में नेशनल लेवल पर शहर का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। इस वर्ष सीबीएसई के जाने-माने स्कूलों से लगभग 50 टीमों ने भाग लेने के लिए पंजीकरण कराया, जो भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाता है। कार्यक्रम में विरासत विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों की भागीदारी रही, जिन्होंने भारत की विरासत के संरक्षण पर अपने विचार साझा किए। कर्टन रेज़र कार्यक्रम ने क्विज़ के लिए एक सकारात्मक माहौल बनाया और छात्रों व प्रतिभागियों के लिए एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक अनुभव का आभास कराया।

अध्याय ने दिल्ली पब्लिक स्कूल, नैनी के सहयोग से सिटी लेवल वार्षिक हेरिटेज क्विज़ 2025 का सफल आयोजन किया। इसमें सीबीएसई स्कूलों की 58 टीमों ने भाग लिया। लिखित, मौखिक, दृश्य और बज़र सहित छह राउंड में प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिनमें से 10 टीमें अंतिम मौखिक राउंड में पहुँचीं। पतंजलि ऋषिकुल स्कूल के भाव्य पांडे और अंश यादव ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उद्घाटन सत्र में कर्नल पराग भार्गव और डॉ. ऋतु जायसवाल ने युवाओं की विरासत संरक्षण में भूमिका पर अपने विचार रखे। क्विज़ मास्टर डॉ. दिव्या बारतारिया और निर्णायकों ने प्रतियोगिता को सुचारु रूप से संपन्न कराया। इन्टैक सदस्यों और डीपीएस स्टाफ के सहयोग से यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रेरक उत्सव बना।

अध्याय ने दिल्ली पब्लिक स्कूल, नैनी के सहयोग से सिटी लेवल इन्टैक वार्षिक हेरिटेज क्विज़ 2025 का सफल आयोजन किया। क्विज़ श्रृंखला की शुरुआत 9 सितंबर को आयोजित कर्टन रेज़र से हुई, जिसमें इन्टैक पर आधारित एक लघु फ़िल्म, विरासत विषयक संवाद और कर्नल पराग भार्गव तथा श्री वैभव मैनी के प्रेरक संबोधन शामिल थे। उन्होंने बच्चों को "परंपरा के मशालवाहक" बताया।

12 सितंबर को डीपीएस प्रयागराज में आयोजित मुख्य प्रतियोगिता में सीबीएसई के जाने-माने स्कलों से 58 टीमों ने भाग लिया। पहले लिखित चयन राउंड के बाद भारतीय विरासत पर प्रस्तुतियाँ हुईं और फिर मौखिक व दृश्य राउंड आयोजित किए गए। क्विज़ मास्टर श्रीमती दिव्या बारतारिया द्वारा संचालित पाँच रोचक राउंड में मौखिक, ऑडियो, विज़ुअल और बज़र राउंड शामिल थे। उत्साहपूर्ण भागीदारी और प्रभावशाली प्रस्तुतियों के साथ इन्टैक वार्षिक हेरिटेज क्विज़ 2025 छात्रों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझने, सहेजने और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने में सफल रहा।

वाराणसी

इन्टैक वाराणसी अध्याय ने विरासत से जुड़े कई कार्यक्रम आयोजित किए। इसकी शुरुआत पेशवा हवेली के भ्रमण से हुई, जहाँ इन्टैक के 40 वर्षों की यात्रा और प्रयागराज के द्वादश माधव पर लगी प्रदर्शनी देखी गई। हवेली की स्थिति का निरीक्षण किया गया और उसके भविष्य में उपयोग पर चर्चा हुई। इसके बाद सनबीम स्कूल, भगवानपुर में आयोजित तीन दिवसीय सुलेख कार्यशाला के समापन समारोह में भाग लिया गया तथा पार्श्वनाथ विद्यापीठ का दौरा कर वहाँ के संग्रह को देखा गया और प्रस्तावित संग्रहालय पर विचार-विमर्श किया गया। इसी क्रम में डायमंड होटल में इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर द्वारा भारत में सिक्कों के इतिहास पर व्याख्यान दिया गया, जिसके बाद दो दिवसीय कला शिविर की कला प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। दिन का समापन वाराणसी

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर द्वारा 'भारत के सिक्कों का इतिहास' विषय पर व्याख्यान – वाराणसी अध्याय

अध्याय द्वारा आयोजित रात्रि भोज के साथ हुआ, जिसमें मुख्य समूह के साथ अनौपचारिक चर्चा हुई।

3 अगस्त 2025 को अध्याय द्वारा पार्श्वनाथ विद्यापीठ, जो जैन अध्ययन का केंद्र है, का दौरा आयोजित किया गया। सदस्यों ने पाँच एकड़ परिसर का दौरा किया, प्रस्तावित संग्रहालय हेतु संग्रह को देखा और इन्टैक दिल्ली से पेशेवर मार्गदर्शन पर चर्चा की। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण जैन मुनि एवं विद्वान मुनि श्री संयम रत्न जी महाराज का उद्बोधन रहा, जिसके बाद संवाद सत्र हुआ। श्री सतीश चंद जैन और अखिलेश कुमार ने विद्यापीठ की गतिविधियों और जैन विरासत पर जानकारी दी। इन्टैक वाराणसी के संयोजक अशोक कपूर ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। बाद में विद्यापीठ ने संग्रहालय के लिए सहयोग करने पर सहमति जताई, और इस विषय पर इंटैक अध्यक्ष के साथ आगे चर्चा की गई।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर इन्टैक वाराणसी ने छात्रों को एक हथकरघा कारखाने का दौरा कराया। श्री विपिन मेहता (मेहता सिल्क्स) ने बुनाई की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया और हथकरघा विरासत के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। इन्टैक सदस्य अखिलेश कुमार, राम निहाल सिंह और संयोजक अशोक कपूर ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। छात्रों ने स्वयं करघे पर बुनाई का अनुभव भी किया।

24 अगस्त को सदस्यों और उनके परिवारों के लिए पुराने शहर की छिपी विरासत को जानने हेतु एक हेरिटेज वॉक आयोजित की गई, जिसका विषय वाराणसी के द्वादश आदित्य था। इस वॉक की पहल श्री अशोक कपूर ने की और जानकारी श्री अखिलेश कुमार ने दी। यात्रा सुबह 7:30 बजे स्वामीनारायण मंदिर से शुरू हुई। प्रतिभागियों ने कामेश्वर महादेव मंदिर एवं खखोलकादित्य (छठे आदित्य) तथा त्रिलोचन महादेव मंदिर एवं अरुणादित्य (7वें आदित्य) के दर्शन किए, जहाँ मंदिर के पुजारियों ने जानकारी दी। वॉक का समापन त्रिलोचन घाट पर हुआ, जहाँ गंगा हाउस में पारंपरिक बनारसी नाश्ते के साथ यह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव पूर्ण हुआ।

8 अगस्त को विरासत दर्शन व्याख्यान श्रृंखला के तहत डायमंड होटल, भेलूपुर में "भारत में सिक्कों का इतिहास" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने ईसा पूर्व छठी शताब्दी से आधुनिक काल तक भारतीय सिक्कों के विकास, उनके सांस्कृतिक, आर्थिक और कलात्मक महत्व पर प्रकाश डाला। लगभग 100 प्रतिभागियों — पर्यटन क्षेत्र से जुड़े लोग, विरासत प्रेमी और इन्टैक सदस्य — इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सत्र का संचालन जैनेन्द्र राय ने किया और सिक्कों के संरक्षण पर प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ।

वाराणसी अध्याय के संयोजक अशोक कपूर और वास्तुकार एवं इन्टैक आजीवन सदस्य श्रीमती मुदिता कपूर ने सनबीम स्कूल एवं हॉस्टल, सन सिटी में आयोजित "अपनी विरासत जानें" सत्र में निर्णायक की भूमिका निभाई। कक्षा 11 और 12 के छात्रों ने 11 टीमों में पाँच-पाँच मिनट की प्रस्तुतियाँ देकर वास्तुकला विरासत पर अपने विचार रखे।

8 अगस्त को इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर ने राजघाट स्थित पेशवा हवेली का भी दौरा किया, जिसमें इन्टैक दिल्ली और वाराणसी अध्याय के सदस्य उनके साथ उपस्थित रहे। उन्होंने "इन्टैक के

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर हथकरघा फैक्ट्री का दौरा – वाराणसी अध्याय

सन सिटी स्कूल में 'अपनी विरासत को जानें' सत्र के निर्णायक – वाराणसी अध्याय

40 वर्ष" और "प्रयागराज के द्वादश माधव" विषय पर प्रदर्शनियों का अवलोकन किया, भवन और उसकी छत को देखा तथा एक बैठक में भाग लिया। बैठक में सदस्यों ने सुझाव दिया कि हवेली को किराए पर देने के बजाय सांस्कृतिक केंद्र एवं विरासत केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। इन्टैक अध्यक्ष ने इन सुझावों की सराहना की और आश्वासन दिया कि बरसात के बाद पुनरुद्धार कार्य शुरू किया जाएगा।

श्री अशोक कपूर के नेतृत्व में अध्याय ने 40 से अधिक सदस्यों के लिए गया दौरा आयोजित किया। इसमें वरिष्ठ सदस्यों और पेशेवर मार्गदर्शकों अखिलेश कुमार, जैनेन्द्र राय और डॉ. अजय सिंह का सहयोग रहा। समूह ने बोध गया में महाबोधि मंदिर, अशोक कालीन प्राचीन रेलिंग और बोधि वृक्ष का दर्शन किया तथा बौद्ध इतिहास और वास्तुकला के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके बाद फल्गु नदी तट और विष्णुपद मंदिर का भ्रमण किया, जहाँ सायंकालीन आरती देखी गई और 1787 में अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित मंदिर के इतिहास को जाना गया। अगले दिन बराबर गुफाओं का अवलोकन किया गया, जहाँ चिकनी पॉलिश वाली दीवारें, पालि-प्राकृत अभिलेख तथा सम्राट अशोक द्वारा समर्थित आजीवक संप्रदाय के बारे में जानकारी दी गई। यात्रा के दौरान बौद्ध इतिहास और गंगा दस्तावेजी परियोजना पर फिल्में भी दिखाई गईं। यह भ्रमण ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा।

फिल्म-आधारित क्विज़ की सफलता के बाद अध्याय 15 अक्तूबर 2025 को एक नई प्रतियोगिता आयोजित करेगा, जिसमें 12 स्कूल भाग लेंगे। शीर्ष तीन टीमों को पुरस्कार, दो विशेष पुरस्कार और सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिए जाएंगे। ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराए जाएंगे, जबकि आयोजन स्थल और जलपान की व्यवस्था मेज़बान स्कूल करेगा।

अध्याय ने इन्टैक प्रकाशन प्रभाग के सहयोग से पुस्तक *काशी के बारह आदित्य* प्रकाशित की। इन्टैक आजीवन सदस्य अखिलेश कुमार और जैनेन्द्र राय द्वारा संयुक्त रूप से लिखी गई यह पुस्तक बारहों आदित्य स्थलों पर विस्तृत शोध पर आधारित है और धार्मिक पर्यटकों व विरासत प्रेमियों के लिए उपयोगी मार्गदर्शिका है। पुस्तक का औपचारिक विमोचन महंत प्रो. विश्वंभर नाथ मिश्र, पद्मश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य, पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल और पद्मश्री एस. सुपाकर द्वारा किया गया। कार्यक्रम की मेज़बानी श्री शशांक सिंह ने की, समन्वय अशोक कपूर ने किया तथा अनिल केशरी का सहयोग रहा। विमोचन में यात्रा व्यापार से जुड़े प्रतिनिधि, छात्र और इन्टैक सदस्य उपस्थित रहे।

अक्तूबर 2025 में अध्याय ने छात्रों के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए। राजघाट स्थित पेशवा हवेली में "इन्टैक के 40 वर्ष" विषय पर एक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे तीन दिनों में 10 सदस्य विद्यालयों के लगभग 100 छात्रों ने देखा और मौके पर जलरंग चित्र बनाए। बाद में इन चित्रों का मूल्यांकन किया गया और 16 अक्तूबर को पुरस्कार समारोह में विजेताओं को ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र, पुरस्कार और पुस्तकें दी गईं। इस अवसर पर 97 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी श्री तिलक राज कपूर भी उपस्थित रहे।

इसके अतिरिक्त सेठ एम.आर. जयपुरिया स्कूल में कण-कण में राम फिल्म पर आधारित प्रतियोगिता

इन्टैक अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर का पेशवा हवेली का दौरा – वाराणसी अध्याय

प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा 'काशी के बारह आदित्य' नामक पुस्तक का विमोचन – वाराणसी अध्याय

सदस्यों के एक समूह द्वारा बोधगया और बराबर गुफाओं का दौरा – वाराणसी अध्याय

आयोजित की गई, जिसमें 11 विद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विशेष मूल्यांकन प्रणाली अपनाई गई। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार, ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र और जलपान प्रदान किया गया।

साथ ही सनबीम स्कूल, मुगलसराय के छात्रों ने "अपनी विरासत जानें" कार्यक्रम के तहत मान महल वर्चुअल म्यूज़ियम एवं वेधशाला का दौरा किया। डॉ. संध्या विश्वकर्मा ने बनारस के शिल्प, हथकरघा, साहित्य और संगीत से संबंधित प्रदर्शनों की जानकारी दी। ऐसे और विरासत दौरे करने की आगामी दिनों में योजना बनाई गई है।

इन्टैक वाराणसी अध्याय ने 5 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर इन्टैक पेशवा हवेली, राजघाट में देव दीपावली मनाई। भवन में पारंपरिक मिट्टी के दीपक सजाए गए और घाटों व संरचनाओं पर बिजली से सजावट की गई। व्यवस्थाओं का समन्वय अखिलेश कुमार, इन्टैक आजीवन सदस्य एवं सरकार द्वारा मान्यता-प्राप्त पर्यटक गाइड ने संयोजक अशोक कपूर के साथ किया। बारादरी में शहनाई वादन हुआ तथा घाट पर गंगा आरती का आयोजन इन्टैक सदस्य श्री शदनंद पाठक के सहयोग से किया गया।

उत्तराखंड

मसूरी

मसूरी उप-अध्याय की वार्षिक बैठक 2024–2025, 19 जुलाई को द फर्न ब्रेंटवुड रिज़ॉर्ट, मसूरी में आयोजित की गई। बैठक में सदस्य और स्थानीय अतिथि प्रत्यक्ष तथा ऑनलाइन दोनों माध्यमों से शामिल हुए। इसमें आने वाली गतिविधियों, भविष्य के लक्ष्यों और सदस्यों के सुझावों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में सुश्री स्तुति पंवार द्वारा *सेल्कू मेला* पर एक वीडियो क्लिप तथा गढ़वाल की लोक-परंपरा पर छात्रा वैष्णवी रावत की एक लघु फिल्म भी प्रस्तुत की गई। अगस्त में अध्याय ने दो ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं: *भदराज मेला* पर एक मिनट की रील प्रतियोगिता, जिसकी निर्णायक फिल्मकार श्रीमती संयुक्ता शर्मा थीं। यह प्रतियोगिता सनातन धर्म गर्ल्स इंटर कॉलेज की निस्बा ने जीती, और लंढौर बाज़ार की ऐतिहासिक जन्माष्टमी शोभायात्रा पर हिंदी फोटो निबंध प्रतियोगिता।

20 सितंबर को, इन्टैक मसूरी ने महात्मा योगेश्वर सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में एक इंटर-स्कूल हेरिटेज क्विज़ का सिटी राउंड आयोजित किया। प्रारंभिक दौर में 64 छात्रों ने भाग लिया। चार टीमों ने अंतिम मौखिक राउंड के लिए क्वालीफाई किया। ओक ग्रोव स्कूल प्रथम, विनबर्ग एलेन स्कूल द्वितीय और सेंट क्लेयर कॉन्वेंट स्कूल तृतीय स्थान पर रहे। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी श्रीमती अल्पना पंत शर्मा ने छात्रों को बधाई दी और भारत की विरासत में रुचि बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। सह-संयोजक सुरभि अग्रवाल ने युवाओं में सांस्कृतिक जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डाला।

अध्याय ने लंढौर व्याख्यान श्रृंखला और मसूरी हेरिटेज सेंटर के साथ मिलकर मानवविज्ञानी जॉयस बर्कहाल्टर फ्लूकिगर का व्याख्यान आयोजित किया, जिसका विषय था *मेमोरी, मूवमेंट एंड बिलॉन्गिंग इन लंढौर बाज़ार*। लंढौर में जन्मी और वुडस्टॉक स्कूल की पूर्व छात्रा श्रीमती फ्लूकिगर ने अपनी पुस्तक *ऑन मुलिंगर हिल* के अनुभव साझा किए। इस व्याख्यान में स्थानीय निवासियों, मानवविज्ञानियों और शोधार्थियों की सक्रिय भागीदारी रही।

इन्टैक इंटरस्कूल हेरिटेज क्विज़ में भाग लेने वाले छात्रों का ग्रुप फोटो – मसूरी अध्याय

अध्याय की वार्षिक बैठक के दौरान सदस्यगण – मसूरी अध्याय

पश्चिम बंगाल

कोलकाता

1 अगस्त को ऑक्सफोर्ड बुकस्टोर में पुस्तक *द ग्रेट कंसिलिएटर – लाल बहादुर शास्त्री एंड द ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ इंडिया* पर एक विचार-विमर्श आयोजित किया गया। इस अवसर पर लेखक एवं पूर्व आईएएस अधिकारी एस. जे. वी. चोपड़ा ने इन्टैक के राज्य संयोजक जी.एम. कपूर के साथ चर्चा की। चर्चा में भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन और नेतृत्व पर महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा की गईं, जिन्हें श्रोताओं ने सराहा।

1 अगस्त को श्री श्री अकादमी में इन्टैक फिल्मइट कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें कोलकाता के 16 स्कूलों ने भाग लिया। कार्यशाला की शुरुआत स्कूल की प्राचार्या सुश्री गार्गी बनर्जी और सह-संयोजक सुश्री कंचना मुखोपाध्याय के संबोधन से हुई। इन्टैक एचईसीएस टीम — अभिषेक दास, सुश्री शिखा गुप्ता और सुश्री साशा सिंह — छात्रों और शिक्षकों को विरासत विषय पर लघु फिल्मों की पटकथा लिखने, शूटिंग और संपादन का प्रशिक्षण दिया।

25 अगस्त को पार्क स्ट्रीट स्थित बिंग्शा शताब्दी में अध्याय की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता

52वें राष्ट्रीय सम्मेलन में इन्टैक आईसीआई, कोलकाता के वरिष्ठ संरक्षक श्री सुभाष चंद्र बराल का सम्मान – कोलकाता अध्याय

नई पुस्तक 'द ग्रेट कंसिलिएटर – लाल बहादुर शास्त्री एंड द ट्रांसफार्मेशन ऑफ इंडिया' पर एस.जे.वी. चोपड़ा के साथ संवाद करते हुए राज्य संयोजक श्री जी.एम. कपूर – कोलकाता अध्याय

संयोजक श्री जी.एम. कपूर ने सह-संयोजक सुश्री कंचना मुखोपाध्याय और सुश्री नयनतारा पालचौधुरी के साथ की। सदस्यों ने चल रही परियोजनाओं और भविष्य की योजनाओं की समीक्षा की। अंत में श्री देवासिस चट्टोपाध्याय ने अपनी नई पुस्तक *हैरी हॉब्स ऑफ कोलकाता एंड अदर फॉरगॉटन लाइव्स* पर प्रस्तुति दी, जिस पर उत्साहपूर्ण चर्चा हुई।

15 सितंबर को संयोजक जी.एम. कपूर ने 'स्मृतियाँ और पहचान' विषय पर चर्चा और प्रश्न-उत्तर सत्र का संचालन किया। यह सत्र श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता द्वारा आयोजित इंडेंचर्ड मेमोरियल डे स्मृति संगोष्ठी के तहत हुआ, जिसमें एसएमपीके की काबेरी चट्टोपाध्याय भी शामिल थीं। इसमें ठेका श्रमिक समुदायों की विरासत और सांस्कृतिक स्मृतियों पर विचार किया गया।

23 से 25 सितंबर के बीच, इन्टैक आईसीआई कोलकाता के वरिष्ठ संरक्षक श्री सुभाष चंद्र बराल ने आईएएससी के 52वें राष्ट्रीय सम्मेलन में एलोकेशी कांथा के संरक्षण पर एक केस स्टडी प्रस्तुत की। यह सम्मेलन वस्त्र संरक्षण पर केंद्रित था। उन्होंने बिरला अकादमी ऑफ आर्ट एंड कल्चर की इस ऐतिहासिक कांथा के संरक्षण में आई चुनौतियों और उपचार विधियों की जानकारी साझा की।

30 अक्तूबर को इन्टैक नेशनल हेरिटेज क्विज़ 2025 (सिटी लेवल) एपीजे स्कूल, पार्क स्ट्रीट में आयोजित हुई। इसमें कोलकाता के सात स्कूलों के 38 छात्रों ने भाग लिया। लिखित और चार मौखिक राउंड के बाद गार्डन हाई स्कूल विजेता रहा और स्टेट लेवल के लिए चयनित हुआ। पुरस्कार मुर्शिदाबाद अध्याय के संयोजक बालकनाथ भट्टाचार्य ने प्रदान किए। इसी दिन स्टेट लेवल क्विज़ भी एपिजे स्कूल, पार्क स्ट्रीट में आयोजित की गई, जिसमें कोलकाता, हुगली और मुर्शिदाबाद अध्यायों की टीमों ने भाग लिया। पाँच राउंड के बाद, इन्टैक मुर्शिदाबाद अध्याय का प्रतिनिधित्व करने वाले सरगाची रामकृष्ण मिशन हाई स्कूल राज्य विजेता बने। पुरस्कार मुर्शिदाबाद अध्याय के संयोजक बालकनाथ भट्टाचार्य द्वारा प्रदान किए गए।

30 अक्तूबर को ही संयोजक जी.एम. कपूर ने 'द रिवरबैंक सिटी: कोलकाता एंड इट्स घाटस्केप' विषय पर आयोजित पैनल चर्चा में 'आगे की राह' पर अपने विचार रखे। यह कार्यक्रम जादवपुर विश्वविद्यालय के मानव बसावट नियोजन केंद्र और वास्तुकला विभाग द्वारा ऐतिहासिक शहर श्रृंखला (कोलकाता संस्करण-2) के भाग के रूप में आयोजित किया गया था, जिसे आईसीओएमओएस इंडिया पूर्वी-ज़ोन का सहयोग प्राप्त था। कार्यक्रम में मुख्य भाषण डॉ. कल्याण रुद्र ने दिया।

मुर्शिदाबाद

अध्याय ने 8–9 सितंबर को सेवा मिलोनी हाई स्कूल, खागरा में दो दिवसीय जूट कला एवं शिल्प कार्यशाला का आयोजन किया। इसका उद्देश्य 1947 के विभाजन और प्लास्टिक उत्पादों के बढ़ते उपयोग के कारण कमजोर हुए जूट उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए वैकल्पिक उपायों को बढ़ावा देना था। विभिन्न स्कूलों के 36 छात्रों को प्रसिद्ध जूट कलाकार श्री संदीप गुइन ने प्रशिक्षण दिया। उन्होंने जूट से सजावटी और उपयोगी वस्तुएँ बनाने की तकनीकें सिखाईं। दूसरे दिन छात्रों ने स्वयं उत्कृष्ट और उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बनाए, जिनमें से कई बाज़ार में बिक्री योग्य माने गए। कार्य की उत्कृष्टता को देखते हुए तीन की बजाय छह प्रविष्टियों को पुरस्कार दिए गए। प्रथम पुरस्कार आयन देबनाथ, द्वितीय ईशान मंडल और तृतीय शुभम साहा (तीनों सरगाछी रामकृष्ण मिशन हाई स्कूल) को मिला।

'लुप्तप्राय कला पुनरुद्धार कार्यक्रम' के तहत 'जूट कला एवं शिल्प' पर कार्यशाला – मुर्शिदाबाद अध्याय

कार्यशाला के पुरस्कार-प्राप्त प्रतिभागी – मुर्शिदाबाद अध्याय

स्व. श्री पी.वी. प्रसाद

स्व. श्री इंजी. चेम्बथ अच्युत मेनन

स्व. श्री सी.के.एन. थम्पी

स्व. श्रीमती तारा मुरली

स्व. डॉ. एस. पद्मनाभन

स्मृति-शेष

आंध्र प्रदेश

विशाखापत्तनम

अध्याय, इन्टैक विशाखापत्तनम के पूर्व संयोजक **श्री पी.वी. प्रसाद** के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है। विरासत संरक्षण के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय था। आजीवन सदस्य, सह-संयोजक और संयोजक के रूप में उन्होंने अध्याय के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी सेवाएँ और समर्पण सदैव स्मरणीय रहेंगे।

हिमाचल प्रदेश

मंडी

अध्याय, मंडी अध्याय के वरिष्ठ आजीवन सदस्य और प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिक **डॉ. आर.के. राजू** के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है। वे नौ वर्षों से अधिक समय तक इन्टैक से जुड़े रहे और अध्याय की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे।

महाराष्ट्र

सोलापुर

अध्याय, हमारी सम्मानित सदस्य **सुश्री सुधरानी संदेश त्रिवेदी** (सदस्यता सं. एल/17086) के असामयिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करता है।

केरल

त्रिशूर

अध्याय, हमारे सम्मानित सदस्य **श्री इंजी. चेम्बथ अच्युत मेनन** (एल/15944) के 21 अप्रैल 2025 को हुए निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है। वे सेवानिवृत्त अभियंता और सक्रिय आजीवन सदस्य थे। सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्होंने अध्याय की गतिविधियों में पूरे मन से योगदान दिया। उनका तकनीकी ज्ञान, विनम्रता और उत्साह सदैव प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

अध्याय, हमारे आदरणीय सदस्य **श्री सी.के.एन. थम्पी** (एएल/16403) के 28 सितंबर 2025 को हुए निधन पर भी शोक व्यक्त करता है। उनके योगदान और स्नेहपूर्ण उपस्थिति को अध्याय द्वारा सदैव याद किया जाता रहेगा।

तमिलनाडु

चेन्नई

अध्याय, **श्रीमती तारा मुरली** (2 अक्तूबर 1949 — 26 जुलाई 2025) के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है। उन्होंने 1980 के दशक से इन्टैक के उद्देश्यों के लिए अत्यंत समर्पण के साथ कार्य किया। वे शासी परिषद सदस्य (2012–2018), चेन्नई अध्याय की सह-संयोजक (2013–2021) रहीं और दीर्घकाल से आजीवन सदस्य (एल-6635) थीं। उनके योगदान अमूल्य और सदैव स्मरणीय रहेंगे।

नागरकोइल

अध्याय, **डॉ. एस. पद्मनाभन** (31 मार्च 1934 — 7 नवंबर 2025) के निधन पर शोक व्यक्त करता है। वे इन्टैक नागरकोइल अध्याय के प्रतिष्ठित सदस्य और विद्वान थे। तिरुवनंतपुरम में जन्मे और नागरकोइल के निवासी डॉ. पद्मनाभन 1988 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से सेवानिवृत्त हुए थे। वे दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला पर अपने गहन अध्ययन, आकाशवाणी और दूरदर्शन में योगदान तथा कन्याकुमारी ज़िले के इतिहास पर किए गए शोध के लिए विशेष रूप से जाने जाते थे।

विरासत जानकारी

भारत का राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय

भारत का राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (एनडीएलआई) एक वर्चुअल भंडार है, जो केवल खोज/ब्राउज़ सुविधा ही नहीं देता, बल्कि सीखने वालों के लिए अनेक सेवाएँ भी प्रदान करता है। एनडीएलआई छात्रों, शोधकर्ताओं, सांस्कृतिक अभिलेखागार, करियर विकास और सामान्य शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी है। यह सभी विषयों, विभिन्न उपकरणों और दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त है। इसमें किसी भी भाषा की सामग्री रखने की सुविधा है तथा भारत की 10 प्रमुख भाषाओं में इंटरफ़ेस समर्थन उपलब्ध है।

एनडीएलआई, शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी मिशन (एनएमईआईसीटी) के मार्गदर्शन में कार्य करता है। इसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ने भारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत विकसित किया है, जिसका उद्देश्य है — शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाना, सीमाओं से परे ज्ञान का विस्तार करना और एक ही मंच पर विविध शिक्षण सामग्री प्रदान करना।

लिंक: https://www.ndl.gov.in/

राष्ट्रीय संग्रहालय का डिजिटलीकरण प्रकोष्ठ

राष्ट्रीय संग्रहालय का डिजिटलीकरण प्रकोष्ठ, जतन प्लेटफॉर्म पर संग्रहालय वस्तुओं के डिजिटलीकरण की नोडल इकाई है। यह एक साझा पोर्टल है, जहाँ विभिन्न संग्रहों की प्राचीन वस्तुएँ आमजन के अवलोकन हेतु उपलब्ध हैं। यह वर्चुअल संग्रहालय सांस्कृतिक विरासत को हमारी पहचान और सांस्कृतिक अधिकारों के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है। यह मूर्त और अमूर्त विरासत के गहरे संबंध को स्वीकार करता है तथा सभी रूपों में सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के महत्व को दर्शाता है।

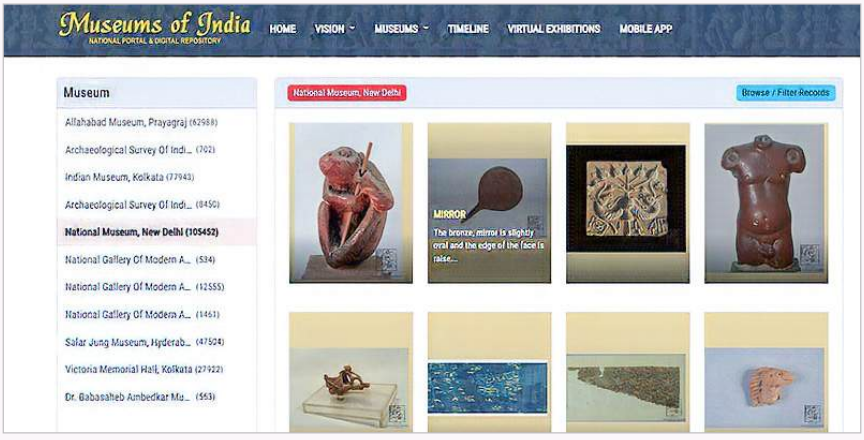

लिंक: https://www.nationalmuseumindia.gov.in/en/collections/index/30

जतन आम जनता को संग्रहालय में प्रदर्शित या भंडार में रखी प्राचीन वस्तुओं तक पहुँच प्रदान करता है। इसमें इन वस्तुओं का डिजिटल रिकॉर्ड सुरक्षित रखा जाता है, जो केवल बाहरी उपयोग के लिए ही नहीं बल्कि आंतरिक कार्यों, जैसे वस्तु का स्थान पता करना, संरक्षण से जुड़ी जानकारी रखना आदि, के लिए भी उपयोगी होता है। यह प्रणाली भारतीय संग्रहालयों की प्राचीन वस्तुओं के रखरखाव, शोध और उन्हें दुनिया भर के लोगों तक पहुँचाने में मदद करती है।

वर्चुअल म्यूज़ियम सॉफ़्टवेयर का उपयोग विभिन्न संग्रहालयों में डिजिटल संग्रह बनाने के लिए किया जाता है। इसके साथ ही, पृष्ठभूमि में काम करने वाले डिजिटल आर्काइव उपकरण राष्ट्रीय डिजिटल संग्रहालय भंडार के प्रबंधन में मदद करते हैं।

जतन संग्रह सूची

प्रागैतिहासिक पुरातत्व, पुरातत्व, मानवविज्ञान, हथियार और कवच, सजावटी कला, पांडुलिपियाँ, मुद्राशास्त्र और अभिलेख विज्ञान, चित्रकला, आभूषण, मध्य एशियाई प्राचीन वस्तुएँ, प्री-कोलंबियन और पश्चिमी कला।

पुरानी यादें

कभी पुस्तकालय हमारे जीवन का अहम हिस्सा हुआ करते थे — चाहे स्कूल में हों, विश्व-विद्यालय में या जीवन के बाद के वर्षों में। लाइब्रेरी कार्ड से एक बार में दो-तीन किताबें लेना और समय पर लौटाने के लिए उन्हें जल्दी-जल्दी पढ़ना — ये सब अनुभव आज भी यादों में बसे हैं। साहित्य, कविता, इतिहास और विज्ञान की अलमारियों में खो जाना या अपने पसंदीदा लेखक/कवि को खोजना एक अलग ही अनुभव देता था, जो डिजिटल युग के आने के बाद कहीं खो सा गया है। आज ऐसे पुस्तकालय लगभग दुर्लभ हो गए हैं और दैनिक जीवन में उनका उल्लेख भी कम ही मिलता है।

फिर भी यह जानकर अच्छा लगता है कि कुछ पुस्तकालय आज भी मौजूद हैं, जो जिज्ञासु छात्रों और पुस्तक प्रेमियों के लिए खुले हैं। इसलिए यहाँ कुछ प्रमुख पुस्तकालयों का उल्लेख किया गया है, ताकि उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया जा सके। आशा है वह दिन कभी न आए जब सारी किताबें केवल क्लाउड में डिजिटल रूप में या एआई द्वारा बनाए गए पढ़ने के कमरों तक ही सिमट जाएँ।

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता

राष्ट्रीय पुस्तकालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता भारत का सबसे बड़ा और सबसे पुराना पुस्तकालय है। इसकी शुरुआत 1836 से मानी जाती है। इसका उद्देश्य लोगों को उनकी हैसियत की परवाह किए बिना अध्ययन और संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराना था। बिरचंद्र सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी, अगरतला, भारत का दूसरा सबसे पुराना पुस्तकालय है, जिसकी स्थापना 1896 में महाराजा बिरचंद्र माणिक्य ने की थी। यह त्रिपुरा की सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली का शीर्ष पुस्तकालय है।

भारत के तीन प्रमुख महानगरीय पुस्तकालय हैं: कॉनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी, चेन्नई, सेंट्रल लाइब्रेरी, मुंबई, और दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली। इसके अलावा कई विशेष राष्ट्रीय स्तर के पुस्तकालय भी हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (डीपीएल) की स्थापना 1951 में भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय द्वारा यूनेस्को की वित्तीय और तकनीकी सहायता से की गई थी। यह पूरे महानगरीय दिल्ली क्षेत्र को कवर करने वाली एक प्रमुख सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के रूप में विकसित हुई है और आज भी इसके सक्रिय सदस्य मौजूद हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी; लाइब्रेरी का वाचनालय

इन्टैक के उद्देश्य

- भारत की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के परिरक्षण के लिए जनता में जागरुकता पैदा करना और उन्हें प्रेरित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक संपत्तियों के परिरक्षण और संरक्षण के लिए उपाय करना।
- न केवल ऐतिहासिक भवनों बल्कि ऐतिहासिक आवासों और शहरों, कलात्मक और कुशल शिल्पकारिता को दर्शाने वाली देशी वास्तुकला के परिरक्षण के लिए उपाय करना।
- सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के प्रलेखन के लिए कार्य करना।
- प्रायोगिक संरक्षण परियोजनाएं शुरू करना।
- पारंपरिक कला और शिल्प के परिरक्षण को प्रोत्साहित करना।
- विचारों के आदान-प्रदान के लिए उपयुक्त मंच का सृजन करना तथा अध्ययन, पाठ्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, आदि के लिए सुविधाएं प्रदान करना।
- सोसायटी के उद्देश्यों का आगे विस्तार करने के लिए पत्रिकाओं, पुस्तकों, पत्रिका पोस्टरों का प्रकाशन करना।
- सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के अध्ययन के लिए पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों की स्थापना और रखरखाव करना।
- सोसायटी के उद्देश्यों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यायों की स्थापना करना।

भारतीय सांस्कृतिक
इन्टैक निधि

प्रकाशन प्रभाग
71, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली 110003
दूरभाष: 91-11-2463 2267/69
ई-मेल: intach@intach.org
वेबसाइट: www.intach.org